महाकइपुप्फयंतविरइयउ

अवहट्ठभासाणिबद्धु

हरिवंसपुराणु

(Printed Separately from the Mahāpurāṇa, Vol. III.)

विक्रमाब्दाः १९९७]

ख्रिस्ताब्दाः १९४१

मूल्यं सार्धरूप्यकत्रयम्

महाकवि पुष्पदन्त

[इस महाकविका परिचय सबसे पहले मैंने अपने ' महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण ' शीर्षक विस्तृत लेखमें दिया था[1]। परन्तु उसमें कविके समयपर कोई विचार नहीं किया जा सका था। उसके थोड़े ही समय बाद अपभ्रंश भाषाके विशेषज्ञ प्रो० हीरालालजी जैनने ' महाकवि पुष्पदन्तके समयपर विचार[2] ' शीर्षक लेख लिखकर उस कमीको पूरा कर दिया और महापुराण तथा यशोधरचरितके अतिरिक्त कविकी तीसरी रचना नागकुमारचरितका भी परिचय दिया। फिर सन् १९२६ में कविके तीनों ग्रंथोंका परिचय समय-निर्णयके साथ मध्यप्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित ' केटलॉग आफ मेनु० इन सी० पी० एण्ड बरार ' में प्रकाशित हुआ। इसके बाद पं० जुगलकिशोरजी मुख्तारका ' महाकवि पुष्पदन्तका समय ' शीर्षक लेख[3] प्रकट हुआ, जिसमें कॉंधलाके भंडारसे मिली हुई यशोधरचरितकी एक प्रतिके कुछ अवतरण देकर यह सिद्ध किया गया कि उक्त काव्यकी रचना योगिनीपुर (दिल्ली) में वि० सं० १३६५ में हुई थी, अतएव पुष्पदन्त विक्रमकी चौदहवीं शताब्दिके विद्वान् हैं। इसपर प्रो० हीरालालजीने फिर ' महाकवि पुष्पदन्तका समय[4] ' शीर्षक लेख लिखकर बतलाया कि उक्त प्रतिके अवतरण ग्रंथके मूल अंश न होकर प्रक्षिप्त अंश जान पड़ते हैं, वास्तवमें कविका ठीक समय नवीं शताब्दी ही है। इसके बाद १९३१ में ' कारंजा-जैन-सीरीज़' में यशोधरचरित प्रकाशित हुआ और उसकी भूमिकामें डॉ० पी० एल० वैद्यने कॉंधलाकी प्रतिके उक्त अंशको और उसी प्रकारके अन्य दो अंशोंको वि० सं० १३६५ में कण्हड़नन्दन गन्धर्वद्वारा ऊपरसे जोड़ा हुआ सिद्ध कर दिया और तब एक तरहसे उक्त समयसम्बन्धी विवाद समाप्त हो गया। इसके बाद नागकुमारचरित और महापुराण भी प्रकाशित हो गये और उनकी भूमिकाओंमें कविके सम्बन्धकी और भी बहुत-सी ज्ञातव्य बातें प्रकट हुईं। संक्षेपमें यही इस लेखकी पूर्वपीठिका है, जो इस विषयके विद्यार्थियोंके लिए उपयोगी समझ कर यहाँ दे दी गई है। प्रस्तुत लेख पूर्वोक्त सभी सामग्रीपर लक्ष्य रखकर लिखा गया है और इधर जो बहुत-सी नई नई बातोंका मुझे पता लगा है, वे सब भी इसमें शामिल कर दी गई हैं। कविके स्थान, कुल, धर्म आदिपर बहुत-सा नया प्रकाश डाला गया है। ऐसी भी अनेक बातें हैं जिनपर पहलेके लेखकोंने कोई चर्चा नहीं की है। मैंने इस बातका प्रयत्न किया है कि कविके सम्बन्धकी सभी ज्ञातव्य बातें क्रमबद्ध रूपसे हिन्दीके पाठकोंके समक्ष उपस्थित हो जायँ। इसके लिखनेमें सज्जनोत्तम प्रो० हीरालाल जैन और डा० ए० एन० उपाध्यायकी सूचनाओं और सम्मतियोंसे लेखकने यथेष्ट लाभ उठाया है।]

अपभ्रंश-साहित्य

महाकवि पुष्पदन्त अपभ्रंश भाषाके कवि थे। इस भाषाका साहित्य जैन-पुस्तक-भंडारोंमें भरा पड़ा है। अपभ्रंश बहुत समय तक यहाँकी लोक-भाषा रही है और इसका साहित्य भी बहुत लोकप्रिय रहा है। राजदरबारोंमें भी इसकी काफी प्रतिष्ठा थी। राजशेखरकी काव्य-मीमांसासे पता चलता है कि राजसभाओंमें राजासनके उत्तरकी ओर संस्कृत कवि, पूर्वकी ओर प्राकृत कवि और पश्चिमकी ओर अपभ्रंश कवियोंको स्थान मिलता था। पिछले २५–३० वर्षोंसे ही इस भाषाकी ओर विद्वानोंका ध्यान आकर्षित हुआ है और अब तो

---

१ जैनसाहित्य-संशोधक खंड २ अंक १ (सन् १९२४)।
२ जैनसाहित्य-संशोधक खंड २ अंक २।
३ जैनजगत् १ अक्टूबर सन् १९२६।
४ जैनजगत् १ नवम्बर सन् १९२६।

वर्तमान प्रान्तीय भाषाओंकी जननी होनेके कारण भाषाशास्त्रियों और भिन्न भिन्न भाषाओंका इतिहास लिखनेवालोंके लिए इस भाषाके साहित्यका अध्ययन बहुत ही आवश्यक हो गया है। इधर इस साहित्यके बहुत-से ग्रन्थ भी प्रकाशित हो गये हैं। कई यूनीवर्सिटियोंने अपने पाठ्य-क्रममें भी अपभ्रंश ग्रन्थोंको स्थान देना प्रारंभ कर दिया है।

पुष्पदन्त इस भाषाके एक महान् कवि थे। उनकी रचनाओंमें जो ओज, जो प्रवाह, जो रस और जो सौन्दर्य है वह अन्यत्र दुर्लभ है। भाषापर उनका असाधारण अधिकार है। उनके शब्दोंका भंडार विशाल है और शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनोंसे ही उनकी कविता समृद्ध है। उनकी सरस और सालंकार रचनायें न केवल पढ़ी ही जाती थीं, वे गाई भी जाती थीं और लोग उन्हें पढ़-सुनकर मुग्ध हो जाते थे। स्थानाभावके कारण रचनाओंके उदाहरण देकर उनकी कला और सुन्दरताकी चर्चा करनेसे विरत होना पड़ा।

कुल-परिचय और धर्म

पुष्पदन्त काश्यपगोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिताका नाम केशव भट्ट और माताका मुग्धादेवी था।

उनके माता-पिता पहले शैव थे, परन्तु पीछे किसी दिगम्बर जैन गुरुके उपदेशामृतको पाकर जैन हो गये थे और अन्तमें उन्होंने जिन-संन्यास लेकर शरीर त्यागा था। नागकुमारचरितके अन्तमें कविने और और लोगोंके साथ अपने माता-पिताकी भी कल्याण-कामना की है और वहाँ इस बातको स्पष्ट किया है[1]। इससे अनुमान होता है कि कवि स्वयं भी पहले शैव थे।

कविके आश्रयदाता महामात्य भरतने जब उनसे महापुराणके रचनेका आग्रह किया, तब कहा कि तुमने पहले भैरव नरेन्द्रको माना है और उसको पर्वतके समान धीर, वीर और अपनी श्रीविशेषसे सुरेन्द्रको जीतनेवाला वर्णन किया है। इससे जो मिथ्यात्वभाव उत्पन्न हुआ है, उसका यदि तुम इस समय प्रायश्चित्त कर डालो, तो तुम्हारा परलोक सुधर जाय[2]।

---

१ मूल पंक्तियाँ कठिन होनेके कारण यहाँ उन्हें संस्कृतच्छायासहित दिया जाता है।

सिवभत्ताइं मि जिणसण्णासें वे वि मयाइं दुरियणिण्णासें।
बंभणाइं कासवरिसिगोत्तइं गुरुवयणामियपूरियसोत्तइं ॥
मुद्धाएवीकेसवणामइं महु पियराइं होंतु सुहधामइं।
[शिवभक्तौ अपि जिनसंन्यासेन द्वौ अपि मृतौ दुरितनिर्णाशेन।
ब्राह्मणौ काश्यपऋषिगोत्रौ गुरुवचनामृतपूरितश्रोत्रौ।
मुग्धादेविकेशवनामानौ मम पितरौ भवतां सुखधामनी ॥]

'गुरु' शब्दपर मूल प्रतिमें 'दिगम्बर' टिप्पण दिया हुआ है।

२ सियसिरिविसेसणिज्जियसुरिंदु, गिरिधीरवीरभइरवणरिंदु।
पइं मण्णिउ वण्णिउ वीरराउ, उप्पण्णउ जो मिच्छत्तभाउ।
पच्छित्तु तासु जइ करहि अज्जु, ता घडइ तुज्झु परलोयकज्जु।

इससे भी मालूम होता है कि पहले पुष्पदन्त शैव होंगे और शायद उसी अवस्थामें उन्होंने भैरव नरेन्द्रकी कोई यशोगाथा[1] लिखी होगी।

स्तोत्र-साहित्यमें ‘ शिवमहिम्न स्तोत्र ’ बहुत प्रसिद्ध है और उसके कर्ताका नाम ‘ पुष्पदन्त ’ है। असम्भव नहीं जो वह इन्हीं पुष्पदन्तकी उस समयकी रचना हो जब वे शैव थे। जयन्तभट्टने इस स्तोत्रका एक पद्य अपनी न्याय-मंजरीमें ‘ उक्तं च ’ रूपसे उद्धृत किया है। यद्यपि अभी तक जयन्तभट्टका ठीक समय निश्चित नहीं हुआ है, इसलिए जोर देकर नहीं कहा जा सकता। फिर भी सम्भावना है कि जयन्त पुष्पदन्तके बादके होंगे और तब शिवमहिम्न इन्हीं पुष्पदन्तका होगा।

उनकी रचनाओंसे मालूम होता है कि जैनेतर साहित्यसे उनका प्रगाढ़ परिचय था। उनकी उपमायें और उत्प्रेक्षायें भी इसी बातका संकेत करती हैं[2]।

अपने ग्रन्थोंमें उन्होंने इस बातका कोई उल्लेख नहीं किया कि वे कब जैन हुए और कैसे हुए, अपने किसी जैन गुरु और सम्प्रदाय आदिकी भी कोई चर्चा उन्होंने नहीं की, परन्तु ख्याल यही होता है कि पहले वे भी अपने माता-पिताके समान शैव होंगे। यह तो नहीं कहा जा सकता कि वे माता-पिताके जैन होनेके बाद जैन हुए या पहले। परन्तु इस बातमें सन्देहकी गुंजाइश नहीं है कि वे दृढ़ श्रद्धानी जैन थे।

उन्होंने जगह जगह अपनेको ‘ जिणपयभत्तिं धम्मासत्तिं वयसंजुत्तिं उत्तमसत्तिं वियलियसंकिं ’ अर्थात् जिनपदभक्त, व्रतसंयुक्त, विगलितशंक आदि विशेषण दिये हैं और ‘ मग्गियपण्डियपण्डियमरणें ’ अर्थात् ‘ पंडित-पण्डितमरण ’ पानेकी तथा बोधि-समाधिकी आकांक्षा प्रकट की है।

‘ सिद्धान्तशेखर[3] ’ नामक ज्योतिष-ग्रंथके कर्ता श्रीपति भट्ट नागदेवके पुत्र और केशवभट्टके पौत्र थे। ज्योतिषरत्नमाला, दैवज्ञवल्लभ, जातकपद्धति, गणिततिलक[4], बीजगणित, श्रीपति-निबंध, श्रीपतिसमुच्चय, श्रीकोटिदकरण, ध्रुवमानसकरण आदि ग्रंथोंके कर्ता भी श्रीपति हैं। वे बड़े भारी ज्योतिषी थे। हमारा अनुमान है कि पुष्पदन्तके पिता केशवभट्ट और श्रीपतिके पितामह केशवभट्ट एक ही थे[5]। क्यों कि एक तो दोनों ही काश्यप गोत्रीय हैं और

---

१ आगे बतलाया है कि यह यशोगाथा शायद ‘ कथामकरन्द ’ नामकी होगी और उसका नायक भैरव-नरेन्द्र। भैरव कहाँके राजा थे, इसका अभी तक पता नहीं लगा।

२ बलिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु।
सम्प्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥ —प्रशस्ति श्लोक १।

३ यह ग्रन्थ कलकत्ता यूनीवर्सिटीने अभी हाल ही प्रकाशित किया है।

४ गणिततिलक श्रीसिंहतिलकसूरिकृत टीकासहित गायकवाड़ ओरियण्टल सीरीजमें प्रकाशित हुआ है।

५ भट्टकेशवपुत्रस्य नागदेवस्य नन्दनः, श्रीपती रोहिणीखं(खे)डे ज्योतिःशास्त्रमिदं व्यधात्।
—ध्रुवमानसकरण।

६ ज्योतिषरत्नमालाकी महादेवप्रणीत टीकामें श्रीपतिका काश्यप गोत्र बतलाया है—“ काश्यपवंशपुण्डरीकखण्डमार्तण्डः केशवस्य पौत्रः नागदेवस्य सूनुः श्रीपतिः संहितार्थमभिधातुमिच्छुराह—।”

दूसरे दोनोंके समयमें भी अधिक अन्तर नहीं है[1]।

केशवभट्टके एक पुत्र पुष्पदन्त होंगे और दूसरे नागदेव। पुष्पदंत निष्पुत्र-कलत्र थे, परन्तु नागदेवको श्रीपति जैसे महान् ज्योतिषी पुत्र हुए। यदि यह अनुमान ठीक हो, तो श्रीपतिको पुष्पदन्तका भतीजा समझना चाहिए।

पुष्पदन्त मूलमें कहाँके रहनेवाले थे, उनकी रचनाओंमें इस बातका कोई उल्लेख नहीं मिलता। परन्तु उनकी भाषा बतलाती है कि वे कर्नाटकके या उससे और दक्षिणके द्रविड़ प्रान्तोंके तो नहीं थे। क्योंकि एक तो उनकी सारी रचनाओंमें कनड़ी और द्रविड़ भाषाओंके शब्दोंका प्रायः अभाव है, दूसरे अब तक अपभ्रंश भाषाका ऐसा एक भी ग्रंथ नहीं मिला है जो कर्नाटक या उसके नीचेके किसी प्रदेशका बना हुआ हो। अपभ्रंश साहित्यकी रचना प्रायः उत्तर भारत और राजपुताना, गुजरात, मालवा, बरारमें ही होती रही है। अतएव अधिक संभव यही है कि वे इसी ओरके हों।

श्रीपति ज्योतिषी रोहिणीखेडके रहनेवाले थे और रोहिणीखेड बरारके बुलढाना जिलेका रोहनखेड़ नामका गाँव जान पड़ता है[2]। यदि श्रीपति सचमुच ही पुष्पदन्तके भतीजे हों तो पुष्पदन्तको भी बरारका रहनेवाला मानना चाहिए।

बरारकी भाषा मराठी है। अभी ग० वा० तगारे एम० ए०, बी० टी० नामक विद्वानने पुष्पदन्तको प्राचीन मराठीका महाकवि बतलाया है[3] और उनकी रचनाओंमेंसे बहुतसे ऐसे शब्द चुनकर बतलाये हैं, जो प्राचीन मराठीसे मिलते जुलते हैं[4]। वैयाकरण मार्कण्डेयने अपने 'प्राकृत-सर्वस्व' में अपभ्रंश भाषाके नागर, उपनागर और व्राचट ये तीन भेद किये हैं। इनमेंसे व्राचटको लाट (गुजरात) और विदर्भ (बरार) की भाषा बतलाया है। सो पुष्पदन्तकी अपभ्रंश व्राचट होनी चाहिए।

श्रीपतिने अपनी 'ज्योतिषरत्नमाला' पर स्वयं एक मराठी टीका लिखी थी, जो

---

१ महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदीने अपनी 'गणिततरंगिणी' में श्रीपतिका समय श० सं० ९२१ बतलाया है और स्वयं श्रीपतिने अपने 'धीकोटिदकरण' में अहर्गणसाधनके लिए श० सं० ९६१ का उपयोग किया है। जिससे अनुमान होता है कि वे उक्त समय तक जीवित थे। ध्रुवमानसकरणके सम्पादकने श्रीपतिका समय श० सं० ९५० के आसपास बतलाया है। पुष्पदन्त श० सं० ८९४ की मान्यखेटकी लूट तक बल्कि उसके भी बाद तक जीवित थे। अतएव दोनोंके बीच जो अन्तर है, वह इतना अधिक नहीं है कि चचा और भतीजेके बीच संभव न हो। श्रीपतिने उम्र भी शायद अधिक पाई हो।

२ बुलढाना जिलेके गज़ेटियरसे पता चला है कि इस रोहनखेड़में ईसाकी १५-१६ वीं शताब्दिमें खानदेशके सूबेदारों और बहमनी खान्दानके नवाबोंके बीच अनेक लड़ाइयाँ हुई हैं।

३ देखो सह्याद्रि (मासिकपत्र) का अप्रैल १९४१ का अंक, पृ० २५३-५६।

४ कुछ थोड़ेसे शब्द देखिए—उक्कुरड=उकिरडा (घूरा), गंजोल्लिय=गाँजलेले (दुखी), चिक्खिल्ल=चिखल (कीचड़), तुप्प=तूप (घी), पंगुरण=पांघरूण (ओढ़ना), फेड=फेडणे (लौटाना) बोकड=बोकड (बकरा), आदि।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार राजवाडेको मिली थी और उन्होंने उसे सन् १९१४ में प्रकाशित भी करा दिया था। मुझे उसकी प्रति अभी तक नहीं मिल सकी। उसके प्रारम्भका अंश इस प्रकार है: "ते या ईश्वररूपा कालातें मि। ग्रंथुकर्त्ता श्रीपति नमस्कारी। मी श्रीपति रत्नाचि माला रचितो।" इसकी भाषा गीताकी प्रसिद्ध टीका ज्ञानेश्वरीसे मिलती-जुलती है। इससे भी अनुमान होता है कि श्रीपति बरारके ही होंगे और इसलिए पुष्पदन्तका भी वहींका होना सम्भव है।

सबसे पहले पुष्पदन्तको हम मेलाडि या मेलपाटीके एक उद्यानमें पाते हैं और फिर उसके बाद मान्यखेटमें। मेलाडि उत्तर अर्काट जिलेमें है जहाँ कुछ कालतक राष्ट्रकूट महाराजा कृष्ण तृतीयका सेना-सन्निवेश रहा था और वहीं उनका भरत मन्त्रीसे प्रथम साक्षात् होता है। निज़ाम-राज्यका वर्तमान मलखेड ही मान्यखेट है।

यद्यपि इस समय मलखेड महाराष्ट्रकी सीमाके अन्तर्गत नहीं माना जाता, परन्तु बहुतसे विद्वानोंका मत है राष्ट्रकूटोंके समयमें वह महाराष्ट्रमें ही गिना जाता था और इसलिए तब वहाँ तक वैदर्भी अपभ्रंशकी पहुँच अवश्य रही होगी।

राष्ट्रकूटोंकी राजधानी पहले नासिकके पास मयूरखंडी या मोरखंडीमें थी, जो महाराष्ट्रमें ही है। अतएव राष्ट्रकूट इसी तरफके थे। मान्यखेटको उन्होंने अपनी राजधानी सुदूर दक्षिणके अन्तरीपपर शासन करनेकी सुविधाके लिए बनाया था, क्योंकि मान्यखेटमें केन्द्र रख कर ही चोल, चेर, पाण्ड्य देशोंपर ठीक तरहसे शासन किया जा सकता था।

भरतको कविने कई जगह भरत भट्ट लिखा है। नाइल्ल और सीलइय भी 'भट्ट' विशेषणके साथ उल्लिखित हुए हैं। इससे अनुमान होता है कि पुष्पदन्तको इन भट्टोंके मान्यखेटमें रहनेका पता होगा और उसी सूत्रसे वे घूमते-घामते उस तरफ पहुँचे होंगे। बहुत सम्भव है कि ये लोग भी पुष्पदन्तके ही प्रान्तके हों और महान् राष्ट्रकूटोंकी सम्पन्न राजधानीमें अपना भाग्य आजमानेके लिए आकर बस गये हों और कालान्तरमें राजमान्य हो गये हों। उस समय बरार भी राष्ट्रकूटोंके अधिकारमें था, अतएव वहाँके लोगोंका आवागमन मान्यखेट तक होना स्वाभाविक है। कमसे कम विद्योपजीवी लोगोंके लिए तो 'पुरन्दरपुरी' मान्यखेटका आकर्षण बहुत ज्यादा रहा होगा।

भरत मन्त्रीको कविने 'प्राकृतकविकाव्यरसावलुब्ध' कहा है और प्राकृतसे यहाँ उनका मतलब अपभ्रंशमें ही जान पड़ता है। इस भाषाको वे अच्छी तरह जानते होंगे और उसका आनन्द ले सकते होंगे, तभी न उन्होंने कविको इतना उत्साहित और सम्मानित किया होगा!

व्यक्तित्व और स्वभाव

पुष्पदन्तका एक नाम 'खण्ड'[1] था। शायद यह उनका घरू और बोलचालका नाम होगा। महाराष्ट्रमें खंडूजी, खंडोबा नाम अब भी कसरतसे रक्खे जाते हैं। अभिमानमेरु[2], अभिमान-चिह्न[3], काव्यरत्नाकर[4], कविकुलतिलक[5], सरस्वतीनिलय[6], कव्वपिसल्ल[7] (काव्यपिशाच या काव्यराक्षस) ये उनकी पदवियाँ थीं। यह पिछली पदवी बड़ी अद्भुत-सी है; परन्तु इसका उन्होंने स्वयं ही प्रयोग किया है। शायद अपनी महती कवित्व-शक्तिके कारण ही यह पद उन्होंने पसन्द किया हो। 'अभिमानमेरु' पद उनके स्वभावको भी व्यक्त करता है। वे बड़े ही स्वाभिमानी थे। महापुराणकी उत्थानिकासे मालूम होता है कि जब वे खलजनोंद्वारा अवहेलित और दुर्दिनोंसे पराजित होकर घूमते घामते मेलपाटीके बाहर एक बगीचेमें विश्राम कर रहे थे, तब 'अम्मइय' और 'इन्द्र' नामक दो पुरुषोंने आकर उनसे कहा, "आप इस निर्जन वनमें क्यों पड़े हुए हैं, पासके नगरमें क्यों नहीं चलते?" इसके उत्तरमें उन्होंने कहा, "गिरिकन्दराओंमें घास खाकर रह जाना अच्छा

---

१ (क) जो विहिणा णिम्मउ कव्वपिंडु, तं णिसुणेवि सो संचलिउ खंडु। —म० पु० सन्धि १, क० ६

(ख) मुग्धे श्रीमदनिन्द्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नतः। —म० पु० सन्धि ३

(ग) वाञ्छन्नित्थमहं कुतूहलवती खण्डस्य कीर्तिः कृतेः। —म० पु० स० ३९

२ (क) तं सुणेवि भणइ अहिमाणमेरु।—म० पु० १-३-१२

(ख) कं यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना।—म० पु० सं० ४५

(ग) णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु, अहिमाणमेरु गुणगणमहंतु।—ना० कु० १-२-२

३ वयसंजुत्ति उत्तमसत्ति वियलियसंकिं अहिमाणंकिं।—य० च० ४-३१-३

४ भो भो केसवतणुरुह णवसररुहमुह कव्वरयणरयणायर। म० पु० १-४-१०

५-६ (क) तं णिसुणेवि भरहें वुत्तु ताव, भो कइकुलतिलय विमुक्कगाव।—म० पु० १-८ १

(ख) अग्गइ कइराउ पुप्फयंतु सरसइणिलउ।

देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ।—य० च० १-८-१५

७ (क) जिणचरणकमलभत्तिल्लएण, ता जंपिउ कव्वपिसल्लएण।—म० पु० १-८-८

(ख) बोल्लाविउ कइ कव्वपिसल्लउ, किं तुहुं सच्चउ बप्प गहिल्लउ।—म० पु० ३८-३-५

(ग) णण्णस्स पत्थणाए कव्वपिसल्लेण पहसियमुहेण।—ना० च० अन्तिम पद्य

८..............महि परिभमंतु मेवाडिणयरु।

अवहेरियखलयणु गुणमहंतु दियहेहिं पराइउ पुप्फयंतु।
णंदणवणि किर वीसमइ जाम तहिं बिण्णि पुरिस संपत्त ताम।
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एव भो खंड गलियपावावलेव।
परिभमिरभमररवगुमगुमंति किं किर णिवसहि णिज्जणवणंति।
करिसरवहिरियदिक्कवालि पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि।
तं सुणिवि भणइ अहिमाणमेरु वर खज्जइ गिरिकंदरि कसेरु।
णउ दुज्जनभउँहावंकियाइं दीसंतु कलुसभावंकियाइं।

परन्तु दुर्जनोंकी टेढ़ी भौंहें देखना अच्छा नहीं। माताकी कूँखसे जन्मते ही मर जाना अच्छा परन्तु किसी राजाके भ्रूकुंचित नेत्र देखना और उसके कुवचन सुनना अच्छा नहीं। क्योंकि राजलक्ष्मी दुरते हुए चँवरोंकी हवासे सारे गुणोंको उड़ा देती है, अभिषेकके जलसे सुजनताको धो डालती है, विवेकहीन बना देती है, दर्पसे फूली रहती है, मोहसे अंधी रहती है, मारण-शीला होती है, सप्तांग राज्यके बोझेसे लदी रहती है, पिता-पुत्र दोनोंमें रमण करती है, विषकी सहोदरा और जड़-रक्त है। लोग इस समय ऐसे नीरस, और निर्विशेष (गुणाव-गुणविचाररहित) हो गये हैं कि बृहस्पतिके समान गुणियोंका भी द्वेष करते हैं। इसलिए मैंने इस वनकी शरण ली है और यहींपर अभिमानके साथ मर जाना ठीक समझा है।"
पाठक देखें कि इन पंक्तियोंमें कितना स्वाभिमान और राजाओं तथा दूसरे हृदयहीन लोगोंके प्रति कितने ज्वालामय उद्गार भरे हैं!

ऐसा मालूम होता है कि किसी राजाके द्वारा अवहेलित या उपेक्षित होकर ही वे घरसे चल दिये थे और भ्रमण करते हुए और बड़ा लम्बा दुर्गम रास्ता तय करके मेलपाटी पहुँचे थे। उनका स्वभाव स्वाभिमानी और कुछ उग्र तो था ही, अतएव कोई आश्चर्य नहीं जो राजाकी जरा-सी भी टेढ़ी भौंहको वे न सह सके हों और इसीलिए नगरमें चलनेके आग्रह करनेपर उन दो पुरुषोंके सामने ही राजाओंपर बरस पड़े हों। अपने उग्र स्वभावके कारण ही वे इतने चिढ़ गये और उन्हें इतनी वितृष्णा हो गई कि सर्वत्र दुर्जन ही दुर्जन दिखाई देने लगे, और सारा संसार निष्फल, नीरस, शुष्क प्रतीत होने लगा।

जान पड़ता है महामात्य भरत मनुष्य-स्वभावके बड़े पारखी थे। उन्होंने कविवरकी प्रकृतिको समझ लिया और अपने सद्व्यवहार, समादर और विनयशीलतासे सन्तुष्ट करके उनसे वह महान् कार्य करा लिया जो दूसरा शायद ही करा सकता।

राजाके द्वारा अवहेलित और उपेक्षित होनेके कारण दूसरे लोगोंने भी शायद उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया होगा, इसलिए राजाओंके साथ साथ औरोंसे भी वे प्रसन्न नहीं दिखलाई देते, उनको भी बुरा-भला कहते हैं; परन्तु भरत और नन्नकी लगातार प्रशंसा करते हुए भी वे नहीं थकते।

घत्ता—वर णरवर धवलच्छिहे होउ म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे।
खलकुच्छियपहुवयणइं भिउडियणयणइं म णिहालउ सूरुग्गमे॥
चमराणिलउड्डावियगुणाइ अहिसेयधोयसुयणत्तणाइ।
अविवेयइ दप्पुत्ताल्लियाइ मोहंधइ मारणसीलियाइ।
सत्तंगरज्जभरभारियाइ पिउपुत्तरमणरसयारियाइ।
विससहजम्मइ जडरत्तियाइ किं लच्छिइ विउसविरत्तियाइ।
संपइ जणु नीरसु णिव्विसेसु गुणवंतउ जहिं सुरगुरुवि वेसु।
तहिं अम्हइं लइ काणणु जि सरणु अहिमाणें सहुं वरि होउ मरणु।
१ जो जो दीसइ सो सो दुज्जणु णिप्फलु णीरसु जं सुक्कवणु।

उत्तरपुराणके अन्तमें उन्होंने अपना परिचय इस रूपमें दिया है, "[1] सिद्धिविलासिनीके मनोहर दूत, मुग्धा देवीके शरीरसे संभूत, निर्धनों और धनियोंको एक दृष्टिसे देखनेवाले, सारे जीवोंके अकारण मित्र, शब्दसलिलसे बढ़ा हुआ है काव्य-स्रोत जिनका, केशवके पुत्र, काश्यपगोत्री, सरस्वतीविलासी, सूने पड़े हुए घरों और देवकुलिकाओंमें रहनेवाले, कलिके प्रबल पाप-पटलोंसे रहित, बेघरबार, पुत्रकलत्रहीन, नदियों वापिकाओं और सरोवरोंमें स्नान करनेवाले, पुराने वस्त्र और बल्कल पहिननेवाले, धूलधूसरित अंग, दुर्जनोंके संगसे दूर रहनेवाले, ज़मीनपर सोनेवाले और अपने ही हाथोंको ओढ़नेवाले, पंडित-पंडित-मरणकी प्रतीक्षा करनेवाले, मान्यखेट नगरमें रहनेवाले, मनमें अरहंतदेवका ध्यान करनेवाले, भरत-मंत्रीद्वारा सम्मानित, अपने काव्यप्रबंधसे लोगोंको पुलकित करनेवाले और पापरूप कीचड़को जिन्होंने धो डाला है, ऐसे अभिमानमेरु पुष्पदन्तने, यह काव्य जिन-पदकमलोंमें हाथ जोड़े हुए भक्तिपूर्वक क्रोधनसंवत्सरकी असाढ़ सुदी दसवींको बनाया।

इस परिचयसे कविकी प्रकृति और उनकी निस्संगताका हमारे सामने एक चित्र-सा खिंच जाता है। एक बड़े भारी साम्राज्यके महामंत्रीद्वारा अतिशय सम्मानित होते हुए भी वे सर्वथा अकिंचन और निर्लिप्त ही रहे जान पड़ते हैं। नाममात्रके गृहस्थ होकर एक तरहसे वे मुनि ही थे।

एक जगह वे भरत महामात्यसे कहते हैं कि "[2] मैं धनको तिनकेके समान गिनता हूँ। उसे मैं नहीं लेता। मैं तो केवल अकारण प्रेमका भूखा हूँ और इसीसे तुम्हारे महलमें हूँ[3]। मेरी कविता तो जिन-चरणोंकी भक्तिसे ही स्फुरायमान होती है, जीविका-निर्वाहके खयालसे नहीं।"

---

१ सिद्धिविलासिणिमणहरदूएं मुद्धाएवीतणुसंभूएं।
णिद्धणसधणलोयसमचित्तें सव्वजीवणिक्कारणमित्तें ॥ २१
सद्दसलिलपरिवड्ढियसोत्तें केसवपुत्तें कासवगोत्तें।
विमलसरासइजणियविलासें सुण्णभवणदेवउलणिवासें ॥ २२
कलिमलपबलपडलपरिचत्तें णिग्घरेण णिप्पुत्तकलत्तें।
णइ-वावी-तलाय-सरह्लाणें जर-चीवर-वक्कल-परिहाणें ॥ २३
धीरें धूली-धूसरियंगें दूरयरुज्झिय-दुज्जणसंगें।
महिसयणयलें करपंगुरणें मग्गियपंडियपंडियमरणें ॥ २४
मण्णखेडपुरवरे णिवसंतें मणे अरहंतु देउ झायंतें।
भरहमण्णणिज्जें णयणिलएं कव्वपबंधजणियजणपुलएं ॥ २५
पुप्फयंतकइणा धुयपंकें जइ अहिमाणमेरुणामंकें।
कयउ कव्वु भत्तिए परमत्थें जिणपयपंकयमउलियहत्थें ॥ २६
कोहणसंवच्छरे आसाढए दहमए दियहे चंदरुइरूढए।

२ धणु तणुसमु मज्झु ण तं गहणु णेहु णिकारिमु इच्छमि।
देवीसुअ सुदणिहि तेण हउं णिलए तुहारए अच्छमि ॥—२० उत्तर पु०

३ मज्झु कइत्तणु जिणपयभत्तिहे पसरइ णउ णियजीवियवित्तिहे।—उ० पु०

इस तरहकी निस्पृहतामें ही स्वाभिमान टिक सकता है और ऐसे ही पुरुषको ' अभिमानमेरु ' पद शोभा देता है। कविने एक-दो जगह अपने रूपका भी वर्णन कर दिया है, जिससे मालूम होता है कि उनका शरीर बहुत ही दुबला पतला और साँवला था। वे बिल्कुल कुरूप थे[1] परन्तु सदा हँसते रहते थे[2]। जब बोलते थे तो उनकी सफेद दन्तपंक्तिसे दिशाएँ धवल हो जाती थीं[3]। यह उनकी स्पष्टवादिता और निरहंकारताका ही निदर्शन है, जो उन्होंने अपनेको शुद्ध कुरूप कहनेमें भी संकोच न किया।

पुष्पदन्तमें स्वाभिमान और विनयशीलताका एक विचित्र सम्मेलन दीख पड़ता है। एक ओर वे अपनेको ऐसा महान् कवि बतलाते हैं जिसकी बड़े बड़े विशाल ग्रंथोंके ज्ञाता और मुद्दतसे कविता करनेवाले भी बराबरी नहीं कर सकते[4] और सरस्वतीसे कहते हैं कि हे देवी, अभिमानरत्ननिलय पुष्पदन्तके बिना तुम कहाँ जाओगी—तुम्हारी क्या दशा होगी[5] ! और दूसरी ओर कहते हैं कि मैं दर्शन, व्याकरण, सिद्धान्त, काव्य, अलंकार कुछ भी नहीं जानता, गर्भमूर्ख हूँ। न मुझमें बुद्धि है, न श्रुतसंग है, न किसीका बल है[6]।

भावुक तो सभी कवि होते हैं परन्तु पुष्पदन्तमें यह भावुकता और भी बढ़ी चढ़ी थी। इस भावुकताके कारण वे स्वप्न भी देखा करते थे। आदिपुराणके समाप्त हो जाने पर किसी कारण उन्हें कुछ अच्छा नहीं लग रहा था, वे निर्विण्णसे हो रहे थे कि एक दिन उन्हें स्वप्नमें सरस्वती देवीने दर्शन दिया और कहा कि ' जन्ममरण-रोगके नाश करनेवाले अरहंत भगवानको, जो पुण्य-वृक्षको सींचनेके लिए मेघतुल्य हैं, नमस्कार करो। ' यह सुनते ही कविराज जाग उठे और यहाँ वहाँ देखते हैं तो कहीं कोई नहीं है, वे अपने घरमें

---

१ कसणसरीरें सुद्धकुरूवें मुद्धाएविगब्भसंभूवें। —उ० पु०

२ णण्णस्स पत्थणाए कव्वपिसल्लेण पहसियमुहेण।
णायकुमारचरित्तं रइयं सिरिपुप्फयंतेण ॥—णायकुमार च०
पहसियतुंडिं कइणा खंडें। —यशोधरचरित

३ सियदंतपंतिधवलीकयासु ता जंपइ वरवायाविलासु।

४ आजन्मं (?) कवितारसैकधिषणासौभाग्यभाजो गिरां
दृश्यन्ते कवयो विशालसकलग्रन्थानुगा बोधतः।
किन्तु प्रौढनिरूढगूढमतिना श्रीपुष्पदंतेन भोः
साम्यं बिभ्रति (?) नैव जातु कविता शीघ्रं त्वतः प्राकृते ॥ —प्र० श्लो० ४०

५ लोके दुर्जनसंकुले हतकुले तृष्णावशे नीरसे
सालंकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे।
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ साम्प्रतं
कं यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना ॥ —प्र० श्लो० ४५

६ ण हुम हु बुद्धिपरिग्गहु ण हु सुयसंगहु णउ कासु वि केरउ बलु। —उ० पु०

ही हैं। उन्हें बड़ा विस्मय हुआ।[1] इसके बाद भरतमंत्रीने आकर उन्हें समझाया और तब वे उत्तरपुराणकी रचनामें प्रवृत्त हुए।

कविके ग्रंथोंसे मालूम होता है कि वे महान् विद्वान् थे। उनका तमाम दर्शनशास्त्रोंपर तो अधिकार था ही, जैनसिद्धान्तकी जानकारी भी उनकी असाधारण थी। उस समयके ग्रन्थकर्ता चाहे वे किसी भी भाषाके हों, संस्कृतज्ञ तो होते ही थे। यद्यपि अभी तक पुष्पदन्तका कोई स्वतंत्र संस्कृत ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ है, फिर भी वे संस्कृतमें अच्छी रचना कर सकते थे। इसके प्रमाणस्वरूप उनके वे संस्कृत पद्य पेश किये जा सकते हैं जो उन्होंने महापुराण और यशोधरचरितमें भरत और नन्नकी प्रशंसामें लिखे हैं। व्याकरणकी दृष्टिसे यद्यपि उनमें कहीं कहीं कुछ स्खलनायें पाई जाती हैं, परन्तु वे कवियोंकी निरंकुशताकी ही द्योतक हैं, अज्ञानताकी नहीं।

कविकी ग्रन्थ-रचना

महाकवि पुष्पदन्तके अब तक तीन ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं और सौभाग्यकी बात है कि वे तीनों ही आधुनिक पद्धतिसे सुसम्पादित होकर प्रकाशित हो चुके हैं।

१ तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारु (त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालंकार) या महापुराण। यह आदिपुराण और उत्तरपुराण इन दो खण्डोंमें विभक्त है। ये दोनों अलग अलग भी मिलते हैं। इनमें त्रेसठ शलाका पुरुषोंके चरित हैं। पहलेमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवका और दूसरेमें शेष तेईस तीर्थंकरोंका और उनके समयके अन्य महापुरुषोंका। उत्तरपुराणमें पद्मपुराण (रामायण) और हरिवंशपुराण[2] (महाभारत) भी शामिल हैं और ये भी कहीं कहीं पृथक् रूपमें मिलते हैं।

अपभ्रंश ग्रंथोंमें सर्गकी जगह सन्धियाँ होती हैं। आदिपुराणमें ३७ और उत्तरपुराणमें ६५ सन्धियाँ हैं। दोनोंका श्लोकपरिमाण लगभग बीस हजार है। इसकी रचनामें कविको लगभग छह वर्ष लगे थे।

यह एक महान् ग्रन्थ है और जैसा कि कविने स्वयं कहा है, इसमें सब कुछ है और जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं है[3]।

---

१ मणि जाएण किं पि अमणोज्जें कइवयदियहइं केण वि कज्जें।
णिव्विण्णउ थिउ जाम महाकइ ता विवणंतरि पत्त सरासइ।
भणइ भडारी सुहयरुओहं पणमइ अरुहं सुहयरुमेहं।
इय णिसुणेवि विउद्धउ कइवरु सयलकलायरु णं छणससहरु।
दिसउ णिहालइ किं पि ण पेच्छइ जा विम्हियमइ णियघरि अच्छइ।—महापुराण ३८-२

२ केवल हरिवंशपुराणको जर्मनीके एक विद्वान् 'आल्सडर्फ' ने जर्मनभाषामें सम्पादित करके प्रकाशित किया है।

३—अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-
मर्थालंकृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः।
किञ्चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम्॥ —प्र० श्लो० ३७

महामात्य भरतकी प्रेरणा और प्रार्थनासे यह बनाया गया, इसलिए कविने इसकी प्रत्येक सन्धिके अन्तमें इसे ' महाभव्वभरहाणुमण्णिए ' (महाभव्यभरतानुमते) विशेषण दिया है और इसकी अधिकांश सन्धियोंमें प्रारम्भमें भरतका विविध-गुणकीर्तन किया है[1]।

जैनपुस्तकभण्डारोंमें इस ग्रन्थकी अनेकानेक प्रतियाँ मिलती हैं। इसपर अनेक टिप्पण-ग्रन्थ भी लिखे गये हैं, जिनमेंसे आचार्य प्रभाचन्द्र और श्रीचन्द्र मुनिके दो टिप्पण उपलब्ध हैं। श्रीचन्द्रने अपने टिप्पणमें लिखा है—' मूलटिप्पणिकां चालोक्य कृतमिदं समुच्चय-टिप्पणं। ' इससे मालूम होता है कि इस ग्रन्थपर स्वयं ग्रन्थकर्ताकी लिखी हुई मूल टिप्प-णिका भी थी, जिसका उपयोग श्रीचन्द्रने किया है। जान पड़ता है कि यह ग्रन्थ बहुत लोकप्रिय और प्रसिद्ध रहा है।

महापुराणकी प्रथम सन्धिके छठे कड़वकमें जो ' वीरभइरवणरिंदु ' शब्द आया है, उसपर प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण है—" वीरभैरवः अन्यः कश्चिद् दुष्टः महाराजो वर्तते, कथा-मकरन्दनायको वा कश्चिद्राजास्ति। " इससे अनुमान होता है कि ' कथा-मकरन्द ' नामका भी कोई ग्रन्थ पुष्पदन्तकृत होगा जिसमें इस राजाको अपनी श्रीविशेषसे सुरेन्द्रको जीतनेवाला और पर्वतके समान धीर बतलाया है। भरतमन्त्रीने इसीको लक्ष्य करके कहा था कि तुमने इस राजाकी प्रशंसा करके जो मिथ्यात्वभाव उत्पन्न किया है, उसका प्रायश्चित्त करनेके लिए महापुराणकी रचना करो।

२ णायकुमारचरिउ—(नागकुमारचरित)। यह एक खण्डकाव्य है। इसमें ९ सन्धियाँ है और यह णण्णणामंकिय (नन्ननामांकित) है। इसमें पंचमीके उपवासका फल बतलानेवाला नागकुमारका चरित है। इसकी रचना बहुत ही सुन्दर और प्रौढ है।

यह मान्यखेटमें नन्नके मन्दिर (महल) में रहते हुए बनाया गया है। प्रारम्भमें कहा गया है कि महोदधिके गुणवर्म और शोभन नामक दो शिष्योंने प्रार्थना की कि आप पंचमी-फलकी रचना कीजिए, महामात्य नन्नने भी उसे सुननेकी इच्छा प्रकट की और फिर नाइल्ल और शीलभट्टने भी आग्रह किया।

३ जसहरचरिउ (यशोधरचरित)। यह भी एक सुन्दर खण्डकाव्य है और इसमें ' यशोधर ' नामक पुराण-पुरुषका चरित वर्णित है। इसमें चार सन्धियाँ हैं। यह कथानक जैनसम्प्रदायमें इतना प्रिय रहा है कि सोमदेव, वादिराज, वासवसेन, सोमकीर्ति, हरिभद्र,

---

१ ये गुणकीर्तनके सम्पूर्ण पद्य महापुराणके प्रथम खण्डकी प्रस्तावनामें और जैनसाहित्यसंशोधक खण्ड २ अंक १ के मेरे लेखमें प्रकाशित हो चुके हैं।

२ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण परमार राजा जयसिंहदेवके राज्यकालमें और श्रीचन्द्रका भोजदेवके राज्य-कालमें लिखा गया है। देखो, अनेकान्त वर्ष ४, अंक १ में मेरा ' श्रीचन्द्र और प्रभाचन्द्र ' शीर्षक लेख।

कथाकल्याण आदि अनेक दिगम्बर-श्वेताम्बर लेखकोंने इसे अपने अपने ढंगसे प्राकृत और संस्कृतमें लिखा है।

यह ग्रन्थ भी भरतके पुत्र और वल्लभनरेन्द्रके गृहमन्त्रीके लिए उन्हींके महलमें रहते हुए लिखा गया था, इसलिए कविने इसके लिए प्रत्येक सन्धिके अन्तमें 'णण्णकण्णाभरण (नन्नके कानोंका गहना) विशेषण दिया है। इसकी दूसरी तीसरी और चौथी सन्धिके प्रारम्भमें नन्नके गुणकीर्तन करनेवाले तीन संस्कृत पद्य हैं[2]। इस ग्रंथकी कुछ प्रतियोंमें गन्धर्व कविके बनाये हुए कुछ क्षेपक भी शामिल हो गये हैं जिनकी चर्चा आगे की गई है। इसकी कई सटिप्पण प्रतियाँ भी मिलती हैं। बम्बईके ऐलक पन्नालाल सरस्वती-भवनमें (८०४ क) एक प्रति ऐसी है जिसमें ग्रन्थकी प्रत्येक पंक्तिकी संस्कृतच्छाया दी हुई है जो संस्कृतज्ञोंके लिए बहुत ही उपयोगी है।

उपलब्ध ग्रंथोंमें महापुराण उनकी पहली रचना है और यशोधरचरित सबसे पिछली रचना। इसकी अन्तिम प्रशस्ति उस समय लिखी गई है जब युद्ध और लूटके कारण मान्यखेटकी दुर्दशा हो गई थी, वहाँ दुष्काल पड़ा हुआ था, लोग भूखों मर रहे थे, जगह जगह नर-कंकाल पड़े हुए थे। नागकुमारचरित इससे पहले बन चुका होगा। क्योंकि उसमें स्पष्ट रूपसे मान्यखेटको 'श्रीकृष्णराजकी तलवारसे दुर्गम' बतलाया है। अर्थात् उस समय कृष्ण तृतीय जीवित थे। परन्तु यशोधरचरितमें नन्नको केवल 'वल्लभनरेन्द्रगृहमहत्तर' विशेषण दिया है और वल्लभनरेन्द्र राष्ट्रकूटोंकी सामान्य पदवी थी। वह खोट्टिगदेवके लिए भी प्रयुक्त हो सकती है और उनके उत्तराधिकारी कर्कके लिए भी। महापुराण श० सं० ८८७ में पूर्ण हुआ था और मान्यखेटकी लूट ८९५ के लगभग हुई। इसलिए इन सात आठ बरसोंके बीच कविके द्वारा इन दो छोटे छोटे उपलब्ध ग्रंथोंके सिवाय और भी ग्रंथोंके रचे जानेकी सम्भावना है।

कोश-ग्रन्थ। आचार्य हेमचन्द्रने अपनी 'देसीनाममाला'की स्वोपज्ञ वृत्तिमें किसी 'अभिमानचिह्न' नामक ग्रन्थकर्ताके सूत्र और स्वविवृत्तिके पद्य उद्धृत किये हैं[3]। क्या आश्चर्य है जो अभिमानमेरु और अभिमानचिह्न एक ही हों। यद्यपि पुष्पदन्तने प्रायः सर्वत्र ही अपने 'अभिमानमेरु' उपनामका ही उपयोग किया है, फिर भी यशोधरचरितके अन्तमें एक जगह अहिमाणंकि (अभिमानांक) या अभिमानचिह्न भी लिखा है[4]। इससे बहुत

---

१ कोंडिण्णगोत्तणहदिणयरासु वल्लहणरिंदघरमहयरासु।
णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु अहिमाणमेरु कइ पुप्फयंतु। —नागकुमारचरित १-२-२

२ देखो कारंजा-सीरीजका यशोधरचरित पृ०, २४, ४७, और ७५।

३ देखो, देसीनाममाला १-१४४, ६-९३, ७-१, ८-१२, १७।

४ देखो यशोधरचरित, पृ० १००, पंक्ति ३।

सम्भव है कि उनका कोई देसी शब्दोंका कोश ग्रन्थ भी स्वोपज्ञटीकासहित हो जो आचार्य हेमचन्द्रके समक्ष था ।

कविके आश्रयदाता

महामात्य भरत । पुष्पदन्तने दो आश्रयदाताओंका उल्लेख किया है, एक भरतका और दूसरे नन्नका । ये दोनों पिता-पुत्र थे और महाराजाधिराज कृष्णराज (तृतीय) के महामात्य । कृष्ण राष्ट्रकूट वंशका अपने समयका सबसे पराक्रमी, दिग्विजयी और अन्तिम सम्राट् था । इससे उसके महामात्योंकी योग्यता और प्रतिष्ठाकी कल्पना सहज ही की जा सकती है । नन्न शायद अपने पिताकी मृत्युके बाद ही महामात्य हुए होंगे । यद्यपि उस कालमें योग्यतापर कम ध्यान नहीं दिया जाता था, फिर भी बड़े बड़े राजपद प्रायः वंशानुगत होते थे ।

भरतके पितामहका नाम अण्णय्या, पिताका एयण और माताका श्रीदेवी था । वे कोण्डिन्य गोत्रके ब्राह्मण थे । कहीं कहीं इन्हें भरत भट्ट भी लिखा है । भरतकी पत्नीका नाम कुन्दव्वा था जिसके गर्भसे नन्न उत्पन्न हुए थे ।

भरत महामात्य-वंशमें ही उत्पन्न हुए थे[1] परन्तु सन्तानक्रमसे चली आई हुई यह लक्ष्मी (महामात्यपद) कुछ समयसे उनके कुलसे चली गई थी जिसे उन्होंने बड़ी भारी आपत्तिके दिनोंमें अपनी तेजस्विता और प्रभुकी सेवासे फिर प्राप्त कर लिया था ।[2]

भरत जैनधर्मके अनुयायी थे । उन्हें अनवरत-रचित-जिननाथ-भक्ति और जिनवर-समय-प्रासाद-स्तम्भ अर्थात् निरन्तर जिनभगवानकी भक्ति करनेवाले और जैनशासनरूप महलके स्तम्भ लिखा है ।

कृष्ण तृतीयके ही समयमें और उन्हींके सामन्त अरिकेसरीकी छत्रछायामें बने हुए नीतिवाक्यामृतमें अमात्यके अधिकार बतलाये गये हैं—आय, व्यय, स्वामिरक्षा और राजतंत्रकी पुष्टि । " आयो व्ययः स्वामिरक्षा तंत्रपोषणं चामात्यानामधिकारः । " उस समय साधारणतः रेवेन्यू-मिनिस्टरको अमात्य कहते थे । परन्तु भरत महामात्य होंगे । इससे मालूम होता है कि वे रेवेन्यूमिनिस्टरीके सिवाय राज्यके अन्य विभागोंका भी काम करते थे । राष्ट्रकूट-कालमें मन्त्रीके लिए शास्त्रज्ञके सिवाय शस्त्रज्ञ भी होना आवश्यक था, अर्थात् जरूरत होनेपर उसे युद्ध-क्षेत्रमें भी जाना पड़ता था ।

एक जगह पुष्पदन्तने लिखा भी है कि वे वल्लभराजके कटकके नायक अर्थात् सेनापति

---

१ महमत्तवंसधयवडु गहीरु (महामात्यवंशध्वजपटगभीरः) ।

२ तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना सन्तानक्रमतो गताऽपि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ साम्प्रतम् ॥
—प्र० श्लो० १५

हुए थे[1]। इसके सिवाय वे राजाके दानमंत्री भी थे[2]। इतिहासमें कृष्ण तृतीयके एक मंत्री नारायणका नाम तो मिलता है[3], जो कि बहुत ही विद्वान् और राजनीतिज्ञ था परन्तु भरत महामात्यका अब तक किसीको पता नहीं। क्योंकि पुष्पदन्तका साहित्य इतिहासज्ञोंके पास तक पहुँचा ही नहीं।

पुष्पदन्तने अपने महापुराणमें भरतका जो बहुत-सा परिचय दिया है, उसके सिवाय उन्होंने उसकी अधिकांश सन्धियोंके प्रारम्भमें कुछ प्रशस्तिपद्य भी पीछेसे जोड़े हैं जिनकी संख्या ४८ है[4]। उनमेंसे छह (५, ६, १६, ३०, ३५, ४८) तो शुद्ध प्राकृतके हैं और शेष संस्कृतके। इन ४८ पद्योंमें भरतका जो गुण-कीर्तन किया गया है, उससे भी उनके जीवनपर विस्तृत प्रकाश पड़ता है। हो सकता है कि उक्त सारा गुणानुवाद कवित्वपूर्ण होनेके कारण अतिशयोक्तिमय हो, परन्तु कविके स्वभावको देखते हुए उसमें सचाई भी कम नहीं जान पड़ती।

भरत सारी कलाओं और विद्याओंमें कुशल थे, प्राकृत कवियोंकी रचनाओंपर मुग्ध थे, उन्होंने सरस्वती सुरभिका दूध पिया था। लक्ष्मी उन्हें चाहती थी। वे सत्यप्रतिज्ञ और निर्मत्सर थे। युद्धोंका बोझ ढोते ढोते उनके कन्धे घिस गये थे,[5] अर्थात् उन्होंने अनेक लड़ाइयाँ लड़ी थीं।

बहुत ही मनोहर, कवियोंके लिए कामधेनु, दीन-दुखियोंकी आशा पूरी करनेवाले, चारों ओर प्रसिद्ध, परस्त्रीपराङ्मुख, सच्चरित्र, उन्नतमति और सुजनोंके उद्धारक थे[6]।

उनका रंग साँवला था, हाथीकी सूंडके समान उनकी भुजायें थीं, अङ्ग सुडौल थे,

---

१ सोयं श्रीभरतः कलंकरहितः कान्तः सुवृत्तः शुचिः सज्ज्योतिर्मणिराकरो प्लुत इवानर्घ्यो गुणैर्भासते।
वंशो येन पवित्रतामिह महामात्याह्वयः प्राप्तवान् श्रीमद्वल्लभराजशक्तिकटके यश्चाभवन्नायकः॥ प्र० श्लो० ४६

२ हं हो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्त्ता कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः।
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवलयशो धौतधात्रीतलान्तः ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम्॥१५

३ देखो खार्लेटगीका शिलालेख, इं० ए० जिल्द ४, पृ० ६०।

४ बम्बईके सरस्वती-भवनमें महापुराणकी जो बहुत ही अशुद्ध प्रति है उसकी ४२ वीं सन्धिके बाद एक 'हरति मनसो मोहं' आदि अशुद्ध पद्य अधिक दिया हुआ है। जान पड़ता है अन्य प्रतियोंमें शायद इस तरहके और भी कुछ पद्य होंगे।

५ ......णीसेसकलाविण्णाणकुसलु।
पाययकइकव्वरसावउद्धु संपीयसरासइसुरहिदुद्धु॥
कमलच्छु अमच्छरु सच्चसंधु रणभरधुरधरणुग्घुट्ठखंधु।

६ सविलासविलासिणिहियइथेणु सुपसिद्धमहाकइकामधेणु।
काणीणदीणपरिपूरियासु जसपसरपसाहियदसदिसासु॥
पररमणिपरम्मुहु सुद्धसीलु उण्णयमइ सुयणुद्धरणलीलु।

नेत्र सुन्दर थे और वे सदा प्रसन्नमुख रहते थे[1]।

भरत बहुत ही उदार और दानी थे। कविके शब्दोंमें बलि, जीमूत, दधीचि आदिके स्वर्गगत हो जानेसे त्याग गुण अगत्या भरत मंत्रीमें ही आकर बस गया था[2]।

एक सूक्तिमें कहा है कि भरतके न तो गुणोंकी गिनती हो सकती है और न उनके शत्रुओंकी[3]। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि इतने बड़े पदपर रहनेवालेके, चाहे वह कितना ही गुणी और भला हो, शत्रु तो हो ही जाते हैं।

इस समयके विचारशील लोग जिस तरह मन्दिर आदि बनवाना छोड़कर विद्योपासनाकी आवश्यकता बतलाते हैं उसी तरह भव्यात्मा भरतने भी वापी, कूप, तड़ाग और जैनमन्दिर बनवाना छोड़कर वह महापुराण बनवाया जो संसार-समुद्रको आरामसे तरनेके लिए नावतुल्य हुआ। भला उसकी वन्दना करनेको किसका हृदय नहीं चाहता[4]?

इस महाकविको आश्रय देकर और प्रेमपूर्ण आग्रहसे महापुराणकी रचना कराके सचमुच ही भरतने वह काम किया, जिससे कविके साथ उनकी भी कीर्ति चिरस्थायी हो गई। जैनमन्दिर और वापी, कूप, तड़ागादि तो न जाने कब नामशेष हो जाते।

पुष्पदन्त जैसे फक्कड़, निर्लोभ, निरासक्त और संसारसे उद्विग्न कविसे महापुराण जैसा महान् काव्य बनवा लेना भरतका ही काम था। इतना बड़ा आदमी एक अकिंचनका इतना सत्कार, इतनी खुशामद करे और उसके साथ इतनी सहृदयताका व्यवहार करे, यह एक बड़ी भारी बात है।

पुष्पदन्तकी मित्रता होनेसे भरतका महल विद्याविनोदका स्थान बन गया। वहाँ पाठक निरन्तर पढ़ते थे, गायक गाते थे, और लेखक सुन्दर काव्य लिखते थे[5]।

गृह-मन्त्री नन्न

ये भरतके पुत्र थे। नन्नको महामात्य नहीं किन्तु वल्लभनरेन्द्रका गृहमन्त्री लिखा है।

---

१ श्यामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय।
भरतच्छलेन सम्प्रति कामः कामाकृतिमुपेतः॥ प्र० श्लो० २०

२ देखो, पृष्ठ ३०३ के टिप्पणका पद्य।

३ धनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणां मुहुर्भ्रमताम्।
गणनैव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च॥ प्र० श्लो० २७

४ वापीकूपतडागजैनवसतीस्त्यक्त्वेह यत्कारितं
भव्यश्रीभरतेन सुन्दरधिया जैनं पुराणं महत्।
तत्कृत्वा प्रवमुत्तमं रविकृतिः (?) संसारवार्धेः सुखं
कोऽन्य (स्तत्सदृशो) स्ति कस्य हृदयं तं वन्दितुं नेहते॥ प्र० श्लो ४७

५ इह पठितमुदारं वाचकैर्गीयमानं इह लिखितमजस्रं लेखकैश्चारु काव्यं।
गतवति कविमित्रे मित्रतां पुष्पदन्ते भरत तव गृहेऽस्मिन्भाति विद्याविनोदः॥ प्र० श्लो० ४३

उनके विषयमें कविने थोड़ा ही लिखा है परन्तु जो कुछ लिखा है, उससे मालूम होता है कि वे भी अपने पिताके सुयोग्य उत्तराधिकारी थे और कविका अपने पिताके ही समान आदर करते थे, तथा अपने ही महलमें रखते थे।

नागकुमारचरितकी प्रशस्तिके अनुसार वे प्रकृतिसे सौम्य थे, उनकी कीर्ति सारे लोकमें फैली हुई थी, उन्होंने जिनमन्दिर बनवाये थे, वे जिन-चरणोंके भ्रमर थे और जिन-पूजामें निरत रहते थे, जिनशासनके उद्धारक थे, मुनियोंको दान देते थे, पापरहित थे, बाहरी और भीतरी शत्रुओंको जीतनेवाले थे, दयावान्, दीनोंके शरण राजलक्ष्मीके क्रीडासरोवर, सरस्वतीके निवास, तमाम विद्वानोंके साथ विद्या-विनोदमें निरत और शुद्ध-हृदय थे।[1]

एक प्रशस्ति-पद्यमें पुष्पदन्तने नन्नको उनके पुत्रों सहित प्रसन्न रहनेका आशीर्वाद दिया है।[2] इससे मालूम होता है कि उनके अनेक पुत्र थे। पर उनके नामोंका कहीं उल्लेख नहीं है।

कृष्णराज (तृतीय) के तो वे गृहमंत्री थे ही, परन्तु उनकी मृत्युके बाद खोट्टिगदेवके और शायद उनके उत्तराधिकारी कर्क (द्वितीय) के भी वे मंत्री रहे होंगे। क्योंकि यशोधरचरितके अन्तमें कविने लिखा है कि जिस नन्नने बड़े भारी दुष्कालके समय—जब कि सारा जनपद नीरस हो गया था, दुस्सह दुःख व्याप्त हो रहा था, जगह-जगह मनुष्योंकी खोपड़ियाँ और कंकाल फैले पड़े थे, सर्वत्र रंक ही रंक दिखलाई पड़ते थे,—सरस भोजन, सुन्दर वस्त्र और ताम्बूलादिसे मेरी खातिर की, वह चिरायु हो[3]। निश्चय ही मान्यखेटकी लूट और बरबादीके बादकी दुर्दशाका यह चित्र है और तब खोट्टिगदेवकी मृत्यु हो चुकी थी।

---

१ सुहतुंगभवणवावारभारणिव्वहणवीरधवलस्स।
कोंडिल्लगोत्तणहससहरस्स पयईए सोमस्स ॥ १
कुंदव्वागब्भसमुब्भवस्स सिरिभरहभट्टतणयस्स।
जसपसरभरियभुवणोयरस्स जिणचरणकमलभसलस्स ॥ २
अणवरयरइयवरजिणहरस्स जिणभवणपूयणिरयस्स ॥
जिणसासणायमुद्धारणस्स मुणिदिण्णदाणस्स ॥ ३
कलिमलकलंकपरिवज्जियस्स जियदुविहवइरिणियरस्स ॥
कारुण्णकंदणवजलहरस्स दीणजणसरणस्स ॥ ४ ॥
णिवलच्छीकीलासरवरस्स वाएसरिणिवासस्स।
णिस्सेसविउसविज्जाविणोयणिरयस्स सुद्धहियस्स ॥ ५ ॥

२ स श्रीमानिह भूतले सह सुतैर्नन्नाभिधो नन्दतात् ॥ यशो० २

३ अणवयणीरसि, दुरियमलीमसि। कइणिंदायरि, दुस्सहे दुहयरि।
पडियकवालइ, णरकंकालइ। बहुरंकालइ, अइदुक्कालइ।
पवरागारि सरसाहारि सण्हि। चेलि, वरतंबोलि।
महु उवयारिउ पुण्णि पेरिउ। गुणभत्तिल्लउ णण्णु महल्लउ। होउ चिराउसु...यशो० ४-३१

कविके कुछ परिचित जन

पुष्पदन्तने अपने ग्रन्थोंमें भरत और नन्नके सिवाय कुछ और लोगोंका भी उल्लेख किया है। मेलपाटीमें पहुँचनेपर सबसे पहले उन्हें दो पुरुष मिले जिनके नाम अम्मइय और इन्द्रराय थे। वे वहाँके नागरिक थे और इन्होंने भरत मंत्रीकी प्रशंसा करके उनके यहाँ नगरमें चलनेका आग्रह किया था। उत्तरपुराणके अन्तमें सबकी शांति-कामना करते हुए उन्होंने देविल्ल, भोगल्ल, सोहण, गुणवर्म, दंगइय और संतइयका उल्लेख किया है। इनमेंसे देविल्ल शायद भरतका पुत्र था जिसने महापुराणका सारी पृथिवीमें प्रसार किया। भोगल्लको चतुर्विधदानदाता, भरतका परम मित्र, अनुपमचरित्र और विस्तृतयशवाला बतलाया है। शोभन और गुणवर्मको निरन्तर जिनधर्मका पालनेवाला कहा है। नागकुमारचरितके अनुसार ये महोदधिके शिष्य थे और इन्होंने कविसे नागकुमारचरितकी रचना करनेकी प्रेरणा की थी। दंगइय और संतइयकी भी शान्ति-कामना की है। नागकुमारचरितमें दंगइयको आशीर्वाद दिया है कि उनका रत्नत्रय विशुद्ध हो। नाइल्ल और सीलइयका भी उल्लेख है। उन्होंने भी नागकुमारचरित रचनेका आग्रह किया था।

कविके समकालीन राजा

महापुराणकी उत्थानिकामें कहा है कि इस समय 'तुडिगु महानुभाव' राज्य कर रहे हैं। इस 'तुडिगु' शब्दपर टिप्पण-ग्रन्थमें 'कृष्णराजः' टिप्पण दिया हुआ है। कृष्णराज दक्षिणके सुप्रसिद्ध राष्ट्रकूटवंशमें हुए हैं जो अपने समयके महान् सम्राट् थे। 'तुडिगु' उनका घरू प्राकृत नाम था। इस तरहके घरू नाम राष्ट्रकूट और चालुक्य वंशके प्रायः सभी राजाओंके मिलते हैं[1]। वल्लभनरेन्द्र, वल्लभराय, शुभतुंगदेव और कण्हराय नामसे भी कविने उनका उल्लेख किया है।

शिलालेखों और दानपत्रोंमें अकालवर्ष, महाराजाधिराज, परमेश्वर, परममाहेश्वर, परमभट्टारक, पृथिवीवल्लभ, समस्तभुवनाश्रय आदि उपाधियाँ उनके लिए प्रयुक्त की गई हैं।

वल्लभराय पदवी पहले दक्षिणके चौलुक्य राजाओंकी थी, पीछे जब उनका राज्य राष्ट्रकूटोंने जीत लिया तब इस वंशके राजा भी इसका उपयोग करने लगे[2]।

भारतके प्राचीन राजवंश (तृ० भा० पृ० ५६) में इनकी एक पदवी 'कन्धारपुरवराधीश्वर, लिखी है। परन्तु हमारी समझमें वह भ्रमवश लिखी गई है। वास्तवमें 'कालिंजरपुरवराधीश्वर' होनी चाहिए। क्योंकि उन्होंने चेदिके कलचुरि-नरेश सहस्रार्जुनको जीता था और कालिंजरपुर चेदिका मुख्य नगर था। दक्षिणका कलचुरि राजा बिज्जल भी अपने नामके साथ 'कालिंजर-पुरवराधीश्वर' पद लगाता था।

---

१ जैसे गोज्जिग, बद्दिग, पुट्टिग, खोट्टिग आदि।

२ अरब लेखकोंने मानकिरके बल्हरा नामक बलाढ्य राजाओंका जो उल्लेख किया है, वह मान्यखेटके 'वल्लभराज' पद धारण करनेवाले राजाओंको ही लक्ष्य करके किया है।

अमोघवर्ष तृतीय या बद्दिगके तीन पुत्र थे—तुडिगु या कृष्ण तृतीय, जगत्तुंग और खोट्टिगदेव। कृष्ण सबसे बड़े थे जो अपने पिताके बाद गद्दीपर बैठे और चूँकि दूसरे जगत्तुंग उनसे छोटे थे तथा उनके राज्य-कालमें ही स्वर्गगत हो गये थे, इस लिए तीसरे पुत्र खोट्टिगदेव गद्दीपर बैठे। कृष्णके पुत्रका इस बीच देहान्त हो गया था और पौत्र भी छोटा था, इसलिए खोट्टिगदेवको अधिकार मिला।

कृष्ण तृतीय राष्ट्रकूट वंशके सबसे अधिक प्रतापी और सार्वभौम राजा थे। इनके पूर्वजोंका साम्राज्य उत्तरमें नर्मदा नदीसे लेकर दक्षिणमें मैसूर तक फैला हुआ था जिसमें सारा गुजरात, मराठी सी० पी०, और निज़ाम राज्य शामिल था। मालवा और बुन्देलखण्ड भी उनके प्रभावक्षेत्रमें थे। इस विस्तृत साम्राज्यको कृष्ण तृतीयने और भी बढ़ाया और दक्षिणका सारा अन्तरीप भी अपने अधिकारमें कर लिया। करहाड़के ताम्रपत्रोंके[1] अनुसार उन्होंने पाण्ड्य और केरलको हराया, सिंहलसे कर वसूल किया और रामेश्वरमें अपनी कीर्तिवल्लरीको लगाया। ये ताम्रपत्र मई सन् ९५९ (श० सं० ८८१) के हैं और उस समय लिखे गये हैं जब कृष्णराज अपने मेलपाटी नगरके सेना-शिबिरमें ठहरे हुए थे और अपना जीता हुआ राज्य और धन-रत्न अपने सामन्तों और अनुगतोंको उदारतापूर्वक बाँट रहे थे[2]। इनके दो ही महीने बाद लिखी हुई श्रीसोमदेवसूरिकी यशस्तिलक-प्रशस्तिसे भी इसकी पुष्टि होती है[3]। इस प्रशस्तिमें उन्हें पाण्ड्य, सिंहल, चोल, चेर आदि देशोंको जीतनेवाला लिखा है।

देवलीके[4] शिलालेखसे मालूम होता है कि उन्होंने कांचीके राजा दन्तिगको और वप्पुकको मारा, पल्लव-नरेश अन्तिगको हराया, गुर्जरोंके आक्रमणसे मध्य भारतके कलचुरियोंकी रक्षा की और अन्य शत्रुओंपर विजय प्राप्त की। हिमालयसे लेकर लंका और पूर्वसे लेकर पश्चिम समुद्र तकके राजा उनकी आज्ञा मानते थे। उनका साम्राज्य गंगाकी सीमाको भी पार कर गया था।

चोलदेशका राजा परान्तक बहुत महत्त्वाकांक्षी था। उसके कन्याकुमारीमें मिले हुए शिलालेखमें[5] लिखा है कि उसने कृष्ण तृतीयको हराकर वीर चोलकी पदवी धारण की। किस जगह हराया और कहाँ हराया, यह कुछ नहीं लिखा। बल्कि इसके विरुद्ध ऐसे अनेक प्रमाण मिले हैं जिनसे सिद्ध होता है कि ई० स० ९४४ (श० ८६६) से लेकर कृष्णके राज्य-कालके अन्त तक चोलमण्डल कृष्णके ही अधिकारमें रहा। तब उक्त लेखमें इतनी ही

---

१ एपिग्राफिया इंडिका जिल्द ४ पृ० २७८।

२ तं दीणदिण्णधण-कणयपयरु महि परिभमंतु मेल्लाडिणयरु।

३ "पाण्ड्यसिंहल-चोल-चेरमप्रभृतीन्महीपतीन्प्रसाध्य..."।

४ जर्नल बाम्बे ब्रांच रा० ए० सो० जिल्द १८, पृ० २३९ और लिस्ट आफ इन्सक्रप्शन्स सी० पी० एण्ड बरार, पृ० ८१।

५ त्रावणकोर आर्कि० सीरीज जि० ३, पृ० १४३, श्लोक ४८।

चढ़ाई हो सकती है कि सन् ९४४ के आसपास वीरचोलको राष्ट्रकूटोंके साथकी लड़ाईमें थोड़ी-सी अल्पकालिक सफलता मिल गई होगी।

दक्षिण अर्काट जिलेके सिद्धलिंगमादम स्थानके शिलालेखमें जो कृष्ण तृतीयके पाँचवें राज्य-वर्षका है उनके द्वारा कांची और तंजोरके जीतनेका उल्लेख है और उत्तरी अर्काटके शोलापुरम स्थानके ई० सं० ९४९-५० (श० सं० ८७१) के शिलालेखमें[2] लिखा है कि उस साल उन्होंने राजादित्यको मारकर तोडयि-मंडल या चोलमण्डलमें प्रवेश किया। यह राजादित्य परान्तक या वीरचोलका पुत्र था और चोल-सेनाका सेनापति थी। कृष्ण तृतीयके बहनोई और सेनापति भूतुगने इसे इसके हाथीके हौदेपर आक्रमण करके मारा थी और इसके उपलक्षमें उसे वनवासी प्रदेश उपहार मिला था।

ई० सन् ९१५ (शक सं० ८१७) में राष्ट्रकूट इन्द्र (तृतीय) ने परमार राजा उपेन्द्र (कृष्ण) को जीता था और तबसे कृष्ण तृतीय तक परमार राजे राष्ट्रकूटोंके मांडलिक थे। उस समय गुजरात भी परमारोंके अधीन था।

परमारोंमें सीयक या श्रीहर्ष राजा बहुत पराक्रमी था। जान पड़ता है इसने कृष्ण तृतीयके आधिपत्यके विरुद्ध सिर उठाया होगा और इसी कारण कृष्णको उसपर चढ़ाई करनी पड़ी होगी और उसे जीता होगा। इस अनुमानकी पुष्टि श्रवण-बेल्गोलके मारसिंहके शिलालेखसे[3] होती है जिसमें लिखा है कि उसने कृष्ण तृतीयके लिए उत्तरीय प्रान्त जीते और बदलेमें उसे 'गुर्जर-राज' का खिताब मिला। इसी तरह होलकेरीके[4] ई० स० ९६५ और ९६८ के शिलालेखोंमें मारसिंहके दो सेनापतियोंको 'उज्जयिनी-भुजंग' पदको धारण करने-वाला बतलाया है। ये गुर्जर-राज और उज्जयिनी-भुजंग पद स्पष्ट ही कृष्णद्वारा सीयकके गुजरात और मालवेके जीते जानेका संकेत करते हैं।

सीयक उस समय तो दब गया, परन्तु ज्यों ही पराक्रमी कृष्णकी मृत्यु हुई कि उसने पूरी तैयारीके साथ मान्यखेटपर धावा बोल दिया और खोट्टिगदेवको परास्त करके मान्यखेटको बुरी तरह लूटा और बरबाद किया।

पाइय-लच्छी नाममालाके कर्त्ता धनपालके कथनानुसार यह लूट वि० सं० १०२९ (श० सं० ८९४) में हुई और शायद इसी लड़ाईमें खोट्टिगदेव मारा गया। क्योंकि इसी साल उत्कीर्ण किया हुआ खरडाका शिलालेख[5] खोट्टिगदेवके उत्तराधिकारी कर्क (द्वितीय) का है।

कृष्ण तृतीय ई० स० ९३९ (श० सं० ८६१) के दिसम्बरके आसपास गद्दीपर

---

१ मद्रास एपिग्राफिकल कलेक्शन १९०९ नं० ३७५। २ ए० इं० जि० ५, पृ० १९५। ३ ए० इ० जि० १९, पृ० ८३। ४ आर्किलाजिकल सर्वे आफ साउथ इंडिया जि० ४, पृ० २०१। ५ एं० इं० जि० ५, पृ० १७९। ६ ए० इं० जि० ११, नं० २२–२३। ७ ए० इं० जि० १२, पृ० २६३।

बैठे होंगे। क्यों कि इस वर्षके दिसम्बरमें इनके पिता बद्दिग जीवित थे और कोल्लगल्लुकी शिलालेख फाल्गुन सुदी ६ शक स० ८८९ का है जिसमें लिखा है कि कृष्णकी मृत्यु हो गई और खोट्टिगदेव गद्दीपर बैठा। इससे उनका २८ वर्षतक राज्य करना सिद्ध होता है, परन्तु किलूर (द० अर्काट) के वीरत्तनेश्वर मन्दिरका शिलालेख[1] उनके राज्यके ३० वें वर्षका लिखा हुआ है। विद्वानोंका खयाल है कि ये राजकुमारावस्थामें, अपने पिताके जीते जी ही राज्यका कार्य सँभालने लगे थे, इसीसे शायद उस समयके दो वर्ष उक्त तीस वर्षके राज्य-कालमें जोड़ लिये गये हैं।

राष्ट्रकूटों और कृष्ण तृतीयका यह परिचय कुछ विस्तृत इस लिए देना पड़ा जिससे पुष्पदन्तके ग्रंथोंमें जिन जिन बातोंका जिक्र है, वे ठीक तौरसे समझमें आ जायें और समय निर्णय करनेमें भी सहायता मिले।

समय-विचार

महापुराणकी उत्थानिकामें कविने जिन सब ग्रन्थों और ग्रन्थकर्ताओंका उल्लेख किया है[3], उनमें सबसे पिछले ग्रन्थ धवल और जयधवल हैं[4]। पाठक जानते हैं कि वीरसेन स्वामीके शिष्य जिनसेनने अपने गुरुकी अधूरी छोड़ी हुई टीका जयधवलाको श० सं० ७५९ में राष्ट्रकूटनरेश अमोघवर्ष (प्रथम) के समयमें समाप्त की थी। अतएव यह निश्चित है कि पुष्पदन्त उक्त संवत्के बाद ही किसी समय हुए हैं, पहले नहीं।

रुद्रटका समय श्रीयुत काणे और डॉ० दे के अनुसार ई० सन् ८००–८५० के अर्थात् श० सं० ७२२ और ७७२ के बीच है। इससे भी लगभग उपर्युक्त परिणाम ही निकलता है।

अभी हाल ही डा० ए० एन० उपाध्येको अपभ्रंश भाषाका ' धम्मपरिक्खा ' नामका

---

१ मद्रास ए० क० १९१३ नं० २३६ । २ मद्रास एपिग्राफिक कलेक्शन सन् १९०२, नं० २३२ ।

३–अकलंक, कपिल (सांख्यकार), कणचर या कणाद (वैशेषिकदर्शनकर्ता), द्विज (वेदपाठक), सुगत (बुद्ध), पुरंदर (चार्वाक), दन्तिल, विशाख (संगीतशास्त्रकर्ता), भरत (नाट्यशास्त्रकार), पतंजलि, भारवि, व्यास, कोहल (कूष्माण्ड कवि), चतुर्मुख, स्वयंभु, श्रीहर्ष (हर्षवर्द्धन), द्रुहिण (भरतने अपने नाट्यशास्त्रमें द्रुहिण महात्माका उल्लेख किया है जो आठ रस मानते थे।) ईशान, बाण, धवल-जयधवल-सिद्धान्त, रुद्रट, और यशश्चिह्न, इतनोंका उल्लेख किया गया है। इनमेंसे अकलंक, चतुर्मुख और स्वयंभु जैन हैं। अकलंक देव, जयधवलाकार जिनसेनसे पहले हुए हैं। चतुर्मुख और स्वयंभुका ठीक समय अभी तक निश्चित नहीं हुआ है परन्तु स्वयंभु अपने पउमचरियमें आचार्य रविषेणका उल्लेख करते हैं जिन्होंने वि० सं० ७३३ में पद्मपुराण लिखा था। इससे उनसे पीछेके हैं। उन्होंने चतुर्मुखका भी स्मरण किया है। स्वयंभु भी अपभ्रंश भाषाके महाकवि थे। इनके पउमचरिउ (पद्मचरित) और अरिट्ठनेमिचरिउ (हरिवंशपुराण) उपलब्ध हैं। उनका स्वयंभु छन्द नामका एक छन्दशास्त्र भी है। ' पंचमिचरिय ' नामका ग्रन्थ भी उनका बनाया हुआ है, जो अभी तक कहीं प्राप्त नहीं हुआ है। उनका कोई अपभ्रंश भाषाका व्याकरण भी था। वे स्वयंभु यापनीय संघके अनुयायी थे, ऐसा महापुराण टिप्पणसे मालूम होता है।

४ णउ बुज्झिउ आयमु सद्धामु, सिद्धंतु धवलु जयधवलु णामु।

ग्रन्थ मिला है जिसके कर्त्ता बुध (पंडित) हरिषेण हैं, जो धक्कडवंशीय गोवर्द्धनके पुत्र और सिद्धसेनके शिष्य थे। वे मेवाड देशके चित्तौडके रहनेवाले थे और उसे छोड़कर कार्यवश अचलपुर गये थे[1]। वहाँपर उन्होंने वि० सं० १०४४ में अपना यह ग्रन्थ समाप्त किया था[2]। इस ग्रन्थके प्रारम्भमें अपभ्रंशके चतुर्मुख, स्वयंभु और पुष्पदन्त इन तीन महाकवियोंका स्मरण किया गया है[3]। इससे सिद्ध है कि वि० सं० १०४४ या श० सं० ९०९ से पहले ही पुष्पदन्त एक महाकविके रूपमें प्रसिद्ध हो चुके थे। अर्थात् पुष्पदन्तका समय ७५९ और ९०९ के बीच होना चाहिए। न तो उनका समय श० सं० ७५९ के पहले जा सकता है और न ९०९ के बाद।

अब यह देखना चाहिए कि वे श०सं० ७५९ (वि०सं० ८९४) से कितने बाद हुए हैं।

कविने अपने ग्रन्थोंमें तुडिगु[4], शुभतुंग[5], वल्लभनरेन्द्र[6] और कण्हरायका उल्लेख किया है और इन सब नामोंपर ग्रन्थोंकी प्रतियों और टिप्पण-ग्रन्थोंमें 'कृष्णराजः' टिप्पणी दी है। इसका अर्थ यह हुआ कि ये सभी नाम एक ही राजाके हैं। वल्लभराय या वल्लभनरेन्द्र राष्ट्रकूट राजाओंकी सामान्य पदवी थी, इसलिए यह भी मालूम हो गया कि कृष्ण राष्ट्रकूटवंशके राजा थे।

राष्ट्रकूटोंकी राजधानी पहले मयूरखंडी (नासिक) में थी, पीछे अमोघवर्ष (प्रथम) ने श० सं० ७३७ में उसे मान्यखेटमें प्रतिष्ठित की। पुष्पदंतने नागकुमारचरितमें कहा है कि कण्हराय (कृष्णराज) की हाथकी तलवाररूपी जलवाहिनीसे जो दुर्गम है और जिसके धवलगृहोंके शिखर मेघावलीसे टकराते हैं, ऐसी बहुत बड़ी मान्यखेट नगरी है[6]।

---

१ इह मेवाडदेसे जणसंकुले सिरिउजपुरणिग्गयधक्कडकुले।...
गोवद्धणु णामें उप्पण्णओ जो सम्मत्तरयणसंपुण्णओ॥
तहो गोवद्धणासु पिय गुणवइ जा जिणवरपय णिच्च वि पणवइ।
ताए जणिउ हरिसेणणाम सुओ जो संजाउ विबुहकइविस्सुओ॥
सिरिचित्तउडु चएवि अचलउरहो गउ णियकज्जें जिणहरपउरहो।
तहिँ छंदालंकारपसाहिइ धम्मपरिक्ख एह ते साहिइ॥

२ विक्कमणिवपरियत्तइ कालए ववगए वारिससहस चउतालए।

३ चउमुहु कव्वविरयणे सयंभु वि पुप्फयंतु अण्णाणणिसुंभु वि।
तिण्णि वि जोग्गा जेण तं सीसइ चउमुहमुहे थिय ताम सरासइ।
जो सयंभु सो देउपहाणउ अह कह लोयालोय वियाणउ।
पुप्फयंतु णवि माणुसु वुच्चइ जो सरसइए कया वि ण मुच्चइ।

४ भुवणेक्करामु रायाहिराउ जहिं अच्छइ 'तुडिगु' महाणुभाउ। म० पु० १-३-३

५ सुहतुंगदेवकमकमलभसलु णीसेसकलाविण्णाणकुसलु। म० पु० १-५-२

६ वल्लभणरिंदघरमहयरासु।—य० च० का प्रारंभ।

६ सिरिकण्हरायकरयलणिहियअसिजलवाहिणि दुग्गयरि।
धवलहरसिहरिहयमेहउलि पविउल मण्णखेडणयरि॥

राष्ट्रकूटवंशमें कृष्ण नामके तीन राजा हुए हैं, एक तो वे जिनकी उपाधि शुभतुंग थी। परन्तु उनके समय तक मान्यखेट राजधानी ही नहीं थी, इसलिए पुष्पदंतका मतलब उनसे नहीं हो सकता।

द्वितीय कृष्ण अमोघवर्ष (प्रथम) के उत्तराधिकारी थे, जिनके समयमें गुणभद्राचार्यने श० सं० ८२० में उत्तरपुराणकी समाप्ति की थी और जिन्होंने श० सं० ८३३ तक राज्य किया है। परन्तु इनके साथ उन सब बातोंका मेल नहीं खाता जिनका पुष्पदन्तने उल्लेख किया है। इसलिए कृष्ण तृतीयको ही हम उनका समकालीन मान सकते हैं क्योंकि—

१—जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है चोलराजाका सिर कृष्णराजने कटवाया था[1], इसके प्रमाण इतिहासमें मिलते हैं और चोल देशको जीत कर कृष्ण तृतीयने अपने अधिकारमें कर लिया था। २—यह चोलनेरश 'परान्तक' ही मालूम होता है जिसने वीरचोलकी पदवी धारण की थी।

३—धारानरेश-द्वारा मान्यखेटके लूटे जानेका जो उल्लेख पुष्पदन्तने किया है,[2] वह भी कृष्ण द्वितीयके साथ मेल नहीं खाता। यह घटना कृष्णराज तृतीयकी मृत्युके बाद खोट्टिगदेवके समय की है और इसकी पुष्टि अन्य प्रमाणोंसे भी होती है। धनपालने अपनी 'पाइयलच्छी (प्राकृतलक्ष्मी) नाममाला'में लिखा है कि वि० सं० १०२९ में मालव-नरेन्द्रने मान्यखेटको लूटा[3]।

मान्यखेटको किस मालव-राजाने लूटा, इसका पता परमार राजा उदयादित्यके समयके उदयपुर (ग्वालियर) के शिलालेखमें[4] परमार राजाओंकी जो प्रशस्ति दी है उससे लगता है। उसके १२ वें पद्यमें लिखा है कि हर्षदेवने खोट्टिगदेवकी राजलक्ष्मीको युद्धमें छीन लिया[5]।

ये हर्षदेव ही धारानरेश थे, जो सीयक (द्वितीय) या सिंहभट भी कहलाते थे, और जैसा कि पहले बताया जा चुका है, जिनपर कृष्ण तृतीयने चढ़ाई की थी। खोट्टिगदेव कृष्ण तृतीयके भाई और उत्तराधिकारी थे।

४—महापुराणकी रचना जिस सिद्धार्थ संवत्सरमें शुरू की गई थी, उसी संवत्सरमें

---

१ उब्बद्धजूडु भूभंगभीसु तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु।

२ दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम्।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥ प्र० श्लो० ३६

३—विक्कमकालस्स गए अउणुत्तीसुत्तरे सहस्सम्मि।
मालवणरिंदधाडीए लूडिए मण्णखेडम्मि ॥ २७६ ॥

४ एपिग्राफिआ इंडिका जिल्द १, पृ० २२६।

५—श्रीहर्षदेव इति खोट्टिगदेवलक्ष्मीं जग्राह यो युधि नगादसमप्रतापः।

सोमदेवसूरिने अपना यशस्तिलक चम्पू समाप्त किया था और उस समय कृष्ण तृतीयका पड़ाव मेल्पाटीमें था। पुष्पदन्तने भी अपने ग्रंथ-प्रारंभके समय कृष्णराजका मेल्पाटीमें रहनेका उल्लेख किया है। साथ ही यशस्तिलककी प्रशस्तिमें उनको चोल आदि देशोंका जीतनेवाला भी लिखा है[1]। ऐसी दशामें पुष्पदन्तका कृष्ण तृतीयके समयमें होना निःसंशयरूपसे सिद्ध हो जाता है।

पहले उक्त मेल्पाटीमें ही पुष्पदन्त पहुँचे थे, सिद्धार्थ संवत्सरमें ही उन्होंने अपना महापुराण प्रारंभ किया था और यह सिद्धार्थ श० सं० ८८१ ही था। मेल्पाटी या मेलाडिमें श० ८८१ में कृष्णराज थे, इसके और भी प्रमाण मिले हैं जो ऊपर दिये जा चुके हैं।

इन सब प्रमाणोंसे हम इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि श० सं० ८८१ में पुष्पदन्त मेल्पाटीमें भरत महामात्यसे मिले और उनके अतिथि हुए। इसी साल उन्होंने महापुराण शुरू करके उसे श० सं० ८८७ में समाप्त किया। इसके बाद उन्होंने नागकुमार-चरित और यशोधर-चरित बनाये। यशोधर-चरितकी समाप्ति उस समय हुई जब मान्यखेट लूटा जा चुका था। यह श० सं० ८९४ के लगभगकी घटना है। इस तरह वे ८८१ से लेकर कमसे कम ८९४ तक, लगभग तेरह वर्ष, मान्यखेटमें महामात्य भरत और नन्नके संमानित अतिथि होकर रहे, यह निश्चित है। उसके बाद वे और कब तक जीवित रहे, यह नहीं कहा जा सकता।

बुध हरिषेणकी धर्मपरीक्षा मान्यखेटकी लूटके कोई पन्द्रह वर्ष बादकी रचना है। इतने थोड़े ही समयमें पुष्पदन्तकी प्रतिभाकी इतनी प्रसिद्धि हो चुकी थी। हरिषेण कहते हैं कि पुष्पदंत मनुष्य थोड़े ही हैं, उन्हें सरस्वती देवी कभी नहीं छोड़ती, सदा साथ रहती है।

एक शंका

महापुराणकी ५० वीं सन्धिके प्रारम्भमें जो 'दीनानाथधनं' आदि संस्कृत पद्य है और पहले उद्धृत किया जा चुका है, और जिसमें मान्यखेटके नष्ट होनेका संकेत है, वह श० सं० ८९४ के बादका है और महापुराण ८८७ में ही समाप्त हो चुका था। तब शंका होती है कि वह उसमें कैसे आया?

इसका समाधान यह है कि उक्त पद्य ग्रन्थका अविच्छेद्य अंग नहीं है। इस तरहके अनेक पद्य महापुराणकी भिन्न भिन्न संधियोंके प्रारम्भमें दिये गये हैं। ये सभी मुक्तक हैं, भिन्न भिन्न समयमें रचे जाकर पीछेसे जोड़े गये हैं और अधिकांश महामात्य भरतकी प्रशंसाके हैं। ग्रन्थ-रचना-क्रमसे जिस तिथिको जो संधि प्रारम्भ की गई, उसी तिथिको उसमें

१—"शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेष्वष्टस्वेकाशीत्यधिकेषु गतेषु अंकतः ८८१ सिद्धार्थसंवत्सरान्तर्गतचैत्रमासमदनत्रयोदश्यां पाण्ड्य-सिंहल-चोल-चेरमप्रभृतीन्महीपतीन्प्रसाध्य मेल्पाटीप्रवर्धमानराज्यप्रभावे श्रीकृष्णराजदेवे सति तत्पादपद्मोपजीविनः समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्ताधिपतेश्चालुक्यकुलजन्मनः सामन्तचूडामणेः श्रीमदरिकेसरिणः प्रथमपुत्रस्य श्रीमद्वद्दिगराजस्य लक्ष्मीप्रवर्धमानवसुधारायां गंगधारायां विनिर्मापितमिदं काव्यमिति।"

दिया हुआ पद्य निर्मित नहीं हुआ है। यही कारण है कि सभी प्रतियोंमें ये पद्य एक ही स्थानपर नहीं मिलते हैं। एक पद्य एक प्रतिमें जिस स्थानपर है, दूसरी प्रतिमें उस स्थानपर न होकर किसी और ही स्थानपर है। किसी किसी प्रतिमें उक्त पद्य न्यूनाधिक भी हैं। अभी बम्बईके सरस्वतीभवनकी प्रतिमें हमें एक पूरा पद्य[1] और एक अधूरा पद्य अधिक भी मिला है[2] जो अन्य प्रतियोंमें नहीं देखा गया।

यशोधरचरितकी दूसरी, तीसरी और चौथी सन्धियोंमें भी इसी तरहके तीन संस्कृत पद्य नन्नकी प्रशंसाके हैं जो अनेक प्रतियोंमें हैं ही नहीं। इससे यही अनुमान करना पड़ता है कि ये सभी या अधिकांश पद्य भिन्न भिन्न समयोंमें रचे गये हैं और प्रतिलिपियाँ कराते समय पीछेसे जोड़े गये हैं। गरज यह कि 'दीनानाथधनं' आदि पद्य मान्यखेटकी लूटके बाद ही लिखा गया है और उसके बाद जो प्रतियाँ लिखी गईं, उनमें जोड़ा गया है। उसके पहले जो प्रतियाँ लिखी जा चुकी होंगी उनमें यह न होगा।

इस प्रकारकी एक प्रति महापुराणके सम्पादक डा० पी० एल० वैद्यको नाँदणी (कोल्हापुर) के श्री तात्या साहब पाटीलसे मिली है जिसमें उक्त पद्य नहीं हैं[3]। ८९४ के पहलेकी लिखी हुई इस तरहकी और भी प्रतियोंकी प्रतिलिपियाँ मिलनेकी सम्भावना है।

एक और शंका

'महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण' शीर्षक लेख मैंने 'भाण्डारकर इन्स्टिट्यूट' पूनाकी वि० सं० १६३० की लिखी हुई जिस प्रतिके आधारसे लिखा था उसमें प्रशस्तिकी तीन पंक्तियाँ इस रूपमें हैं—

> पुप्फयंतकइणा धुयपंकें जइ अहिमाणमेरुणामंकें।
> कयउ कव्वु भत्तिए परमत्थें छसयछडोत्तरकयसामत्थें॥
> कोहणसंवच्छरे आसाढए, दहमए दियहे चंदरुइरूढए।

इसके 'छसयछडोत्तरकयसामत्थें' पदका अर्थ उस समय यह किया गया था कि यह ग्रन्थ शकसंवत् ६०६ में समाप्त हुआ[4]। परन्तु पीछे जब गहराईसे विचार किया गया तब पता लगा कि ६०६ संवत्का नाम क्रोधन हो ही नहीं सकता, चाहे वह शक संवत् हो, विक्रम संवत् हो, गुप्त संवत् हो, या कलचुरि संवत् हो। इसलिए उक्त पाठके सही होनेमें

---

१ हरति मनसो मोहं द्रोहं महाप्रियजंतुजं भवतु भविनां दंभारंभः प्रशांतिकृतो—।
जिनवरकथाग्रन्थप्रस्तागमितस्त्वया कथय कमयं तोयस्तीते गुणान् भरतप्रभो।
यह पद्य बहुत ही अशुद्ध है। —४२ वीं संधिके बाद

२ आकल्पं भरतेश्वरस्तु जयताद्येनादरात्कारिता।
श्रेष्ठायं भुवि मुक्तये जिनकथा तत्त्वामृतस्यन्दिनी। —४३ वीं सन्धिके बाद

३ देखो, महापुराण प्र० खं०, डा० पी० एल० वैद्य-लिखित भूमिका पृ० १७।

४ स्व० बाबा दुलीचन्दजीकी ग्रन्थ-सूचीमें भी पुष्पदन्तका समय ६०६ दिया हुआ है।

सन्देह होने लगा। 'छसयछडोत्तर' तो खैर ठीक, पर 'कयसामत्थें' का अर्थ दुरूह हो गया। तृतीयान्त पद होनेके कारण उसे कविका विशेषण बनानेके सिवाय और कोई चारा नहीं था। यदि बिन्दी निकालकर उसे सप्तमी समझ लिया जाय, तो भी 'कृतसामर्थ्ये' का कोई अर्थ नहीं बैठता। अतएव शुद्ध पाठकी खोज की जाने लगी।

सबसे पहले प्रो० हीरालालजी जैनने अपने 'महाकवि पुष्पदन्तके समयपर विचार' लेखमें[1] बतलाया कि कारंजाकी प्रतिमें उक्त पाठ इस तरह दिया हुआ है—

> पुप्फयंतकइणा धुयपंकें जइ अहिमाणमेरुणामंकें।
> कयउ कव्वु भत्तिए परमत्थें जिणपयपंकयमउलियहत्थें।
> कोहणसंवच्छरे आसाढए दहमइ दिवहे चंदरुइरूढए॥

अर्थात् क्रोधन संवत्सरकी असाढ़ सुदी १० को जिन भगवानके चरण-कमलोंके प्रति हाथ जोड़े हुए अभिमानमेरु, धूतपंक (धुल गये हैं पाप जिसके), और परमार्थी पुष्पदन्त कविने भक्तिपूर्वक यह काव्य बनाया।

यहाँ बम्बईके सरस्वती-भवनमें जो प्रति (१९३ क) है, उसमें भी यही पाठ है और हमारा विश्वास है कि अन्य प्रतियोंमें भी यही पाठ मिलेगा।

ऐसा मालूम होता है कि पूनेवाली प्रतिके अर्द्धदग्ध लेखकको उक्त स्थानमें सिर्फ मिती लिखी देखकर संवत्-संख्या देनेकी जरूरत महसूस हुई और उसकी पूर्ति उसने अपनी विलक्षण बुद्धिसे स्वयं कर डाली।

यहाँ यह बात नोट करने लायक है कि कविने सिद्धार्थ संवत्सरमें अपना ग्रन्थ प्रारम्भ किया और क्रोधन संवत्सरमें समाप्त। न वहाँ शक संवत्की संख्या दी और न यहाँ।

तीसरी शंका

लगभग पन्द्रह वर्ष पहले पं० जुगलकिशोरजी मुख्तारको शंका हुई थी कि पुष्पदन्त प्राचीन नहीं है। उन्होंने इस विषयमें एक लेख[2] भी लिखा था और उसमें नीचे लिखी प्रशस्तिके आधारपर 'जसहरचरिउ' की रचनाका समय वि० सं० १३६५ बतलाया था।

> किउ उवरोहें जस्स कइयइ एउ भवंतर।
> तहो भव्वहु णामु पायडमि पयडउ धर॥ २९॥
> चिरु पट्टणे छंगेसाहु साहु तहो सुउ खेला गुणवंतु साहु।
> तहो तणुरुहु वीसलु णाम साहु वीरो साहुणियहि सुलेहु णाहु।
> सोयारु सुयणगुणगणसणाहु एकइया चिंतइ चित्ति लाहु।
> हो पंडियठक्कुर कण्हपुत्त उवयारियवल्लहपरममित्त॥

---

१ जैनसाहित्य संशोधक भाग २, अंक ३–४।

२ देखो, जैनजगत् (१ अक्टूबर सन् १९२६) में 'महाकवि पुष्पदन्तका समय'।

कइपुप्फयंति जसहरचरिउ   किउ सुहु सद्दलक्खणविचित्तु ।
पेसहिं तहिं राउलु कउलु अज्जु   जसहरविवाहु तह जणियचोज्जु ।
सयलहं भवभमणभवंतराइं   महु वंछिउ करहि णिरंतराइं ॥
ता साहुसमीहिउ कियउ सव्वु   राउलु विवाहु भवभमणु भव्वु ।
वक्खाणिउ पुरउ हवेइ जाम   संतुट्ठउ वीसलु साहु ताम ।
जोइणिपुरवरि णिवसंतु सिट्ठु   साहुहि घरे सुत्थियणहु घुट्ठु ॥
पणसट्ठिसहियतेरहसयाइं   णिवविक्कमसंवच्छरगयाइं ।
वइसाहपहिल्लइ पक्खि बीय   रविवारि समित्थउ मिस्सतीय ॥
चिरु वत्थुबंधि कइ कियउ जं जि   पद्धडियबंधि मइं रइउ तं जि ।
गंधव्वें कण्हडणंदणेण   आयहं भवाइं किय थिरमणेण ।
महु दोसु ण दिज्जइ पुव्वि कहिउ   कइवच्छराइं तं सुत्तु लइउ ॥

परन्तु जान पड़ता है कि उस समय इस पंक्तियोंका ठीक ठीक अर्थ नहीं समझा गया था । वास्तवमें इसका भावार्थ यह है—

" जिसके उपरोध या आग्रहसे कविने यह पूर्वभवोंका वर्णन किया (अब मैं) उस भव्यका नाम प्रकट करता हूँ । पहले पट्टणे या पानीपतमें छंगे साहु नामके एक साहु थे । उनके खेला साहु नामके गुणी पुत्र हुए । फिर खेला साहुके वीसल साहु हुए जिनकी पत्नीका नाम वीरो था । वे गुणी श्रोता थे । एक दिन उन्होंने अपने चित्तमें (सोचा और कहा) कि हे कण्हके पुत्र पंडित ठक्कुर (गन्धर्व), वल्लभराय (कृष्ण तृतीय) के परम मित्र और उपकारित कवि पुष्पदन्तने सुन्दर और शब्दलक्षणविचित्र जो जसहरचरिउ बनाया है उसमें यदि राजा और कौलका प्रसंग, यशोधरका आश्चर्यजनक विवाह और सबके भवांतर और प्रविष्ट कर दो, तो मेरा मन-चाहा हो जाय । तब मैंने वही सब कर दिया, जो साहुने चाहा था—राउलु (राजा) और कौलका प्रसंग, विवाह और भवांतर । फिर जब वीसल साहुके सामने व्याख्यान किया, सुनाया, तब वे संतुष्ट हुए । योगिनीपुर (दिल्ली) में साहुके घर अच्छी तरह सुस्थितिपूर्वक रहते हुए विक्रम राजाके १३६५ संवत्में पहले वैशाखके दूसरे पक्षकी तीज रविवारको यह कार्य पूरा हुआ । पहले कवि (वच्छराय) ने जिसे वस्तुछन्दमें बनाया था, वही मैंने पद्धडीबद्ध रचा । कन्हडके पुत्र गन्धर्वने स्थिर मनसे भवांतरोंको कहा है । इसमें कोई मुझे दोष न दे । क्योंकि पूर्वमें वच्छरायने यह कहा था । उसीके सूत्रोंको लेकर मैंने कहा । "

इसके आगेका घत्ता और प्रशस्ति स्वयं पुष्पदन्तकृत है जिसमें उन्होंने अपना परिचय दिया है ।

---

१ ' पट्टण ' पर ' पाणीपत ' टिप्पणी दी हुई है ।

पूर्वोक्त पद्योंसे बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि गन्धर्व कविने दिल्लीमें पानीपतके रहनेवाले बीसल साहु नामक धनीकी प्रेरणासे तीन प्रकरण स्वयं बना कर पुष्पदन्तके यशोधर-चरितमें पीछेसे सं० १३६५ में शामिल किये हैं और कहाँ कहाँ शामिल किये हैं, सो भी यथास्थान ईमानदारीसे बतला दिया है। देखिए—

१ पहली सन्धिके चौथे कडवकके ' चाएण कण्णु विहवेण इंदु ' आदि पंक्तिके बाद आठवें कडवकके अन्त तककी ८१ लाइनें गन्धर्वरचित हैं जिनमें राजा मारिदत्त और भैरवकुलाचार्यका संलाप है। उनके अन्तमें कहा है—

गंधव्वु भणइ मइं कियउ एउ   णिव-जोइसहो संजोयभेउ।

अग्गइ कइराउ पुष्फयंतु सरसइणिलउ।

देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ॥

अर्थात् गन्धर्व कहता है कि यह राजा और योगीश (कौलाचार्य) का संयोग-भेद मैंने कहा। अब आगे सरस्वतीनिलय कविकुलतिलक कविराज पुष्पदन्त (मैं नहीं) देवीका स्वरूप वर्णन करते हैं।

२ पहली ही सन्धिके २४ वें कडवककी ' पोढत्तणि पुट्ठि पलट्ठियंगु ' आदि लाइनसे लेकर २७ वें कडवक तककी ७९ लाइनें भी गन्धर्वकी हैं। इसे उन्होंने ७९ वीं लाइनमें इस तरह स्पष्ट किया है—

जं वासवसेणिं पुव्वि रइउ   तं पेक्खवि गंधव्वेण कहिउ।

अर्थात् वासवसेनने पूर्वमें जो (ग्रन्थ) रचा था, उसको देखकर ही यह गंधर्वने कहा।

३ चौथी संधिके २२ वें कडवककी ' जज्जरिउ जेण बहुभेयकम्मु ' आदि १५ वीं पंक्तिसे लेकर आगेकी १७२ लाइनें भी गन्धर्वकी हैं। इसके आगे भी कुछ लाइनें प्रकरणके अनुसार कुछ परिवर्तित करके लिखी गई हैं[2]। फिर एक घत्ता और १५ लाइनें गन्धर्वकी हैं

---

१ मुनि वासवसेनके इस यशोधरचरितकी प्रति बम्बईमें (नं० ६०४ क) मौजूद है। यह संस्कृतमें है। इसकी अन्तिम पुष्पिकामें ' इति यशोधरचरिते मुनिवासवसेनकृते काव्ये...अष्टमः सर्गः समाप्तः ' वाक्य है। प्रारम्भमें लिखा है ' प्रभंजनादिभिः पूर्वं हरिषेणसमन्वितैः, यदुक्तं तत्कथं शक्यं मया बालेन भाषितुम्। ' इससे मालूम होता है कि उनसे पूर्व प्रभंजन और हरिषेणने यशोधरके चरित लिखे थे। इन कविवरने अपने समय और कुलादिका कोई परिचय नहीं दिया है। परन्तु इतना तो निश्चित है कि वे गन्धर्व कविसे पहले हुए हैं। इस ग्रन्थकी एक प्रति प्रो० हीरालालजीने जयपुरके बाबा दुलीचन्दजीके भंडारमें भी देखी थी और उसके नोट्स लिये थे। हरिषेण शायद वे ही हों, जिनकी धर्मपरीक्षा (अपभ्रंश) अभी डा० उपाध्येने खोज निकाली है।

२ अपरिवर्तित पाठ मुद्रित ग्रंथमें न होनेके कारण यहाँ दे दिया जाता है—

सो जसवइ सो कल्लाणमित्तु   सो अभयणाउ सो मारिदत्तु।

वणिकुलपंकयबोहणदिणेसु   सो गोवड्ढणु गुणगणविसेसु॥

जो ऊपर भावार्थसहित दे दी गई हैं[१]।

इस तरह इस ग्रंथमें सब मिलाकर ३३५ पंक्तियाँ प्रक्षिप्त हैं और वे ऐसी हैं कि जरा गहराईसे देखनेसे पुष्पदन्तकी प्रौढ और सुन्दर रचनाके बीच छुप भी नहीं सकतीं। अतएव गंधर्वके क्षेपकोंके सहारे पुष्पदन्तको विक्रमकी चौदहवीं शताब्दिमें नहीं घसीटा जा सकता।

इसके सिवाय बहुत थोड़ी प्रतियोंमें, सो भी उत्तर भारतकी प्रतियोंमें ही, यह प्रक्षिप्त अंश मिलता है। बम्बईके तेरहपंथी जैनमन्दिरकी जो वि० सं० १३९० की लिखी हुई अतिशय प्राचीन प्रति है, उसमें गन्धर्वरचित उक्त पंक्तियाँ नहीं हैं और ऐलक पन्नालाल सरस्वती-भवनकी दो प्रतियोंमें भी नहीं हैं।

[अनेकान्त, वर्ष ४, अंक ६-७ और ८ से उद्धृत]

— नाथूराम प्रेमी

सा कुसुमावलि पालियतिगुत्ति सा अभयमइ त्ति णरिंदपुत्ति।
भव्वइं बुणाथणिण्णासणेण तउ चएवि चारु सण्णासणेण।
कालें अंतें सव्वइं मयाइं जिणधम्में सग्गग्गहो गयाइं॥

१ बम्बईके सरस्वती-भवनमें जो (८०४ क) संस्कृतछायासहित प्रति है उसमें ‘जिणधम्में सग्गग्गहो गयाइं’के आगे प्रक्षिप्त पाठकी “गंधव्वें कण्हडणंदणेण” आदि केवल दो पंक्तियाँ न जाने कैसे आ पड़ी हैं। इस प्रतिमें इन दो पंक्तियोंको छोड़कर और कोई प्रक्षिप्त अंश नहीं है।

LXXXI

पणविवि गुरुपयइं भव्वहं तमोहतिमिरंवहं ।
कहमि णेमिचरिउं मंजुणु मुरारिजरसंधहं ॥ ध्रुवकं ॥

1

धीरं[४] अविहियसामयं	सीहं हयसरसामयं ।	
दूसियसोत्तियसामयं	विद्धंसियहिंसामयं ।	
रक्खियसयलरसामयं	अक्खियधम्मरसामयं ।	5
चंडतिदंडुवसामयं	अलिणीलंजणसामयं ।	
जणियदुक्खवीसामयं	अद्दविणजीवासामयं ।	
णासियतिव्वतिसामयं	वेरीणं पि सुसामयं ।	
बलविहवियविवाहयं	पसमियसेलविवाहयं ।	
दूरुम्मुक्कविवाहयं	णिच्चं चेय विवाहयं ।	10
कयणिवपुत्तिविसूरणं	पयणयसुरणरसूरयं ।	

1. १ S पणमवि. २ S °पइयं. ३ ABP °जरसिंधहं. ४ ABP वीरं. ५ S जीयासा°. ६ S दूरविमुक्क°. ७ AS° तूव°. ८ AS °विसूरयं; T विसूरणं. ९ APS °सुरयण°; T सुरणर°.

1. 3 *a* अविहियसामयं अकृतलक्ष्मीमदम्; *b* हयसरसामयं हतकामहस्तिनम्. 4 *a* °सामयं सामवेदम्; *b* °हिंसामयं हिंसामतम्. 5 *a* °सयलरसामयं समस्तपृथ्वीमृगम्; *b* °धम्मरसामयं धर्मरसामृतम्. 6 *a* चंडतिदंडुवसामयं अप्रशस्तमनोवाक्कायदण्डत्रयोपशामकम्; *b* °सामयं कृष्णम्. 7 *a* जणियदुक्खवीसामयं जनितो दुःखस्य विश्रामो विगमो येन; *b* अद्दविणजीवासामयं द्रव्यवाञ्छानिष्पन्नं जीविताशामयं च न यं भट्टारकम्, द्रव्यजीविताशारहितमित्यर्थः 8 *a* °तिसामयं तृष्णारोगम्; *b* सुसामयं सुष्ठु सामदं प्रियवचनदायकम्. 9 *a* ° विवाहयं गरुडवाहकं विष्णुम्; *b* पसमियसेलविवाहयं शैलस्य पर्वतस्य वयः पक्षिणो व्याधाश्च प्रशमिता येन. 10 *a* °विवाहयं परिणयनम्; *b* णिच्चं चेय विवाहयं नित्यमेव विशिष्टबाधादायकम्. 11 *a* कयणिवपुत्तिविसूरणं कृतं नृपपुत्र्या राजीमत्या विसूरणं झूरणं येन; *b* पयणयसुरणरसूरयं पदनताः सुरनराः शोभना उरगाश्च यस्य.

हरिकुलणहयलसूरयं इंदियरिउरणसूरयं ।
णीणं सिवपुरवासरं तिह्वारयणीवासरं ।
तवसंदणणेमीसयं णमिऊणं णेमीसयं ।

घत्ता—भारहु भणमि हउं पर किं पि णत्थि सुकइत्तणु ॥ 15
मज्झि वियक्खणहं किह मुक्खु लहमि गुणकित्तणु ॥ १ ॥

2

णउ मुणमि विसेसणु णउ विसेसु णउ छंदु गणु वि णउ देसिलेसु ।
अहिकरणु करणु णउ सरपमाणु णायण्णिउ आगमु णउ पुराणु ।
कत्तारु कम्मु णउ लिंगवुत्ति परियाणमि णउ एक्क वि विहत्ति ।
दिगु दंदु कम्मधारउ समासु तप्पुरिसु बहुव्वीहि य पयासु ।
अव्वईभाउ वि णउ भाँवि लग्गु णउ जोइउ सुकइहिं तणउ मग्गु । 5
णउ पउ वि सुवंतु तिवंतु दिट्ठु णउ अत्थि अत्थु णउ सद्दु मिट्ठु ।
भरहहु केरइ मंदिरि णिविट्ठु अणि णउ लज्जमि एमेवं धिट्ठु ।
हउं कव्वपिसल्लउ कव्वकारि जायउ बहुसुयणहं हियंयहारि ।
खलसंडहु पुणु परदोसवसणु णैं णिवारमि खिरसइं भसउ भसणु ।
हउं करमि कव्वु सो करउ णिंदं फलु जाणिहिति दोहं मि मुणिंद । 10

घत्ता—सरसु सकोमलउं खलगलकंदलि पउ देप्पिणु ॥
हिंडेसइ विमल महु कित्ति तिजगु लंघेप्पिणु ॥ २ ॥

3

चिंतिज्जइ काइं खलावराहु कीहंतु वि किं ससि मुयइ राहु ।
छुडु पसियउ महु जिणवीरणाहु लइ करमि कव्वु सुहजणणु साहु ।

१० S हरिउल°. ११ S °पुरि°. १२ S लहमि.

2. १ S कत्तार. २ S परियाणवि एक्क वि ण वि. ३ A तप्पुरिसु वि बहुविहि विहिपयासु. ४ B अव्वइभवि वि. ५ ABP भाउ. ६ A तिडंतु; P विवंतु. ७ AP पइदु. ८ A जणि णउ जणि लज्जमि एय धिट्ठु. ९ A एय; P एमेय. १० B हियइ. ११ Als. °संडहु against Mss.; but gloss in S दुर्जनसमूहान्. १२ B णउ वारमि. १३ AP गंथु. १४ B णिंदु. १५ APS दोहिं मि. १६ B मुणिंदु. १७ APS सुकोमलउं.

12 *a* °सूरयं आदित्यम्; *b* °रणसूरयं रणशूरम्. 13 *a* णीणं नृणाम्; सिवपुरवासरं शिवपुरवासदायकम्; *b* तिह्वारयणीवासरं तृष्णारात्रिसूर्यम्. 14 *a* °णेमीसयं नेमिश्चक्रधारा, ईषा दण्डिकाद्वयम्; नेमीषे द्वे ददातीति नेमीषदः, तम्; *b* णेमीसयं नेमीशकं नेमिनाथम्.

2. 5 *a* भावि चित्ते. 9 *a* °वसणु ग्रहणम्. 10 *b* दोहं मि मम दुर्जनस्य च.

भो सुयण भयवयसुंदरीय — भो णिसुणि भरह गुरुयणविणीय ।
चंदणवणमहुयरारसिल्लि — महमहियविविहपप्फुल्लफुल्लि ।
गुमुगुमुगुमंतहिंडियदुरेहि — इह जंबुदीवि पच्छिमविदेहि । 5
सीयाणइउत्तरतडणिवेसि — जणसंकुलि गंधिलणामदेसि ।
गयणग्गलग्गहिमधवलहम्मि — पायारगोउरारावरम्मि ।
सीहउरि णराहिउ अरुहदासु — वच्छत्थलि णिवसइ लच्छि जासु ।
वाईसरि मुहि जसु दंसदिसासु — पाणिइ देवि जिणदत्त तासु ।
दोहिं मि जणेहिं णरणाहचंदु — पुज्जहिं विणि अहिसिंचिउ जिणिंदु । 10
णिसि सुंदरि कुसुमु व मंज्झि खाम — जिणयत्त पसुत्ती पुत्तकाम ।

घत्ता—सिविणइ दिट्ठु हरि करि चंदु सूरु सिरि गोवइ ॥
ताइ कहिउं पियहु सो णिम्मलु णियमणि भावइ ॥ ३ ॥

4

होसइ सुउ हरिणा रिउअजेउ — करिणा गरुयउ गुरुसोक्खहेउ ।
ससिणा सुहउ णिरु सोम्मभाउ — सूरेण महाजसु तिव्वतेउ ।
सिरिदंसणि सुंदरु सिरिणिकेउ — कइवयदिणेहिं साणंदु देउ ।
थिउ गब्भि ताहि मृगलोयणाहि — णवमासहिं कसणाणणथणाहि ।
उप्पण्णउ णवजोव्वणि वलग्गु — देवहुं मि मणोहरु णाइ सग्गु । 5
कमणीयहं कंतहं जणिउ राउ — अरिसिरचूडामणिदिण्णपाउ ।
णहदसदिसिवहणिग्गयपयाउ — जायउ वियहहिं रायाहिराउ ।
णिसुणेवि धम्मु उववणणिवासि — ताएण विमलवाहणहु पासि ।
कुलसंपय देवि सणंदणासु — जिणदिक्ख लेवि कउ मोहणासु ।

3. १ BP °वणि. २ P °रसेल्लि. ३ B °महिए. ४ B °पफुल्ल°. ५ B इय. ६ A सीयोयहि; P सीओयहि. ७ P °धवलि. ८ S पराहिउ. ९ S अरहदासु. १० B दस°. ११ AP पाणिइ. १२ B जिणयत्त. १३ B मज्झखाम. १४ AP पियहो. १५ S णिमल्लु (नृमल्लो राजा).

4. १ P सिरिसोम्म°. २ B सोमभाउ. ३ B दिव्वतेउ; Als. proposes to read दिव्वकाउ without Ms. authority. ४ BP मिग°. ५ BP °मासेहिं. ६ A कालाणणथणाहे; Als. reads in S करणाणणप्पणाहे, but the Ms. gives कसणाणप्पणाहे where प्प is wrongly copied for थ or घ. ७ P कमणीयहिं. ८ S जणियराउ. ९ A तह दस°; S णहदशदिशि°. १० B उववणि.

3. 6 *a* सीयाणइ° शीतोदानद्याः. 8 *b* वच्छत्थलि हृदयस्थले.

4. 3 *b* साणंदु देउ माहेन्द्रस्वर्गात् च्युतः कश्चिद्देवः. 5 *a*. उप्पण्णउ अपराजितनाम पुत्रो जातः; णवजोव्वणि वलग्गु नवयौवनं प्राप्तः. 6 *a* कंतहं स्त्रीणाम्. 7 *b* रायाहिराउ अपराजितराजा.

पुव्वें महियाइं अणुव्वयाइं पयडीकयसुरणरसंपयाइं। 10
आवेप्पिणु केसरिपुरि पहु कालेण पराइउ पक्खु इहु।

घत्ता—तेण पयंपियउं गउ विमलवाहु णिव्वाणहु ॥
जिह सो तिह अवरु तुह जणणु वि सासयठाणहु ॥ ४ ॥

5

जं णिसुउ ताउ संपत्तु मोक्खु तं जायउं अवराइयहु दुक्खु।
णउ ण्हाइ ण परिहइ परिहणाइं णउ लायइ अंगि विलेवणाइं।
णउ कुसुमइं विसमियसडयणाइं णउ आहरणइं णियकुलहरणाइं।
सवसवसवंतपयणेउराइं णालोयइ पहु अंतेउराइं।
णउ भुंजइ उवणिउ दिव्वु भोउ ण सुहाइ तासु पक्खु वि विणोउ। 5
चिंतइ णियमणि हयदुण्णयाइं जइ तायविमलवाहणपयाइं।
पेच्छेसमि भुंजमि पुणु घरित्ति णं तो थसणंगहं महुं णिवित्ति।
इय जाम ण लेइ णरिंदु गासु गय दियहइ पुण्णुं अट्ठोववासु।
तहिं अवसरि इंदहु चिंत जाय मुहकुहरहु णिग्गय महुर वाय।
अज्जाहि धणय बहुगुणणिहाउ मा मरउ अपुण्णइ कालि राउ। 10
सिरिअरुहदाससिरिसिणा सणाहु दक्खालहि जिणवरु विमल ताहु।

घत्ता—सयमहपेसणिण ता समवसरणु किउ जक्खें ॥
दाविउ परमजिणु वंदिज्जमाणु सहसक्खें ॥ ५ ॥

6

पिउपायविण्णदढसाइएण वंदिउ भत्तिइ अवराइएण।
आहारु लइउ आवेवि गेहु गरुयहं वड्ढइ गुणवंति णेहु।
पुणु छुडु छुडु संपत्तइ वसंति णंदीसरि अण्णहिं वासरंति।

११ B आएप्पिणु. १२ S पयंपिउं.

5. १ B सुणिउ. २ AS संपत्त. ३ A वियसियसडयणाइं. ४ A °कुलहराइं. ५ B णालोवइ. ६ A उउ भुंजइ. ७ B पिच्छेसमि; P पिक्खेसमि. ८ ABPS add तो after पेच्छेसमि and omit पुणु. ९ AP असणंगहं. १० A पत्तु; P पण्णु. ११ ABPS विमलवाहु. १२ A वंदिव्वमाणु.

6. १ B लयउ.

5. 3 *a* विसमियसडयणाइं विभ्रान्तभ्रमराणि. 6 *a* हयदुण्णयाइं हतमिथ्यामतानि. 7 *b* णं तो थसणंगहं महुं णिवित्ति अन्यथा असनाङ्गस्य मम निवृत्तिः नियमः. 11 *b* ताहु तस्य अपराजितस्य. 13 सहसक्खें इन्द्रेण.

6. 1 *a* °साइएण आलिङ्गनेन. 3 *b* वासरंति पूर्णिमादिने.

वंदेप्पिणु जिणचेईहराइं | अक्खंतु संतु धम्मक्खराइं ।
सुविसुद्धसीलजलहरियकंद | ता दुक्क बेण्णि णहयलि मुणिंद । 5
वंदिवि वंदारयवंदणिज्ज | मण्णिय महिणाहें मण्णणिज्ज ।
तेहिं मि पवुत्तु भो धम्मविद्धि | केवलदंसणगुण होउ सिद्धि ।
पुणु संवतवसवणावसाणि | पहु पभणइ अण्णहिं कहिं मि ठाणि ।
मइं दिट्ठा तुम्हइं काइं करमि | एवहिं सुमरंतु वि णाहिं सरमि ।
पसरइ मणु मेरउं रमइ दिट्ठि | मणु जइ आणहि तो जणहि तुट्ठि । 10
रिसि परमावहिपसरणपवीणु | ता चवइ जेट्ठु णिट्ठाइ खीणु ।
भो णूव चिरु ससहरकिरणकंति | अम्हइं पइं दिट्ठा णत्थि भंति ।

घत्ता—पभणइ परममुणि णूव पुक्खरदीवि पसिद्धइ ॥
पच्छिमसुरगिरिहि पच्छिमविदेहि धणरिद्धइ ॥ ६ ॥

7

गंधिलजणवइ खगमहिहरिंदि | उत्तरसेढिहि धवलहरछंदि ।
सूरप्पहपुरि पहसियमुहिंदु | सूरप्पहु णामें णहयरिंदु ।
पियकारिणि धारिणि तासु घरिणि | वम्महधरणीरुहजम्मधरणि ।
जाया कालें सुकयाणुरूव | भाभारवंत भूतिलयभूय ।
तहिं णंदण णं धम्मत्थकाम | चिंतामणचवलगइ त्ति णाम । 5
ते तिण्णि सहोयर मुक्कपाव | णं दंसणणाणचरित्तभाव ।
तहिं अवरु अरिंदमणयरि राउ | णामेण अरिंजउ जयसहाउ ।
तहु पणइणि णामें अजियसेण | कीलंतइं दोहं मि रइरसेण ।

घत्ता—पीईमइ तणय हुई सा किं मइं वण्णिज्जइ ॥
जाइ सरूवएण उव्वसि रइ रंभ हसिज्जइ ॥ ७ ॥ 10

२ B जिणचेइय°. ३ S सुविशुद्ध°. ४ AP जलभरिय°. ५ AP णहयरमुणिंद; B णहयलमुणिंद. ६ S मंडिय महिणाहहं मंडणिज्ज. ७ A सत्ततच्चवयणावसाणे; P सच्चतच्चसयणावसाणे. ८ ABP णिव. ९ ABP णिव. १० B पच्छिव°. ११ B °विदेह°.

7. १ P °हरेंदि. २ P पूरे. ३ B °धरिणी°. ४ AP °रूव. ५ AP °भूव. ६ S तहो. ७ B दोहिं. ८ AP रइवसेण. ९ B पिईमइ; P पीइमइ. १० ABP तणया. ११ S भूईं; Als. हुइ against Mss. १२ A सुरूवएण. १३ A उब्भसि.

4 *b* अक्खंतु राजा स्वयं व्याख्यानं कुर्वन्. 5 *a* °जलहरियकंद जलभृतमेघौ. 10 *b* जणहि तुट्ठि हर्षमुत्पादय. 11 *b* णिट्ठाइ खीणु क्रियया कृत्वा क्षीणगात्रः. 12 *a* चिरु पूर्वभवे; ससहरकिरणकंति हे शशधरकिरणकान्ते राजन्. 14 पच्छिमसुरगिरिहि पश्चिममेरौ.

7. 1 *a* खगमहिहरिंदि विजयार्धे. 3 *b* वम्महधरणीरुहजम्मधरणि कामवृक्षस्य जन्मभूमिः. 5 *b* चिंतामणचवलगइ चिन्तागतिर्मनोगतिश्चपलगतिरिति नामानि.

8

परियंचिवि सुरगिरिवरु तिवार जो लेइ माल मणिकिरणफार ।
णीसेस वि णियपयमूलि घित्त विज्जाहर मेरु भमंत जित्त ।
मणगइचलगइणामालएहिं आवेप्पिणु धारिणिबालएहिं ।
अक्खिय णियभायहु एह वत्त ताँ तेण वि कयं तहिं विजयजत्त । 5
दिट्ठी कुमारि णहयर जिणंति अमरायलपासहिं परिभमंति ।
चिंतागइ भासइ सोक्खखाणि हलि वेयवंति कलहंसवाणि ।
लइ मुयहि माल विम्हियमणाउ सुरसिहरिहि तिण्णि पयाहिणाउ ।
विरएप्पिणु तुहुं पावहि ण जाम हउं पंकयच्छि धुवु धरमि ताम ।
तं वयणु ताइ पडिवण्णु तेंव थिय गयणंगणि जोयंत देव ।
केसरिकिसोरखयकंदरासु लहुं देवि तिभामरि मंदरासु । 10
सूरप्पहतणएं धरिय माल गइवेएं णिज्जिय खयरबाल ।

घत्ता—उत्तउं सुंदरिइ पइं मुइवि ण को वि महारउ ॥
दिट्ठु अदिट्ठु तुहुं चिंतागइ कंतु महारउ ॥ ८ ॥

9

ता भणिउं तेण मारुयजवेहिं अहिलसिय कण्णे तुह बंधवेहिं ।
पइं जित्ता ए इह धावमाण थिय कायर असहियकुसुमबाण ।
जो रुच्चइ सो महुं अणुउ कंतु करि एवहिं ऍहु जि तुज्झ मंतु ।
मणसियसरजालणिरुद्धियाइ तं णिसुणिवि बोल्लिउं मुद्धियाइ ।
मणणयणहुं वल्लहु जइ वि रम्मु बलिमड्डु ण किज्जइ तो वि पेम्मु । 5

8. १ B तिवारु. २ A मणिरयणि; P मणिरयण°. ३ B फारु. ४ A णीसेसिवि. ५ A °मूल°. ६ A पिज्जाहर. ७ B °भायहि. ७ AP तो. ८ AP तहिं किय. ९ P णहयरे. १० P °पासेहिं. ११ BP विंभिय°. १२ P °मणाओ. १३ ABP धुउ. १४ AP जोयंति. १५ B °किसोरु; S केशरिकिशोर°. १६ A सुप्पहतणएं. १७ B गयवेएं.

9. १ P कण्णे. २ A पइं जित्ताइं जि इह पलवमाण; B जित्ता ए धावंतमाण; P जित्ता ए इह धावंतमाण; T पलावमाण धावन्तौ. ३ B तुज्झु जि एहु. ४ B बलिमद्दु; P वलिमंड; S बलिमद्द. ५ P पेमु.

8. 1 *a* परियंचिवि प्रदक्षिणीकृत्य; *b* लेइ गृह्णाति. 4 *a* णियभायहु चिन्तागतेः. 10 *b* तिभामरि तिस्रः प्रदक्षिणाः. 11 *a* सूरप्पहतणएं चिन्तागतिनाम्ना; *b* गइवेएं इत्यादि गमनवेगेन खचरबाला प्रीतिमतिः जिता. 12 महारउ महावेगो वेगवान्. 13 अदिट्ठु अपूर्वं त्वम्; महारउ मदीयः.

9. 3 *a* अणुउ अनुजः. 5 *b* बलिमड्डु बलात्कारेण.

हो[6] हो णियणिलयहु चित्त जाहि　　मा दुल्लहसंगि अणंगि थाहि ।
इय चिंतिवि मेल्लिवि[7] मोहभंति　　पणविवि णिविर्त्ति[8] णामेण खंति ।
लाइउ जिणु केवलणाणचक्खु　　परिपालिउ संजमु ताइ तिक्खु ।

घत्ता—दीणहं दुत्थियहं सज्जणविओय[9]जरभग्गहं ॥
णीवई[10] दुक्खसिहि जिणवरपय[11]पंकयलग्गहं ॥ ९ ॥　　10

10

अवलोइवि कण्णहि[1] तणिय चित्ति　　चिंतागइणा किय[2] घरिणिवित्ति[3] ।
लहुं भायरेहिं दमवरसमीवि　　तवचरणु[4] लइउ गुणमणिपईवि ।
संणासें मरिवि सिरीवियप्पि[5]　　जाया तिण्णि वि माहिंदकप्पि[6] ।
तहिं दीहकालु णियणियविमाणु　　भुंजेप्पिणु सत्तसमुद्दमाणु ।
इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि　　पुक्खलवइदेसि[7] सवंतमेहि ।　　5
खयरायलि उत्तरदिसिणियंबि　　मंदारमंजरीरेणुतंबि ।
पुरि णहवल्लहि[8] पहु गयणचंदु　　पिय गयणसुंदरी[9] मुक्कतंदु ।
अमियगइ पुत्तु हउं ताहि जाउ　　इहु अमियतेउ लहुयरउ[10] भाउ ।
बेण्णि वि तुरीयसग्गावइण्ण　　जाणसि जं[11] जित्ती आसि कण्ण ।
तुह विरहणडिय अंसुय मुयंति　　जाणसि जं ण समिच्छिय रुयंति । 10
जाणसि जं ताइ वउत्थु चारु　　जाणसि[12] जं किउ[13] चारित्तभारु ।
अम्हइं [14]तीहिं मि ववसियमणेहिं[15]　　दमवरसयासि[16] पोसियगुणेहिं ।

घत्ता—छुडु छुडु जोइयउं[17] लइ जइ वि सुहु दूरिल्लइं[18] ॥
धुवु[19] जाइंभरइं[20] णयणइं मुणंति णेहिल्लइं[21] ॥ १० ॥

६ B हो हो णियणिलयहं; P हो होउ णियत्तहे; S हो हो णियणिलयहे. ७ B मल्लिवि. ८ S णिवित्त. ९ S °वियोय°. १० BPS Als. णावइ. ११ P °पयपंकए; S om. प in पयपंकए.

10. १ B कण्णहु; P कण्णहो. २ A किय. ३ B धरि. ४ P तउचरणु. ५ B सीरी°. ६ BP माहिंद°. ७ A पुक्खलइदेसि. ८ K णवबल्लहि. ९ A मयणसुंदरी. १० S लहुअयरु. ११ AP जें. १२ P जाणसे. १३ S णिउ. १४ B तिण्णि वि; P तिहिं मि. १५ A ववसियमणेहि. १६ B दमवरयपासि. १७ B जोयउं. १८ A दुरिल्लउं; Als. दूरिल्लइं against Mss. to accord with the end of the next line. १९ AP धुउ; B ध्रुउ. २० AP जाइसरइं; S जाइभरइं. २१ APS णेहिल्लउं; but BK णिहिल्लइं and gloss in K स्निग्धानि.

6 *a* हो हो इ ति रे चित्त, त्वं निजनिलये स्थाने गच्छेति सा स्वात्मानं संबोधयति. 9 *b* ता इ तया कन्यया. 10 णी व इ विध्यापयति; दु क्ख सि हि दुःखाग्निः.

10. 2 *b* गु ण म णि प ई वि गुणमणिप्रदीपे. 3 *a* सि री वि य प्पि लक्ष्मीविकल्पे स्वर्गे, श्रीणां भेदे वा. 5 *b* स वं त मे हि क्षरन्मेघे. 6 *a* °णि यं बि तटे. 7 *b* मु क्क तं दु आलस्यरहितः. 9 *b* क ण्ण प्रीतिमती त्वम्. 11 *a* व उ त्थु व्रतमनुष्ठितम्. 14 जा इं भ र इं जातिस्मराणि; णे हि ल्ल इं स्निग्धानि.

11

अम्हइं ते भायर तुज्झु राय अण्णेत्तहि कम्मवसेण जाय ।
अरहंतु सयंपहणामधेउ पुच्छियउ पुंडरीकिणिहि देउ ।
णियजम्मणु तुह अम्में समेउ आहासइ णासियमयरकेउ ।
सीहउरि राउ दूसियविवक्खु चिंतागइ हुउं अवराइयक्खु ।
सो तुम्हहं बंधउ णिव्वियारु ता णिसुणिवि केवलिवयणसारु । 5
अम्हेहं हुई दंसणसमीह आया तुहुं दिट्ठउ पुरिससीह ।
पत्तियं फुडु जंपिउं जिणवरासु अण्णुं वि तुह जीविउं एक्कु मासु ।
इय कहिवि साहु गय बे वि गयणि णरणाहें छंडियें तत्ति मयणि ।
अहिसिंचिवि जिणपडिमाउ तेण भावें पुज्जिवि अवराइएण ।
बहुदीणाणाहहं दाणु देवि घरपुत्तकलत्तइं परिहरेवि । 10
इंदियकसायमिच्छत्तदमणु किउ मासमेत्तु पाओवगमणु ।
मुउ उप्पण्णउ अच्चुयविमाणि बावीसजलहिजीवियपमाणि ।

घत्ता—तेत्थहु ओयरिवि इह भरहखेत्ति विक्खायउ ॥
कुरुजंगलविसए पुणु हत्थिणायपुरि जायउ ॥ ११ ॥

12

सिरिचंदें सिरिमइयहि तणूउ णिरुवमतणु कुरुकुलनृवविणूउ ।
गुणवच्छलु णामें सुप्पइट्ठु प्रिउ णंदादेविहि प्राणइट्ठु ।
तेहु रज्जु देवि हुउ सो महीसु सिरिचंदु सुमंदिरगुरुहि सीसु ।
णीसंगु णिरंबरु वणि पइट्ठु जहिं सिरि अणुहुंजइ सुप्पइट्ठु ।

---

11. १ A अण्णण्णहे. २ S पुंडरिंकिणिहे. ३ BK जम्मि. ४ B राय. ५ P हूउ. ६ S अवराइअक्खु ७ S बंधवु. ८ AB वयणु. ९ BS अम्हहुं. १० A पत्तिउ; B एत्तिउ. ११ AP अक्खमि तुहु. १२ AB छड्डिय; S ढड्डिय. १३ S °णाहहुं. १४ AP पाओवगमणु. १५ B तित्थहो. १६ S उयरेवि. १७ P विक्खायओ.

12 १ P कुवलयणिवविणूओ. २ AB गुणि वच्छलु. ३ A पूयणंदा° B प्रियु; P पिय; Als. प्रियणंदा°. ४ AP पाणइट्ठु. ५ B सो हुउ; P हुओ; S रहो but gloss सुप्रतिष्ठस्य.

---

11 1 *b* अण्णेत्तहिं नभोवल्लभनगरे. 4 *a* °विवक्खु विपक्षः शत्रुः; *b* अवराइयक्खु अपराजिताख्यः. 5 *a* णिव्वियारु निर्विचारम्. 7 *a* पत्तिय प्रतीतिं कुरु. 8 *b* तत्ति चिन्ता. 13 ओयरिवि अवतीर्य.

12 1 *b* °विणूउ सुतः. 3 *a* महीसु श्रीचन्द्रराजा. 4 *b* अणुहुंजइ भुनक्ति.

तहिं असइव रिसि चरियइ पवण्णु　　रायं पय धोइवि दिण्णु अण्णु। 5
तहिं तासु भवणपंगणेंगयाइं　　अच्छरियइं पंच समुग्गयाइं।
कालें जंतें पिहुसोणियाहिं　　कीलंतु समउं रायाणियाहिं।
पत्थिउ अवलोयइ दिसउ जाम　　णिवडंति णिहालिय उक्क ताम।
चिंतइ णरवइ णिवडिय जलंति　　गय उक्क खयहु जिह पउ करंति।
तिह जीव विविहकिंकरसयाइं　　अग्गि कासु वि होंति ण सासयाइं। 10
इय चविवि सुदिट्ठिहि तणुरुहासु　　सइं बद्धु पट्टु पहसियमुहासु।
णिज्झाइयसिवपुरमंदिरासु　　पणवेप्पिणु पाय सुमंदिरासु।

घत्ता—दिहिपरियरसहिउं णीसेसभूयमित्तत्तणु॥
गिरिकंदरभवणु पडिवण्णउं तेण रिसित्तणु॥ १२॥

13

सुपइट्ठें दुद्धरु चिण्णु चरिउं　　मणु सत्तुमित्ति सरिसउं जि धरिउं।
परवाइमयाइं परिक्खियाइं　　पयारह अंगइं सिक्खियाइं।
विडवेसइं केसइं लुंचियाइं　　गयगण्णाइं पुण्णइं संचियाइं।
रउं विहुणिवि णिहणिवि जिणिवि कामु　　अविरुद्धउं बद्धउं अरुहणामु।
अ सि आ उ सा इं अक्खर सरेवि　　गयपासें संणासें मरेवि। 5
अहमिंदु अणुत्तरि हुउं जयंति　　हिमहंससुहारुहकिरणकंति।
तेत्तीसमहण्णवणियमिथाउ　　तेत्तियहिं जि पक्खहिं ससइ देउ।
तेत्तियहिं जि सूरिपयासएहिं　　वोलीणहिं वरिससहासएहिं।
भुंजइ मणेण सुहुमाइं जाइं　　मणगेज्झइं किर पोग्गलइं ताइं।
णाणें परियाणइ लोयणाडि　　करमेत्तदेहु मणहरकिरीडि। 10
णिवसइ विमाणि पप्फुल्लवत्तु　　सो होही जेहिं तं भणमि गोत्तु।

६ B धोविवि. ७ AP पंगणे कयाइं. ८ B अवलोवइ. ९ A दिसिउ. १० A णिवडंत. ११ AP पउरकंति. १२ A सरेवि; P भरेवि. १३ B °परियण°; K°परियण° but corrects it to परियर°.

13 १ P मणि सत्तु मित्तु सरिसउं. २ P °वाइयमयाइं. ३ A गयसण्णइं. ४ B संचियामि. ५ AP रउं विहिणेवि णिहिणेवि. ६ P हुओ. ७ B हिमरासिसुहारयकिरण°. ८ B तेत्तीयहिं पक्खहिं. ९ B तेत्तीयहिं सूरि°; १० A सूर°. ११ P °पयासिएहिं. १२ S °सहाएहिं. APS मणहर. १३ B जइं.

5 *a* चरियइ भिक्षार्थम्. 7 *a* पिहुसोणियाहिं पृथुकटीभिः. 9 *b* पउ पदम्. 11 *a* चविवि कथयित्वा.

13 3 *b* गयगण्णइं गतगणितानि असंख्यातानि. 4 *a* रउ पापम्; *b* अविरुद्धउं समीचीनम्. 6 *b* °सुहारुह° चन्द्रः. 8 *a* सूरिपयासएहिं सूरिभिः आचार्यैः प्रकाशितानि. 11 *b* सो सुप्रतिष्ठमुनिचरः.

घत्ता—गोत्तमु भणइ सुणि मगहाहिव लद्धपसंसहु ॥
रिसहणाहकयहु पच्छिमसंतइ हरिवंसहु ॥ १३ ॥

14

इह दीवि भरहि वरवच्छदेसि कोसंबीपुरवरि जणणिवासि ।
मघवंतु राउ पिसुणयणतावि तहु वीयसोय णामेण देवि ।
रहु णामें णंदणु सुमुहु सेट्ठि कालिंगदेसि कमलाहदिट्ठि ।
दुंतउरहु होंतउ वीरदत्तु वणि वणमालासहुं पोम्मवत्तु ।
वाहहुं भइयइ णावइ कुरंगु आयउ अणाहु कयसत्थसंगु । 5
कोसंबि पइट्ठउ सुमुहभवणि ठिउ जालगवक्खविसंतपवणि ।
सव्वइं वित्तइं रइरसरयाइं अण्णहिं दिणि वणकीलहि गयाइं ।
वणमाल बाल सुमुहेण दिट्ठ लायण्णवंत रमणीवरिट्ठ ।
अहिलसिय सुसियँ तहु देहवेल्लि माणि लग्गी भीसणमयणभल्लि ।
दूसीलें परजायारएण वणिवइणा णिरु मायारएण । 10
बारहवरिसोवहि दिण्णु विसु वाणिज्जहि पेसिउ वीरदत्तु ।

घत्ता—गउ सो इयरु तहिं आलिंगणु देंतु ण थक्कइ ॥
परहरवासियहु धणु घणिय ण कासु वि चुक्कइ ॥ १४ ॥

15

उज्झउ परदेसु परावयासु परवसु जीविउं परदिण्णु गासु ।

१४ P पत्थिवसंतए.

14 १ S °वच्छदेशे. २ S सुमुह. ३ B हुंतउ. ४ AP पेंमरत्तु; S पेमवत्तु; K पोम्मवत्तु but adds a *p*: पेम्म इति पाठे स्नेहवान्. ५ B भइए. ६ B °सत्थु. ७ B सुमुहु. ८ A विताइं; P वित्ताइ. ९ AP वणकीलागयाइं. १० AP लायण्णवण्ण. ११ S सुसीय. १२ B दूसेलें; S दूशीलें. १३ B °रयेण. १४ S °वरसावहि. १५ B वाणिजहो. १६ B वीरयत्तु. १७ B तहिं.

15 १ S परवस. २ BP °दिण्णगासु.

12 मगहाहिव हे श्रेणिक, हरिवंशपरंपरां शृणु. 13 पच्छिमसंतइ पश्चात्परंपरा पश्चिमश्रेणी; हरिवंसहु इक्ष्वाकुवंशी जिनः, तेन स्थापिताश्चत्वारो वंशाः, (1) कुरुवंशे सोमप्रभस्य कुरुराज इति नाम दत्तम्; (2) हरिवंशे हरिचन्द्रस्य हरिकान्त इति नाम दत्तम्; (3) उग्रवंशे काश्यपस्य मघवा इति नाम कृतम्; (4) नाथवंशे अकम्पनस्य श्रीधरो राजा कृतः.

14 3 *b* कमलाहदिट्ठि कमललोचनः. 4 *b* वणि वणिक्; पोम्मवत्तु पद्मवक्त्रः. 5 *a* वाहहुं भइयइ व्याधानां भयात्. 7 *a* वित्तइं वित्ताः प्रसिद्धाः सर्वे जनाः. 9 *a* सुसिय शुष्का जाता; तहु सुमुखस्य. 10 *b* वणिवइणा वणिक्पतिना; मायारएण मायारतेन. 12 इयरु सुमुखः. 13 धणिय भार्या.

15 1 *a* उज्झउ भस्मीभवतु; परावयासु परस्य गृहे वासः, परेषां अवकाशः परस्वेच्छया पर्यटनम्, परेषां अवकाशः प्रसङ्गः.

भूमंगमिउडिदरिसियभएण रज्जेण वि किं किर परकएण ।
सम्भुयंजिएण सुहुं वणइलेण णउ परविण्णें मोणियलेण ।
वर गिरिकुहरु वि मण्णमि सलग्घु णउ परघवलहरु पहामहग्घु ।
कीलंति ताइं णारीणराइं उरयलथणयलविणिहियकराइं । 5
बहुकालहिं आयं भयपमत्तु वणिणा वणियइ वणमालरत्तु ।
जाणिउ तावें अंतंतखीणु अपसिद्धउ णिद्धणु बलविहीणु ।
बलवंतें रुट्ठउ काइं करइ अणुदिणु चिंतंतु जि णवर मरइ ।
खलसंगें लग्गी तासु सिक्ख पोट्ठिलु मुणि पणविवि लइय दिक्ख ।
चिंतिवि[11] किं महिलइ किं धणेण मुउ अणसणेण णियमियमणेण । 10
संपुण्णकाउ सोहम्मि देउ चित्तंगउ णामें जाम जाउ ।
घत्ता—सावयवय धरिवि ता कालें कयमयणिग्गहु ॥
रघु मघवंतसुउ सुरु हुउ तेत्थु जि सूरप्पहु ॥ १५ ॥

16

वणमालइ सुमुहें णिरु णिरीहु भुंजाविउ मुणिवरु धम्मसीहु ।
आयण्णिउ धम्मु जिणिंदसिट्ठु अप्पाणु वि धूलिसमाणु दिट्ठु ।
चिंतवइ सेट्ठि दुकियविरत्तु हा हित्तउं किं मइं परकलत्तु ।
असहायहु आयहु विहलियासु हा किं मइं विरइउ गेहणासु ।
सुयरइ गेहिणि हउं कयकुकज्ज भत्तारदोहकारिणि अलज्ज । 5
हा किं ण गइय हउं खंडखंडु हा पडउ मज्झु सिरि वज्जदंडु ।
इय णिंदंतइं असणीहयाइं कालेण ताइं बिण्णि वि मुयाइं ।
इह भरहखेत्ति हरिवरिसविसइ भोयउरि भोइभडभुत्तविसइ ।
णरणाहु पहंजणु सइ मिकंडु तहु घरिणि णिरूविय कामकंडु ।

३ B °भुयजिरहिं. ४ S मेयणियलेण. ५ A मण्णवि. ६ AB कालें; P कालइं. ७ B आयपं. ८ A ता तावें अंतु खीणु; P अंतंतु खीणु; S अंतंतु क्षीणु. ९ B अपसिद्धिउ. १० B पुट्ठिलु; S पोट्ठिल. ११ P चिंतए. १२ B तित्थु.

16 १ B जिणंद°. २ AP अप्पाणउं धूलि°. ३ B °सुमाणु. ४ A मइं किह; P मइं किं. ५ BP सुअरइ. ६ B °कुकज्जु. ७ B °दोहि°. ८ S कारिणी. ९ B अलज्जु. १० S मयाइं. ११ B इय. १२ A मोइसंपत्तविसए. १३ B पहुंजणु. १४ BS मिकंडु. १५ BS कामकंडु.

4] *a* सलग्घु श्लाघ्यम्. 7 *a* अंतंतखीणु अन्तर्मनोमध्ये क्षीणः; *b* णिद्धणु निर्धनः. 9 *a* खलसंगें जारयोः संसर्गेण.

16 1 *a* सुमुहें सुमुखेन च. 4 *a* आयहु आगतस्य. 6 *b* सिरि मस्तके. 7 *a* असणी° विद्युत्. 8 *b* भोइभडभुत्तविसइ भोगिसुभटभुक्तविषये. 9 *b* कामकंड कामबाणाः.

हुउ सुमुहु पुत्तु तहि सीहकेउ सालैयपुरि णरवइ वज्जैचाउ। 10
मुंहदेवि सुहुंप्पायण गुणाल वणमाल ताहि सुय विज्जुमाल।
हुई परिणाविउ सीहचिंधु अम्मंतरसंचिर्येणेहबंधु।
घत्ता—पुरु घरु परिहरिवि रइणिब्भराइं पक्कहिं दिणि॥
कयकेसग्गहइं कीलंति जाम णंदणवणि॥ १६॥

17

कुंडलकिरीडचिंचेइयगत्त सूरप्पह चित्तंगय सुमित्त।
ता बे वि देव ते तेत्थु आय दंपइ पेक्खिवि मणि चिंत जाय।
चित्तंगएण परियाणियाइं कहिं जारइं विहिणा आणियाइं।
संतावयरइं संभावियाइं एवहिं कहिं जंति अघाइयाइं।
वणमाल एह कुच्छिय कुंसील इहु सुमुहु सेट्ठि जें मुक्क वील। 5
उच्चाइवि बेण्णि वि घिवैमि तेत्थु णउ खाणु पाणु णउ ण्हाणुं जेत्थु।
इय चिंतिवि भुयबलतोलियाइं देवेण ताइं संचालियाइं।
किर णिप्फलजलगिरिगहणि घिवइ ताँवियरु अमरु करुणेण चवइ।
को एत्थु वइरि को एत्थु बंधु मुइ मुइ सुंदर वइराणुबंधु।
दोसेसु खंति इच्छाणिवित्ति गुणवंति भत्ति णिग्गुणि विरत्ति। 10
कारुण्णु सव्वभूएसु जासु किं भण्णइ अण्णु समाणु तासु।
तं णिसुणिवि उवसमसंगएण भवियव्वु मुणिवि चित्तंगएण।
चंपापुरि चंपयचूयगुज्झि घित्तांइं बे वि उज्जाणमज्झि।
घत्ता—गय सुरवर गयणि तहिं पुरवरि अमरसमाणउ॥
चंदकित्ति विजइ छुडु छुडु जि जाम मुउ राणउ॥ १७॥ 15

१६ A सायलपुरे. १७ AB वजवेउ. १८ AP महएवि. १९ A सुहुप्पा घणगुणाल. २० BS विज्जमाल. २१ S °संचिउ.

17 १ ABPS °चेंचइय°. २ S तं. ३ B तित्थु. ४ S कुशील. ५ A घिवेवि; S घित्तमि. ६ S ण्हाण. ७ AP ता इयरु. ८ S वइराणुअंधु. ९ S गुणवंत°. १० S णिग्गुण°. ११ B °चूयगब्भि. १२ B घित्ता बे वि जि.

10 *a* सुमुहु सुमुखचरः; *b* वज्जचाउ वज्रचापः.

17 1 *a* °चिंचइय° भूषितम्. 5 *b* वील व्रीडा. 8 *b* इयरु अमरु सूर्यप्रभः. 13 *a* °गुज्झि गुह्यस्थाने. 15 विजइ विजयवान्.

18

तहु तहिं संताणि ण पुत्तु अत्थि आहिवासिउ [1]मंतिहिं भद्दहत्थि ।
जलभरिउ कलसु [2]करि दिण्णु तासु कंकेल्लिपत्तसंछाइयासु[3] ।
करडयलगलियमयसलिलबिंदु चलरुणुरुणंतमिलियालिवृंदु[4] ।
[5]उत्तंगु णाइ जंगमु[6] गिरिंदु सहुं परियणेण चल्लिउ करिंदु ।
दिव्वेण दइवसंचोइएण[7] मुक्कंकुसेण उच्छाइएण । 5
उववणि पइसिवि सिरिसोक्खहेउ आहिसिंचिउ[8] करिणा सीहकेउ ।
परिवारें मिलिवि णिबद्धु पट्टु मा को वि करउ भुयबलमरट्टु ।
परिणवइ कम्मु सव्वायरेण चिरभवसंचिउं किं किर परेण ।
णउ दिज्जइ संपय दिणयरेण गोविंदें बंभें तिणयणेण ।
दुग्गाइ ण जक्खें[9] रेवईइ विणिंडिज्जइ[10] जणु मिच्छारईइ । 10
जय जीवें[11] देव पभणंतएहिं पुच्छिउ पुणु राउ महंतएहिं ।
को तुहुं भणु सच्चउं जणणु जणणि आगमणु काइं का जम्मधरणि ।

घत्ता—अणवइ[12] हरिवारिसि पहु कहइ[13] सयलमणरंजणु[14] ॥
भोयपुराहिवइ[15] मेरउ पियं[16] राउ पहंजणु ॥ १८ ॥

19

मुहसोहाणिज्जियकमलसंड[1] तहु गेहिणि महु मायरि मिकंड[2] ।
हउं सीहकेउ केण वि ण जित्तु आणेप्पिणु केण वि एत्थु घित्तु[3] ।
तं सुणिवि मिकंडइ[4] जणिउ जेण मंतिहिं मकंडु[5] जि भणिउ तेण ।
तं[6] पवरसिंधुरारूढदेहु वहुवरु पइट्ठु पुरि बद्धणेहु ।
बहुकिंकरेहिं सेविज्जमाणु[7] धयछत्तावलिहिं पिहिज्जमाणु । 5

---

18 १ B मंतहि°. २ A करदिण्णु. ३ S °संढाइयासु. ४ S °मिलियालवृंदु; BP °विंदु ५ ABPS उत्तुंगु. ६ B जंगम. ७ B दइय°. ८ B °सिंचिउ; K °सिंचिय. ९ B जक्खि. १० B णिवडिज्जइ. ११ S जीय. १२ S जणवय. १३ B कहमि. १४ PS सयलजणरंजणु. १५ A णाय-पुराहिवइ. १६ APS पिउ.

19 १ BP °संडु. २ BP मिकंडु. ३ B घेत्तु. ४ B मिकंडुए. ५ S मकंड. ६ AB ता पवरसंधुरा°. ७ S ण्हाविज्जमाणु.

---

18 2 *b* °संछाइयासु प्रच्छादितमुखः. 5 *a* दइवसंचोइएण पुण्यसंचोदितेन. 8 *b* चिरभवसंचिउं पूर्वोपार्जितं पुण्यम्. 9 *b* तिणयणेण शंकरेण पार्वतीकान्तेन. 10 *a* दुग्गाइ पार्वत्या; रेवईए नर्मदया. 11 *b* महन्तएहिं सामन्तैः. 14 पिय पिता.

19 3 *b* मकंडु मार्कण्डः. 4 *b* वहुवरु विद्युन्मालासिंहकेतू.

चलचामरेहिं विज्जिज्जमाणु थिउ दीहु कालु सिरि भुंजमाणु ।
तडिमालापियकंतासहाइ कालें कवलिइ मकंडराइ ।
संताणि तासु आया णरिंद हरिगिरि हिमगिरि वसुगिरि णरिंद ।
अवलंबोहणउवणियसिवेहिं अवर वि बहु गणिय गणाहिवेहिं ।
पुणु देसि कुसत्थइ हुउ अदीणु सउरीपुरि राणउ सूरसेणु । 10
कुलि तासु वि आयउ सूरवीरु धारिणिसुकंतमाणियसरीरु ।

घत्ता—मरहपसिद्धपहु थिरथोरबाहुदुज्जयबल ॥
आया ताहिं सुय वरपुप्फयंततेउज्जल ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णेमिजिणतित्थयरत्तणिबंधणं
णाम एक्कासीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८१ ॥

८ A कुसित्थए. ९ AP सुउ तासु. १० B भरहि. ११ S °बाह°. १२ P °पुप्फदंत°. १३ A °तित्थयरत्तामबंधणं; B °तित्थयरत्तणामणिबंधणं.

8 *b* हरिगिरि इत्यादि हरिगिरेः पुत्रो हिमगिरिः; तस्य पुत्रो वसुगिरिः. 11 *a* सूरवीर सूरवीरराजः द्वे भार्ये, धारिणी सुकान्ता च, धारिण्याः पुत्रः अन्धकवृष्णिः, सुकान्ताया नरपतिवृष्णिः.

LXXXII

सइहि णीलधम्मेलुउ अंधकविट्ठि पँहिल्लहि।
णंदणु गयवयणिज्जउ णरवँइविट्ठि दुँइजहि ॥ ध्रुवकं ॥

1

थणजुयलघुलियचलहारमणि जेट्ठहु सुभद्द णामें रमणि।
गुणि सुयणसिरोमणि परिगणिउ सुउ ताइ समुद्दविजउ जणिउ।
बीयउ णं पुण्णपुंजेरइउ अक्खोहु तिमिर्यसायरु तइउ। 5
हिमवंतु विजउ अचलु वि तणउ धारणु पूरणु अहिणंदणउ।
लहुयँउ वसुएउ विसालमइ उप्पण्ण कोंति पुणु हंसगइ।
पुणु मद्दि कुंर्यरि कुवलयणयणि मुणिहिं मि उक्कोइयमणमयणि।
णियगोत्तमणोरहगाराहु सिवएवि कंत पहिलाराहु।
बीयहु सुँमही सरमेंहुरसर तइयस्स सयंपह कमलकर। 10
तुरियहु सुसीमें पंचमहु पिय प्रियेवाय णाम पच्चक्खसिँय।
अवरहु वि पहावइ णित्तमहु कालिंगी पणइणि सत्तमहु।
अट्ठमयहु सुप्पह सुद्देंचरिय णवमहु गुणसीमिणि संभरिय।
घत्ता—णरवइविट्ठिहि गेहिणि विमलसीलजलवाहिणि ॥
जणि भल्लारी भावइ पोमेंवयण पोमावइ ॥ १ ॥ 15

2

तहि उग्गसेणु परसेणहरु सुउ जायउ करिकरदीहकरु।
पुणु देवसेणु महसेणु हुउ साहसणिवासु णरवंदथुउ।

---

1 १ B अंधयविट्ठि. २ AP पहिल्लउ. ३ S णरवर°. ४ ABP दुइज्जउ. ५ ABPS पुण्णपुंजु. ६ A तिमिरसायरु. ७ B लहुओ. ८ B विलास°. ९ AP कुमरि; BS कुवरि. १० B °णयणा. ११ B °मयणा. १२ S सुअमही. १३ B सरु महुर°. १४ A सुसीय. १५ PS पियवाय. १६ ABP सिय. १७ B सुद्धचरिय. १८ A गुणभामिणि. १९ P पउमवयण.
2 १ AP णरविंद°.

---

1 1 पहिल्लहि प्रथमायाः धारिण्याः पुत्रोऽन्धकवृष्णिः. 2 गयवयणिज्जउ गतनिन्दः निन्दारहितः; दुइजहि द्वितीयायाः सुकान्ताया नरपतिवृष्णिः. 3 *b* जेट्ठहु अन्धकवृष्णेः. 8 *b* उक्कोइयमणमयण उत्पादितमनोमदना. 10 *a* सरमहुरसर स्मरस्यापि मधुरस्वरा, अथवा, समस्वरवन्मधुरस्वरा. 12 *a* अवरहु अचलस्य भार्या प्रभावती; णित्तमहु तमोरहितस्य, पापरहितस्य वा. 14 *b* °वाहिणि नदी.
2 1 *a* परसेणहरु परसैन्यभञ्जकः.

एयहुं लहुई ससै सोम्ममुहि गंधारि णाम तूलवियसुहि ।
विण्णाणसमसि पयावइहि किं वण्णमि सुय पोमावइहि ।
कुरुजंगलि हत्थिणायणयरि तहिं इंथिराउ दुहघोयघरि । 5
तहु देवि सुबकि सुकौतलिय सिद्धा इव वरवण्णुज्जलियै ।
हुयउ पारासरु तहिं सुउ रूवें णं सुरवरु सग्गचुउ ।
मच्छउलरायसुय सच्चवइ तहु दिण्णी सुंदरि सुद्धमइ ।
उप्पण्णु वासु तहिं अलियकइ तहु भज्ज सुभद्द पसण्णमइ ।

घत्ता—ताहि तेण उप्पण्णउ सुउ धयरट्ठु अदुण्णउ ॥ 10
लक्खणलक्खियकायउ पंडु विउरु पुणु आयउ ॥ २ ॥

3

ते तिण्णि वि भायर मणहरहु बहुकालें गय सउरीपुरहु ।
तहिं पंडुकुमारें तिजगथुय अवलोइय अंधकविट्ठिसुय ।
सउहयलि रमंती सहिहिं सहुं चिंतइ सुंदरि जइ होइ महुं ।
तो लहउं मइं णरजम्मफलु कोंतिइ जोयंतु थिरच्छिदलु ।
धरु वंचिवि तंबोलेण हउ सो सुहुउ पुलइयदेहु गउ । 5
एक्कु वि खणु कण्ण ण वीसरइ रिसि सिद्धि व हियवइ संभरइ ।
आणंदपणच्चियबरहिणहु अण्णहिं दिणि गउ णंदणवणहु ।
तहिं दिट्ठियं पंडुं पुंडरिय पीयलियहरियमणियरफुरिय ।
विज्जाहरवरकरपरिगलिय तरुणेण लइय अंगुत्थलिय ।
पडिआयउ तं जोयइ खयरु किं जोयहि इय पुच्छइ इयरु । 10

२ P एयहं. ३ B ससि. ४ B °वइहो. ५ B °वइहो. ६ A हत्थु राउ. ७ S दुहधोय°. ८ B सकोंतलिया. ९ S पर°. ९ B °वण्णुज्जलिया. १० B तासु. ११ S रूएं. १२ B अहजण्हुराय°. १३ A सुद्धमइ. १४ B उप्पण्ण. १५ B तहो. १६ A ललियगइ.

3 १ ABP °कालहि. २ A सवरीपुरहो. ३ B अंधय°. ४ PS रमंति. ५ S सउ. ६ A सुंदरु; B सुंदर. ७ APS तो. ८ B °पणच्चिउ. ९ A °बरिहिणहो. १० APS दिट्ठी. ११ A पंडुर-पंडुरिय; B पंडु पुंडरिय; P पंडुं पंडुरिय. १२ AB मणि विप्फुरिय. १३ B जोयउ. १४ B पुच्छिइ.

3 *a* एयहुं एतेषां त्रयाणाम्; ससं भगिनी. 4 *a* पयावइहि विधातुः; *b* सुय पोमावइहि गान्धारी. 6 *a* सुवकि सुवल्कीनाम्नी; *b* सिद्धा मातृकाः. 7 *a* पारासरु पराशरः. 8 *a* मच्छउलरायसुय मत्स्यकुलराजपुत्री, न तु जात्या हीना धीवरपुत्री, किं तु उत्तमक्षत्रियमत्स्यकुलोत्पन्ना. 9 *a* वासु व्यासः; अलियकइ असत्यकविः. 10 *b* अदुण्णउ न दुर्नयः.

3 2 *a* तिजगथुय त्रिजगत्स्तुता; *b* अंधकविट्ठिसुय कोन्ती (कुन्ती). 3 *b* चिंतइ पाण्डुश्चिन्तयति. 5 *b* पुलइयदेहु रोमाञ्चितः. 8 *a* पंडुं पाण्डुना; पुंडरिय पाण्डुरधर्मोपेता; *b* °मणियर° मणिकिरणाः.

अविक्खउ खगेण रयणहिँ जडिउं इह मेरउं अंगुलीउं पडिउं ।
चिंतिवि किं किज्जइ परवसुणा तं दंसिउं तासु वाससिसुणा ।

घत्ता—विहसिवि[15] वासहु पुत्तें णिवकुमारिहियचित्तें ॥
णेहिँ खयरु णियच्छिउ तहु सामत्थु पपुच्छिउ ॥ ३ ॥

4

भो[1] भणु भणु सुहहि[2] तणउ गुणु तं णिसुणिवि[3] खेयरु[4] भणइ[5] पुणु ।
इच्छियउं रूउ[6] खणि संभवइ वइरि वि पयपंकयाइं णवइ ।
अइंसणु होइ ण भंति क वि ता भासइ कुरुकुलगयणरवि ।
भो[7] णहयर एह[8] विव्व सुमइ अच्छउ मइ करि कइवय दियह ।
को णासइ सज्जणजंपियउं तहु मुद्दारयणु समप्पियउं । 5
गउ णहयरु पंडु वि आइयउ अइंसणु णेय[9] विवेइयउ ।
सयणालइ सुत्ती कोंति जहिं सहस त्ति पइट्ठउ तरुणु तहिं ।
परिमट्ठउं[10] हत्थें थणजुयलु वियसाविउं[11] धुत्तें मुहकमलु ।
कण्णाइ वियाणिउ[12] पुरिसकरु चिंतइ जइ आयउ पंडु[13] वरु ।
तो देमि[14] तासु आलिंगणउं अण्णहु णउ[15] वि अप्पमि अप्पणउं । 10
भवणंति कवाडु गाढु पिहिउं गुज्झहरइ अप्पउं णउ रहिउ ।
सरलंगुलिभूसणु घल्लियउं भुअए[16] पयडंगें बोल्लियउं ।
दे देहि देवि महुं सुरयसुहुं उल्हाविहि[17] विरहहुयासदुहुं ।
मज्जायणिबंधणु अइकमिउं ता दोहिँ[18] मि तेहिँ तेत्थु रमिउं ।

घत्ता—ता वम्महसमरूवउ[19] ताहि गब्भि संभूयउ ॥ 15
णवमासहिँ उप्पण्णउ कउ सयणहिँ पच्छण्णउ ॥ ४ ॥

१५ B वियसेवि. १६ A नृवकुमारि°.

4 १ AP भो भो भणु. २ B सुहय. ३ AP सुणेवि. ४ AP खगेसरु. ५ APS कहइ. ६ S रूवु. ७ AP हो. ८ A एवहिं. ९ A णेव; B णेइ. १० S परिमइउं. ११ S विहसाविउं. १२ AS वि जाणिउ. १३ S पंडवरु. १४ S देंवि. १५ APS णउ. १६ B भुअए. १७ P ओल्हाविहि. १८ S दोहं. १९ PS °रूयउ.

12 *a* परवसुणा परद्रव्येण; *b* वाससिसुणा व्यासपुत्रेण पाण्डुना. 13 *a* वासहु पुत्तें पाण्डुना; *b* णिवकुमारिहियचित्तें कौन्त्या हृतचित्तेन. 14 *a* णेहिँ स्नेहेन.

4 4 *a* सुमइ सुतेजाः. 7 *b* तरुणु युवा पाण्डुः. 11 *a* भवणंति गृहमध्ये. 12 *b* पयडंगें प्रकटाङ्गेन. 14 *a* मज्जायणिबंधणु लग्नमर्यादानिर्बन्धः. 15 *b* संभूयउ कर्णनामा पुत्रो जातः.

5

कुंडलजुयलउं कंचणकवउ   पत्तें सहुं बालउ दिव्ववउ ।
णिविडहि मंजूसहि घल्लियउ   कालिंदिपवाहि पमेल्लियउ ।
चंपापुरि पावसावरहिउ   आइच्चें राएं संगहिउ ।
सुत्तउ अवलोइउ कण्णकरु   कण्णु जि हक्कारिउ सो कुंअरु ।
सुउ पडिवण्णउ संमाणियहि   तें[6] दिण्णउ राहहि राणियहि । 5
णं पोरिसपिंडउ णिम्मविउ   णं एक्कहिं साहसोहु थविउ ।
णं चायदुवंकुरु णीसरिउ   धरणिइ विहलुद्धरणु व धरिउ ।
वड्ढइ सुंदरु वड्ढियफुरणु   णावइ बीयउ दससयकिरणु ।
एत्तहि णरणाहें सिरु धुणिवि   धुत्तत्तणु जामायहु मुणिवि ।
सो कोंति महि बेण्णि वि जणिउ   परिणाविउ पंडु पीणथणिउ । 10
दइयहु आलिंगणु देंतियइ   कोंतीइ तीइ कीलंतियइ ।
सुउ जणिउ जुहिट्ठिलु भीमु णरु   णग्गोहरोहपारोहकरु ।
मद्दीइ णउलु सयणुद्धरणु[12]   अण्णु वि सहएवु दीणसरणु ।

घत्ता—तिहुवणि[13] लद्धपइट्ठहु   णरवइविट्ठें इट्ठहु ॥
दिण्णी पालियरट्ठहु   गंधारि वि धयरट्ठहु ॥ ५ ॥ 15

6

हुउ ताहि गब्भि कुलभूसणउ   दुज्जोहणु पुणु दूसासणउ ।
पुणु दुद्दरिसणु दुम्मरिसणउ   पुणु अण्णु अण्णु हूयउ तणउ ।
सउ पुत्तहं एव ताइ जणिउं   जिणभासिउं सेणिय मइं गणिउं ।
अण्णहिं दिणि सूरवीरु सिरिहि   णिव्विण्णु गंधमायणगिरिहि ।

5 १ B पत्तिहिं. २ A दित्तवउ. ३ Als. पावासव° against Mss. ४ S एएं. ५ AP कुमरु. ६ B तं. ७ APS °दुमंकुरु. ८ A धरणिविहलु°. ९ A सा. १० A जणीउ. ११ B पीणत्थणीउ. १२ S कुलउद्धरणु; K records a p: कुल°. १३ A तिहुयण°; B तिहुवण°; P तिहुयणि.

6 १ P दुम्मुहु पुणु अण्णु हूयउ. २ B णिव्विण्ण; S णिविण्ण.

5 1 *b* पत्तें सहुं पत्रेण लेखेन सह; दिव्ववउ दिव्यवपुः. 2 *a* णिविडहि निबिडायाम्; *b* कालिंदि° यमुना. 3 *a* पावसावरहिउ पापश्रा (शा) परहितः; *b* आइच्चें राएं आदित्यनाम्ना राज्ञा. 4 *a* सुत्तउ सुप्तः; कण्णकरु कर्णोपरि दत्तहस्तः. 5 *b* राहहि राधानाम राज्याः. 6 *b* साहसोहु अद्भुतकर्मसमूहः. 7 *a* चायदुवंकुरु त्यागवृक्षस्य अङ्कुरः; *b* विहलुद्धरणु दुःखिजनोद्धरणः. 8 *b* दससयकिरणु सूर्यः. 9 *a* णरणाहें अन्धकवृष्णिना. 12 *a* णरु अर्जुनः; *b* णग्गोहरोहपारोह° वटपादपाङ्कुरः.

6 4 *a* सूरवीरु अन्धकवृष्णिपिता; सिरिहि लक्ष्म्याः सकाशात्.

गउ वंदिउ सुप्पइट्ठुभडार्उं		सुयजमलु महियलु देवि पिहुं । 5
अप्पिणु णीसंगु णिरंबरउ		जायउ मुणि कयमणसंवरउ ।
णिसिदिवसपक्खमासेणें हय		बारह संवच्छर जाम गय ।
ता सुप्पइट्ठुरिसिदिहि हरइ		उवसग्गु सुदंसणु सुरु करइ ।
तं दुट्ठुं दूसहु साहुं साहेउं		आऊरिउं झाणु रोसरहिउं ।
उप्पण्णउं केवलु विमलु किह		आणिउं तेल्लोक्कु झड त्ति जिह । 10
आयउं चउविहु देवागमणु		तहिं अंधयविट्ठिहि णमिउ जिणु ।
पुच्छिउ परमेसरु परमपरु		णाणाविहजम्मणमरणहरु ।
उवसग्गहु कारणु काइं किर		ता जिणमुहाउ णीसरिय गिर ।

घत्ता—जंबूदीवइ भारहि		देसि कलिंगि सुहावहि ॥
आवणभवणणिरंतरि		दिण्णकामि कंचीपुरि ॥ ६ ॥ 15

7

तहिं दिणयरदत्त सुदत्त वणि		किं वण्णामि धणयसमाणधणि ।
लंकाइहिं दीविहिं संचरिवि		अण्णोण्ण पैसंडिभंडु भरिवि ।
लोहिट्ठ ण सुक्कहु देंति पणु		भइयइ महिमज्झि णिवंति धणु ।
तरु णिहणंतहिं रसवणियरहिं		तं दिट्ठउं णियउं जाम परहिं ।
ता जुज्झिवि ते तिट्ठाइ हय		अवरोप्परु भंतिइं हणिवि मय । 5
णारय हूया पुणु मेस वणि		पंचत्तु पत्त पुणु भिडिवि रणि ।
गंगायडि गोउलि पुणु वसह		जुज्झेप्पिणु पुणु संपत्तवह ।
संमेयमहीहरि पुणु पमय		तण्हाइ सिलायलि सलिलरय ।
अब्भिट्ट वसणणहजज्जरिउ		मुउ एक्कु एक्कु तहिं उव्वरिउ ।

३ BP सुप्पइट्ठु; S सुप्पतिट्ठु. ४ S अरिहु. ५ AB पट्ठु. ६ B अप्पुणु. ७ APS °मासेहिं. ८ A साहुहुं सहिउं. ९ P रोसहरिउं. १० S विमालु. ११ B आयउ. १२ ABP चउविहदेवा°; S बहुविहु. १३ AP अंधकविट्ठिं; S °विट्टें. १४ PS णविउ. १५ S जंबूदीवे. १६ S देस°.

7 १ P संवरेवि. २ ABPS अण्णण्णु. ३ B पसंडे. ४ A पुणु. ५ B वणियरेहिं; P वणिवरेहिं. ६ A णिय उज्जम परहिं; P णियउ जाम परहि. ७ A संतिए. ८ AP पुणु हूया. ९ S भिडवि. १० A जुज्झेण जि पुणु वि पवण्ण वह; B जुज्झेण जि पुणु वि पवण्णवहि. ११ S सिलायल°.

5 *b* पिहु विस्तीर्णम्. 8 *b* सुदंसणु सुदत्तवणिक्चरः. 9 *a* साहुं साधुना. 15 *a* आवण° हट्टः.

7 1 *b* धणयसमाणधणि कुबेरसदृशधनवन्तौ. 2 *a* दीविहिं द्वीपेषु; *b* पसंडिभंडु सुवर्णभाण्डम्. 3 *a* सुक्कहु शुल्कस्य; पणु भागः; *b* भइयइ भयेन. 4 *b* तं धनम्; णियउं नीतम्. 5 *a* तिट्ठाइ तृष्णया. 7 *b* संपत्तवह प्राप्तवधौ. 8 *a* पमय वानरौ. 9 *b* एक्कु सुदत्तचरः; एक्कु दिनकरदत्तचरः.

हंसीसि जाम णीसरइ कइ संपत्ता ता तहिं बेण्णि जइ। 10
चारण जियमण तेलोक्कगुरु ते णामें सुरगुरु देवगुरु।
कहियाइं तेहिं दुक्कियहरइं करुणेण पंच परमक्खरइं।
घत्ता—सिवगइकामिणिकंतहु धम्मु सुणिवि अरहंतहु॥
मुउ वाणरु वउ लेप्पिणु जिणवरु सरणु भणेप्पिणु॥ ७॥

8

सोहम्मसग्गि सोहग्गजुउ चित्तंगउ णामें अमरु हुउ।
कालें अंतें एत्थु जि भरहि देसम्मि सुरम्मइ सुहणिवहि।
पोयणपुरि सुत्थियपत्थिवहु तिक्खासिपरज्जियपरणिवहु।
सिसु जायउ गब्भि सुलक्खणहि सुपइट्ठु णामु सुवियक्खणहि।
पाउसि गउ कत्थइ कालगिरि तहिं दिट्ठा बेण्णि भिडंत हरि। 5
हा मइं मि आसि इय जुज्झियउं कइदंसणि णियभवु बुज्झियउ।
आसंघिउ सूरि सुधम्मु सइं इय पइउं जिणतवु चिण्णु मइं।
इयरु वि संसारइ संसरिवि पुणु आयउ बहुदुक्खइं सहिवि।
सिंधूतीरइ घणवणगुहिलि णवकुसुमरेणुपरिमलबहलि।
तावसिहि विसालहि हरगणहु तवसिहि सिसु हुउ मृगायणहु। 10
पंचग्गितावतवधंसणउ हुउ जोइसदेउ सुदंसणउ।
हउं सूरदत्तु चिरु वाणियउ इहु सो सुदत्तु मइं जाणियउ।
उवसग्गु करइ णियकम्मवसु ण मुणइ परमागमणाणरसु।
संसारि ण को मोहेण जिउ तं सुणिवि सुदंसणु धम्मि थिउ।
घत्ता—तं णिसुणिवि पणवेप्पिणु सिरि करजुयलु थवेप्पिणु॥ 15
अंधकविट्ठि जिणवरु पुच्छिउ णियभवंतरु॥ ८॥

१२ S अरिहंतहो. १३ AP वउ.

8 १ B सुत्थिउ. २ B कालिगिरि. ३ APS बहुवारउ उप्पज्जिवि मरिवि; but K adds a *p*: बहुवारउ उप्पज्जिवि मरिवि इति ताडपत्रे in second hand. ४ B °गुहलि. ५ S °बहुले. ६ B मिगयणहो; P मिगायणहो. ७ AP °तावतणुधंसणउ. ८ B तं णिसुणेप्पिणु सिरि. ९ AP °विहिहि. १० B णियइ.

10 *a* कइ कपिः. 14 *a* वाणरु दिनकरदत्तचरः.

8 1 *a* सोहग्गजुउ सौभाग्ययुक्तः. 4 *a* सुलक्खणहि सुलक्षणानाम्न्याः. 5 *a* पाउसि वर्षाकाले; *b* हरि वानरौ. 6 *b* कइदंसणि कपिदर्शने. 8 *a* इयरु इतरः सुदत्तचरः. 9 *a* °गुहिलि गह्वरे सघने. 10 *a* हरगणहु रुद्रगणस्य; *b* मृगायणहु मृगायननाम्नः. 12 *a* हउं सुप्रतिष्ठः. 15 *b* सिरि मस्तके.

9

जिणु कहइ एत्थु भारहवरिसि कोसलपुरि पउरअणियहरिसि ।
णरवइ अणंतवीरिउ वसइ जसु जासु चंदजोण्ह वि हसइ ।
तेत्थु जि सुरिंदंदत्तउ भणिउ गुणवंतु संतु भल्लउ भणिउ ।
अरहंतदेवपविरइयमह अणवरउ देइ दीणार दह ।
अट्ठमिहि वीस चालीस पुणु अमैवासहि मणकवडेण विणु । 5
अट्ठउणउं पव्वि पव्वि मुयइ दविणें जिणु पुज्जइ मलु धुयइ ।
तें अंतें सायरपारपरु घरि अच्छिउ पुच्छिउ विप्पु वरु ।
भो रुद्ददत्त सुइ करहि मणु लइ बारहसंवच्छरहं धणु ।
पुज्जिज्जसु जिणवरु एण तुहुं हउं एमि जाम जाएवि सुहुं ।
इय भासिवि णिग्गउ सेट्ठि किह बंभणमणभवणहु धम्मु जिह । 10

घत्ता—विरइयकिव्विसमवेसइ अखउं जूवें वेसइ ॥
वड्डियजोव्वणदप्पें देवदव्वु खलविप्पें ॥ ९ ॥

10

पुणु पट्टणि रयणिहिं संचरइ परधण्णु सुवण्णइं अवहरइ ।
अवलोइउ सेणें तलवरिण कुसुमालु धरिउ णिट्ठुरकरिण ।
पुणरवि मुक्कउ बंभणु भणिवि जइ पइसहि तो पुरि सिरु लुणिवि ।
तं णिसुणिवि णीरसु वज्जरिउं कुसुमालहु हियवउं थरहरिउं ।
गउ भिल्लपल्लि कालउ सवरु तें सेविउ चावतिकंडधरु । 5
आसाइयतरुणाणाहलहिं अण्णहिं दिणि आविवि णाहलहिं ।
तप्पुरवरगोमंडलु गहिउं धाँविउ पुरवरु सेणियसहिउं ।

9 १ P भरह°. २ B सुरिंदयत्तउ; PS सुरेंददत्तउ. ३ A मावासहे. ४ B मुवइ. ५ B धुवइ. ६ S °पारु परु. ७ AP पत्थिउ. ८ ABP विप्पवरु; S विपरु. ९ B रुद्दयत्त. १० B संवच्छरहिं. ११ APS जूएं.

10 १ S °धण्ण. A २ सेण्णें. ३ P पमुक्कु. ४ A पइसहि पुरि तो. ५ APS °तिकंडकरु. ६ BP °पुरवरु. ७ BP धाइउ. ८ B सेण्णें; P सेणिय°; S सेणय°.

9 1 *a* कोसलपुरि अयोध्यायाम्; पउर° पौराणाम्. 2 *b* जसु जासु यस्य यशः. 4 *a* °पविरइयमह °विरचितजिनपूजः. 6 *a* पव्वि पव्वि चतुर्दश्यां अशीतिदीनाराः. 8 *a* सुइ शुचि निर्लोभम्. 9 *b* एमि आगच्छामि. 11 *b* जूवइ द्यूतेन; वेसइ वेश्यया.

10 1 *a* रयणिहिं रात्रौ. 2 *b* कुसुमालु चोरः. 4 *a* णीरसु कर्कशम्. 6 *a* आसाइय° आस्वादितानि; *b* णाहलहिं भिल्लैः.

सो सोत्तियसवरु णिवाइयउ णरयावणि मरिवि पराइयउ ।
पुणु अलि झसु पुणु पुणु पुणु उरउ पुणु वग्घु जाउ मारणणिरउ ।
पुणु पक्खिराउ पुणु कूरमइ पुणु सीहु विरालु रणेक्करइ । 10
पुणु भमिउ सत्तणरयंतरहिं णाणाजोणिहिं तसथावरहिं ।
पुणु पत्तु खेत्ति कुरुजंगलइ करिवरपुरि परिहाजलवलइ ।

घत्ता—लोयहु मग्गपउंजउ जहिं णरणाहु धणंजउ ॥
कविलु णामें सोत्तिउ तहिं दइवें णिव्वसिउ ॥ १० ॥

11

तहु घणथणसिहरणिसुंभणिहि जायउ अणुराहहि बंभणिहि ।
सो गोत्तमु णामें णीसिरिउ पब्भट्ठजणिट्ठपुण्णकिरिउ ।
णीसेसु वि पलयहु गयउं कुलु थिउ देहमेत्तु पाविट्ठु खलु ।
मलपडलविलित्तु भुत्तविहुरु जूयासहाससंकुलचिहुरु ।
मसिकसणवण्णु जरचीरधरु आहिंडइ घरि घरि देहिसरु । 5
जणणिंदिउ खप्परखंडकरु महिवालु व चलइ दंडधरु ।
पुरडिंभहिं हम्मइ आरडइ भुक्खाइ भमियलोयणु पडइ ।
दुग्गेउ दूहउ दुग्गंधतणु रसवसलोहियपवहंतवणु ।
तें पुरि पइसंतु सुदुच्चरिउ दिट्ठउ समुद्दसेणायरिउ ।

९ B सोत्तिउ. १० AP पुणु जलणिहि झसु पुणरवि उरउ. ११ B हुउ; S omits पुणु. १२ AT वग्घु हरिणमारण°; BP वग्घु जीवमारण°; S वग्घु जीउ मारण°. १३ B पंखिराउ. १४ APS वियालु. १५ AP रणेक्कमइ. १६ PS मग्गु. १७ A कविलु णामें.

11 १ AP हुउ सुउ अणु°. २ B णीसियरिउ; PS णीसरिउ; K णीसियरिउ but strikes off य; Als णीसिरिउ on the strength of गुणभद्र who has निःश्रीकः. ३ B पब्भट्ठु. ४ B °पुण्णुकरिउ. ५ B °वलित्तु. ६ BP भुत्तु विहुरु. ७ B °संकुलियसिरु. ८ S जरजीर°. ९ P °भोयणु; S °लोयण. १० PS दोग्गउ. ११ S दूहवु. १२ PS °सेणाइरिउ.

8 *a* णिवाइयउ निपातितः; *b* णरयावणि सप्तमनरके. 9 *a* पुणु पुणु द्विवारं सर्पः. 10 *a* पक्खिराउ गरुडः; *b* विरालु मार्जारः. 12 *b* करिवरपुरि हस्तिनागपुरे. 13 *a* लोयहु मग्गपउंजउ लोकस्य न्यायमार्गे प्रवर्तकः.

11 1 *a* °णिसुंभणिहि निसुंभनं स्तनयोः यस्याः, पुत्रे जाते सति स्तनस्याधः पतनं भवतीति भावः. 2 *a* णीसिरिउ निःस्वः निर्धनः श्रीरहितः अशोभनो दरिद्रो वा; *b* पब्भट्ठजणिट्ठपुण्णकिरिउ पुण्यक्रियारहितः. 3 *a* णीसेसु सर्वम्; *b* देहमेत्तु एकाक्येव. 4 *a* भुत्तविहुरु भुक्तदुःखः; *b* जूयासहास° यूकासहस्रेण; °संकुलचिहुरु भृतकेशः. 5 *b* देहिसरु देहि इति शब्दं कुर्वन्. 6 *a* जणणिंदिउ लोकनिन्द्यः. 9 *a* तें गौतमेन.

तहु मग्गेण जि सो चलियउ	जाणिवि सुहकम्मेँ पेल्लियउ ॥ 10
घत्ता—पर्यंडियपासुलियालउ	तुइंलणु वियरालउ ॥
वेणिवरणारिहिँ दिट्ठउ	णं दुकालु पइट्ठउ ॥ ११ ॥

12

पडिगाहिउ रिसि वइसवणघरि	आहारु दिण्णु सुविसुद्धु करि ।
मुणिचट्टु भणिवि हक्कारियउ	रंकु वि तेत्थु जि वइसारियउ ।
भोयणु आकंठु तेण गसिउं	णियचित्ति रिसित्तु जि अहिलसिउं ।
गउ गुरुपंथेण जि गुरुभवणु	सो भासइ पेट्टालग्गहणु ।
तुहुँ पेसणेण अहणिसु गममि	तुहुं जिह तिह हउं णग्गउ भममि । 5
गुरुणा तहु कम्मु णिरिक्खियउं	दिण्णउं वउं सत्थु वि सिक्खियउं ।
कालें अंतें समभावि थिउ	हुउ सो सिरिगोत्तमु लोयपिउ ।
मज्झिमगेवज्जहि तासु गुरु	उवरिल्लविमाणइ जाउ सुरु ।
सो तहिँ मरेवि अहमिंदु हुउ	अट्ठावीसहिँ सायरहिँ चुउ ।
इहँ जायउ अंधकविट्ठि तुहुं	दिउ रुद्दवसु अणुहविवि दुहुं । 10
घत्ता—अणुहुंजियबहुकम्मइं	आयण्णिवि णियजम्मइं ॥
पुणु तणुरुहहं भवावलि	पुच्छिउ राएं केवलि ॥ १२ ॥

13

जणसवणसुहुं जणइ	ता जिणवरो भणइ ।
इह भरहवरिसम्मि	वरमलयदेसम्मि ।
भद्दिलपुरे राउ	मेहरहु विक्खाउ ।
णीरुयसरीरस्स	रायाणिया तस्स ।
णं अच्छरा का वि	भद्दा महादेवि । 5
पायडियगुरुविणउ	दढसंदणो तणउ ।

१३ B पायडिय°. १४ B वणे.

12 १ PS पडिलाहिउ. २ B भण्णिउ. ३ P तुहु. ४ AP रिसि गोत्तमु. ५ APS तहिँ जि मरेवि. ६ P इय.

13 १ AP जं सवण°. २ S °वरसम्मि. ३ P णिरुवमसरीरस्स. ४ AP महाएवि. ५ AS दढदंसणो.

11 *a* °पासुलियालउ पार्श्वास्थियुक्तः.

12 1 *a* पडिगाहिउ स्थापितः. 2 *a* °चट्टु छात्रः. 4 *b* पेट्टालग्गहणु जठरे लग्नचिबुकः, प्रचुरभक्षणात् उन्नतोदर इति भावः. 6 *a* गुरुणा इत्यादि सागरसेनेन गौतमस्य भाग्यं निरीक्षितम्.

13 1 *a* °सवणसुहुं जणइ कर्णानां सुखमुत्पादयति. 4 *a* णीरुय° नीरोगम्.

अरविंददलणेत्तु वणिवरु वि धणयत्तु ।
णंदयस तहु घरिणि णयणेहिं जियहरिणि ।
धणदेउ धणपालु अण्णेक्कु जिणपालु ।
सुउ देवपालंकु जिणधम्मि णीसंकु । 10
पुणु अरुहदत्तो वि सिसु अरुहदासो वि ।
जिणयत्तु पियमित्तु संपुण्णससिवत्तु ।
धम्मरुइ जुत्तेहिं वणि णवहिं पुत्तेहिं ।
णं णवपयत्थेहिं पसरंतगंथेहिं ।
परमागमो सहइ रूढिं परं वहइ । 15
पियदंसणा पुत्ति जेट्ठा वि गुणजुत्ति ।

घत्ता—णाणातरुसंताणहु गउ महिवइ उज्जाणहु ॥
सेट्ठि वि पुत्तकलत्तहिं सहुं कयभत्तिपयत्तहिं ॥ १३ ॥

14

तहिं वंदिवि मुणि मंदिरथेविरु णिसुणेवि अहिंसाधम्मु चिरु ।
दढरहहु समप्पिवि धरणियलु हियउल्लउं सुद्धु करिवि विमलु ।
मेहरहें संजमु पालियउ अरि मित्तु वि सरिसु णिहालियउ ।
वणि जायउ रिसि सहुं णंदणहिं मणि मण्णिय समतिणकंचणहिं ।
मयकामकोहविद्धंसणहि खंतियहि समीवि सुणंदणहि । 5
णंदयस सुणिव्वेयं लइय पियदंसण जेट्ठ वि पावइय ।
कंकेल्लिकयलिकक्कोलिघणि सुपियंगुसंडि मिगचंदवणि ।
गुरु मंदिरथविरु समेहरहु धणयत्तु वि णासियमोहगहु ।
गय तिण्णि वि सासयसिवपयहु मुक्का जरमरणरोयभयहु ।
ते सिद्धा सिद्धसिलायलइ धणदेवाइ वि तेत्थु जि णिलइ । 10

घत्ता—थिय अणसणि विणयायर महिणिहित्ततणु भायर ॥
सहुं जणणिइ सहुं बहिणिहिं जोइयजिणगुणकुहणिहिं ॥ १४ ॥

६ APS णंदजस. ७ B जिणपालु. ८ B जिणयत्तु. ९ B °ससिवत्तु. १० S वणि वणहिं. ११ PS गुणगुत्ति.

14 १ P °पविरु. २ AP करेवि सुद्धु विमलु. ३ ABS मणमण्णिय°. ४ ABP °तण°; S °तिणु. ५ A णंदयसि. ६ B पियदंसणि. ७ B किंकिल्लि°. ८ A °कक्कोल°; P °कंकोल्ल°; S °कक्कोलि°. ९ B °खंडि. १० AP मिगचंद°; B °चंदु. ११ BP मंदिरु. १२ APS धणदत्तु; B धणयत्त. १३ B °भरहो. १४ B अणसणेण. १५ P जणणिहे. १६ APS °कुहिणिहिं.

14 *b* °गंथेहिं शास्त्रैः धनैश्च.

14 4 *a* णंदणहिं नवभिः पुत्रैः सह. 11 *a* अणसणि संन्यासे; विणयायर विनयस्य आकराः 12 *b* °कुहणिहिं °मार्गैः.

15

णियदेहसमुब्भवणेहवस संणासणि चिंतइ णंदजस ।
जइ अत्थि किं पि फलु रिसिहिं तवि ए तणुरुह तो आगामिभवि ।
पयउ धीयउ महुं होंतु तिह विच्छोउ ण पुणरवि होइ जिह ।
कइवयदियहहिं सव्वइं मयइं तेरहमउ सग्गु णवर गयइं ।
सायंकरि सुरहरि अच्छियइं सुरखेरकोडीहिं सेमिच्छियइं । 5
तहिं वीससमुद्दइं भुत्तु सुहुं णिवडंतहुं ओहुल्लियउं मुहुं ।
हूई णंदयस सुहद्द तुह गेहिणि परियाणहि चंदमुह ।
धणदेवपमुह जे पीणभुय इह ते समुद्दविजयाइ सुय ।
घत्ता—पियदंसण सहुं जेट्ठइ किस हूई तवणिट्ठइ ॥
पुत्ति कोंति सा जाणहि अवर मद्दि अहिणाणहि ॥ १५ ॥ 10

16

पहु पुच्छइ वसुदेवायरणु जिणु अक्खइ णाणि जित्तकरणु ।
बहुगोहणसेवियणिविडवड्ढु कुरुदेसि पलासगाउं पयडु ।
तहिं सोमसम्मु णामेण दिउ हुउ णंदि तासु सुउ पाणपिउ ।
तें देवसम्मु णियमाउलउ सेविउ विवाहकरणाउलउ ।
सत्त वि धीयउ दिण्णउ परहं धणकणगुणवंतहं दियवरहं । 5
णंदिं दिट्ठउ णच्चंतु णडु भडसंकडि णिवाडिउ विबलु बडु ।
अण्णाणिउ वसु हवंतु हिरिहि जणपहसणि गउ लज्जिवि गिरिहि ।
गुरुसिहराारूढउ तसियमणु ओवेवि जाइ णउ विवइ तणु ।
तलि आसीणा अच्चंतगुणि तहिं संखणाम णिण्णाम मुणि ।
परछायामग्गु णियच्छियउ दुमसेणुं तेहिं आउच्छियउ । 10

15 १ A अण्णाणि णियच्छइ णंद°; P अण्णाणिणि परयइ णंद°. २ A भव्वइं. ३ S सग्ग. ४ PS °कोडिहिं. ५ P सम्मच्छियइं. ६ P ओहल्लियउं. ७ S हुइ. ८ P सुभद्द.

16 A सेवियवियडवड्डु; B °णिवडवड्डो; P °वियडवडे. २ B °गाम. ३ S सोम्मसम्मु. ४ B सत्त वि जि धीउ. ५ P णंदें; S णंदि. ६ A बलु. ७ P भवंतु. ८ B °पहसिणि; P °पहसणें. ९ PS आवेइ. १० B °सेणु जि तहिं.

15 1 *a* णियदेहसमुब्भवणेहवस स्वपुत्रस्नेहवशा; *b* संणासणि संन्यासयुक्ता. 5 *a* सायंकरि सुरहरि शातंकरविमाने. 6 *b* ओहुल्लियउं म्लानं जातम्; *b* गेहिणि तव अन्धकवृष्णेः गेहिनी.

16 1 *a* °आयरणु पूर्वजन्मचरितम्; *b* जित्तकरणु जितेन्द्रियः. 2 *b* पयडु प्रकटः प्रसिद्धः. 6 *b* भडसंकडि प्रेक्षकजनसंमर्दे; विबलु बडु गतसामर्थ्यः बटुः. 7 *a* वसु हवतु वश्यो भवन्. 8 *a* तसियमणु भृगुपातकरणे भीतमनाः.

गुरु अक्खहि कायच्छाय णरहु कहु तणिय एह आइय धरहु ।
घत्ता—ता णियणाणु पयासइ ताहं भडारउ भासइ ॥
होंतउ सच्चउं दीसइ जो तुम्हहं पिउ होसइ ॥ १६ ॥

17

तइयम्मि जम्मि ओलद्धदिही वसुदेउ णाम राणउ हविही ।
जो तुम्हहं जणणु सीरिहरिहिं भुयबलतोलियपडिबलकरिहिं ।
तहु तणुछाहुल्लिय ओयरियं ता बे वि तहिं जि रिसि संचरिय ।
जहिं सो अप्पाणउं किर घिवइ अणुकंपइ संखु साहु चवइ ।
उव्वेईउ दीसेहि काइं णिरु किं चिंतहिं णिसुणहि किं बहिरु । 5
तं णिसुणिवि पणइणिदुक्खियउ पडिलवइ कुकम्मुवलक्खियउ ।
महुं मामहु धूयउ जेत्तियउ लोयहं पविइण्णउ तेत्तियउ ।
हउं दूहवु णिग्घणु बलरहिउ किं जीवमि परणिंदइ गहिउ ।
णिद्दइवु णिरुज्जमु किं करमि इह णिवडिवि वर तणु संघरमि ।
घत्ता—मुणि पभणइ किं चिंतहि अप्पउं महिहरि घत्तहि ॥ 10
भो जिणवरतवु किज्जइ दुरिउं दिसाबलि दिज्जइ ॥ १७ ॥

18

लब्भइ सयलु वि हियइच्छियउं पर तं मुणिवरहिं दुगुंछियउं ।
मग्गिज्जइ णिक्कलु परमसुहुं जेहिं कहिं मि ण दीसइ देहदुहुं ।
तं णिसुणिवि तेण वि तवचरणु किउं कामकसायरायहरणु ।
उप्पण्णु सुक्कि णिरसियविसउ सोलहसायरबद्धाउसउ ।

११ B अक्खइ. १२ S कायच्छाह°.

17 १ S आलद्धि. २ S तुम्हहुं. ३ S उयरिय. ४ A उव्वेयउ. ५ A दीसइ; S दीसहे. ६ B णिसुणइ. ७ B कुकम्मवलक्खियउ. ८ B धूवउ. ९ B वडिवण्णउ; P पडिवण्णउ. १० B दोहवु; P दूहउ. ११ B णिज्जउ; P णिद्दइउ. १२ S संधरमि. १३ B चित्तहि; P चेतहि.

18 १ S जें.

11 *b* धरहु पर्वतात्.

17 1 *b* हविही भविष्यति. 2 *a* सीरिहरिहिं बलभद्रकृष्णयोः; *b* °करिहिं गजैः. 3 *b* संचरिय संचलितौ गतौ. 6 *a* पणइणिदुक्खियउ स्त्रीलाभं विना दुःखितः; *b* कुकम्मुवलक्खियउ उपलक्षितं ज्ञातं निजपापकर्म. 7 *b* पविइण्णउ दत्ता इत्यर्थः. 8 *a* णिद्दइवु अपुण्यः.

18 1 *b* तं निदानम्. 4 *a* णिरसियविसउ निरस्तविषयः.

कालें अंतें तेत्थहु पडिउ णररूवें णं वम्महु घडिउ । 5
णं तरुणिणयणमणरमणघरु णं गेहु कयदुम्महविरहजरु ।
णं कामबाणु णं पेम्मरसु णं पुरिसरूवि थिउ मयणजसु ।
वसुएवु एहु सुहवु सुहडु सुउ तुह जायउ हयहत्थिहडु ।
तो अंधकविट्ठिं धंसधउ णियवइ णिहियउ समुद्दविजउ ।
सुपइट्ठु भडारउ गुरु भणिवि मोहंघिवमूलइं णिल्लुणिवि । 10
उवसग्ग परीसह बहु सहिवि तवु करिवि घोरु दुरियइं महिवि ।

घत्ता—भरहरायदिहिगारउ अंधकविट्ठि भडारउ ॥
गउ मोक्खहु मुक्किंदिउ पुप्फयंतसुरवंदिउ ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वसुएवउप्पत्ती अंधकविट्ठि-णिव्वाणगमणं णाम दुवासीमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८२ ॥

२ A णारिहु. ३ AP कयदुम्महु. ४ A °हत्थिघडु. ५ A ता. ६ ABP णियपइ. ७ B सुपइट्ठ. ८ B पुप्पयंतु; K पुष्फयंत; S पुप्पयंत. ९ AB समुद्दविजयादिउप्पत्ती. १० AS दुयासीतिमो; P दुयासीमो.

5 *a* तेत्थहु शुक्रस्वर्गात्. 6 *b* गहु स्त्रीणां चित्तपीडने ग्रहः शनिः राहुर्वा. 7 *b* मयणजसु कामस्य यशः 9 *b* णियवइ निजपदे. 10 *b* मोहंघिवमूलइं मोहवृक्षस्य मूलानि. 12 *a* भरहरायदिहिगारउ भरतक्षेत्रराज्ञां धृतिकारकः, संतोषकारकः.

LXXXIII

सडुं भायरहिं समिद्धु णायाणाय णिहालइ ॥
पहु समुद्दविजयंकु महिमंडलु परिपालइ ॥ ध्रुवकं ॥

1

एकहिं दिणि ओरूढउ करिवरि णावइ ससहरु उइउ महीहरि ।
असहसणयणु णाइ कुलिसाउहु अकुसुमसरु णं सइं कुसुमाउहु ।
णं अखारु सलवणु रयणायरु अकवडणिलउ णाइ दामोयरु । 5
अमलदेहु णावइ उग्गउ इणु जगसंखोहकारि णावइ जिणु ।
चामरछत्तचिंधसिरिसोहिउ विविहाहरणविसेसपसाहिउ ।
सो वसुएउ कुमारु पुरंतरि हिंडइ हट्टमग्गि घरि चच्चरि ।
सो ण पुरिसु जें दिट्ठि ण ढोइय सा ण दिट्ठि जा तहु णं पराइय ।
मणुउ देउ सो कासु ण भावइ संचरंतु तरुणीयणु तावइ । 10

घत्ता—का वि कुमारु णियंति रोमि रोमि पुलइज्जइ ॥
अलहंती तहु चित्तु पुणरवि तिलु तिलु खिज्जइ ॥ १ ॥

2

पासेइज्जइ का वि णियंबिणि थिप्पइ णं अहिणवकालंबिणि ।
का वि तरुणि हरिसंसुय मेल्लइ काहि वि वम्महु वम्मइं सल्लइ ।
सुहवगुणकुसुमहिं मणु वासिउं काहि वि मुहुं णीसासें सोसिउं ।
णेहवसेण पडिउं चेलंचलु काहि वि पायडु थक्कु थणत्थलु ।
काहि वि केसभारु चुउ बंधणु काहि वि कडियलल्हसिउं पयंधणु । 5
खलियक्खरइं का वि दर जंपइ पियविओयजरवेएं कंपइ ।

1 १ S आरूड. २ APS उययमही°. ३ A सहसणयणु णावइ. ४ B णामि. ५ B उग्गओ. ६ AP ° चिंधु. ७ S सिर°. ८ S विविहाहरण°. ९ S वसुदेव. १० S omits ण.

2 १ S णियंबणि. २ S °कालिंबिणि. ३ AP चुय°. ४ P पईधणु; ST पइंधणु.

1 3 *b* उइउ उदितः. 4 *a* असहसणयणु परं न सहस्रनेत्रः; कुलिसाउहु इन्द्रः. 5 *a* रयणायरु समुद्रः; *b* अकवडणिलउ कपटरहितः. 6 *a* इणु सूर्यः. 7 *b* °पसाहिउ शृङ्गारितः.

2 1 *a* पासेइज्जइ प्रस्विद्यते; *b* थिप्पइ क्षरति; °कालंबिणि मेघमाला. 2 *a* हरिसंसुय हर्षाश्रूणि; वम्मइं मर्माणि. 4 *b* पायडु प्रकटम्. 5 *a* चुउ शिथिलो जातः; *b* पयंधणु परिधानम्.

विक्कंवंति क वि चरणहिं गुप्पइ कावि पुरंधि णियदइयहु कुप्पइ ।
मयणुम्मायउं गयमज्जायउं काहि वि हियउं णिरंकुसु जायउं ।
लोहलज्जकुलभयरसमुक्कउं वरदेवरससुरयसुहिदुक्कउं ।
काहि वि वउ पेम्मेण किलिण्णउं विउणावेढु णियंबहु दिण्णउं । 10

घत्ता—क वि ईसालुयकंत दप्पणि तरुणु पलोइवि ॥
विरहहुयासें दड्ढ मुय अप्पाणउं सोइवि ॥ २ ॥

3

तेग्गयमण क वि मुहआलोयणि वीसरेवि सिसु सुण्णणिहेलणि ।
कडियलि घरमज्जारु लएप्पिणु धाइय जणवइ हासु जणेप्पिणु ।
काहि वि कंडंतिहि ण उवूहलि णिवडिउ मुसलघाउ धरणीयलि ।
काइ वि चट्टुयहत्थइ जोइउ रंककरंकइ पिंडु ण ढोइउ ।
चित्तुं लिहंति का वि तं झायइ पत्तछेइ तं चेय णिरूवइ । 5
जा तहिं णच्चइ सा तहिं णच्चइ जा गायइ सा तं सरि सुच्चइ ।
जा बोल्लइ सा तहु गुण वण्णइ णियभत्तारु ण काइं वि मण्णइ ।
विहरंतिहिं इच्छिज्जइ मेलणु भुंजंतिहिं पुणु तहु कह सालणु ।
णिसि सोवंतिहिं सिविणइ दीसइ इय वसुएउ जाम पुरि विलसइ ।
णरणाहहु कयसाहुक्कारें ता पय गय सयल वि कुवारें । 10
देव देव भणु किं किर किज्जइ विणु घरिणिहिं घरु केंव धरिज्जइ ।
मयणुम्मत्तउ पुरणारीयणु वसुएवहु उप्परि ढोइयमणु ।
णिसुणि भडारा दुक्करु जीवइ आउ जाउ पय कहिं मि पयावइ ।

५ A विक्कमंति; P चिक्कमंति. ६ P चरणहिं क वि. ७ ABP लोयलज्ज°. ८ B °रसभय°. ९ S °रसु. १० P सुसुरय°. ११ A °सुहिदुक्कउं. १२ A वडणावेढु. १३ S पलोयवि.

3 १ P उग्गयणयण का वि मुहयालोयणि. २ A मुहयालोयणि. ३ BS कंडंतहि. ४ B णिवडिय. ५ B चट्टुउ. ६ B रंकहं करए. ७ P चित्तु. ८ A णिरूयइ. ९ P जहिं तहिं. १० A गायइ. ११ S वसुएवु. १२ BP वसुदेवहु.

7 *a* चिक्कवंति गच्छन्ती. 9 *a* लोहलज° लोभस्य रसः. 10 *a* वउ पेम्मेण किलिण्णउं वपुः शुक्रेणार्द्रं जातम्; *b* विउणावेढु द्विगुणवेष्टनम्. 11 ईसालुयकंत ईर्ष्यायुक्तस्य भर्तुः कान्ता. 12 दड्ढ दग्धा.

3 1 *a* मुहआलोयणि मुखालोकननिमित्तम्. 2 *b* जणवइ लोके. 3 *a* उवूहलि उलूखले. 4 *a* चट्टुयहत्थइ चट्टुकहस्तया; *b* रंककरंकइ दरिद्रभिक्षुकस्य भाजने खर्परे. 5 *a* चित्तु लिहंति चित्रं लिखन्ती कपोले; *b* पत्तछेइ पत्रच्छेदविषये तमेव पश्यति. 6 *a* जा तहिं इत्यादि या तत्र नगरे नृत्यति सा तस्याग्रे नृत्यति; *b* सरि सुच्चइ स्वरे स्वरमध्ये सूचयति. 8 *a* मेलणु मार्गमध्ये मेलापकः; *b* तहु कह सालणु भुञ्जन्तीनां तस्य कथा एव व्यञ्जनम्. 10 *b* पय प्रजा; कुवारें पूत्कारेण.

घत्ता—ता पउरहं राएण पउरु पसाउ करेप्पिणु ॥
पत्थिउ रायकुमारु णेहें हुंकारेप्पिणु ॥ ३ ॥

4

विणयरु दहइ धूलि तणु मइलइ दुट्ठदिट्ठि ललियंगइं जालइ ।
किं अप्पाणउं अप्पुणु दंडहि बंधव तुहुं किं बाहिरि हिंडहि ।
करि वणकील विउलणंदणवणि हिंदुयकील करहि घरप्रंगणि ।
मणिगणबद्धणिद्धधरणीयलि रमणीकील करहि सत्तमयलि ।
सलिलकील करि कुवलयवाविहि तं णिसुणेवि वयणु कुलसामिहि । 5
जुवराएं पडिवण्णु णिरुत्तउं गयकइवयदियहेहिं अजुत्तउं ।
पुणु णिउणमइसहाएं वुत्तउं पहुणा णियलेणु तुज्झु णिउत्तउं ।
पुरयणणारीयणु तुह रत्तउ जोहंवि विहलंघलु णिवडंतउ ।
णायरलोएं तुहुं बंधाविउ णरवइवयणु णिरोहणु पाविउ ।
तासु वयणु तं तेण परिक्खिउं णिवमंदिरणिग्गमणें जोक्खिउं । 10

घत्ता—ता पडिहारणरेहिं एहउं तासु समीरिउं ॥
घरणिग्गमणु हिएण तुम्हहं राएं वारिउं ॥ ४ ॥

5

तओ सो सुहदहासुओ वूढमाणो ण केणावि दिट्ठो विणिग्गच्छमाणो ।
घराओ पुराओ गओ कालिकाले अचक्खुप्पएसे तमालालिणीले ।
वसावीसढं देहिदेहावसाणं पविट्ठो असाणं ससाणं मसाणं ।

१३ S कक्कारेप्पिणु.

4 १ APS डहइ. २ APS अप्पणु. ३ AP किं तुहुं. ४ S विउले. ५ B करिहि. ६ ABP °पंगणे. ७ S रमणीयकील. ८ S om. दिय°. ९ P णिगुणमइ°. १० K णियलु. ११ AP पुरवरणारी°. १२ S जोयवि. १३ S विहलंघलणु वडंतउ. १४ B वयण. १५ AP णिरिक्खिउं.

5 १ B वुड्ढ°; S वोढ°. २ BS विणिगच्छ°. ३ S अचक्खुपएसे. ४ S omits ससाणं.

14 पउरु प्रचुरम्.

4 1 *b* दुट्ठदिट्ठि डाकिनीप्रमुखानां दुष्टानां दृष्टिः. 4 *a* मणिगणबद्ध° रत्नसमूहबद्धम्. 5 *b* कुलसामिहि राज्ञः. 6 *a* पडिवण्णु अङ्गीकृतम्. 7 *a* णिउणमइसहाएं निपुणमतिमित्रेण; *b* णियलणु निगलबन्धनम्. 8 *b* विहलंघलु विह्वलः. 10 *b* जोक्खिउं आकलितं, स्तम्भितम्. 12 हिएण हितेन.

5 1 *a* वूढमाणो उत्पन्नाहंकारः. 2 *a* कालिकाले रात्रिसमये; *b* अचक्खुप्पएसे अचक्षुविषयप्रदेशे. 3 *a* °वीसढं बीभत्सम्; *b* असाणं अशब्दम्; ससाणं सकुक्कुरम्; मसाणं श्मशानम्.

कुमारेण तं तेण दिट्ठं रउद्दं कललंतंतमालं सिवामुक्कसद्दं ।
महासूलभिण्णंगकंदंतचोरं वियंभंतमज्जारघोसेण घोरं । 5
विहिंडंतवीरेसहुंकारफारं पलिप्पंतसत्ताविधूमंधयारं ।
जडुंड्डीणभूलीणकीलालउल्लयं समुद्धंतवग्गुग्गवेयालकव्वं ।
णिकंकालवीणासमालत्तगेयं दिसाडाइणीदुग्गखज्जंतपेयं ।
कुलुब्भूयसिद्धंतमग्गावयारं दिजीडोंबिचंडालिपेयाहियारं ।
घणं णिग्घिणं भासियद्दइयवायं सया जोइणीचक्ककीलाणुरायं । 10

घत्ता—अकुलकुलहं संजोए कुलसरीरु उवलक्खियउं ॥
इय जहिं सीसहं तहु कउलायरियं अक्खियउं ॥ ५ ॥

6

जोइउ तहिं वम्महसोहालें कज्झंतउं मडउल्लउं बालें ।
तहु उप्परि आहरणइं वित्तइं रयणाकिरणविप्फुरियविचित्तइं ।
लिहिवि मरणवत्ताइ विसुद्धउं हरिगलकंदलि पत्तु णिबद्धउं ।
सुललिउ सुहउ सयणाणंदिरु गउ अप्पणु सो कत्थइ सुंदरु ।
उग्गउ सूरु कुमारु ण दीसइ हा कहिं गउ कहिं गउ पहु भासइ । 5
कणयकोंतपट्टिसकंपणकर राएं दसदिसु पेसिय किंकर ।
पुरि घरि घरि अवलोइउ उववणि अवरहिं दिट्ठउ हयवरु पिउवणि ।
पल्लाणियउ पट्टचमरंकिउ तं अवलोइवि भडयणु संकिउ ।

५ B °माला°. ६ S विहिंडंत°. ७ A °ड्डीणचूलीण. ८ B °उलूवं; S °उलीयं. ९ A °रुव्वं. १० ABP णिकंकाल°. ११ B °गीयं. १२ B कुलुब्भूय°; Als. कुलुब्भाय° on the strength of gloss in B: कुलाचार्यप्रणीतसिद्धान्तमार्गावतारम्. १३ A दिजिप्पाविचंडालपीयाहियारं. १४ A भासियं दइयवायं. १५ A अकुल. १६ P कुल. १७ APS °लक्खिउं. १८ AP सीसहिं. १९ P कउलाइरिएं; S कउलाइरियहिं. २० A रक्खिउ; PS अक्खिउ.

6 १ B घेत्तइं. २ PS °विप्फुरण°. ३ B °कंदल°. ४ AB णयणाणंदिरु. ५ AP कत्थइ सो. ६ P वणे वणे.

4 *b* ललंततमालं लम्बमानान्त्रमालम्; सिवा° शृगाली. 5 *a* °भिण्णंग° भिन्नशरीरः; *b* वियंभंत° प्रसरन्. 6 *a* °वीरेसहुंकार° वीरेशमन्त्रसाधकम्. 9 *a* कुलुब्भूय° कौलिककथितः; *b* दिजी° ब्राह्मणस्त्री; °पेयाहियारं पेयं मद्यं तस्याधिकारः यस्मिन्. 10 *a* °अद्दइयवायं अद्वैतवादं "सर्वं ब्रह्ममयं जगत्". अकुलेत्यादि कुं पृथिवीं लाति कार्येणादत्ते इति कुलं पृथिवीद्रव्यम्, अकुलं अप्तेजोवायुद्रव्यत्रयं तेषां संयोगे सति कुलं गर्भादिमरणपर्यन्तश्चैतन्यादयः शरीरं च; उवलक्खियउं प्रादुर्भूतं दृष्टम्. 12 सीसहं शिष्याणाम्.

6 1 *a* °सोहालें सुकोमलेन. 3 *b* हरिगलकंदलि अश्वकण्ठे. 6 *a* °कंपण° कट्यारी. 7 *b* पिउवणि श्मशाने. 8 *a* पट्टचमरंकिउ मुखाग्रे पट्टचमरयुक्तः; *b* संकिउ कुमारः कुत्र गत इति भीतः.

लेहु लएप्पिणु णाहहु घल्लिउ तेण वि सो झड त्ति उव्वेल्लिउ।
रायहु बाहाउण्णइं णयणइं दिट्ठइं[7] पयइं लिहियइं वयणइं। 10
णंदउ पय चिरु विप्पियगारी णंदउ सहुं[8] सिवएवि भडारी।
णंदउ परियणु णंदउ णरवइ गउ वसुएवसामि सुरवरगइ[9]।

घत्ता—ता पिउवणि[10] जाइवि सयणहिं जियविच्छोइउं[11] ॥
दइढु[12] सभूसणु पेउ हाहाकारिवि जोइउं[13] ॥ ६ ॥

7

तें[1] णव बंधव सहुं परिवारें सोउ करंति दुक्खवित्थारें।
सा सिवएवि रुयइ[2] परमेसरि हा देवर परमउगयकेसरि।
हा किं जीविउं तिणु[3] परिगणियउं कोमलवउ[4] हुयवहि[5] किं हुणियउं।
हा पयाइ किं किउं पेसुण्णउं हा किं पुरि परिभमहुं ण दिण्णउं।
हा कुलधवलु केंव[6] विद्धंसिउ हा[7] जयसिरिविलासु किं णिरासिउ। 5
हा पइं विणु सोहइ ण घरंगणु चंदविवज्जिउं णं गयणंगणु।
हा पइं विणु दुक्खें पुरु[8] रुण्णउं हा पइं विणु माणिणिमणु सुण्णउं।
हा पइं विणु को हारु थणंतरि को कीलइ सरहंसु[9] व सरवरि।
पइं विणु को जणदिट्ठिउ पीणइ कंदुयकील देव को जाणइ।
हा पइं विणु को पवरहिं सूहउ पइं आपेक्खवि[10] मयणु वि दूहउ। 10
हा पइं विणु णियगोत्तससंकहु को भुयबलु समुद्दविजयंकहु।
हा पइं विणु सुण्णउं[11] हियउल्लउं को रक्खइ मेरउं कडउल्लउं।
छाररासि हूयउ पविलोयउ एंव बंधुवग्गें सो सोइउं[12]।
पंजलीहिं मीणावलिमाणिउं ण्हाइवि[13] सव्वहिं दिण्णउं पाणिउं।

घत्ता—वरिससएण कुमारु मिलइ तुज्झु गुणसोहिउ ॥ 15
णेमित्तियहिं णरिंदु एंव भणिवि संबोहिउ ॥ ७ ॥

७ APS एयइं दिट्ठइं. ८ S सहुं. ९ S सुरवइगइ. १० P पिउवणु. ११ S विच्छोइयउ. १२ P दिड्ढु; S दड्ढु. १३ B जायउ; S जोइयउ.

7 १ A तेण वि बंधव. २ B रुवइ. ३ AS तणु. ४ PS कोमलंगु. ५ B हुववहे. ६ B केम; P केण. ७ P हा हा सिरि°. ८ B पउ. ९ A कलहंसु. १० S आवेक्खिवि. ११ P हियउल्लउं सुल्लउं; S हियउल्लउं भुल्लउं. १२ A सो सोयउ; S संसोइउ. १३ S ण्हायवि.

10 *a* बाहाउण्णइं बाष्पपूर्णानि. 12 *b* सुरवरगइ दिवं गतः. 13 जियविच्छोइउं जीवरहितम्. 14 दड्ढु दग्धम्; पेउ प्रेतं शवम्.

7 3 *a* तिणु तृणवत्; *b* °वउ वपुः शरीरम्. 5 *b* णिरसिउ निरस्तः. 7 *b* पुरु नगरजनः. 12 *b* रक्खइ कडउल्लउं रक्षति कटकम्, शत्रुभञ्जनसमर्थत्वात् त्वमेव रक्षकः. 14 *a* मीणावलि-णिणिउं मत्स्यैर्भुक्तं जलम्.

8

पत्ताहि सुंदरु महि विहरंतउ विजयणयरु सहसा संपत्तउ ।
दिट्ठउं णंदणु वणु तहिं केहउं महुं भावइ रामायणु जेहउं ।
जहिं चरंति णीयर रयणीयर चउदिसु उच्छलंति लक्खणसर ।
सीयविरहि संकमइ णहंतरु घोलिरपुच्छु सरामउ वाणरु ।
णीलकंठु णच्चइ रोमंचिउ अज्जुणु जहिं दोणें[3] संसिंचिउ । 5
णउलें सो जि णिरारिउं सेविउ भायरु किं णउ कासु वि भायउ ।
इय सोहइ उववणु णं भारहु वेल्लीसंछण्णउं रविभारहु ।
जहिं पाणिउं णीयत्तणि णिवडइ जडहु अणंगइं को किर पयडइ ।
तहिं असोयतलि सो आसीणउ सुहउ दीहरपंथें रीणउ ।
णं वणु लयदलहत्थहिं विज्जइ पयलियमहुथेंभहिं णं रंजइ । 10
चलजलसीयरेहिं णं सिंचइ णिवडियकुसुमोहें णं अंचइ ।
साहाबाहहिं णं आलिंगइ परिमलेण णं हियवइ लग्गइ ।
पहियपुण्णसामत्थें णव णव सुक्कसुरुक्खहिं णिग्गय पल्लव ।
पणविवि पालियपउरपियालें रायहु वज्जरियउं वणवालें ।

घत्ता—जो जोइसियहिं वुत्तु जरतरुवरकयछायउ ॥ 15
सो पुत्तिहि वरइत्तु णं अणंगु सइं आयउ ॥ ८ ॥

---

8 १ ABS णंदण°. २ A °पुंछु. ३ A दोणि. ४ P ज्जु. ५ AP ण वि. ६ APS भाविउ. ७ B विल्लिहिं. ८ P अण्णगइं. ९ P सोयासीणउ. १० A वणलय°. ११ BK °मुहयेंभहिं but gloss in K मकरन्दश्चोतैः. १२ AP सुक्खइं रुक्खइं; S सुक्खसुरुक्खइं. १३ B रायइं. १४ B तरुवरु. १५ B आइउ.

---

8 3 *a* रयणीयर राक्षसा उलूकाश्च; *b* लक्खणसर लक्ष्मणबाणाः सारसशब्दाश्च. 4 *a* सीयविरहि शीताभावे घर्मे सति, पक्षे सीतावियोगे; संकमइ ऊर्ध्वप्रदेशे गच्छति गुफादिकं मुक्त्वा; *b* सरामउ वानरीसहितः, सरामचन्द्रश्च; वाणरु मर्कटः सुग्रीवश्च. 5 *a* णीलकंठु भारतपक्षे द्रौपदीभ्राता शिखण्डी नाम, पक्षे मयूरः; *b* अज्जुणु वृक्षविशेषः पार्थश्च; दोणें संसिंचिउ घटेन वृक्षः सिक्तः, द्रोणाचार्येण च बाणैरर्जुनः सिक्तः. 6 *a* णउलें तिरश्चा केनचित्, नकुलेन सहदेवभ्रात्रा च; सो जि स एव अर्जुनवृक्षः पार्थश्च; *b* भायउ भावितः रुचितः. 7 *a* भारहु भारहं महाभारतमिव वनम्; *b* रविभारहु सूर्यदीप्तिप्रच्छादकम्. 8 *a* णीयत्तणि नीचत्वे निम्ने स्थाने; *b* जडहु इत्यादि मूर्खस्य यथा स्त्री अनङ्गं कामं न प्रकटयति, तथा जडस्यापि वृक्षः अनङ्गं ईषत् शरीरं मूलं फलपत्रादिरहितत्वात्, जलं मूर्खः, तेन मूलं प्रति गतम्, अन्यथा तृषितः पुमान् स्वयमेव जलं प्रति गच्छति, परंतु अत्र मूर्खत्वात् जलं स्वयमेव गतमिति भावः. 10 *b* °महुथेंभहि मकरन्दबिन्दुभिः 11 *a* °सीयरेहिं शीकरैः. 13 *a* पहिय° पथिकः; *b* सुक्कसुरुक्खहिं शुष्कवृक्षेषु. 14 *a* °पियालें राजादनवृक्षेण. 16 पुत्तिहि पुत्र्याः श्यामादेव्याः.

9

तं णिसुणिवि आयउ सइं राणउ　　पुरि पइसारिउ रायजुवाणउ ।
हरियवंसवण्णेण रवण्णी　　सामाएवि तासु तें दिण्णी ।
कामुउ कंतहि अंगि विलग्गउ　　थिउ कइवयदियहेहिं पुणु णिग्गउ ।
सिरिवसुएवसामि संतुट्ठउ　　देवदारुवणु णवर पइट्ठउ ।
जहिं लवंगचंदणसुरहियजलु　　दिसिगयकलकोइलकुलकलयलु । 5
जहिं बहुदुमदलवारियरवियर　　रुहुचुंहंति णाणाविह णहयर ।
णवमायंदगोंदि गंजोल्लिय　　जहिं कइ कइकरेहिं उप्पेल्लिय ।
जहिं हरिकरहदारियमयगल　　रुहिरवारिवाहाउलजलथल ।
दसदिसिवइणिहित्तमुत्ताहल　　गिरिकंदरि वसंति जहिं णाहल ।
ओलंहिवीवितेयवावियपह　　जहिं तमालतमअविलक्खिय रह । 10
जहिं सबरहिं संचिज्जइ तरुहलु　　हरिणिहिं चिज्जइ कोमलकंदलु ।

घत्ता—तहिं कमलायरु दिट्ठु णवकमलहिं संछण्णउ ॥
धरणिविलासिणियाइ जिणहु अग्घु णं दिण्णउ ॥ ९ ॥

10

सीयलसगाहगयथाहसलिलालि　　कंजरसलालसचलालिकुलकालि ।
मत्तजलहत्थिकरभीयझसमालि　　वारिपेरंतसोहंतणवणालि ।
मंदमयरंदलवपिंजरियवरकूलि　　तीरवणमहिसदुक्कंतसद्दूलि ।
पंकपल्हत्थलोलंतवरकोलि　　कीरकारंडकलरावहलबोलि ।

---

9 १ °दियहेहिं; P °दियहि. २ A °वणि; P °वणे. ३ S °जल. ४ S °कलयल. ५ A रुहचुअंति; B रुहचुहंति. ६ A °गुंद°; B °गोदि; Als. °गोंदे. ७ P °दिव्व°. ८ B °तमवियलक्खिय. ९ A सवरिहिं. १० BK संचिजय. ११ B छण्णउ. १२ A °विलासिणिए.

10 १ AP कंजरयलालस°. २ AP add वर before वारि. ३ BS omit लव. ४ AP वणकोले.

---

9 2 *a* हरियवंसवण्णेण नीलवेणुवत्. 6 *b* रुहुचुहंति शब्दं कुर्वन्ति; णहयर पक्षिणः. 7 *a* गोंदि समूहे; गंजोल्लिय उल्लसिताः; *b* कइ कपयः. 8 *b* °आउल° भृतानि. 10 *b* °अविलक्खिय अविज्ञाता; रह रथ्या मार्गाः. 11 *a* सबरहि भिल्लैः; संचिज्जइ संग्रहः क्रियते; *b* चिज्जइ भक्ष्यते. 13 धरणिविलासिणियाइ भूस्त्रिया.

10 1 *a* °सगाह° सग्राहं जलचरसहितम्; °सलिलि जलसहिते सरोवरे गजो दृष्टः; *b* कंजरसलालस° कमलरसलम्पटम्; °कालि कृष्णे. 2 *b* वारिपेरंत° जलपर्यन्ते; °णवणालि नवीनपद्मनाले. 4 *a* °पल्हत्थ° पतितः; *b* °हलबोलि कोलाहले.

कंकवलयंबुपरिउंबियबिसंसि लच्छिणेउररवुड्डुवियकलहंसि । 5
अक्करहदंसणपओसियरहंगि बायहयवेविरपघोलियतरंगि ।
ण्हंतवियरंतविहसंतसुरसत्थि पंतजलमाणुसविसेसहयहत्थि ।
घत्ता—करि सरवरि कीलंतु तेण णिहालिउ मत्तउ ॥
णावइ मेरुगिरिंदु खीरसमुद्दि णिहित्तउ ॥ १० ॥

11

अंजणणीलु णाइ अहिणवघणु करतुसारसीयरतिम्मियवणु ।
दसणपहरणिद्दलियसिलायलु पायणिवाओणवियइलायलु ।
कण्णाणिलचालियधरणीरुहु गज्जणरवपूरियदसदिसिमुहु ।
मयजलमिलियघुलियमहुलिहचलु उग्गसरीरगंधगयगयउलु ।
गुरुकुंभयलपिहियपिहुणहयलु णियबलतुलियदिसामयगलबलु । 5
तं अवलोइवि वीरु ण संकिउ वहिवहिसद्दें कुंजरु कोकिउ ।
जा पाहाणु ण पावइ मुक्कउ ता करिणा सो गहिउ गुरुक्कउ ।
करकलियउँ वियलियगयदेहहु उवरि भमइ तडिदंडु व मेहहु ।
वंसारुहणउं करइ सुपुत्तु व खणि करणहिं संमोहइ धुत्तु व ।
खणि ससि जेंव हत्थु आसंघइ खणि विउलइं कुंभयलइं लंघइ । 10
खणि चउचरणंतरिहिं विणिग्गइ खणि हक्कारइ धारइ वग्गइ ।
दंतणिसिक्किय मुहुं ण वियाणइ कालें अप्पाणउं संदाणइ ।
जित्तउ वारणु जुवरयणरिंदें णं मयरद्धउ परमजिणिंदें ।
घत्ता—गयवरखंधारूढु दिट्ठउ खेयरपुरिसें ॥
अंधकविट्ठिहि पुत्तु उच्चाएवि सहरिसें ॥ ११ ॥ 15

५ A °रउड्डीण. ६ S °पओसविय°. ७ ABPS °पघोल्रि°. ८ A गिण्हंत°. ९ A °वेसे हयहत्थे. १० B सरि.

11 १ B णामि. २ A °णिवाएं णमिय°; BP °णिवायए णविय°; S °णिवाउणविय°. ३ B °रुह. ४ AP °दिसिवहु. ५ P गलवसु. ६ S वहे वहे. ७ A करकवलिउ; S करकलिउ. ८ S °णरेंदें. ९ B उच्चाइवि. १० A सह हरिसें.

5 *a* °परिउंबियबिसंसि °परिचुम्बितपद्मिनीअंशे खण्डे; *b* °रवुड्डुविय °रवेन उड्डापितः. 6 *a* अक्करह° सूर्यरथः; °पओसिय° प्रतोषितः; °रहंगि °चक्रवाके. 7 *a* ण्हंत° स्नान्तः.

11 1 *b* °तुसारसीयरतिम्मियवणु शीतलशीकरेणार्द्रीकृतवनभूमिः. 2 *b* °ओणविय° अवनमितम्. 4 *a* °महुलिहचलु °भ्रमरैः चपलः; *b* °गयगयउलु गतं अन्यत्र गजकुलम्. ५ *a* °पिहिय° आच्छादितम्; *b* °दिसामयगलबलु दिग्गजबलम्. 8 *a* करकलियउ शुण्डाग्रेण गृहीतः. 9 *a* वंसारुहणउं पृष्ठवंशारोहणं, अन्यत्र वंशोन्नतिः; *b* करणहिं आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिभिः. 10 *a* हत्थु हस्तनक्षत्रं शुण्डा च. 12 *a* °णिसिक्किय निर्गतः; *b* संदाणइ सम्यग्बध्नाति.

12

णहयललग्गरयणमयगोउरु　　णिउ वेयहुहु थोरावइपुरु ।
कुलबलवंतहु दइवसहायहु　　दरिसिउ असणिवेयखगरायहु ।
पंच ससामिसालु विण्णवियउ　　विंझगइंदु एण विद्दवियउ ।
इहु सो चिरु जो णाणिहिं जाणिउ　　इहु तुह दुहियावरु मइं आणिउ ।
तं णिसुणेवि असणिवेयंकें　　अवलोइयसुहिवयणससंकें ।　　5
पवणवेयदेवीतणुसंभव　　सामरि णामें सुय वीणारव ।
दिण्णी तासु सुहद्दातणयहु　　पोढहु पउणियपणयपसायहु ।
गयबहुदियहहिं पेम्मपसत्तउ　　सो सूहउ जामच्छइ सुत्तउ ।
तावंगारयखयरें जोइउ　　सुंहि सुत्तु जि भुयपंजरि ढोइउ ।
भूमियरहु पब्भट्ठविवेयहु　　मामें णियसुय दिण्णी एयहु ।　　10
एम भणंतें णिउ णियइच्छइ　　सामरि सुंदरि धाइय पच्छइ ।
घत्ता—असिवसुणंदयहत्थ णियणाहहु कुढि लग्गी ॥
पडिवक्खहु अब्भिट्ट समरसएहिं अभग्गी ॥ १२ ॥

13

असिजलसलिलझलक्कयसित्तें　　अंगारएण सुकसणियगत्तें ।
सोहद्देउ झड त्ति विमुक्कउ　　पहरणकरु सइं संजुइ ढुक्कउ ।
घरिणिइ एइ णिवडंतु णियच्छिउ　　पण्णलहुयविज्जाइ पडिच्छिउ ।
तहि पहरंतिहि वइरि पलाणउ　　सुंदरु गयणहु मयणसमाणउ ।

---

12 १ AP दारावइ°. २ B दइय°. ३ AP ° खयरायहो. ४ B एहु जि चिरु जो; S एहु सो चिरु. ५ B एहउ दुहिया°. ६ AP पणइणिमणहरपयणियपणयहो; B पोढहु पउणियपणइपसायहु; S पोढहु पउणियपणइणिपणयहो; Als. पोढहु पयणियपणयपसायहु against his Mss. on the strength of gloss प्रजनित. ७ S °पमत्तउ. ८ A तामंगारय°; P ता अंगारय°. ९ ABPS सुहु. १० P °हत्थु.

13 १ A °झुलुक्कय°; BPS °झलक्कए. २ A सुकसिणिय°. ३ B पहरणकक्कसि संजुए. ४ P घरणिए. ५ B पडिच्छउ.

---

12 1 *a* णिउ नीतः. 4 *a* णाणिहिं ज्ञानिभिर्नैमित्तिकैः. 6 *b* सामरि शाल्मली नाम. 7 *a* सुहद्दातणयहु वसुदेवस्य; *b* पोढहु प्रौढस्य; पउणिय° प्रगुणितः. 11 *a* णियइच्छइ स्वेच्छया. 12 कुढि पश्चात्.

13. 1 *b* सुकसणियगत्तें जलेन सिक्तोऽङ्गारः कृष्णो भवति. २ *a* सोहद्देउ सुभद्रापुत्रः; *b* संजुइ संग्रामे. 3 *a* पइ वसुदेवः.

तरुकुसुमोहविलोहपसाहिरि णिवडिउ चंपापुरवरबाहिरि । 5
कीलमाण वणि मणिकंकणकर पुच्छिय तेण तेत्थु णायरणर ।
ते भणंति मुक्खें णडियउ किं गयणंगणाउ तुहुं पडियउ ।
वासुपुज्जजिणजम्मणरिद्धी ण मुणहि चंपापुरि सुपसिद्धी ।
तं णिसुणिवि तें णयरि पलोइयं सहमंडवबहुविउसविराइय ।
चारुदत्तवणिवरवइतणुरुह जहिं जहिं जोइज्जइ तहिं तहिं सुह । 10
जहिं गंधव्वदत्त सइं संठिय महुरवाय णावइ कलयंठिय ।

घत्ता—जहिं वइसवइसुयाइ रमणकामु संपत्तउ ॥
खेयरमहियरवंदुं वीणावज्जें जित्तउ ॥ १३ ॥

14

गंपि कुमारु वि तहिं जि णिविट्ठउ कण्णइ अणिमिसणयणइ दिट्ठउ ।
वम्महबाणु व हियइ पइट्ठउ विहसिवि पहिउ पहासइ तुट्ठउ ।
हउं मि किं पि दावमि तंतीसरु जइ वि ण चल्लइ सरठाणइ करु ।
ता तहु ढोइयाउ सुइंलीणउ पंच सत्त णव दह बहु वीणउ ।
ता वसुएउ भणइ किं किज्जइ वल्लइंदंडु ण पहउ जुज्जइ । 5
एही तंति ण एम णिबज्झइ वासुइ पहउ एत्थु विरुज्झइ ।
सिरिहलु एंव एउं किं थवियउं सत्थु ण केण वि मणि चिंतवियउं ।
लक्खणरहियउ जडमणहारिउ मेल्लिवि वीणउ णाइं कुमारिउ ।
अक्खइ सो तहिं तहि अक्खाणउं आलावणिकइ चारु चिराणउं ।

६ B भणंत. ७ KS वासपुज्ज°. ८ B चंपाउरि. ९ ABP णयरु. १० A पलोयउ; P पलोइउ. ११ AP विराइउ. १२ B चारुदत्तु; P चारुदत्तु. १३ BP °तणुरुहु. १४ BP सुहु. १५ B गंधव्वयत्त सइ. १६ B रमणु. १७ A °विंदु; P °वेंदु.

14 १ B कुमार. २ A P कंतइ. ३ PS अणमिस°. ४ S °णयणहिं. ५ BP हउं मि; S हउ वि. ६ A सरठाणहु. ७ A सरलीणउ. ८ A दहमुहवीणउ. ९ S वसुएवु. १० AP वीणादंडु. ११ A विबज्झइ. १२ P चित्तवियउ. १३ A तासु कुसारिउ. १४ A °कउ.

5 *a* °दिसोहपसाहिरि दिशासमूहशोभिते. 6 *a* वणि वनमध्ये. 11 *b* कलयंठिय कोकिला. 13 °वंदु वृन्दः.

14 1 *b* कण्णइ कन्यया. 2 *b* पहिउ पथिकः. 3 *a* तंतीसरु वीणाशब्दः. 4 *a* सुइलीणउ कर्णलीनाः. 5 *b* वल्लइ° वीणा. 6 *b* वासुइ वासुगिरपि दोरः, अथवा दण्डाग्रे तन्त्रीबन्धाश्रयलघुकाष्ठं वासुगिः. 7 *a* सिरिहलु तुम्बकः. 8 *b* कुमारिउ यथा सामुद्रकरहिता स्त्री मुच्यते. 9 *a* तहि तस्या वीणायाः; *b* आलावणिकइ वीणानिमित्तम्; चारुचिराणउं अतिजीर्णम्.

घत्ता—हत्थिणायपुरि राउ णिज्जियारि घणसंदणु ॥ 10
तहु पउमावइ देवि विट्ठु णाम पिउ णंदणु ॥ १४ ॥

15

अवरु पउमरहु सुउ लहुयारउ जणणु णविवि अरहंतु भडारउ ।
रिसि होएप्पिणु मृगसंपुण्णहु सहुं जेट्ठें सुपए गउ रण्णहु ।
ओहिणाणु तायहु उप्पण्णउं दिट्ठउं जगु बहुभावभिइण्णउं ।
एत्तहि गयउरि पयपोमाइउ करइ रज्जु पउमरहु महाइउ ।
ता सो पच्चंतेहिं णिरुद्धउ तहु बलि णाम मंति पविबुद्धउ । 5
तेण गुरु वि ओहामिउ सक्कहु बुद्धिइ माणु मलिउ परचक्कहु ।
संतूसिवि रोमंचियकाएं मग्गि मग्गि वरु बोल्लिउ राएं ।
मंतिं वुत्तउ तुट्ठि करेज्जसु कहिं मि कालि महुं मग्गिउं देज्जसु ।
कालें जंतें मारणकामें आयउ सूरि अकंपण णामें ।
सहुं रिसिसंघें जिणवरमग्गें पुरबाहिरि थिउ काओसग्गें । 10

घत्ता—बलिणा मुणिवरु दिट्ठु सुयरिउं अवमाणेप्पिणु ॥
इहु एएं हउं आसि घित्तु विवाइ जिणेप्पिणु ॥ १५ ॥

16

अवयारहु अवयारु रइज्जइ उवयारहु उवयारु जि किज्जइ ।
खलहु खलत्तणु सुहिहि सुहित्तणु जो ण करइ सो णियमिवि णियमणु ।
तावसरूवें णिवसउ णिज्जणि हउं पुणु अज्जु खवमि किं दुज्जणि ।
एंव भणेप्पिणु गउ सो तेत्तहिं अच्छइ णिवइ णिहेलणि जेत्तहिं ।

१५ S पोमावइ. १६ A पियणंदणु.

15 १ ABP मिग°. २ APS °परिपुण्णहो; B °संपण्णहो. ३ A अवहिणाणु. ४ A भावहिं भिण्णउं; Als. भावविहिण्णउं. ५ S परमरहु. ६ S पविद्धउ. ७ P ओहामिय. ८ S परयक्कहो. ९ P संतोसिवि. १० APS अकंपणु. ११ B पुरि. १२ P कायोसग्गें. १३ B घेत्तु.

16 १ AP वि. २ P सुइत्तणु. ३ S ° रूएं. ४ S उज्जमु खवमि ण दुज्जणु. ५ B खममि अज्जु. ६ S सो गउ.

10 घणसंदणु मेघरथः. 11 विट्ठु विष्णुः.

15 1 *b* जणणु मेघरथः. 3 *b* °भिइण्णउं भिन्नम्. 4 *a* पयपोमाइउ प्रजाप्रशंसितः; *b* महाइउ महर्द्धिकः. 5 *a* पच्चंतेहिं शत्रुभिः. 6 *a* गुरु वि शक्रस्य गुरुर्बृहस्पतिः तिरस्कृतः. 9 *a* मारणकामें मन्त्रिणा मारणावाञ्छकेन इति संबन्धः. 12 एएं एतेन सूरिणा; विवाइ विवादे.

16 2 *b* णियमिवि बध्दा निजचित्तम्.

भणिउ णवंतें पइं पडिवण्णउं　　　　आसि कालि जं पइं वरु दिण्णउ । 5
जं तं देहि अज्जु मइं मग्गिउं　　　　जइ आणहि पत्थिव ओलग्गिउं ।
ता रायण बुत्तु ण वियप्पमि　　　　जं तुहुं इच्छहि तं जि समप्पमि ।
पडिभासइ बंभणु असमत्तणु　　　　सत्त दिणाइं देहि रायत्तणु ।
दिण्णउं पत्थिवेण तें लइयउं　　　　रोसें लच्छु अंगु पइछइयउं ।
साहुसंघु पाविट्ठें रुद्धउ　　　　मृगवहु मडु अउव्विलु पारद्धउ । 10
सोत्तियहिं सोमंबु रसिज्जइ　　　　सोमवेय सुइसुंमहुरु गिज्जइ ।
भक्खिवि जंगलु अट्ठवियड्डइं　　　　उप्परि रिसिहिं णिहित्तइं हड्डइं ।

घत्ता—मोज्जसरावसमूहु जं केण वि ण वि छित्तउ ॥
तं सवणहं सीसग्गि जणउच्छिट्ठउं वित्तउं ॥ १६ ॥

17

सोत्तइं पूरियाइं सुहवारें　　　　बहलयरेण धूमपब्भारें ।
अणुदिणु पयडियभीसणवसणहं　　　　तो वि धीर रूसंति ण पिसुणहं ।
तहिं अवसरि दुक्कियपरिचत्ता　　　　जणेण तणय ते जहिं तवतत्ता ।
णिसि णिवसंति महीहरकंदरि　　　　भीरुभयंकरि सुयकेसरिसरि ।
तेहिं विहिं मि तहिं णहि पवहंतउं　　　　सवणरिक्खु दिट्ठउं कंपंतउं । 5
तं तेवड्डु चोज्जु जोएप्पिणु　　　　भणइ विट्ठु पणिवाउ करेप्पिणु ।
किं णक्खत्तु भडारा कंपइ　　　　तं णिसुणेवि जणणमुणि जंपइ ।
गयउरि बलिणा मुणि उवसग्गें　　　　संताविय पावें भयभग्गें ।
सज्जणघट्टणु सव्वहु भारिउं　　　　तेण रिक्खु थरहरइ णिरारिउं ।
पुच्छइ पुणु वि सीसु खमवंतहं　　　　णासइ कैंव उवद्दउ संतहं । 10

७ A adds after 5 *b* तुट्ठिदाणु आणंदपवण्णउं; S reads for 5 *b* तुट्ठिदाणु आणंदपउण्णउं. ८ B राइत्तणु. ९ ABPS पच्छइयउं. १० AP मिगवहु. ११ A सोमंधु. १२ APS सामवेउ. १३ A सुइमहुरउ; B सुइमहुरें. १४ Als. विछित्तउ.

17 १ A सुहचारिं. २ B पीडिय°. ३ B दुक्खिय°. ४ P जणय. ५ A जित्तहिं तवतत्ता; S जहिं ते. ६ AP जणणु मुणि. ७ A हयभग्गें. ८ B सव्वउ.

8 *a* असमत्तणु असमत्वं मिथ्यादृष्टिः. 9 *b* पइछइयउं प्रच्छादितम्. 10 *b* मडु मखो यज्ञः. 11 *a* सोमंबु सोमपानम्. 12 *a* जंगलु मांसम्; अट्ठवियड्डइं वक्राणि. 13 छित्तउं स्पृष्टम्. 14 सीसग्गि मस्तकाग्रे.

17 1 *a* सुहवारें सुखनिषेधकेन; *b* बहलयरेण बहुतरेण. 3 *b* जणण मेघरथः; तणय विष्णुः 4 *b* सुयकेसरिसरि श्रुतसिंहशब्दे. 5 *a* पवहंतउं गच्छत्. 9 *a* सज्जणघट्टणु साधुकदर्थनम्; सव्वहु भारिउं सर्वेषां कष्टभूतम्.

घत्ता—धणरहरिसिणा उत्तु तुम्ह विउव्वणरिद्धिइ ॥
णासइ रिसिउवसग्गु भवसंसारु व सिद्धिइ ॥ १७ ॥

18

खलजणवयअच्चब्भुवभूवें छिंदहिं जाइवि वावणरूवें ।
णिलयणिवासु णिरग्गलु मग्गहि पच्छइ पुणु गयणंगणि लग्गहि ।
तं णिसुणेप्पिणु लहु णिग्गउ मुणि रिय पढंतु कियओंकारज्झुणि ।
भिसियकमंडलु सियछत्तियधरु दब्भदंडमणिवलयंकियकरु ।
मिट्ठवाणि उववीयविहूसणु देसिउ कासायंबरणिवसणु । 5
सो णवणरणाहेण णियच्छिउ भणु भणु तुहुं किं दिज्जउ पुच्छिउ ।
किं हय गय रह किं जंपाणइं किं धयछत्तइं दव्वणिहाणइं ।
कवडविण्हु भासइ महिसामिहि णिव कम तिण्णि देहि[10] महु भूमिहि ।
तं णिसुणिवि बलिणा सिरु धुणियउं हा हे दियवर किं पइं भणियउं ।
वाय तुहारी दइवें भग्गी लइ धरिसि मढथियत्तिहि जोग्गी । 10

घत्ता—ता विट्ठुहि वहंतु लग्गउं अंगु णहंतरि ॥
णिहियउ मंदरि[12] पाउ एक्कु बीउ मणुंउत्तरि ॥ १८ ॥

19

तइयउ कमु उक्खित्तु जि अच्छइ कहिं दिज्जउ तहिं थत्ति ण पेच्छइ ।
सो विज्जाहरतियसहिं अंचिउ पियवयणेहिं कह व आउंचिउ ।
ताव तेत्थु घोसावइवीणइ देवहिं दिण्णइ मलपरिहीणइ ।
गरुयारउ णियभाइसहोयरु तोसिउ पोमरहें जोईसरु ।
मारहुं आढत्तउ दियकिंकरु विण्हुकुमारु खमइ अभयंकरु । 5

18 १ A खलु. २ P अच्चब्भुयभूयं. ३ B छिंदहि. ४ BS वामण°. ५ AP °णिवेसु. ६ A ओंकायरझुणि. ७ P रिसिय°. ८ B किं तुह. ९ P दिज्जइ. १० A देहु महु. ११ A मढछत्तिहि; S मढयत्तिहि. १२ A मंदिरि. १३ B मणउत्तरि.

19 १ BK उक्खेत्तु. २ BPAls. तहो थत्ति. ३ S °भायसहो°.

12 सिद्धिइ मुक्त्या यथा संसारो नश्यति.

18 1 *a* खलजणवयअच्चब्भुवभूवें खललोकानामत्यन्द्भुतभूतेन. 2 *a* णिलयणिवासु गृहनिवासः; णिरग्गलु निःप्रतिबन्धम्. 3 *b* रिय पढंतु वेदऋचः पठन्. 4 *a* भिसिय ऋषीणामासनं वृषी; *b* °मणिवलय° जपमाला. 6 *a* णवणरणाहेण नवीनराज्ञा बलिना. 11 विट्ठुहि विष्णोः मुनेः.

19 1 *a* उक्खित्तु उत्क्षिप्त उच्चलितः. 2 *b* आउंचिउ संकुचितः. 4 *a* गरुयारउ ज्येष्ठः.

अच्छउ जियउ वराउ म मारहि   रोसु म हियउल्लइ वित्थारहि ।
रोसें बंडालत्तणु किज्जइ   रोसें णरयविवरि पइसिज्जइ ।
एणें जि कारणेण हयदुम्मइ   कयदोसहं मि खमंति महामइ ।

घत्ता—एम भणेप्पिणु जेट्ठु गउ गिरिकुहरणिवासहु ॥
मुणिवरसंघु असेसु मुकउ दुक्खकिलेसहु ॥ १९ ॥   10

20

अज्ज वि वीण तेत्थु सा अच्छइ   जइ महु आणिवि को वि पयच्छइ ।
तो गंधव्वदत्त किं वायइ   महुं अग्गइ पर वयणु णिवायइ ।
वणिणा तं णिसुणिवि विहसंतें   पेसिय णियपाइक्क तुरंतें ।
गय गयउरु वड्डइ पणवेप्पिणु   मंग्गिय तव्वंसिय मणु लेप्पिणु ।
वियलियदुम्मयपंकविलेवहु   आणिवि ढोइय करि वसुएवहु ।
सा कुमारकरताडिय वज्जइ   सुइभेयहिं बावीसहिं छज्जइ ।
सत्तहिं वरसरेहिं तिहिं गामहिं   अट्ठारहजाइहिं सुइधामहिं ।
अंसहं सउ चालीसेकोत्तरु   गीइउ पंच वि पयडइ सुंदरु ।
तीस वि गामराय रइआसउ   चालीस वि भासउ छ विहासउ ।
एकवीस मुच्छणउ समाणइ   एकूणइं पण्णासइं ताणइं ।   10

४ APS रोसें सत्तममहि पाविज्जइ. ५ A एण वि. ६ AP महाजइ. ७ AP विट्ठु.

20 १ S का वि. २ B तं सुणिवि वियसंतें. ३ A पहसंतें. ४ A वीणा पण°. ५ A मग्गिय तक्खणि वीण लएप्पिणु; S मणुणेप्पिणु; Als. तव्वंसियमणुणेप्पिणु (तव्वंसिय+म्+अणुणेप्पिणु). ६ P °दुम्मइ°. ७ A आणिय. ८ S सो. ९ AP छज्जइ. १० AP वज्जइ. ११ AP विहिं गामहिं; S बहुगामहिं. १२ S अंसहिं. १३ A चालीसेकुत्तरु; B चालीसिकुतरु; S चालीसेंकोत्तरु. १४ A गीउ पंचविहु. १५ S रइयासव. १६ S विहासव. १७ P मुच्छणाइं. १८ A एकूणइ पण्णास जि; B एकूण वि पण्णासइं.

8 *b* कयदोसहं मि कृतदोषाणामपि; महामइ मुनयः.

20 1 *a* तेत्थु गजपुरे. 2 *b* वयणु णिवायइ वदनं म्लानं करोति. 4 *b* तव्वंसिय तद्वंशोत्पन्ननराणाम्; मणु लेप्पिणु मनः संतोष्य. 6 *b* छज्जइ शोभते. 7 *b* अट्ठारहजाइहिं शुद्धा जातिः, दुःकरकरणा जातिः, विषमा इत्याद्यष्टादशजातिभिः. 8 *a* अंसहं अष्टादशजातिषु यथासंभवं एक द्वौ... पञ्च इत्यादयः अंशाः, एवं १४१ अंशाः; *b* गीइउ पंच वि शुद्धा भिन्ना वेसरा गौडी साधुरणिका इति पञ्च गीतयः. 9 *a* तीस वि गामराय शुद्धायां सप्त ग्रामरागाः, भिन्नायां पञ्च, वेसरायामष्टौ, गौड्यां त्रयः, साधुरणिकायां सप्त, एवं त्रिंशत्; *b* चालीस वि भासउ षड् रागाः टक्कादयः, टक्करागे द्वादश भाषाः, पञ्चमरागे दश, हिन्दोलारागे तिस्रो भाषाः, मालवकौशिकरागे अष्ट, षड्जरागे सप्त, ककुभरागे पञ्च. 10 *a* एकवीस मुच्छणउ मध्यमग्रामोद्भवाः सप्त, षड्जरागोद्भवाः सप्त, निषादरागोद्भवाः सप्त.

घत्ता—तहु वायंतहु पंच वीणा झुल्लरजोग्गउ ॥
णं वम्महसरु तिक्खु मुद्धहि हियवइ लग्गउ ॥ २० ॥

21

णयणइं णाहहु उप्परि घुलियइं अहुंगइं वेवंतइं वलियइं ।
तंतीरवतोसियगिव्वाणहु घित्त सयंवरमाल जुवाणहु ।
संथुउ तरुणु सुरिंदें ससुरें विहिउ विवाहमहुच्छउ ससुरें ।
पुणरवि सो विज्जाहरदिण्णइं सत्तसयइं परिणेप्पिणु कण्णइं ।
सणहरलक्खणपच्चक्खियगत्तउ कालें रिट्ठुणयरु संपत्तउ । 5
राउ हिरण्णवम्मु तहिं सुम्मइ जासु रज्जि णउ कासु वि दुम्मइ ।
तासु कंत णामें पोमावइ परहुयसद्द बालपाडलगइ ।
रोहिणि पुत्ति जुत्ति णं मयणहु किं वण्णमि भल्लारी भुयणहु ।
ताहि सयंवरि मिलिय णरेसर तेयवंत णावइ ससिणेसर ।
ते जरसंधपमुह अवलोइय कण्णइ माल ण कासु वि ढोइय । 10
तहिं मि तेण वणगयपडिमल्लें जिणिवि कण्ण सकलाकोसल्लें ।
माल पडिच्छिय उड्डिउ कलयलु संणद्धउं सयलु वि पत्थिवबलु ।
जरसिंधहु आणइ कयविग्गहु धाइय जायव कउरव मागह ।
तेहिं हिरण्णवम्मु संभासिउ पइं गउरविउ काइं किर देसिउ ।
मालइमाल ण कइगलि वज्झइ जाव ण अज्ज वि राउ विरुज्झइ । 15

घत्ता—ता पेसहि लेहु धूय मा संधहि धणुगुणि सरु ॥
वढ जरसंधि विरुद्धें धुवु पावहि वइवसपुरु ॥ २१ ॥

22

तं णिसुणेप्पिणु सो पडिजंपइ भडथोक्कहं वर वीरु ण कंपइ ।
जो महुं पुत्तिहि चित्तहु रुच्चइ सो सुहडु किं देसिउ वुच्चइ ।

---

१९ APAls. वीणासरु सुइ°.

21 १ AP चलियइं. २ P °महोच्छउ. ३ A °णयरि. ४ A °पडलगइ. ५ A भुवणहो; S भुयणहो. ६ B जरसंध°;. K जरसंधु°; S जरसिंधु°. ७ S जिणवि. ८ S उड्डिय. ९ B जरसंधहो; S जरसंधहो. १० A आणय. ११ APS जायव. १२ BS तहो धूय. १३ BK बहु.

22 १ PS णिसुणेवि सो वि. २ A वरवीरु; BPS वरधीरु. ३ S सुहडु.

---

21 3 *a* ससुरें देवैः सहितेन; *b* ससुरें श्वशुरेण चारुदत्तेन. 7 *b* परहुय° कोकिला. 11 *a* तहिं मि तथापि; वणगय° वनगजाः; *b* सकलाकोसल्लें पटहवादविज्ञानेन. 14 *b* देसिउ पथिकः. 15 *a* कइगलि वानरगले; *b* विरुज्झइ कुप्यति जरासंधः. 17 वढ स्थूलबुद्धे, मूर्ख.

22 1 *b* °थोक्कहं छागानाम् (भटब्रुवेभ्यः).

पहु तुम्हइं वि थिट्ठ परयारिय　　अज्ज ण जाहि समरि अवियारिय।
ता तेहिं लग्गइं रोहिणिलुद्धइं　　महिवइसेण्णइं सहसा कुद्धइं।
थिय जोयंति देव गयणंगणि　　अण्णहु अण्णु भिडिउ समरंगणि। 5
कंचणविरइइ रहवरि चडियउ　　णववरु णियभाइहिं अब्भिडियउ।
विंधंतें सहस त्ति परिक्खिउ　　तेण समुद्दविजउ ओलक्खिउ।
जे सर घल्लइ ते सो छिंदइ　　अप्पुणु तासु ण उरयलु भिंदइ।
बंधवु जगि ण होइ णिव्वच्छलु　　सुइरु णिहालिवि जउवइभुयबलु।
दिव्वपत्तिपत्तेहिं विहूसिउ　　णियणामंकु बाणु पुणु पेसिउ। 10
पडिउ पयंतरि सउरीणाहें　　उच्चाइउ अरिमयउलवाहें।
अक्खराइं वाइयइं सुसत्तें　　वियलियबाहजलोल्लियणेत्तें।
जणउवरोहें पइं घरि धरियउ　　जो चिरु विहिवसेण णीसरियउ।

घत्ता—संवच्छरसइ पुण्णि आउ एउ समरंगणु ॥
हउं वसुएवकुमारु देव देहि आलिंगणु ॥ २२ ॥ 15

23

जइ वि सुवंसु गुणेण विराइउ　　कोडीसरु णियमुट्ठिहि माइउ।
आवइकाले जइ वि ण भज्जइ　　जइ वि सुहडसंघट्टणि गज्जइ।
भायरु पेक्खिवि पिसुणु व वंकउं　　तो वि तेण बाणासणु मुक्कउं।
णरवइ रहवराउ उत्तिण्णउ　　कुंअरु वि संमुहु लहु अवइण्णउ।
एक्कमेक्क आलिंगिउ बाहहिं　　पसारियकरहिं णाइं करिणाहहिं। 5
भाय महंतु णविउ वसुएवें　　जंपिउ पहुणा महुरालावें।
हउं पइं भायर संगरि णिज्जिउ　　बंधु भणंतु ससूअहु लज्जिउ।
अण्णहु चावसिक्ख कहु एही　　पइं अब्भासिय धुरंधर जेही।

४ P जाहु. ५ P तहो. ६ S गेहिणि°; K गेहिणि° in second hand. ७ B जोवंत; S जोयंत. ८ AP लग्गु. ९ S सवरंगणि. १० B विंद्धंतें; P विंधंतें. ११ APS अप्पणु. १२ B जोवइभुय°; P जोयइ. १३ BAls. दिव्वपक्खि°; P दिव्वपंति°. १४ B °मियउल°. १५ B °वाहब्भोल्लिय°. १६ A °गत्तें. १७ P एव.

23 १ B सुवंस. २ APS °कालए. ३ S जं पि. ४ P कुमरु; S कुंवरु. ५ B णामिं. ६ APS भाइ. ७ A सभूयहं. ८ B कहिं; P कहं.

3 *a* परयारिय पारदारिकाः. 6 *b* णववरु वसुदेवः; णियभाइहिं समुद्रविजयादिभिः सह. 9 *a* णिव्वच्छलु निःस्नेहः; *b* जउवइ° यदुपतिः. 10 *a* दिव्वपत्तिपत्तेहिं दिव्यपक्षिपक्षैः. 11 *a* सउरीणाहें समुद्रविजयेन; *b* °मयउलवाहें मृगकुलव्याधेन. 12 *a* सुसत्तें सत्त्वसाहसयुक्तेन; *b* °बाहजलोल्लियणेत्तें बाष्पजलार्द्रनेत्रेण. 13 *a* घरि धरियउ बहिर्गन्तुं निषिद्धः. 14 एउ एषः.

23 4 *a* णरवइ समुद्रविजयः. 7 *b* ससूअहु स्वसारथेः सकाशात्.

पइं हरिवंसु बप्प उद्दीविउ   तुहुं महु धम्मफलें मेलाविउ ।
अज्जें मज्झ परिपुण्ण मणोरह   गय णियपुरवरु दस वि दसारह । 10
खेयरमहियरणारिहिं माणिउ   थिउ वसुएवें रायसंमाणिउ ।
संखु णाम रिसि जो सो ससिमुहु   महसुक्कामरु रोहिणितणुरुहु ।

घत्ता—भरहखेत्तं[12]त्तं[12]वपुज्जु णवमु सीरि उप्पण्णउ ॥
पुप्फदंततेयाउ तेण तेउ पडिवण्णउं ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महा-
भव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे खेयर[13]भूगोयरकुमारीलंभो समुद्द-
विजयवसु[14]एवसंगमो णाम तेयासी[15]तिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८३ ॥

९ AP पुण्णफलें. १० BP अज्जु मज्झु. ११ B वसुएवराउ. १२ A P °खेत्ति णिव°. १३ S खयर°. १४ A °वसुदेवसंगमो बलदेवउप्पत्ती. १५ P तयासीमो; S तीयासीतिमो.

10 *b* दसारह दशार्हाः समुद्रविजयादयः. 14 °तेयाउ तेजसोऽप्यधिकम्.

LXXXIV

गयणिंदें भणिउं रिसिंदें सोत्तसुहाइं अणेरी ॥
सुणि सेणिय जिह जिणजाणिय तिह कह कंसहु केरी ॥ ध्रुवकं ॥

1

धावंतमहंततरंगरंगि　　गंगागंधावइसरिपसंगि ।
पप्फुल्लियफुल्लवेइल्लवेल्लि　　कउसिय णामें तावसहं पल्लि ।
तहिं तवसि विसिट्ठु वसिट्ठु णामु　　पंचग्गि सहइ णिट्ठवियकामु ।　　5
मुणि भद्दवीरगुणवीरसण्ण　　अण्णहिं दिणि आया समियसण्ण ।
बोल्लाविउ तावसु तेहिं एव　　अण्णाणें अप्पउ खवहि केंव ।
तवहुयवहजालउ वित्थरंति　　किमिकीडय माहिणाडय मरंति ।
विणु जीवदयाइ ण अत्थि धम्मु　　धम्में विणु कहिं किर सुकिउ कम्मु ।
विणु सुकिएण कहिं सग्गगमणु　　किं करहि णिरत्थउं देहदमणु ।　　10
पडिबुद्धु तेण वयणेण सो वि　　णिग्गंथु जाउ जिणदिक्ख लेवि ।
मुणिवरचरियइं तिव्वइं चरंतु　　आइउ महुरहि महि परिभमंतु ।
उववासु करइ सो मासु मासु　　देहंति'' ण दीसइ रुहिरु मासु ।
गिरिवरि चरंतु अत्तावणिट्ठु　　रिसि उग्गसेणराएण दिट्ठु ।
तें भत्तिइ बोल्लिउ णिरु णिरीहु　　लब्भइ कहिं एहउ सवणसीहु ।　　15
घत्ता—ओसारिउ णयरु णिवारिउ मा परु करउ पलोयणु ॥
सविवेयहु साहुहु एयहु हउं जि करेसमि भोयणु ॥ १ ॥

2

ओयंतहु भिक्खुहि पिंडमग्गु　　पेहिलारइ मासि हुयासु लग्गु ।
मयगिल्लगंडु हिंडियदुरेहु　　बीयइ कुंजरु णं कालमेहु ।

1 १ S गयणेंदें. २ B कंसह. ३ AP °तरंगभंगि. ४ AB °सरिसुसंगे; P °सरिससंगि. ५ B पप्फुल्लफुल्ल°; ६ AB °वल्लि. ७ A तवसिट्ठु वसिट्ठु; B वसिट्ठु विसिट्ठु. ८ A णवहुय°. ९ AP जाला; B जालइं. १० B महुरह. ११ A देहेण ण दीसइ. १२ AP तवंतु.

2 १ B पिंडु. २ S पहिलाए. ३ BPAls. °गंड°.

1 1 गयणिंदें गतनिन्देन फणीन्द्रेण; सोत्तसुहाइं कर्णसुखानि. 3 *a* °रंगि स्थाने. 4 *b* कउसिय कौशिकी. 6 *b* समियसण्ण शमितचतुःसंज्ञो. 12 *b* महुरहि मथुरायाम्. 16 ओसारिउ निषिद्धो लोकः. 17 सविवेयहु सविवेकस्य साधोः.

2 1 *a* पिंडमग्गु आहारमार्गम्; *b* हुयासु लग्गु राजमन्दिरेऽग्निर्लग्नः. 2 *a* मयगिल्लगंडु मदार्द्रकपोलः; हिंडियदुरेहु भ्रान्तभ्रमरः; *b* बीयइ द्वितीये मासे.

भिंदइ दंतहिं णूवमिअदेहु तइयहुं आइउ णरणाहलेहु ।
पहु भंतउ कज्जपरंपराइ हियउल्लउं ण गइउं णिहयराइ ।
तहु तिण्णि मास गय एम जाम केण वि पुरिसेण पउत्तु ताम । 5
पउ वारइ सइं णाहारु देइ पइउ वि केम भण्णइ विवेइ ।
भुंजाविउ भुक्खइ दुक्खु तिक्खु हा हा राएं मारियउ भिक्खु ।
तं णिसुणिवि रोसहुयासणेण पज्जलिउ तवसि दुम्मिउ मणेण ।
मंजीररावराहियपयाउ तवसिद्धउ आयउ देवयाउ ।
सव्व वि भणंति भो भो वसिट्ठ दूरुज्झियदूसहदुट्ठतिट्ठ । 10
किं उग्गसेणकुलपलयकालु पायडहुं णिविडदुक्कियकरालु ।
किं महुर जलणजालोलिजलिय दक्खालहुं तुह महिवलयघुलिय ।
ता चवइ रिसिवरु भिण्णगुज्झु जम्मंतरि पेसणु करहु मज्झु ।
कडिसुत्तयघोलिरकिंकिणीउ तं इच्छिवि गइयउ जक्खिणीउ ।
इयरु वि महिमंडलि स त्ति पडिउ कुणु रोसणियाणवसेण णडिउ । 15

घत्ता—मुणि दुम्मइ णियमणि तम्मइ उग्गसेणु अहसंधमि ॥
कुलमंडणु पयहु णंदणु होइवि पहु जि बंधमि ॥ २ ॥

3

मुउ सो पोमावइगब्भि थक्कु णं णियतायहु जि अकालचक्कु ।
पियहिययमाससद्धालुयाइ झिज्जंतियाइ सुललियभुयाइ ।
णउ अक्खिउं भत्तारहु सईइ बुद्धेहिं मुणिउं णिउणाइ मईइ ।
कारिमउ विणिम्मिउ उग्गसेणु फाडिउ णं सीहिणिए करेणु ।
भक्खिउं णियरमणहु देहमासु उप्पण्णउ पुत्तु सगोत्तणासु । 5
अवलोइउ ताएं कूरदिट्ठि णिहणेक्ककामु उग्गिण्णमुट्ठि ।
कंसियमंजूसहि किउ अथाहि घल्लिउ कालिंदिजलपवाहि ।

४ BP णिव°. ५ PS आयउ. ६ S पत्तु. ७ S णिसुणवि. ८ B दूमिय; P दूमिउ. ९ S हो हो. १० B णिवडदुक्खय°. ११ ABP °जालोलि°. १२ S दक्खालइं. १३ A कुलमंडणु.

3 १ A °तायहु जियकालचक्कु; B °तायहो जि अकाल°; S °तायहो अकाल°. २ B सो फाडिउ णं सीहिणिए; S फालिउ.

3 *b* णरणाह° जरासंधः. 4 *a* भंतउ विस्मृतः आकुलितो वा; *b* णिहयराइ निहतरागे मुनौ. 6 *b* विवेइ विवेकी. 8 *b* दुम्मिउ उपतापितः. 9 *a* मंजीररावराहियपयाउ नूपुरशब्दशोभितपादाः. 10 *b* °तिट्ठ तृष्णा. 11 *b* पायडहुं प्रकटीकुर्मः. 12 *a* महुर मथुराम्; *b* दक्खालहुं दर्शयामः. 15 *a* इयरु मुनिः; *b* °णियाण° निदानम्. 16 तम्मइ खिद्यते; अहसंधमि बध्नामि.

3 2 *a* पियहियय° भर्तृहृदयम्. 3 *b* मुणिउ ज्ञातो दोहदः; णिउणाइ निपुणया. 7 *a* कंसियमंजूसहि कांस्यमञ्जूषायाम्; अथाहि अस्ताघ (अगाधे).

मंजोयरीइ सोमालियाइ पालिउ कल्लोलयवालियाइ।
कंसियमंजूसहि जेण दिट्ठु तेण जि सो कंसु भणेवि घुट्ठु।
कोसंबिपुरिहि पत्तउ पमाणु णं कलिकयंतु णं जाउहाणु। 10
णिव्वु जि परडिंभइं ताडमाणु धाडिउ तायं आयउ जुवाणु।
गउ सउरीपुरु वसुएवसीसु जायउ णाणापहरणविहीसु।
असिणा जरसिंधें जिणिवि वसुह णिट्ठविय वइरि सुहि णिहिय ससुह।
एक्कहिं दिणि अत्थाणंतरालि थिउ पभणइ सो गायणरवालि।
मइं बंधुविहपरमंडलियें जित्त धरणि वि तिखंड साहिय विचित्त। 15
पर अज्ज वि णउ सिज्झइ सदप्पु पउ पणवइ णउ महु देइ कप्पु।
पोयणपुरवइ सीहरहु राउ रणि दुज्जउ रिउजलवाहवाउ।
घत्ता—जो जुज्झइ तहु बलु बुज्झइ धरिवि णिबंधिवि आणइ॥
रइकुच्छरं णं अमरच्छर मेरी सुय सो माणइ॥ ३॥

4

अण्णु वि हियइच्छिउ देमि देसु छुहु करउ को वि एत्तिउ किलेसु।
इय भणिवि णियंकविहूसियाइं आलिहियइं पत्तइं पेसियाइं।
सयलहं मंडलियहं पत्थिवेण गय किंकरवर दसदिसि जवेण।
एक्केण एक्कु तं गिसु तेत्थु अच्छइ वसुएउ कुमारु जेत्थु।
जोइउं वाइउं तं वइरिजूरु देवाविउं लहुं संगामतूरु। 5
पक्खरिय तुरय करि कवयसोह मच्छरफुरंत आरूढ जोह।
णीसरिउ सणि व कयदेसदिट्ठि अंधयकविट्ठिसुउ वइरिविट्ठि।
सहुं कंसें रोहिणिदेविणाहु णं ससिमंडलहु विरुद्धु राहु।
परमंडलु विद्धंसंतु जाइ पहि उप्पहि बलु कत्थ वि ण माइ।

३ B मंदोवरीए. ४ B कल्लालिए. ५ AP तेण वि. ६ AP कोसंबिणयरे. ७ S धाडियउ. ८ AP वसुदेव°. ९ P जरसेंधें; S जरसंधें. १० A समुह. ११ S मंडिलिय. १२ S धरणी तिखंड. १३ AP पय पणवइ. १४ S °वाउ. १५ APS °कोच्छर.

4 १ P अण्णु मि. २ P हियइंछिउ; S हियउच्छिउ. ३ APS वसुएव°. ४ S वेरिजूरु. ५ PS Als. संणाहतूरु. ६ B Als. मच्छरपूरिय. ७ AP अंधकविट्ठीसुउ. ८ B वइरविट्ठि. ९ S रोहिणी°.

10 *b* कलिकयंतु कलिकालयमः; जाउहाणु राक्षसः. 11 *b* धाडिउ निर्घाटित. 12 *b* °पहरणविहीसु प्रहरणैर्भयानकः. 13 *b* ससुह ससुखाः स्थापिताः सुहृदः. 16 *b* कप्पु दण्डः करः. 17 *b* °जलवाहवाउ मेघस्य वातः. 19 रइकुच्छर मनोहररतिकौतुकोत्पादिनी.

4 2 *a* णियंक° स्वचिह्नेन; *b* पत्तइं लेखाः. 5 *a* जोइउं दृष्टम्. 7 *a* सणि व शनिग्रहवत्; *b* वइरिविट्ठि शत्रूणां विष्टिः पापवतीवत्. 9 *b* पहि उप्पहि मार्गे उन्मार्गे च.

घत्ता—चलकेसरकररुहभासुरहरिकड्ढिइं[11] रहि चडियउ ॥ 10
जयलंपडु कुइँउ महाभडु वसुएवहु अभिडियउ ॥ ४ ॥

5

सउहद्देयं संगामि धुत्त हरिमुत्तसित्त हय रहि णिउत्त ।
आवाहिउ सो धयधुव्वमाणु दलवट्टिउ रिउ जंपाणु जाणु ।
वसुएवकंस भूभंगभीस लग्गा परबलि उज्झायसीस ।
वरसुहडहं सीसइं णिलुणंति थिरु थाहि थाहि हणु हणु भणंति ।
वंचंति वलंति खलंति धंति पइसंति एंति पहरंति थंति । 5
अंतइं लंबंतइं ललललंति रत्तइं पवहंतइं झलझलंति ।
महि णिवडमाण हय हिलिहिलंति सरसल्लिय गयवर गुलुगुलंति ।
वट्टोट्ठ रुट्ठ मारिवि मरंति जीविउं मुयंत णर हुंकरंति ।
पललुद्धइं गिद्धइं णहि मिलंति भूयइं वेयालइं किलिकिलंति ।
पहरणइं पडंतइं धगधगंति विच्छिण्णइं कवयइं जिगिजिगंति । 10

घत्ता—पहरंतहु सामाकंतहु सीहरहेण णिवेइय ॥
सर दारुण वम्मवियारण कंचणपुंखविराइय ॥ ५ ॥

6

एयारह बारह पंचवीस पण्णास सट्ठि बावीस तीस ।
तेण वि तहु तहिं मग्गण विमुक्क रह वाहिय खोणियखुत्तचक्क ।
ते वीर बे वि आसण्ण ढुक्क णं खयसागर मज्जायमुक्क ।
परिभडघंघलु भुयबलु कलंति अवरोप्परु किल कोंतहिं हुलंति ।
ता सुहडसमुब्भड चप्परेवि रणि णियगुरुअंतरि पइसरेवि । 5

१० P °भासुरु. ११ B ° कड्ढिय°. १२ P कुविउ. १३ AP रणे भिडियउ.

5 १ AP सउहद्दें लहु संगामधुत्त; S सउहद्दें णं संगामे. २ A रहवरे णिउत्त. ३ B आवाहिवि. ४ S तहिं. ५ S वरबले. ६ BPAls. चलंति. ७ B गत्तइं लुंचंतइं. ८ APS णिवडमाण. ९ AP कयवयइं.

6 १ BS खोणीखुत्त°. २ AP मज्जायचुक्क. ३ ABPS किर. ४ A सुहडु समुब्भडु.

10 °हरिकड्ढिइ सिंहाकृष्टरथोपरि.

5 1 *a* सउहद्देएं सुभद्रापुत्रेण; *b* हरिमुत्तसित्त सिंहमूत्रसिक्ता अश्वा रथे बद्धाः. 2 *a* सो रथः. 3 *b* उज्झायसीस उपाध्यायशिष्यौ. 5 *a* धंति ध्वंसयन्ति. 7 *b* सरसल्लिय शरशल्ययुक्ताः. 11 सामाकंतहु वसुदेवस्य विजयपुरराजपुत्रीकान्तस्य; णिवेइय दत्ताः.

6 5 *a* चप्परेवि वञ्चयित्वा.

पवरंगोवंगइं संवरेवि चवलाउहपरिवंचणु करेवि ।
उल्ललिवि धरिउ सीहरहु केम कंसें केसरिणा हत्थि जेम ।
आवीलिवि बद्धउ बंधणेण जईजीउ व जीयासाघणेण ।
णिउ दाविउ अद्धमहीसरासु अहिमाणु भुवणि णिव्वूढु कासु ।
तं पेक्खिवि रायं वुत्तु एंव वसुएव तुज्झु सम णेय देव । 10

घत्ता—साहिज्जइ केण धरिज्जइ एहु पयंडु महाबलु ॥
पइरुंदें जिह णहु चंदें तिह पइं मंडिउं णियकुलु ॥ ६ ॥

7

को पावइ तेरी वीर छाय कालिंदिसेणसंइदेहजाय ।
लइ लइ जीवंजसजसणिहाण मेरी सुय संताविययुवाण ।
ता रोहिणेयजणणेण वुत्तु परमेसर परजंपणु अजुत्तु ।
हउं णउ गेण्हमि परपुरिसयारु एयहु कंसें किउ बंधणारु ।
रायाहिराय जयलच्छिगेह दिज्जउ कुमारि एयहु जि एह । 5
पहु पुच्छइ कुलु वज्जरइ कंसु णउ होइ महारउ सुद्धु वंसु ।
कोसंबीपुरि कल्लालणारि मंजोयरि णामें हिययहारि ।
तहि तणुरुहु हउं अब्भंतचंडु परडिंभमुंडि घल्लंतु दंडु ।
मुक्कउ णियमाणंइण्णियाइ मायइं दुपुत्तणिव्विण्णियाइ ।
सूरीपुरि सेविउ चावसूरि अब्भसिउ मइं वि धणुवेउ भूरि । 10
सहुं गुरुणा जाइवि धरिउ वीरु अवलोयहि पासंकियसरीरु ।
तं सुणिवि णरिंदें सीसु धुणिउं एयहु कुलु एउं ण होइ भणिउं ।

घत्ता—रणतंत्तिउ णिच्छउ खत्तिउ एहु ण पैरु भाविज्जइ ॥
कुलु सव्वहु णरहु अउव्वहु आयारेण मुणिज्जइ ॥ ७ ॥

---

५ AB °परवंचणु. ६ B जडु. ७ AP कम्मणिबंधणेण. ८ APS पेच्छिवि. ९ A णिययकुलु.

7 १ P °सय°. २ PS कउ. ३ B मंजोवरि. ४ AP °पाण°. ५ PS मायाए. ६ S सउरी°. ७ A अब्भासिउ. ८ BSAls. धीरु. ९ S धुणीउं. १० A रणतंतिउ. ११ B पर. १२ AP चिंतिज्जइ.

---

6 *a* °अंगोवंगइं अङ्गोपाङ्गानि. 8 *a* आवीलिवि आपीड्य; *b* जीयासाघणेण जीविताशया धनाशया च. 11 एहु सिंहरथः.

7 1 *b* कालिंदिसेण° कालिंदसेना जरासंधस्य राज्ञी. 3 *a* रोहिणेयजणणेण बलभद्रपित्रा वसुदेवेन. 4 *a* °पुरिसयारु पौरुषम्; *b* एयहु सिंहरथस्य; बंधणारु बन्धनम्. 8 *b* °मुंडि मस्तके. 9 *a* °अइण्णियाइ उद्विग्नया. 10 *a* चावसूरि वसुदेवः. 11 *b* पासंकियसरीरु बन्धनचिह्नितः. 13 रणतत्तिउ रणचिन्तायुक्तः; परु अन्यो न क्षत्रियं विना. 14 अउव्वहु अपूर्वस्य अज्ञातस्य; आयारेण आकारेण आचारेण वा.

8

इय पहुणा भणिवि किसोयरीहि पेसिउ दूयउ मंजोयरीहि ।
तें जाइवि महुआरिणि पवुत्त पइं कोकइ पहु बहुबंधुजुत्त ।
किं भासियाइ बहुयेइ कहाइ अच्छइ तेरउ सुउ तहिं जि माइ ।
सुयणामें कंपिय जणणि केव पवणंदोलिय वणवेल्लि जेव ।
सा चिंतइ णउ संवरइ चित्तु किउं पुत्तें काइं मि दुच्चरित्तु । 5
हक्कारउ आयउ तेण मज्झु वज्झउ मारिज्जउ सो जि वज्झु ।
इय चिंतिवि चलिय भयथरहरंति मंजूस लेवि पहि संचरंति ।
दियहेहिं पराइय रायवासु दिट्ठउ णरवइ साहियदिसासु ।
राएण भणियं तेउं तणउ तणउ इहु कंसवीरु जगि जणियपणउ ।
ता सा भासइ भयभावखेद्ध कालिंदिहि मइं मंजूस लद्ध । 10
ओहच्छइ एयहु तणिय माय इय तुम्हहं सुद्धिणिमित्तु आय ।
कलियारउ सइसवि सिसु हणंतु णीणिउ घराउ विप्पिउ चवंतु ।
मेरउ ण होइ सुक्कउ गुणेहिं जोइय मंजूस वियक्खणेहिं ।
घत्ता—तहिं अच्छिउं पत्तु णियच्छिउं जयसिरिमाणिणिमाणिउ ॥
सुहदिट्ठिहिं णरवइदिट्ठिहि णत्तिउ लोपं जाणिउ ॥ ८ ॥ 15

9

पवरुग्गसेणपोमावईहि सुउ कंसु एहु सुमहासईहि ।
इय वइयरु जाणिवि तुट्ठु णाहु जीवंजस दिण्णी किउ विवाहु ।
ससुरेण भणिउं वरवीरवित्ति जा रुच्चइ सा मग्गहि धरित्ति ।

8 १ S जोएवि; K जोइवि in second hand. २ A पउत्तु; B पवुत्तु; P पउत्त. ३ AB °जुत्तु. ४ AP बहुलइ. ५ AP भरिवि. ६ A संवरंति. ७ AKP °दसाइ; but gloss in K साधितदिशामुखः. ८ P भणिउ. ९ A तुह; BAls. कहो; Als. considers तउ to be a mistake in PS for कहु. १० B जगजणिय°. ११ P भयताव°. १२ A एह अच्छइ; P एहत्थइ. १३ B णिवच्छिउं.

9 १ S ° पउमावईहि. २ S जाणवि. ३ S कउ. ४ A बहुवीरवित्ति; B वरु वीरवत्ति. ५ A रुच्चइ ता. ६ B धरत्ति.

8 2 *a* जाइवि मिलित्वा; महुआरिणि कल्लाली (मद्यविक्रयिणी); *b* बहुबंधुजुत्त बहुकुटुम्बयुक्ता. 3 *b* साहियदिसासु साधितदिशामुखः. 9 *a* तउं तणउ तणउ तव संबन्धी तनयः. 11 *a* ओहच्छइ एषा मञ्जूषा तिष्ठति; *b* सुद्धिणिमित्तु वृत्तान्तं कथयितुम्. 12 *a* कलियारउ कलहकारी; सइसवि शिशुत्वे बालावस्थायाम्. 15 णत्तिउ पौत्रः, उग्रसेनपुत्रः.

आमायं वुत्तु णिरुत्तवाय महुं महुर देहि रायाहिराय।
महिमंडलसहिय महाभडासु सा दिण्ण तेण राएण तासु। 5
सहुं सेण्णें उग्गयधरणिपंसु णियवंसहुयासणु चलिउ कंसु।
अविणीयजीयंजीविउ हरंतु विवसेहिं पसु मच्छरु वहंतु।
वेढिय महुराउरि दुद्धरेहिं हत्थिहिं रहेहिं हरिकिंकरेहिं।
अट्टालय पाडिय दलिउ कोट्टु साडिउ पुररक्खणणरमरट्टु।
अक्खिउ णरेहिं गंभीरभाव आयउ तुज्झुप्परि पुत्तु देव। 10
जो पइं कालिंदिहि वित्तु आसि पवहिं अवलोयहि णियभुयासि।

घत्ता—आयण्णिवि रिउ तणु मण्णिवि दाणु देंतु णं दिग्गउ॥
संणज्झिवि हियइ विरुज्झिवि उग्गसेणु पहु णिग्गउ॥ ९॥

10

संचोइयणाणावाहणाइं आयउ रणु दोहिं मि साहणाइं।
करमुक्कसूलहलसव्वलाइं वढधरियाउंचियकुंतलाइं।
घोलंतअंतमालाचलाइं पवहंतपहरसंभवजलाइं।
पडिदंतिदंतलुयमयगलाइं असिवरदारियकुंभत्थलाइं।
सोडियसरत्तमुत्ताहलाइं दोखंडियकमकडियलगलाइं। 5
णिवडंतहं मुच्छाविभलाइं णारायणियरछाइयणहाइं।
अइदूसहवणवेयणसहाइं भडभिउडिभंगभेसियगहाइं।
दरिसावियदेहवसावहाइं णीसारियणियणरवइरिणाइं।
अवलोइयकरधणुगुणकिणाइं।
ता उग्गसेणु वाहियगइंदु धाइउ सहुं गिरिणा णं मइंदु। 10
बोल्लाविउ रूसिवि तणउ तेण किं जाएं पइं णियकुलखहेण।
गब्भत्थें खद्धउं मज्झु मासु तुहुं महुं हूयउ णं दुमि हुयासु।

७ AP ता. ८ B °जीव°. ९ ABPS वियहेहिं. १० B वाडिय. ११ A साडिउ पुररक्खणु णरमरट्टु; BAls. णिद्धाडिउ पुररक्खणमरट्टु; S साडिउ पुररक्खणमडमरट्टु. १२ A चरेहिं.

10 १ APS दोहं मि. २ S read from here down to line 10 the text in a confused manner. ३ S लोलंत°; K लोलंत° in second hand. ४ B पहवंत°. ५ BAls. पाडिय°. ६ A °सरंत°. ७ S °भिंभलाइं. ८ S इय दूसह°. ९ AP °वसावयाइं. १० AP वाहेवि गयंदु. ११ AP णं सहुं गिरिणा मइंदु. १२ AP दुमु हुवासु.

9 4 *a* णिरुत्तवाय सत्यवाक् त्वम्. 6 *a* उग्गयधरणिपंसु उच्छ्रितभूधूलिः सैन्यगमनात्. 7 *a* अविणीय° शत्रवः. 8 *b* °हरि अश्वाः. 9 *a* कोट्टु सालः प्राकारः; *b* साडिउ पातितः.

10 3 *b* °पहरसंभव° प्रहारोत्पन्नम्. 5 *a* °सरत्त° सरुधिराणि. 6 *b* णाराय° बाणाः. 7 *a* °वणवेयण° व्रणवेदना. 10 *b* मइंदु सिंहः. 11 *b* जाएं जातेन उत्पन्नेन. 12 *b* दुमि वृक्षे.

घत्ता—विग्रंतें समरि कुपुत्तें उग्गसेणु पच्चारिउ ॥
जो पेल्लइ पाणिए घल्लइ सो महु बप्पु वि वइरिउ ॥ १० ॥

11

बोल्लिज्जइ एवहिं काइं ताय परिहच्छ पउर दे देहि घाय ।
गज्जंतु महंतु गिरिंदतुंगु ता चोइउ मायंगहु मयंगु ।
पहरणाइं णिवारिय पहरणेहिं पहरंतहिं सुयजणणेहिं तेहिं ।
णहयलि हरिसाविउ अमरराउ उड्डिवि कंसें णियगयवराउ ।
पडिगयकुंभत्थलि पाउ देवि पुरिमासणिल्लभडसीसु लुंणिवि । 5
असिघाउ देंतु करि धरिउ ताउ पंचाणणेण णं मिगु वराउ ।
आवीलिवि भुयबलएण रुद्धु पुणु दीहणायपासेण बद्धु ।
तेत्थु जि पोमावइ माय धरिय किं तुहुं मि जणणि खल कूरचरिय ।
इय भणिय बे वि ससिकंतकंति खिहियइं णियमंदिरि गोउरंति ।
असिपंजरि पियरइं पावएण चिरभवसंचियमलभावएण । 10
थिउ अप्पुणु पिउलच्छीविलासि लेहारउ पेसिउ गुरुहि पासि ।
लेहें अक्खिउं जिह उग्गसेणु रणि धरिवि णिबद्धउ णं करेणु ।
पइं विणु रज्जेण वि काइं मज्झु जइ वयणु ण पेच्छमि कहिं मि तुज्झु ।
तो[13] महु णरभवजीविउं णिरत्थु आवेहि देव उड्डियउ हत्थु ।
घत्ता—तें वयणें रंजियसयणें संतोसिउ सामावइ ॥ 15
गउ महुरहि वियलियविहुरहि सीसु तासु मणि भावइ ॥ ११ ॥

12

लोएं गाइज्जइ धरिवि वेणु जो पित्तिउ णामें देवसेणु ।
तहु तणिय धूयं तिहुवणि पसिद्ध सामा वामा गुणगामणिद्ध ।

11 १ P परिहत्थु; S परिहत्थ. २ S गिरिदु. ३ B चोयउ. ४ APS णिवारिवि. ५ AP सीसु लेवि. ६ BP मिगु; S मिग. ७ S °वासेण. ८ S इह भणिवि. ९ P मंदिर°. १० APS अप्पणु. ११ S धरवि. १२ APS कह व. १३ B ता. १४ B ओडियउ; P ओड्डियउ. १५ B तासु सीसु.
12 १ B धीय. २ B तिहुवण°.

11 1 *b* परिहच्छ शीघ्रम्. 5 पुरिमासणिल्ल° अग्रासनस्थस्य. 6 *a* ताउ पिता उग्रसेनः. 7 *a* आवीलिवि आपीड्य. 9 *a* ससिकंतकंति चन्द्रकान्तमनोहरे; *b* गोउरंति गोपुरप्राङ्गणे. 11 *a* पिउलच्छीविलासि पितृलक्ष्मीविलासे. 14 *b* उड्डियउ हत्थु प्रार्थनानिमित्तं उर्ध्वीकृतः. 15 सामावइ वसुदेवः. 16 सीसु शिष्यः कंसः वसुदेवस्य मनसि रोचते.

12 1 *b* पित्तिउ कंसस्य पितृव्यः देवसेनः. 2 *b* तहु तणिय धूय (इरि) कुरुवंशोत्पन्ना देवसेनेन पोषिता देवकी इति भारते प्रसिद्धम्; *b* वामा मनोहरा; गुणगामणिद्ध गुणसमूहस्निग्धा.

रिसिहिँ मि उक्कोइयकामबाण देवइ णामें देवयसमाण ।
सा णियससा गुरुदाहिण भणेवि महुराणाहें दिण्णी थुणेवि ।
सुहुं भुंजमाण णिसिवासराल अच्छंति जाव परिगलइ कालु । 5
ता अण्णहिं दिणि जिणवयणवाइ अइमुत्तउ णामें कंसभाइ ।
पिउबंधणि चिरु पावइउ वीरु णिप्पिहु आमेल्लिवि णियसरीरु ।
चरियइ पइट्ठु मुणि दिट्ठु ताइ मेहुणउ हसिउ जीवंजसाइ ।
दक्खालिउ देवइपुप्फचीरु जइ जंपइ जायकसायहीरु ।
जरसंधकंसजसलंपडेण मारेवा एयं कप्पडेण । 10
होसइ एउं जि तुह दुक्खहेउ मा जंपहि अणिबद्धउं भणेउ ।

घत्ता—हयसोत्तउं मुणिवरवुत्तउं णिसुणिवि कुसुमविलित्तउं ॥
तं चीवरु सज्जणदिहिहरु मुद्धइ फोडिवि घित्तउं ॥ १२ ॥

13

रिसि भासइ पुणु उज्झियसमंसु कण्णहं फोडेवउ पम कंसु ।
ता वेल्लु ताइ पायहिं छुण्णु पुणरवि मुणिणा पडिवयणु दिण्णु ।
तुह जणणु हणिवि रणि दढभुएण भुंजेवी मेइणि एयहि सुएण ।
गउ जइवरु वासु विलासियासु जीवंजस गय भत्तारपासु ।
पुच्छिय पिएण किं मलिणवयण किं दीसहि रोसारत्तणयण । 5
ताँ सा पडिजंपइ पुण्णजुत्तु होसइ देवइयहि को वि पुत्तु ।
णिहणेव्वउ तें तुहुं अवरु ताउ महिमंडलि होसइ सो जि राउ ।
ता चिंतइ कंसु णिसंसियाइं अलियाइं ण होंति रिसिभासियाइं ।

३ B उक्कोयइ कामबाण; PS उक्कोइयकुसुमबाण. ४ BP भुंजमाणु. ५ A अच्छंतु. ६ AB परिगलिय°; S पडिगलइ. ७ BPS धीरु. ८ APS आमेल्लिय°. ९ A जरसिंध°; P जरसेंध°. १० A मारेव्वा. ११ S फालिवि.

13 १ PS फालेवउ. २ P चुण्णु. ३ P पुणुरवि. ४ S भुंजेवि मही. ५ AP विणासि-आसु. ६ P मलियवयण. ७ A सा पडिजंपइ तुह पुण्णजंतु. ८ S णीसंसियाइं.

3 *a* उक्कोइय° उत्पादितः. 4 *a* णियससा निजभगिनी; *b* महुराणाहें कंसेन. 5 *a* णिसिवासरालु रात्रिदिवसयुक्तः कालः. 7 *b* आमेल्लिवि णियसरीरु शरीराशां मुक्त्वा. 8 *b* मेहुणउ देवरः अतिमुक्तकः. 9 *a* देवइपुप्फचीरु देवकीरजस्वलावस्त्रम्; *b* जइ यतिः; जायकसायहीरु जातकषायशल्यः. 11 *b* अणेउ अज्ञेयं वचः. 12 हयसोत्तउं हतकर्णम्; कुसुमविलित्तउं रजस्वलारक्तेन लिप्तम्.

13 1 *a* उज्झियसमंसु त्यक्तोपशमलेशः. 3 *b* एयहि सुएण देवक्याः पुत्रेण. 4 *a* विलासियासु वर्धितवाञ्छम्. 7 *a* ताउ तातो जरासंधः. 8 *a* णिसंसियाइं नृप्रशस्तानि.

णिहुउ वि पवण्णउ कंसु तेत्थु अच्छइ वसुएउ णरिंदु जेत्थु ।
घत्ता—सो भासइ गुज्झु पयासइ ससुरहि खयभयजरियउ ॥ 10
हरिसंदणु कयकडमद्दणु जइयहुं मइं रणि धरियउ ॥ १३ ॥

14

तइयहुं मेहुं तूसिवि मणमणोज्जु वरु दिण्णउ अवसरु तासु अज्जु ।
आयं केण वि जगडंभएण हउं णिहणेव्वउ ससडिंभएण ।
इय वायागुत्तिअगुत्तएण भासिउं रिसिणा अइमुत्तएण ।
जइ वरु पडिवज्जहि सामिसालें परबलदलवट्टणबाहुडाल ।
णाहीपएसविलुलंतणालु जं जं होसइ देवइहि बालु । 5
तं तं हउं मारमि म करि रोसु जइ मण्णहि णियवायाविसेसु ।
ता सच्चवयणपालणपरेण तं पडिवण्णउं रोहिणिवरेण ।
गउ गुरु पणवेप्पिणु घरहु सीसु माणिणिइ पबोल्लिउ माणिणीसु ।
वरकंतहं सत्तसयाइं आसु दुक्कालु ण पुत्तहं तुज्झु तासु ।
मइं जाणेव्वउं वेयणवसाहि दुक्खेण तणय होहिंति जाहि । 10
घत्ता—सुय मारिवि दुज्जण धीरिवि णाह म हियवउं सल्लहि ॥
हो णेहें हो महु णेहें लेमि[10] दिक्ख मोकल्लहि ॥ १४ ॥

15

परेताडणु पाडणु दुण्णिरिक्खु किह पेक्खमि डिंभहं तणउं दुक्खु ।
मइं मेल्लहि सामिय मुयमि संगु जिणसिक्खइ भिक्खइ खवमि अंगु ।
वसुएउ भणइ हलि गुणमहंति गइ मज्झु तुहारी णिसुणि कंति ।

९ B णिभुउ जि; P णिहुयउं जि. १० APS राउ. ११ A सुगुरुहे; B ससुरहिं. १२ A °भयजज्जरिउ; B °भयजरिउ. १३ S हरिदंसणु. १४ S °कडवंदणु.

14 १ P पइं. २ P महो मणोज्जु. ३ A °अगुत्तिएण. ४ A °मुत्तिएण. ५ P सामिसालु. ६ S °दलवट्टण°. ७ P °पवेसे. ८ AP दोसु. ९ B जण्णेव्वउ in second hand. १० A लेवि. ११ P दिक्ख.

15 १ A सिलताडणु. २ A मारणु; BP फाडणु. ३ B पिक्खमि; PS पेक्खेमि. ४ B मिल्लिहि. ५ AP दिक्खइ.

9 *a* णिहुउ वि निभृतोऽपि, विनीतोऽपि. 10 खयभयजरियउ मरणभयज्वरयुक्तो जातः. 11 हरिसंदणु सिंहरथः; कयकडमद्दणु कृतकटकभञ्जनः.

14 2 *b* ससडिंभएण भगिनीपुत्रेण. 3 *a* वायागुत्तिअगुत्तएण वचोगुप्तिरहितेन. 8 *a* सीसु कंसः; *b* माणिणिइ देवक्या; माणिणीसु मानवतीनां स्त्रीणां स्वामी वसुदेवः. 9 *a* वरकंतहं वरस्त्रीणाम्.

15 2 *a* मुयमि संगु मुञ्चामि परिग्रहम्. 3 *b* कंति हे भार्ये.

जइ सिसु पयंडु मारहुं ण देमि　　तो हउं असच्चु अधमज्झि होमि ।
इय्मंतउ बालु सलोयणेहिं　　फिह ओप्पसमि तुहमायणेहिं ।　　5
सलिलंजलि रयरससुहहु देहुं　　तवचरणु पहाविद वे वि लेहुं ।
दइयवसें दइयादइयएहिं　　अम्हइं दोहिं मि पव्वइयएहिं ।
थेउ पुत्तुप्पत्ति ण तासु भंतु　　मारिसइ पच्छइ काइं कंसु ।
इय ताइं वियप्पिवि थियइं जांव　　बीयइ दिणि सो रिसि ढुक्कु तांव ।
णियवित्ति संख मुणि परिगणंतु　　बलएवजणणभवणंगणंतु ।　　10
बहुवारहिं मुक्क णमोत्थुवाय　　पडिगाहिउ जइवरु धोय पाय ।
भुंजिवि भोयणु तवपुण्णवंतु　　मुणिवरु णिसण्णु आसीस देंतु ।

घत्ता—मुणि जंपिउ किं पइं विप्पिउं पहरणसूरि पवोलइ ॥
घरि जं सइ डिंभु जणेसइ तं जि कंसु णिहणेसइ ॥ १५ ॥

16

मइं तहु पडिवण्णउं एउ वयणु　　ता पडिजंपइ णिम्महियमयणु ।
होहिंति ससहि जे सत्त पुत्त　　ते ताहं मज्झि मलपडलचत्त ।
अण्णत्थ लहेप्पिणु बुद्धिसोक्खु　　छह चरमदेह जाहिंति मोक्खु ।
सत्तमु सुउ होसइ वासुएउ　　जरसंधहु कंसहु धूमकेउ ।
जं एम भणिवि जिणपयदुरेहु　　गउ झ त्ति दियंबरु मुक्कणेहु ।　　5
तं दो वि ताइं संतोसियाइं　　णं कमलइं रवियरवियसियाइं ।
कालें जंतें कयगब्भछाय　　सिसुजमलइं तिण्णि पसूय माय ।
इंदाणइ देवें णइगमेण　　भद्दियपुरवरि सुहिसंगमेण ।

घत्ता—थिरचित्तहि जिणवरभत्तहि वररयणसंयरिद्धिहि ॥
घणथणियहि पुत्तत्थिणियहि दविणसमूहसमिद्धहि ॥ १६ ॥　　10

६ A एहो. ७ BPS रइरस°. ८ B तवयरणु. ९ B पहाएं; K पहावें but gloss प्रभाते. १० B पव्वइयएहिं. ११ S ण य. १२ A णियवित्तिसंख. १३ A वहुवरहिं वि. १४ P विमुक्क. १५ A णवपुण्णवंतु. १६ P पइं किं. १७ B पहणेसूरि. १८ A णिहणेसइ.

16 १ AP पुत्त सत्त. २ AP अण्णत्थ. ३ A बुद्धिसोक्खु; P बुद्धिसोक्खु; S बद्धिसोक्खु. ४ A छच्चरमदेह. ५ BS जरसंधहो. ६ S बे वि. ७ A कयअंगछाय. ८ S सुहिसंगमेण. ९ A °भत्तिहे. १० PS °रिद्धहे. ११ K पुत्तत्थणियहि.

5 *a* सलोयणेहिं स्वनेत्रैः. 6 *a* रयरससुहहु रतरससौख्यस्य; देहुं दातुम्; *b* लेहुं गृह्णीमः. 7 *a* दइयादइयएहिं वधूवरैः. 8 *a* तासु पुत्रस्य. 10 *a* संख गृहसंख्यां वृत्तिपरिसंख्यानम्; *b* °भवणंगणंतु °प्राङ्गणमध्ये. 11 *a* बहुवारहि पुनः पुनः. 13 पहरणसूरि वसुदेवः. 14 सइ सती देवकी.

16 2 *a* ससहि स्वसुर्देवक्याः; *b* ताहं तेषां सप्तानां मध्ये. 5 *a* °दुरेहु भ्रमरः. 6 *b* रवियर° रविकिरणाः. 7 *a* °छाय शोभा.

17

बंभिंदसुराहिं ते विण्ण तेण वेहाविउ णियजीवियवसेण।
बालाइं हुयवेउव्वणकयाइं महुराहिउ जइ मारइ मयाइं।
अप्पाकइ मिलहि ससंकु म त्ति ण वियाणइ अप्पाणहु भवित्ति।
अण्णहिं दिणि पंकयवयणियाइ णिसि देविइ मउलियणयणियाइ।
करिरत्तसित्तु कंठंतु घोरु दिट्ठउ सिविणइ केसरिकिसोरु। 5
आहिंडरसिहराइं समारुहंतु अवलोइउ गोवइ ढेक्करंतु।
उयंतु भाणु सियभाणु अवरु सरु फुल्लकमलु परिभमियभमरु।
णियरमणहु अक्खिउं ताइ दिट्ठु तेण वि णिब्भप्फलु ताहि सिट्ठु।
हलि णिसुणि सुअणफलु ससहरासि हरि होसइ तेरइ गब्भवासि।
अहमुत्तमहारिसिवयणु दुट्ठु ता मेल्लिवि सग्गु महाइसुक्कु। 10
णिण्णामणामु जो आसि कालि सो देउ आउ गयणंतरालि।
थिउ जणणिउयरि संपण्णकुसलु सुहुं जणइ णाइं णवणलिणि भसलु।

घत्ता—सुच्छायइ बाहिरि आयइ जाणमि बेण्णि वि कालिय॥
किं खलमुह अवर वि उरुह पुरलोएण णिहालिय॥ १७॥

18

किं गब्भभावि पंडुरिउं वयणु णं णं जसेण धवलियउं भुवणु।
किं पयडु सइतिवलिउ गयाउ णं णं रिउजयलीहउ हयाउ।
सिसुअवयवेहिं किं भरिउं पेट्टु णं णं दुत्थियकुलधणविसट्टु।
किं जायउ णिद्धु मयच्छिकाउ णं णं हुउं मण्णमि भूमिभाउ।

17 १ P वणे. २ B °विसेण. ३ B °सित्त. ४ B ढिक्करंतु. ५ B उवयंतु. ६ A पुप्फकमलु. ७ A सुवणु छणसस°; P सिविणफलु; S सुहणफलु. ८ S णिण्णामु णाम. ९ PAls. संपुण्ण°. १० P सुयच्छायए. ११ B बाहिर. १२ S बेण्णि मि.

18 १ S गब्भभाव°. २ B किं तासु उयरतिव° in second hand. ३ S °धणु. ४ S णिद्ध.

17 1 *b* वेहाविउ वञ्चितः. 2 *b* मयाइं मृतान्यपि. 3 *a* ससंकु सभयः. 7 *a* सियभाणु चन्द्रः. 8 *b* णिब्भप्फलु निश्चफलम्. 9 *a* सुअणफलु स्वप्नफलम्; ससहरासि चन्द्रवदने. 10 *b* महाइसुक्कु महाशुक्रे स्वर्गे मुक्त्वा. 12 *a* संपण्णकुसलु परिपूर्णकुशलः. 13 सुच्छायइ बाहिरि आयइ सुष्ठु छायया बहिर्निर्गतया; बेण्णि वि थणू (कंसजरासंधौ) स्तनौ च कृष्णमुखौ जातौ.

18 2 *a* सइतिवलिउ तस्याः उदररेखाः. 3 *a* पेट्टु उदरम्. *b* °कुलधणविसट्टु कुलधनसमूहः. 4 *a* मयच्छिकाउ मृगाक्ष्याः शरीरम्; *b* भूमिभाउ भूप्रदेशोऽपि कान्तिमान् जातः.

कि रोमराइ णीलत्तु पत्तें णं णं बालकिति सियंचवत्त । 5
सीयलु वि उण्हु कि जाउ देहु णं णं किर पुत्तपयाउ एहु ।
कि माय समिच्छइ धुवंपहुत्तु णं णं तत्तणुआवेहु चरित्तु ।
कि मेहणिभक्खणि इच्छ करइ णं णं तें केसेउ धरणि हरइ ।
कि ढुक्कउ तेंहि सत्तमउ मासु णं णं अरिवरगलकालपासु ।
कि उप्पण्णउ भहिउ विरोउ णं णं पडिमडकामिणिहिं सोउ । 10

घत्ता—वणुमहणु जणिउ जणहणु जणणिइ भरहखेसरु ॥
सपयावें कंतिपहावें पुप्फदंतभाणिहिहरु ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वासुएवजम्मणं
णाम चउरासीमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८४ ॥

५ BP पत्तु. ६ BP सियत्तु चत्तु. ७ AB णिब°; P णिय°. ८ APS तं तणु°. ९ A °जायउ. १० S केसवु. ११ A णहे. १२ AP °कालवासु. १३ AP सउहावें. १४ A कंसकण्हउप्पत्ती; S कंसकण्हुप्पत्ती. १५ S चउरासीतिमो.

5 *b* सियसचत्त श्वेतत्वरहिता. 7 *a* धुवपहुत्तु छत्रचमरसिंहासनादिकं दोहदं वाञ्छति. 8 *a* मेहणिभक्खणि दोहलकवशान्मृत्तिकाभक्षणे. 10 *a* भहिउ विष्णुः; विरोउ रोगरहितः.

LXXXV

केसेउ कसणतणु वसुएवें हयणियवंसहु ॥
उब्बाहवि लइउ सिरि कालदंडु णं कंसहु ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—णं हरिवंसवंसणवजलहरु णं रिउणयणतिमिरओ ॥
जोइउ दीवएण हरि मायइ णं जगकमलमिहिरओ ॥ छ ॥

कण्हु मासि सत्तमि संजायउ मारणकंखिरु कंसु ण आयउ । 5
हउं जाणमि सो दइवें मोहिउ महिवइलक्खणलक्खपसाहिउ ।
लइयउ वासुएउ वसुएवें धरिउं वारिवारणु बलएवें ।
णिसि संचलियइं छत्तमणियरें ण वियाणिय णिरु कूरें इयरें ।
अग्गइ हरिसियतिमिरविहंगिहिं वच्चइ वसहु फुरंतहिं सिंगहिं ।
को वि परोइउ अमरविसेसउ कालहि कालिहि मग्गपयासउ । 10
देवयचोइइ आवयकुंठइ लग्गइ माहवचरणंगुट्ठइ ।
अमलकवाडइं गाढविइण्णइं विहडियाइं णं वइरिहि पुण्णइं ।
कुलिसायसवलयंकियपायं बोल्लिउं सुमहुरु महुरारायं ।
छत्तालंकिउ को किर णिग्गइ को णिसिसमइ दुवारहु लग्गइ ।
भासइ सीरि ससि व सुहदंसणु जो तुह णिविडणियलविद्धंसणु । 15
जो जीवंजसवइविद्दावणु पोमावइकरमरिमेल्लावणु ।
सो णिग्गउ तुह सोक्खजणेरउ उग्गसेण णिव अच्छहि सेरउ ।

घत्ता—एंव भणंत गय ते हरिसें कहिं मि ण माइय ॥
णयरहु णीसरिवि जउणाणइ झ त्ति पराइय ॥ १ ॥

---

1 १ PS केसवु. २ B उच्चाइय. ३ AP हरिवंसकंदणव°. ४ P °तमरओ. ५ B जोयउ. ६ S आइउ. ७ S वासुएवु. ८ S संचरिय. ९ AP पधाविउ. १० A मग्गु पयासिउ; BP मग्गपयासिउ. ११ P चोइय. १२ A आवयकुट्टए; B आवयकुंठए. १३ A समहुरु. १४ A णिग्गउ. १५ A लग्गउ. १६ B णिवडणियल°. १७ AP °विद्दारणु. १८ ABPS °करिमरि°. १९ AP णिव; B णिउ.

---

1 1 हयणियवंसहु हतनिजवंशस्य कंसस्य यमदण्ड इव. 4 दीवएण दीपतेजसा; °मिहिरओ सूर्यः. 7 *b* वारिवारणु छत्रम्. 8 *a* छत्ततमणियरें छत्रच्छायया; *b* इयरें कंसेन. 9 *a* °विहंगिहि °विभञ्जकैः विनाशकैः; *b* वसहु वृषभः. 10 *b* कालहि कालिहि कृष्णायां रात्रौ; मग्गपयासउ मार्गप्रकाशकः. 11 *a* देवयचोइइ देवताप्रेरिते; आवयकुंठइ आपदाविनाशके. 13 *b* महुरारायं उग्रसेनेन. 15 *b* णिविडणियल° गाढशृङ्खला. 16 *a* जीवंजसवइ° कंसः; *b* °करमरिमेल्लावणु बन्दिनीमोचकः. 17 *b* सेरउ (स्वैरं) मौनेन.

2

दुवई—ता कालिंदि तेहिं अवलोइय मंथरवारिगामिणी ॥
णं सरिरूवु धरिवि थिय महियलि घणतमजोणि जामिणी ॥ छ ॥

णारायणतणुपहपंती विव　　अंजणगिरिवरिंदकंती विव ।
महिमयणाहिरइयरेहा इव　　बहुतरंग जरहयदेहा इव ।
महिहरदंतिदाणरेहा इव　　कंसरायजीवियमेरा इव । 5
वसुहणिलीणमेहमाला इव　　साम समुत्ताहल बाला इव ।
णं सेवालवाल दक्खालइ　　फेणुप्परियणु णं तहि घोलइ ।
गेरुयरत्तु तोउ रत्तंबरु　　णं परिहइ चुयकुसुमहिं कब्बुरु ।
किंणरिथणसिहरइं णं दावइ　　विब्भमेहिं णं संसउ भावइ ।
फणिमणिकिरणहिं णं उज्जोयइ　　कमलच्छिहिं णं कण्हु पलोयइ । 10
भिसिणिपत्तथालेहिं सुणिम्मल　　उच्चाइय णं जलकणतंदुल ।
खलखलंति णं मंगलु घोसइ　　णं माहवहु पक्खु सा पोसइ ।
णउ कासु वि सामण्णहु अण्णहु　　अवसें तूसइ जवण सवण्णहु ।
विहिं भाएहिं थक्कउ तीरिणिजलु　　णं धरणारिविहत्तउं कज्जलु ।

घत्ता—दरिसिउं ताइ तल्लुं किं जाणहुं णाहहु रत्ती ॥ 15
पेक्खवि महुमहणु मयणें णं सरि वि विगुत्ती ॥ २ ॥

---

2 B पविलोइय. २ P सरिरूउ. ३ AP read 4 *b* as 5 *a*. ४ A जलहरदेहा; P जलधरवेला. AP read 5 *a* as 4 *b*. ६ A सोम. ७ AB माला इव. ८ AP रत्ततोय रत्तंबर. ९ AP कब्बुर; B कच्छुरु. १० A भउहउ. ११ B उज्जोवइ. १२ B पलोवइ. १३ A उच्चायइ. १४ P घोसइ. १५ A समुण्णहो. १६ BS भायहिं. १७ A धरणारिहि हित्तउं; P धरणारिविहित्तउं. १८ A तणु. १९ A °महणु णं मयणेण व सरी विव गुत्ती. २० P णं व सरि वि. २१ B विगुत्ती.

---

2 घणतमजोणि जामिणी कालरात्रिः. 4 *a* महिमयणाहिरइयरेहा इव भूमेः कस्तूरिकारेखा इव; *b* जरहयदेहा वृद्धावस्थया वलीयुक्तदेहा. 5 *a* महिहरदंति° गिरिरेव गजः; *b* °मेरा मर्यादाः 6 *b* साम श्यामा; समुत्ताहल नदीमध्ये शुक्तिकायां मुक्ताफलानि वर्तन्ते. 7 *a* सेवालवाल शैवालमेव केशाः; *b* फेणुप्परियणु फेन एव उपरितनं वस्त्रम्. 8 *a* तोउ तोयं जलम्; रत्तंबरु रक्तवस्त्रम्. 9 विब्भमेहिं जलभ्रमः भ्रान्तिश्च; संसउ संदेहः. 10 *b* कमलच्छिहिं कमलनेत्रैः. 13 *b* जवण यमुना सदृशवर्णस्य हरेरेव तुष्यति कृष्णवर्णत्वात् महत्त्वाच्च. 14 *b* °विहत्तउं विभक्तम्. 15 तल्लु नाभिः अधःप्रदेशश्च.

3

दुवई— णइ उत्तरिवि जांव थोवंतरु जंति समीहियासए ॥
विट्ठउ णंदु तेहिं सो पुच्छिउ णिक्कुडिलं समासए ॥ छ ॥

महु कंतइ देवय ओलग्गिय धूय ण सुंदरु पुत्तु जि मग्गिय ।
देविइ दिण्णी सुय किं किज्जइ तहि केरी लइ ताहि जि दिज्जइ ।
जइ सा तणुरुहु पडि महुं देसइ तो पणइणिहि आस पूरेसइ । 5
णं तो गंधधूवचरुफुल्लइं चारुभक्खरूवाइं रसिल्लइं ।
देमि ताम जा देवि णिरिक्खमि ता हलहेइ भणइ सुणि अक्खमि ।
लइ लइ लच्छिविलासरवण्णउ एहु पुत्तु तुह देविइं दिण्णउ ।
भंतिं म करहि काइं मुहुं जोवहि मेरइ करि तेरी सुय ढोयहि ।
ता हियउल्लइ णंदु वियप्पइ णरवेसेण भडारी जंपइ । 10
लेमि पुत्तु किं पउरपलावें परिपालमि सणेहसब्भावें ।
एम चवेप्पिणु अप्पिय बाली बलकरकमलि कमलसोमाली ।
लइउ विट्ठु साणंदें णंदें मेहु व आलिंगियउ गिरिंदें ।
हुउ संकयत्थउ गउ सो गोउलु जणय तणय पडिआया राउलु ।
घत्ता—सुय छणससिवयण देवइयहि पुरउ णिवेसिय ॥ 15
केण वि किंकरिण णरणाहहु वत्त समासिय ॥ ३ ॥

4

दुवई—पुरणहहंस कंस परघरिणिविलंबिरहारहारिणा ॥
आया पुत्ति देव गुरुघरिणिहि वइरिणि मलयदारुणा ॥ छ ॥

---

3 १ A सुंदर. २ BP °धूय°. ३ B °रूआइं. ४ S दिव्वए. ५ A omits म and reads करेहि for करहि. ६ AP भणेप्पिणु. ७ PS वरकरकमलि. ८ Als. सुकयत्थउ against Mss. ९ AS जणण तणय.

4 १ A °पलयदारुणा; P °पलयदारुणो.

---

3 1 थोवंतरु स्तोकमन्तरम्; समीहियासए वाञ्छितवाञ्छया. 2 णंदु नन्दगोपः; णिक्कुडिलं निष्कपटम्. 5 *a* पडि महुं मां प्रति; *b* पणइणिहि यशोदायाः. 7 *a* हलहेइ हलहेतिः बलभद्रः. 11 *a* पउरपलावें प्रचुरप्रलापेन. 12 *b* कमलसोमाली कमलवत् कोमला. 13 *a* विट्ठु विष्णुर्वासुदेवः; साणंदें सहर्षेण. 16 णरणाहहु कंसस्य.

4 1 पुरणहहंस हे नगरगगनसूर्य; °हारहारिणा हे हारहारिन्. 2 मलयदारुणा वसुदेवेन इति पौराणिकी संज्ञा.

तं विसुणेप्पिणु णरवइ उट्ठिउ जाइवि ससहि पिहेलणि संठिउ ।
तेण खलेण दुरियवसमिलियहि छुडु आयहि णं अंबयकालियहि ।
तलहत्थें सरलहि कोमलियहि चप्पिवि णासिय दिर्हिंदिलियहि । 5
रूढु विणासिवि छुडु रुउ भूमिभवणि पच्छाइय खुद्दें ।
सरसाहारगाससंपियवायइ तहिं मि धीय वड्ढारिय मायइ ।
हूई णवजोव्वणसिंगारें भज्जइ णं टसत्ति थणभारें ।
सुव्वयखंति सधम्मु समीरइ आउ आउं सुंदरि तउ कीरइ ।
णासाभंगें रूवु विणट्ठउं जाणिवि सा इप्पणयलि दिट्ठउं । 10
णिग्गयं गय वयधारिणि होइवि थिय काणणि ससरीरु पमोइवि ।
घोयइं धवलंबरइं णियत्थी जिणु झायंति पलंबियहत्थी ।
कुसुमहिं मालिय चउहिं मि पासहिं पुज्जिय णाहलसंमरसहासहिं ।
घत्ता—गय ते णियभवणु एंकल्ली कण्ण णिरिक्खिय ॥
अरिहु सरंति मणि वणि भीमें वग्घें भक्खिय ॥ ४ ॥ 15

5

दुवई—गय सा णियकएण सुरवरघरं अमलिणमणिपवित्तयं ॥
उव्वरियं कहं पि अलियल्लहिं तीए करंगुलित्तयं ॥ छ ॥
तं पुज्जिउं णाहलकुलवालें कुहियउं सडियउं अंतें कालें ।
अंगुलियाउ ताहि संकप्पिवि लकुडलोहविरइउं थप्पिवि ।
गंधफुल्लचरुयहिं मणमोहें पुणु तिसूलु पुज्जिउ सबरोहें । 5
दुग्ग विझवासिणि तहिं हूई मेसहं महिसहं णं जमदूई ।
एत्तहि केसउ माणियभोयहि णंदें जाइवि दिण्णु जसोयहि ।

२ P दिण्णेंदिलियहो. ३ P रूउ. ४ S विणासवि. ५ B दसत्ति. ६ AP सुधम्मु. ७ A सुंदरु. ८ P रूउ. ९ S जाणंवि. १० B णिग्गाय सावय°. ११ S होयवि. १२ S पमायवि. १३ A धोइयधवलंबर°. १४ B चउइं मि; S चउहुं मि. १५ BPS °सवर°. १६ B एकल्ली.

5 १ A °घरुममलिण°; B °घोर अमलिण°; P °वरु घरुममलिण°; S °घरममलिण°. २ B उद्धरियं. ३ PS कहिं पि. ४ B कुलबालें; P कुलपालें. ५ S लकुड°. ६ BP °लोहें. ७ P विरइय. ८ AP गंधधूवचरु°; BS गंधपुप्फचरु°. ९ S केसवु. १० P जायवि.

3 *b* ससहि भगिन्या देवक्याः. 4 *b* जायहि जातमात्रायाः; *b* दिहिंदिलियहि बालायाः. 7 *b* तहिं मि भूमिमध्येऽपि. 11 *b* ससरीरु पमाइवि निजशरीरं मुक्त्वा कायोत्सर्गेण स्थिता. 12 *a* णियत्थी परिहिता. 13 *a* मालिय वेष्टिता.

5 1 णियकएण पुण्येन; सुरवरघर स्वर्गम्, 2 अलियल्लहि व्याघ्रात्. 3 *a* तं तत् व्यङ्गुलम्; °कुलवालें कुलपालकेन; *b* कुहियउ कुथितम्. 4 *b* थप्पिवि स्थापयित्वा.

णं भमालमिहिकलसु मणोहरु सुहिकरकमलहं णं इंदिंदिरु ।
णं थणयहं तमालदलोहउ छज्जइ माहउ माहउ जेहउ ।
दामोयरु जुत्थियचिंतामणि समरगहीरवीरचूडामणि । 10
अरिणरमहिहरिदलोदामणि जणवलियरणकरणविज्ञामणि ।
पविउलभुयणंभोरुहदिणमणि णियेवि पुत्तु हरिसिय गोसामिणि ।
खिप्पेइ णाडु पसारियहत्थहिं णंदगोवगोवालिणिसत्थहिं ।

घत्ता—गाइउ कलरवहिं आलाविउ ललियालावहिं ॥
वड्ढइ महुमहणु कइगंथु जेम रसभावहिं ॥ ५ ॥ 15

6

दुवई—धूलीधूसरेण वरमुक्कसरेण तिणा मुरारिणा ॥
कीलारसवसेण गोवालयगोवीहिययहारिणा ॥ छ ॥

रंगंतेण रमंतरमंतें मंथउ धरिउ भमंतु अणंतें ।
मंदीरउ तोडिवि आवट्टिउं अद्धविरोलिउं दहिउं पलोट्टिउं ।
का वि गोवि गोविंदहु लग्गी एण महारी मंथणि भग्गी । 5
एयहि मोल्लु देउ आलिंगणु णं तो मा मेल्लहु मे प्रंगणु ।
काहि वि गोविहि पंडुरु चेलउं हरितणुतेएं जायउं कालउं ।
मूढें जलेण काइं पक्खालइ णियजडत्तु सहियहिं दक्खालइ ।
थणणरसिच्छिरु छायावंतउ मायहि संमुहुं परिधावंतउ ।
महिससिलंबउ हरिणा धरियउ णं करणिबंधणाउ णीसारियउ । 10
दोहउ दोहणहत्थु समीरइ मुइ मुइ माहव कीलिउं पूरइ ।
कत्थइ अंगणभवणालुद्धउ बालवच्छु बालेण णिरुद्धउ ।

११ S माहवु माहवु. १२ B adds after 11 a: अणुदिणु परिणिवसइ सुहियणमणि. १३ A °भवणंभो°. १४ P णियवि. १५ APS खेप्पइ. १६ BP कलरवेहिं. १७ A महमहणु.

6 १ A दरमुक्क°; S वरमुक्कु. २ P आवट्टिउं. ३ A मंथिणि; S मत्थणि. ४ B मुल्लु. ५ A मा मेल्लउ घरपंगणु; P महु पंगणु; S मेल्लउ मे प्रंगणु. ६ P पंडरु. ७ A मूढि. ८ B का वि. ९ AS सहियहं; P सहियहुं. १० P मायए. ११ ABPS महिसि°. १२ BP °सिलिंबउ. १३ AP सिसुणा. १४ P णउ करबंधणाउ. १५ P चवलु वत्थु.

8 b इंदिंदिरु भ्रमरः. 9 a °दलोहउ पत्रसमूहः; b माहउ लक्ष्मीभर्ता. 12 b गोसामिणि यशोदा.

6 4 a मंदीरउ लोहमयः अंकुशः (लोहनुं आंकडु); आवट्टिउं भ्रमम्. 5 b मंथणि दधिभाण्डम्. 8 a मूढ मूर्खा. 9 a थणरसिच्छिरु दुग्धस्वादेच्छया; छायावंतउ क्षुधावान्; b मायहि महिष्याः. 10 a °सिलंबउ शिशुः. 11 a दोहउ गोपालः. 12 b बालवच्छु तर्णकः.

गुंजाझेंदुयरइयपओएं मेल्लाविउ दुक्खेहिं जसोएं ।
कत्थइ लोणियपिंडु णिरिक्खिउ कण्हें कंसहु णं जसु भक्खिउं ।
घत्ता—पसरियकरयलेहिं सइंतिहिं सुहिसुहकारिणिहिं ॥ 15
भडिइ णियडि थिए घरकम्मु ण लग्गइ णारिहिं ॥ ६ ॥

7

दुवई—णउ भुंजंति गोव कयसंसय णिज्झियणीलमेहइं ॥
केसवकायकंतिपविलित्तइं दहियइं अंजणाहइं ॥ छ ॥
घयभायणि अवलोइवि भावइ णियपडिबिंबु विट्ठु बोल्लावइ ।
हसइ णंदु लेप्पिणु अवरुंडइ तहु उरयलु परमेसरु मंडइ ।
अम्माहीरएण तंदिज्जइ णिद्दंघइयउ परियंदिज्जइ । 5
हल्लरु हल्लरु जो जो भण्णइ तुज्झु पसाएं होसइ उण्णइ ।
हलहरभायर वइरिअगोयर सुहुं सुहुं सुयहि देव दामोयर ।
तहु घोरंतहु णाहयलु गज्जइ सुत्तविउद्धु ण केण लइज्जइ ।
पुहइणाहु किर कासु ण वल्लहु अच्छउ णरु सुरहं मि सो दुल्लहु ।
वियलियपयकिलेससंतावें पसरंतें तहु पुण्णपहावें । 10
णंदइ केरउ गोउलु णंदइ महुरहि णारि मसाणइ कंदइ ।
महि कंपइ पडंति णक्खत्तइं सिविणंतरि भग्गइं णिवछत्तइं ।
घत्ता—णियेवि जलंति दिस कंसें विणएण णियच्छिउ ॥
जोइससत्थणिहि दिउ वरुणु णाम आउच्छिउ ॥ ७ ॥

१६ AB °झिंदुउ. १७ APS °पओयए. १८ APS जसोयए. १९ A °करयलइं सइंतहिं. २० P °सुहिसुह°. २१ APS °कारिहिं.

7 १ B °भाइणि. २ P अवलोयवि; S अवलोवइ. ३ AP णंदिज्जइ. ४ AP परिअंदिज्जइ. ५ AP वइरियगोयर; S वइरिअगोयर. ६ A णयलु. ७ APAls. सुत्तु विउद्धु; B उट्ठु विउद्धु. ८ B केण वि णज्जइ. ९ P सुदुल्लहु. १० P णंदउ. ११ P मसाणहि. १२ A कंदउ. १३ ABP णिवछत्तइं. १४ P णिएवि. १५ A णाउं.

13 *a* गुंजाझेंदुयरइयपओएं गुञ्जाकृतकन्दुकप्रयोगेण. 14 *a* लोणियपिंडु नवनीतपिण्डः. 16 भडिइ विष्णौ कृष्णे इत्यर्थः.

7 2 दहियइं गोपाः कृष्णवर्णदधिनि कृतसंदेहाः; अंजणाहइं कज्जलनिभानि. 3 *a* घयभायणि घृतभाजने निजप्रतिबिम्बं विलोकयति. 5 *a* अम्माहीरएण जो जो इति नादविशेषेण; तंदिज्जइ निद्रां कार्यते; *b* णिद्दंघइयउ निद्रातुरः. 8 *b* सुत्तविउद्धु शयनानन्तरं उत्थितः जाग्रत् सन्; ण केण लइज्जइ केन न गृह्यते अपि तु सर्वेण गृह्यते, अथवा मायाप्रधानत्वात् न केनापि ज्ञायते. 10 *a* वियलियेत्यादि विगलितप्रजाक्लेशसंतापेन. 11 *a* णंदइ वृद्धिं प्राप्नोति. 13 णियवि दृष्ट्वा. 14 जोइससत्थणिहि ज्योतिष्कशास्त्रप्रवीणः; दिउ विप्रः; आउच्छिउ पृष्टः.

8

दुवई—भणु भणु चंदवयण जइ जाणसि जीवियमरणकारणं ॥
मह कइ विहिवसेण इह होही असुरहरणावयारणं ॥ छ ॥

किं उप्पाय जाय किं होसइ तं णिसुणिवि णिमित्तिउ घोसइ ।
तुज्झु णराहिव बलसंपुण्णउ गरुयउ को वि सत्तु उप्पण्णउ ।
ता चिंतवइ कंसु हयछायउ हउं जाणमि असच्चु रिसि जायउ । 5
हउं जाणमि ससतुय विणिवाइय हउं जाणमि महुं अत्थि ण दाइय ।
हउं जाणमि महिवइ अजरामरु हउं जाणमि अम्हहं किर को परु ।
हउं जाणमि पुरि महु णउ णासइ णवर कालु कं किर ण गवेसइ ।
इय चिंतंतु जाम विद्दाणउ तिलु तिलु झिज्जइ हियवइ राणउ ।
सव्वाहरणविहूसियगत्तउ तौ तहिं देवयाउ संपत्तउ । 10
ताउ भणंति भणहि किं किज्जइ को रुंधिवि बंधिवि आणिज्जइ ।
को मारिज्जइ को वसि किज्जइ किं वसि करिवि वसुह तुह दिज्जइ ।
हरि बल मुएवि कहहु को जिप्पइ को लोट्टिवि दलवट्टिवि घिप्पइ ।

घत्ता—भणइ णराहिवइ रिउ कहिं मि एत्थु महु अच्छइ ॥
सो तुम्हहं हणहु तिह जिह जमणयरहु गच्छइ ॥ ८ ॥ 15

9

दुवई—कहियं देवयाहिं जो णंदणिहेलणि वसइ बालओ ॥
सो पइं णूव ण भंति कं दिवसु वि मारइ मच्छरालओ ॥ छ ॥

आणिइ अरिवरि ता तहिं अवसरि ।
कंसाएसें मायावेसें ।
बल मायाविणि धाइय जोइणि । 5

---

8 १ A जाणसु. २ A महु कइया भविस्सिही णिच्छिउ असुहरणावयारणं; P मइ कइया भविस्सिहीदि णिच्छउ असुहरणावयारणं; ३ AS णेमिच्चिउ. ४ AB °संपण्णउ. ५ B गरुवउ; S गरुयउ. ६ S जाणवि throughout. ७ AP अम्हहं को किर परु. ८ ABPS किं किर. ९ A छिज्जइ. १० A ता चवंति देविउ मिगणेत्तउ. ११ A सरहि वि दिज्जइ को मारिज्जइ; P सरेहिं विहिज्जइ को मारिज्जइ. १२ AP रिउ एत्थु कहिं मि; S रिउ कहिं वि एत्थु. १३ A तुम्हइ हणइ. १४ S जिय.

9 १ ABP णिव.

---

8 2 °अवयारणं अवतारः. 3 *a* उप्पाय उत्पाताः. 6 *a* ससतुय भगिन्याः पुत्री; *b* दाइय दायादः. 7 *a* महिवइ जरासंधः. 8 *a* पुरि मथुरा.

9 4 *b* मायावेसें मातृवेषेण यशोदारूपेण. 5 *a* बल बलयुक्ता; *b* जोइणि व्यन्तरी.

वच्छरवाउलु　　गय तं गोउलु ।
जयसिरितण्हहु　　णवमहु कण्हहु ।
पासि पवण्णी　　थ त्ति णिसण्णी ।
पभणइ पूयण　　हें[2] महुमूयण ।
पियगरुडद्धय　　आउ थणद्धय । 10
दुद्धरसिल्लउ　　पियहि थणुल्लउ ।
तं आयण्णिवि　　चंगउं मण्णिवि ।
चुयपयपंडुरि　　थयणु पैओहरि[3] ।
हरिणा णिहियउं　　रैाहुं[4] गहियउं ।
णं ससिमंडलु　　सोहइ थणयलु । 15
सुरहियपरिमलु　　णं णलिणुप्पलु ।
सियकलसुप्परि　　थिंमिउं[5] मणि हरि ।
कहुयं खीरें　　आणिय वीरें ।
जणणि ण भेरी　　विप्पियगारी ।
जीवियहारिणि　　रक्खसि वइरिणि[6][7] । 20
अज्जु जि मारंभि[8]　　पलउ समारंभि ।
इय चिंतंतें　　रोसु वहंतें ।
माणमेहंतें[9]　　भिउडि करंतें ।
लच्छीकंतें　　देवि अणंतें ।
दंतेंहिं[10] पीडिय　　मुट्ठिइ[11] ताडिय । 25
दिट्ठिइं[12] तज्जिय　　थामें णिज्जिय ।
खणु[13] वि ण मुक्की　　णेहहिं[14] विलुक्की ।
खलहि रसंतहि　　सुण्णु[15] हसंतहि ।
भीमें बालें　　कयकल्लोलें ।
लोहिउं सोसिउं　　पलु आकरिसिउं । 30
दाणवसारी　　भणइ भडारी ।
हियरुहिरासव　　मुइ मुइ केसव ।

२ AP अहो. ३ P पयोहरे. ४ P राहु व. ५ S थिम्हिउ. ६ P वयरिणि; S वेरिणि. ७ A adds after 20 *b*: कूरवियारिणि, मायाजोइणि; B adds it in second hand. ८ S मारंवि, समारंवि. ९ P माणइं मंतें. १० B दंतिहिं. ११ BP मुट्ठिहिं; S मुट्ठिए. १२ B दिट्ठिय. १३ AP खणु वि. १४ P णहेहि. १५ AP तहि असहंतिहि.

6 *a* वच्छरवाउलु तर्णकशब्दयुक्तम्. 7 *b* णवमहु कण्हहु नवमनारायणस्य. 9 *a* पूयण पूतना राक्षसी. 10 *b* थणद्धय हे पुत्र. 11 *a* दुद्धरसिल्लउ दुग्धयुक्तम्. 13 *a* चुयपयपंडुरि क्षरदुग्धपाण्डुरे. 14 *b* राहुं गहियउं राहुणा गृहीतम्. 24 *b* देवि सा व्यन्तरी पूतना. 26 *b* थामें बलेन. 28 *a* खलहि रसंतहि दुर्जनायाः शब्दं कुर्वत्याः. 32 *a* हियरुहिरासव हृतरुधिरासव हृतरक्तमद्य.

पंदाणंदण   मेल्लि जणद्दण ।
कंसु ण सेवमि   रोसु ण दावमि ।
जहिं तुहुं अच्छहि   कील समिच्छहि ।   35
तहिं णउ पइसमि   छलु ण गवेसमि ।

घत्ता—इय रुयंति कलुणु कह कह व गोविंदें मुक्की ॥
गय देवय कहिं मि पुणु णंदणिवासि ण ढुक्की ॥ ९ ॥

10

दुवई—घरकोहलियवंसरवबहिरिए गाइयगेयरससए ॥
रोमंथंतथक्कगोमहिसिउलसोहियपएसए ॥ छ ॥

अण्णहिं पुणु दिणि   तहिं णियपंगणि ।
जणमणहारी   रमइ मुरारी ।
घोट्टइ खीरं   लोट्टइ णीरं ।   5
भंजइ कुंभं   पेल्लइ डिंभं ।
छंडइ महियं   चक्खइ दहियं ।
कड्ढइ चिंधिं   धरइ चलच्चिं ।
इच्छइ केलिं   करइ दुवालिं ।
तहिं अवसरए   कीलाणिरए ।   10
कयजणराहे   पंकयणाहे ।
रिउणा सिट्ठा   देवी दुट्ठा ।
अवरा घोरा   सयडायारा ।
पत्ता गोट्ठं   गोवइरोट्ठं ।
चक्कचलंगी   दलियभुयंगी ।   15
उप्परि पंती[12]   पलउ करंती ।
दिट्ठा तेणं   महुमहणेणं[13] ।

१६ S दोसु. १७ S पइसंवि. १८ S तुच्छु समासंवि. १९ APS उविंदें. २० APS °णिवासु.

10 १ A °काहलेय°; BS °काहिलय°. २ AP गाइयगोवरासए. ३ B रोमंथक्कबहुलगो°. ४ P °महिसीउल°; S °महिसिउले. ५ A अण्णहिं मि दिणे; P अण्णम्मि दिणे. ६ AP णियभवणे. ७ PS छड्डइ. ८ A चलचिं. ९ B केली. १० B दुवाली; PS दुयालिं. ११ S गोपइ°. १२ BS यंती. १३ A महमहणेणं.

10 1 °वंसरवबहिरिए वेणुशब्दबधिरे; °गेयरससए गेयरसशते. 7 *a* महियं मथितं तक्रम्. 8 *a* चिंधिं अग्निम्; *b* चलच्चिं चपलां ज्वालाम्. 9 *a* केलिं क्रीडाम्; *b* दुवालिं गुलाई (?). 11 *a* कयजणराहे कृतजनशोभे. 14 *a* गोट्ठं गोकुलम्. 15 चक्कचलंगी चक्रेण चलशरीरा. 16 *a* पंती आगच्छन्ती; *b* पलउ प्रलयो विनाशो मरणम्.

पायं[14] पहया णासिवि[15] विगया ।
रविकिरणावहि[16] अवरदिणावहि[17] ।
इंदाइणिए[18] पियचारिणिए[19] । 20
दिहिचोरेणं[20] दंडडोरेणं[21] ।
पवलबलालो बद्धो बालो ।
उद्दूखलए[22] णिहियउ[23] णिलए ।
सीयसमीरं तीरिणितीरं ।
सिसुकयछाया विगया माया । 25
ता सो दिव्वो अव्वो अव्वो ।
इय सद्दंतो परियट्टंतो[24] ।
तमुद्दूहलयं[25] पयणियपुलयं[26] ।
णवकयकण्हहु[27] जयजसतण्हहु[28] ।
जाणियमग्गो पच्छइ[29] लग्गो । 30
अरिविज्जाए गयणयराए ।
ता परिमुक्कं णियडे[30] ढुक्कं ।
मारुयपवलं तरुवरजुयलं ।
अंगे घुलियं भुयपडिखलियं ।
कीलंतेणं विहसंतेणं । 35
बलवंतेणं सिरिकंतेणं[31] ।

घत्ता—होइवि तालतरु रंगतहु पहि तडितरलइं ॥
रक्खसि[32] केसवहु सिरि घिवइ कढिणतालिहलइं[33] ॥ १० ॥

१४ P पाएण हया. १५ P णासेवि गया. १६ P °किरणरहे. १७ P अवरम्मि अहे. १८ AP णंदाणीए. १९ AP पियघरणीए. २० A दहिचोरेणं. २१ A दड्डदोरेणं. २२ P उडुक्खलए; S उडुक्खलए. २३ P णिहियो; S णिहिओ. २४ AP परियंदंतो; B परिअट्टंतो; S परियट्टंतो. २५ B तमदूहल°. २६ A पयलिय°; B पयणय°. २७ A थणवयतण्हो; P थणपयतण्हो. २८ AP सहसा कण्हो. २९ AP पच्छा लग्गो. ३० AP साहगुरुक्कं. ३१ B सिरकंतेणं. ३२ B रक्खसे. ३३ PS °ताडहलइं.

19 *a* रवि किरणावहि किरणानां पथे मार्गे आधारे इत्यर्थः; *b* अवरदिणावहि अपरदिनप्रभाते. 20 *a* इंदाइणिए यशोदया; *b* पियचारिणिए भर्त्रा सह गतया. 21 *a* दिहिचोरेणं धृतिविनाशकेन. 25 *a* सिसुकयछाया पुत्रजन्मना कृतशोभा. 27 *b* परियट्टन्तो आकर्षन्. 29 *a* णवकयकण्हहु नवीनपुण्ययुक्तकृष्णस्य. 35 *a* घुलियं पतितम्; *b* भुयपडिखलियं भुजाभ्यां वृक्षयुग्मं स्खलितम्.

11

दुवई—सिरिरमणीविलासकीलाघरि वच्छयले घडंतइं ॥
णं अरिवरसिराइं विहिलुक्कइं दसदिसिवहि पडंतइं ॥ छ ॥

ताइ इच्छीए सो पडिच्छीए ।
पंजलीयरो कीलणायरो ।
गयणसंखुए णाइ झिंदुएं । 5
ता महारवा तिव्वभेरवा ।
पुंछलालिरी कण्णचालिरी ।
धाइया खरी विंभिओ हरी ।
उल्ललंतिया णहि मिलंतियां ।
वेयवंतिया दीहदंतिया । 10
उवरि पंतियां घाउ दंतियां ।
णंदवासिणा जायवेसिणा ।
आहया उरे धारिया खुरे ।
मेहसंगहे भामिया णहे ।
खुंटु चाविरी कंसकिंकरी । 15
तीइ ताडिओ महिहि पाडिओ ।
तालरुक्खओ पुणु विवक्खओ ।
जगि ण माइओ तुरउ धाइओ ।
गहिरहिंसिरो जीवहिंसिरो ।
वंकियाणणो णाइ दुज्जणो । 20
हिलिहिलंतओ महि दलंतओ ।
कालचोइओ पंतु जोइओ ।
लच्छिधारिणा चित्तहारिणा ।
घुसिणपिंजरे बाहुपंजरे ।
छुहिवि पीलिओ गयणि चालिओ । 25

11 १ A °विलासि. २ A °वहपडंतइं. ३ P इच्छिए. ४ P पडियच्छिए. ५ S झेंदुए. ६ A भिव्वभइरवा; B तिव्व भइरवा. ७ B पुच्छ°. ८ S विम्हिओ. ९ B मिलिंतिया. १० BP यंतिया. ११ B दंतिया. १२ AP खुद्दचाविरी. १३ P °कैंकरी. १४ B वक्किया°. १५ B णाय. १६ A सो पराइओ. १७ AS गयण°.

11 0 घडंतइं पतन्ति. २ विहिलुक्कइं विधात्रा छेदितानि. 5 *b* झिंदुए कन्दुके क्रीडारतः. 6 *a* महारवा महाशब्दा खरी. 11 *b* घाउ प्रहारम्. 12 *b* जायवेसिणा यादवेशेन. 14 *a* मेहसंगहे मेघानां संग्रहो यत्र आकाशे. 15 *a* चाविरी चर्वणशीला. 18 *b* तुरउ अश्वः. 19 *a* गहिरहिंसिरो गम्भीरहेषारवयुक्तः. 25 *a* छुहिवि क्षिप्त्वा बाहुमध्ये.

मोडिओ गलो पत्तपच्छलो ।
रणि हओ हओ णिग्गओ गओ ।
घत्ता—ता जसोय भणिय णइपुलिणंइ पाणियहारिहिं ॥
णंदणु करहिं जियइ आयउ तुम्हारिसणारिहिं ॥ ११ ॥

12

दुवई—मरुहयमहिरुहेहिं पहि धाविउ गहइ तुरय चूरिओ ॥
अवरु उदूहलम्मि पइं बद्धउ जाणइं बालु मारिओ ॥ ध्रु ॥
धाइयं तासु जसोय विसंठुलें करयलजुयलपिहियथलथणंयल ।
बद्धउ उक्खलु मेल्लिवि घल्लिउ महु जीवियएणं जियहि सिसु बोल्लिउ ।
फणिणरसुरहं मि अइअइसइयउ हरि मुहि चुंबिवि कडियलि लइयउ । 5
किं खरेण किं तुरएं वट्टउ मायइ सयलु अंगु परिमट्ठउं ।
अण्णहिं दिणि रच्छहि कीलंतहु बालहु बालकील दरिसंतहु ।
दुट्ठु अरिट्ठदेउ विसवेसें आइउ महुराबइआएसें ।
सिंगजुयलसंचालियगिरिसिलु खरखुरग्गउक्खयधरणीयलु ।
खरखरवेल्लिजालविलुलियगलु कमणिवायकंपावियजलथलु । 10
गज्जियरवपूरियभुवणंतरु हरवरवसहणिवहकयभयजरु ।
ससहरकिरणणियरपंडुरयरु गुरुकेलाससिहरसोहाहरु ।
फिर झड णिविडें देइ आवेप्पिणु ता कण्हें भुयदंडें लेप्पिणु ।
मोडिउ कंठु कउ सि विसिंदहु को पडिमल्लु तिजगि गोविंदहु ।
घत्ता—ओहामियधवलु हरि गोउलि धवलेंहिं गिज्जइ ॥ 15
धवलाण वि धवलु कुलधवलु केण ण थुणिज्जइ ॥ १२ ॥

१८ B °पुलणए.

12 १ B Als. उदूखलम्मि; P उदूखलम्मि. २ B धाविय. ३ A ताम; B तासु. ४ B विसंठुलु; P विसंथुल; S दुसंथुल. ५ B °जुवल°. ६ B °थणयलु. ७ S ओक्खलु. ८ P मलेवि. ९ BP जीएण. १० A हरिमुहु चुंबिवि. ११ AP बालकील. १२ PS आयउ. १३ AP °संचालियथिरसिल. १४ A °खुरग्गाखयधरधरणीयलु. १५ A गज्जणरव°. १६ A हयवर°. १७ P पुरु केलास°; BAls. गिरिकेलास°. १८ S °सिहरि°. १९ B सोहावरु. २० P णिवड. २१ PS °दंडहिं. २२ A कंधु. २३ P हरे. २४ B गोउल°. २५ B धवलिहिं.

26 *b* पत्तपच्छलो प्राप्तपश्चाद्भागः पूर्वं, पश्चाद्गलो मोटितः. 28 णइपुलिणइ नदीतटे; पाणियहारिहिं पानीयहारिणीभिः स्त्रीभिः.

12 1 मरुहयमहिरुहेहिं वायुताडितवृक्षैः. 4 *b* महु जीवियएण मम जीवितेनापि त्वं जीव दीर्घकालम्. 6 *a* तुरएं अश्वेन. 8 *a* अरिट्ठदेउ अरिष्टनामा राक्षसः; विसवेसें वृषभवेषेण; *b* महुराबइ° कंसः. 10 *b* कमणिवाय° चरणनिपातेन. 11 *b* हरवरवसह° रुद्रस्य वृषभः. 12 *b* गुरु° गरिष्ठः. 14 *a* विसिंदहु वृषभप्रधानस्य. 15 ओहामियधवलु तिरस्कृतवृषभः; धवलहिं धवलगीतैः.

13

दुवई—ता कलयलु सुणंति गोवालहं पणयजलोहवाहिणी ॥
सुयविलसिउ मुणंति णिज्झाय णियगेहहु णंदगेहिणी ॥ छ ॥

भणइ जणणि ण वुआलिहि धायउ पुत्तु ण रक्खसु कुच्छिहि आयउ ।
किह बलहु मोडिउ ओत्थरियउ दइववसें सिसु सइं उव्वरियउ ।
हरिखरवसहहिं सहुं सुउ जुज्झइ जणु जोवइ महु हियवउं डज्झइ । 5
केसिउं मइं कुमार संतावहि आउ जाहुं घरु बोल्लिउं भावहि ।
तेयवंतु तुहुं पुत्त णिरुत्तउ रक्खहि अप्पाणउं करि बुत्तउं ।
परमहि भडकोडिहि आरूढउ बाहुबलेण बालु जणि रूढउ ।
महुरापुरि घरि घरि वण्णिज्जइ णंदगोट्ठि पत्थिवहु कहिज्जइ ।
तहु देवइमायरि उक्कंठिय पुत्तसिणेहें कणु वि ण संठिय । 10
गोमुहकूवउ सहउ वउत्थी कोयहु मिसु मंडिवि वीसत्थी ।
चलिय णंदगोउलि सहुं णाहें सहुं रोहिणिसुएण चंदाहें ।

घत्ता—मायइ महुमहणु बहुगोवहं माज्झि णिरिक्खिउ ॥
बयपरिवेढियउ कलहंसु जेम ओलक्खिउ ॥ १३ ॥

14

दुवई—हरि भुयजुवलदलियदाणवबलु णवजोव्वणविराइओ ॥
उग्गयपउरपुलय पडहच्छें वसुएवेण जोइओ ॥ छ ॥

भायरु सिसुकीलारयरंगिउ हलहरेण विट्ठिइ आलिंगिउ ।
भुयजुयलउं पसरंतु णिरुद्धउं जायउं हरिसें अंगु सिणिद्धउं ।

---

13 १ A जणणि आलिहि णो धायउ. २ P वल्लु; S वलट्टु. ३ P मोडिय उत्थ°. ४ PS हयखर°. ५ AS जोयइ; P जोयउ. ६ B जाहं घरि. ७ ABP add after 8 *b*: कंसु ण जाणइ किं मणि मूढउ; K gives it but scores it off; BP add further जयसिरिमाणणु (B माणणि) जायउ पोढउ. ८ S पुत्तसणेहें. ९ AP कहं मिण संठिय. १० P गोमुहुं कु वि बउ; S गोमुहु कूवउ. ११ APS गोउल्लु.

14 १ PS °भुयल°. २ P °जोवण°. ३ P बसुदेवेण. ४ APS °रइरंगिउ.

---

13 2 मुणंति ज्ञातवती. 3 *b* पुत्तु इत्यादि मम गर्भे त्वं राक्षस एवोत्पन्नः. 4 *a* ओत्थरियउ क्रुद्धा आगतः. 6 *b* जाहुं गच्छावः; भावहि चेतसि आनय. 8 *a* परमहि भडकोडिहि भटकोटयाः परमप्रकर्षे. 11 *a* गोमुहकूवउ सर्वतीर्थमयो गोमुखकूपः, गोमुखकूपं किमपि मिथ्याव्रतम्; सहउ सहताम्; वउत्थी उपोषिता. 12 *b* चंदाहें चन्द्राभेन. 14 बयपरिवेढियउ बकपरिवेष्टितः.

14 2 पडहच्छें शीघ्रम्. 3 *a* °रयरंगिउ रजोम्रक्षितः.

खित्तिवि तेण कंसपेसुण्णउं आलिंगणु देंतेण व दिण्णउं । 5
गाढसिणेहवसेण णवंतइ आणाविय रसोइ गुणवंतइ ।
गंधफुल्लदीवेंड संजोइउ भोयणु मिट्ठउं मायइ ढोइउं ।
अल्लयदलदहिओल्लियकूरहिं मंडयपूरणेहिं घियपूरहिं ।
णाणाभक्खविसेसहिं जुत्तउं सरसु भाविभूणाहें भुत्तउं ।
सिरि णिबद्धवेल्लीदलमालइं कंचणवंड दिण्ण गोवालइं । 10
सुण्हइं मउवेवंगइं वत्थइं भूसणाइं मणिकिरणपसत्थइं ।
पुणु जणणिइ तिपयाहिण देंतिइ तणयहु उप्परि खीरु सवंतिइ ।

घत्ता – पोरिसरयणणिहि गुणगणविब्भाविय वासेउ ॥
कुलहरलच्छियइ णं सइं अहिसित्तउ केसउ ॥ १४ ॥

15

दुवई—दीसइ णंदणंदु णारायणु जणणीदुद्धसित्तओ ॥
णाइं तमालणीलु णवजलहरु ससहरकरविलित्तओ ॥ छ ॥

कामधेणु णं सइं अवइण्णी गलियथण्णथणि जणणि णिसण्णी ।
जाव ण पिसुणु को वि उवलक्खइ ता तहिं संकरिसणु सइं अक्खइ ।
सुललियंगि भुक्खासमरीणी उववासेण पमुच्छिय राणी । 5
तेणिय भणिवि भुयहिं समत्थिउ दुद्धकलसु देविहि पल्हत्थिउ ।
हरि जोइवि णीवंतहिं णयणहिं मणि आणंदु पणच्छिउ सयणहिं ।
सबलाहणमिसेण संफासिवि आउच्छणमिसेण संभासिवि ।
भोयणाइं ढोइवि संतोसहु गयइं ताइं महुराउरिवासहु ।

५ B कंसु. ६ P णमंतइं. ७ P °दीवय°; S दीवइ. ८ A मंडिय°. ९ ABS घियऊरहिं. १० A भाऊभूणाहें; BK भाइभूणाहे. ११ B सुम्हइं; PS सण्हइं. १२ P उप्परे. १३ B खीर. १४ S °विम्हाविय°. १५ S वासउ. १६ S केसउ.

15 १ B णंदु णंदु. २ B णामि. ३ B °थण्णथलि. ४ B ओलक्खइ. ५ A तिं इय भणेवि; P तें इय भणेवि. ६ BAls. समुत्थिउ. ७ A omits this line. ८ BS जोयवि. ९ A omits 8 *a*. १० A भोयणाइं. ११ P ढोयवि.

6 *a* णवंतइ नतया मात्रा. 8 *a* अल्लयदल° पत्रभाजनम्; °दहिओल्लिय° दधिमिश्रैः. 9 *b* भाविभूणाहें भविष्यद्भूनाथेन. 11 *a* सुण्हइं सूक्ष्माणि.

15 1 णंदणंदु नन्दस्य आनन्दः. 3 *b* गलियथण्णथणि गलितस्तन्यस्तनी. 5 *a* भुक्खासमरीणी क्षुधाश्रमश्रान्ता. 6 *a* तेणिय भणिवि तेन सीरिणा इय इदं भणित्वा; *b* समत्थिउ उद्धृतः उच्चलितः; *b* देविहि देवक्युपरि. 7 *a* णीवंतहिं णयणहिं आप्यायमानैः शीतीभवद्भिर्नेत्रैः; *b* सयणहिं स्वजनेषु मनसि. 8 *a* सबलाहणमिसेण विलेपनच्छद्मना; *b* आउच्छण° वयं गच्छामः इति पृच्छा.

काले अंते छज्जइ पत्तउ आसाढागमि वासारत्तउ । 10

घत्ता—हरियउं पीयलउं दीसइ जणेणं तं सुरधणु ॥
उवरि पओहरहं णं णहलच्छिहि उप्परियणु ॥ १५ ॥

16

दुवई—दिट्ठउं इंदचाउ पुणु पुणु मेइं पंथियहिययमेयहो ॥
घणवारणपवेसि णं मंगलतोरणु णहणिकेयहो ॥ छ ॥

जलु गलइ झलझलइ ।
दरि भरइ सरि सरइ ।
तडयडइ तडि पडइ । 5
गिरि फुडइ सिहि णडइ ।
मरु चलइ तरु घुलइ ।
जलु थलु वि गोउलु वि ।
णिरु रसिउ भयतसिउ ।
थरहरइ किर मरइ । 10
जा ताव थिरभाव- ।
धीरेण वीरेण ।
सरलच्छि- जयलच्छि- ।
तण्हेण कण्हेण ।
सुरथुइण भुयजुइण । 15
वित्थरिउ उद्धरिउ ।
महिहरउ दिहियरउ ।
समजडिउं पायडिउं ।
महिविवरु फणिणियरु ।
फुप्फुवइ विसु मुयइ । 20
परिघुलइ चलवलइ ।
तरुणाइं हरिणाइं ।

१२ APS जणेण सुरवरधणु.

16 १ AP अइपंथिय°. २ S घरु वारण°. ३ A तडयलइ. ४ P दिहिहरउ. ५ AB पुप्फुवइ; PS पुप्फुयइ.

10 *a* छज्जइ शोभते वर्षर्तुः प्राप्तः. 11 तं सुरधणु तत् इन्द्रधनुः. 12 पओहरहं मेघानाम्.

16 1 °मेयहो भेदकस्य. 2 घणवारण° मेघ एव गजः; णहणिकेयहो नभोगृहस्य. 6 *b* सिहि मयूरः. 9 *a* रसिउ आरटितः. 13 *a-b* सरलच्छिजयलच्छि° सरलाक्षी जयलक्ष्मीः. 16 *a* वित्थरिउ विस्तृतः. 17 *b* दिहियरउ धृतिकरः.

तडुाइं जडुाइं ।
कायरइं वणयरइं ।
पंडियाइं रडियाइं । 25
चिंताइं चत्ताइं ।
हिंताल- चंडाल- ।
चंडाइं कंडाइं ।
तावसइं परवसइं ।
दरियाइं जरियाइं । 30

घत्ता—गोवद्धणपरेण गोगोमिणिभाउ व जोइउ ॥
गिरि गोवद्धणउ गोवद्धणेण उच्चाइउ ॥ १६ ॥

17

दुवई—ता सुरखेयरेहिं दामोयरु वासारत्तरक्खणो ॥
गोवद्धणु भणेवि हक्कारिउ कयगोजूहवद्धणो ॥ छ ॥

कण्हें बाहुदंडपरियरियउ गिरि छत्तु व उच्चाइवि धरियउ ।
जलि पवहंतु जंतु ण उवेक्खिउ धारावरिसे गोउलु रक्खिउं ।
परउवयारि सजीविउ देंतहं दीणुद्धरणु विहूसणु संतहं । 5
पविमल कित्ति भमिय महिमंडलि हरिगुणकह हुई आहंडलि ।
कालि गलंतइ कंतिइ अहियइं कलिमलपंकपडलपविरहियइं ।
महुरापुरवरि अमरहिं महियइं अरहंतालइ रयणइं णिहियइं ।
तिण्णि ताइं तेलोक्कपसिद्धइं रवटंकारदेहसुहणिद्धइं ।
तं रयणत्तउं कहिं मि णिरिक्खिउं पुच्छिउ कंसें वरुणें अक्खिउं । 10
णायामिज्जइ विसहररयणें जो जलयरु आऊरइ वयणें ।
जो सारंगकोडि गुणु पावइ सो तुज्झु वि जमपुरि पहु दावइ ।

६ B बडियाइं. ७ AP रत्ताइं. ८ A रडियाइं. ९ A गोवद्धणवरेण; P गोवद्धणयरेण. १० A उच्चायउ; S उच्चारउ.

17 १ S दामोयर. २ B वासारत्तु. ३ S परियरिउ. ४ A उपेक्खिउ; BP उवक्खिउ. ५ P °वरिसहो; Als. वरिसें against Mss. ६ A णहमंडलि. ७ S हुई. ८ AP °परिरहियइं. ९ S रयणत्तिउं. १० BS गुण. ११ P °पुरे.

26 *a* चित्ताइं क्षिप्तानि. 30 *a* दरियाइं भयं प्राप्तानि; *b* जरियाइं ज्वरसंतापः. 31 गोवद्धणपरेण वेणुवृद्धिकरेण; गोगोमिणि° भूः लक्ष्मीश्च.

17 4 *a* उवेक्खिउ निराहृतम्. 7 *a* कंतिइ अहियइं कान्त्या अधिकानि. 8 *b* अरहंतालइ जिनमन्दिरे. 9 *b* रव° शंखः; °टंकार° धनुः; °देहसुह° नागशय्या. 10 *b* वरुणें नैमित्तिकेन विप्रेण. 11 *a* णायामिज्जइ न दुःखीक्रियते; *b* जलयरु शंखः. 12 *a* सारंगकोडि गुणु पावइ धनुश्चटापयति.

घत्ता—उग्गसेणसुयणु विहुरंधरासि तारिव्वउ ॥
तेण णराहिवइ जरसिंधु समरि मारिव्वउं ॥ १७ ॥

18

दुवई—पत्तिय कंस कुसलु णउ पेक्खमि पत्ता मरणवासरा ॥
पूयण वियडसयडजमलज्जुणतलखरदुहियहयवरा ॥ छ ॥

जित्तो जेण णंदगोवालें पडिभडमंथणदप्पुत्तालें ।
जाउहाणु पसु भणिवि ण मारिउ जेण अरिट्ठवसहु ओसारिउ ।
फुल्लकंडंबविडविदिण्णाउसि सत्त दियह वरिसंतइ पाउसि । 5
गिरि गोवद्धणु जें उच्चाइउ सो जाणमि तुम्हारउ दाइउ ।
जीविउं सहुं रज्जेण हरेसइ दइवहु पोरिसु काइं करेसइ ।
तं णिसुणिवि णियबुद्धिसहाएं पुट्ठि डिंडिमु देवाविउ राएं ।
जो फणिसयणि सुयइ धणु णावइ संखु ससासें पूरिवि दावइ ।
तहु पहु देइ देसु दुहियइ सहुं तो धाइयउ णिवहु सइं महुं महुं । 10

घत्ता—दसदिसु वत्त गय मंडलिय असेस समागय ॥
णं गणियारिकए दीहरकर मयमत्ता गय ॥ १८ ॥

19

दुवई—भाणु सुभाणु णाम विसकंधर वरजरसिंधणंदणा ॥
संपत्ता तुरंत जउणायडि थिय कंचियसंदणा ॥ छ ॥

अरिकरिदंतमुसलहय कलुसिय जइ वि तो वि अरविंदहिं वियसिय ।

१२ ABPS विहुरंबुरासि. १३ PS जरसेंधु. १४ S मारेवउ.

18 १ AP °ज्जुणतरुखर°. २ B जित्तउ. ३ A °कयंब°; P °कदंब°. ४ B पावसि. ५ AP जेणुच्चायउ. ६ S जाणंवि. ७ P पट्ठो. ८ A देसु देइ. ९ B दुहिए. १० BAls. ता धाइय णिव होसइ महुं महुं. ११ S समागया. १२ P दीहरयर. १३ AP मयमत्त. १४ S गया.

19 १ PS °जरसेंध°. २ AP जउणातडे. ३ A संचिय°.

13 विहुरंधरासि दुःखान्धकारश्रेणिः.

18 1 पत्तिय प्रतीतिं कुरु. २ °जमलज्जुण° सादडीवृक्षयुग्मम्; °तल° ताडवृक्षः; °खरदुहिय° गर्दभी. 4 *a* जाउहाणु राक्षसोऽरिष्टः. 5 *a* °कडंबविडवि° कदम्बवृक्षः. 9 *a* णावइ नामयति. 10 *a* दुहियइ सहुं पुत्र्या सह; *b* णिवहु नृपाणां निवहः समूहः मम मम इति भणन्, मे सर्वं भविष्यतीति वाञ्छया. 12 गणियारिकए हस्तिन्याः कृते.

19 1 भाणु सुभाणु भानोः पुत्रः सुभानुः; विसकंधर वृषभस्कन्धौ. 2 जउणायडि यमुनातटे; °संदणा रथाः.

कोंली कंतिइ जइ वि सुहावइ तो वि तंब अणयुसियें भावइ ।
जइ वि तरंगहिं चवलहिं वज्जइ तो वि तुरंगहं सा ण पहुज्जइ । 5
जइ वि तीरि वेल्लीहर दावइ तो वि ण दूसइं संपय पावइ ।
पवित्रउलु दिट्ठउं सिविरें पमुक्कउं गोवबिंदु सागंदु पदुक्कउ ।
तणकयवलयविहूसियथिरकरु वणकणियारिकुसुमरयपिंजरु ।
ससुसिरवेणुलइमोहियजणु काणणधरणिधाउमंडियतणु ।
कूरणिबंधणवेढियकंदलु कंदलदलपोसियमहिसीउलु । 10
घत्ता—गुंजाहलजडियदंडयविहत्थु संवल्लिउ ॥
महिवइतणुरुहेण आसण्णु पढुक्कउ बोल्लिउ ॥ १९ ॥

20

दुवई—भो आया किमत्थु किं जोयइ दीसइ पवर दुज्जया ॥
पभणइ णंदपुत्तु के तुम्हइं कहिं गंतुं समुज्जया ॥ छ ॥
अम्हइं णंदगोव फुडु वुत्तउं आया पुच्छहुं भणहुं णिरुत्तउं ।
भणइ सुभाणु जणणु अम्हारउ अद्धमहीसरु रिउसंघारउ ।
वढ आएसहुं महुरापट्टणु संखाऊरणु फणिदलवट्टणु । 5
तहिं विरयवि सरासणचप्पणु कण्णारयणु लएसहुं घणथणु ।
पुलयवसेणुग्गयरोमंचुय तं णिसुणिवि जोयंतें णियभुय ।
हउं मि जामि गोविंदें भासिउं करमि तिविहु जं पइं णिद्देसिउं ।
तरुणि ण लहमि लहमि विहि जाणइ हालिउ किं णूपधीयउ माणइ ।
तं णिसुणेप्पिणु बालें बालउ जोयउं कंतिहु अयसु व कालउ । 10
घत्ता—माहवपयजुयलु उद्दिट्ठुं सुभाणुं रत्तउं ॥
दिसकरिकुंभयलु सिंदूरें णावइ छित्तउं ॥ २० ॥

४ B कालिए. ५ S चवल पवत्थइ. ६ APS तीरवेल्ली°. ७ AP सिमिरु ८ B गोववंदु. ९ A वरकणियार°; BP वणकणियार°. १० B दंडहत्थु.

20 १ AP परमवुज्जया. २ B भणहि; P भणइं. ३ S संखाओरणु. ४ S फणिदलु. ५ A सरासणकप्पणु. ६ AP णियंतें. ७ S जांवि. ८ ABP णिवधूयउ. ९ APS जोइउ. १० A कंतिहि अजसु. ११ AP °जुवलु. १२ P ओदिट्ठु. १३ A लित्तउ.

4 *a* सुहावइ शोभते; *b* तंब ताम्रा रक्ता. 6 *b* दूसइं संपय वस्त्राणां शोभाम् 8 *a* तणकय° तृणकृतम्; *b* °कणियारि° कर्णिकारवृक्षः. 9 *a* ससुसिर° सच्छिद्रः; *b* °धाउ° गैरिकादिः. 10 *a* कूर° ईषत्; °कंदलु मस्तकम्; *b* कंदलदल° वल्लीपत्रैः. 12 महिवइतणुरुहेण चक्रिपुत्रेण.

20 2 समुज्जया समुद्यताः. 5 *a* वढ मूर्ख. 6 *b* लएसहुं ग्रहीष्यामः. 8 *b* तिविहु त्रिविधं कार्यम्. 9 *a* विहि जाणइ कन्यां लभे न वा लभे इति विधिरेव जानाति; *b* हालिउ कर्षको गोपः. 10 *a* बालें चक्रि (जरासंध) पुत्रेण; बालउ कृष्णः; *b* अयसु अपकीर्तिः, 11 सुभाणुं सुभानुना. 12 छित्तउं स्पृष्टम्.

21

दुवई—दप्पणसंणिहाइं रुइवंतइं विरइयचंदहासइं ॥
णक्खइं वसुह णाइं मुहपंकयपविलोयणविलासइं ॥ छ ॥

जंघउ पुणु लक्खणहिं समग्गउ वारणआरोहणकिंजोग्गउ।
ऊरुउ वसुलोहग्गपविसिउ तियमणकंडुयखुलणधारिसिउ।
मयणगिरिंदणियंबु व कडियलु सोहइ जुवयहु जइ वि अमेहलु। 5
मज्झपएसु किसु पिसुणपहुत्तें णाहि गहीर हिययगहिरत्तें।
वलिरेहंकिउ उयरु सुपत्तलु विरहिणिपणइणिसरणु व उरयलु।
दीह बाहु पालियणियवक्खहं कालसप्पु णावइ पडिवक्खहं।
हारेण वि विणु कंठु वि रेहइ पइबंधु भालयलु समीहइ।
मुहुं सुहमुहुं जममुहुं पडिवण्णउं सज्जणदुज्जणाहं अवइण्णउं। 10
कण्णजुयलु कयकमलहिं सोहिउं णं लच्छीइ सविंधु पसाहिउं।
केस कुडिल सुहुइं मंता इव मइ परमणहारिणि कंता इव।

घत्ता—तें तहु माहवहु जो जो पएसु अवलोइउ ॥
सो सो तहु जि समु उवमाणविसेसु पढोइउ ॥ २१ ॥

22

दुवई—चिंतइ सो सुभाणु सामण्णु ण एहु अहो महाभडो ॥
णिज्जउ णयरु करउं तं साहसु रमणीरमणलंपडो ॥ छ ॥

अग्गि व अंबरेण ढंकेप्पिणु गय ते तं पुरु कण्हु लएप्पिणु।
जिणघरसुरदिसि जक्खीमंदिरि तहिं मिलियइ णरणियरि णिरंतरि।

---

21 १ AP वसुहणाइमुह; Als. वसुहणारिमुह° against Mss. and against gloss.. २ P समग्घउं. ३ B किं ण. ४ B °कंडुव°; P °कंडुय°. ५ S अमेलहु. ६ B मज्झयेसु. ७ B णाही गहिर. ८ B मुहु मुहु मुह; P मुहुं सुहुं मुहुं; K महु सुहमुहुं. ९ PS °जुयलु. १० P पवेसु. ११ B उवमाणु. १२ A अढोइउ; P व ढोइउ.

22 १ P णिज्जइ. २ P करइ. ३ APS णरणियर°.

---

21 1 रुइवंतइं कान्तियुक्तानि; विरइयचंदहासइं चन्द्रतिरस्कारकाणि. 2 वसुह पृथिव्याः; मुहपंकयपविलोयणविलासइं मुखकमलप्रविलोकने आदर्शाः इव. 3 *b* °किण° मांसग्रन्थिः. 4 *b* तियमण° स्त्रीचित्तम्. 5 *b* अमेहलु मेखलारहितम्. 6 *a* पिसुणपहुत्तें कंसस्य प्रभुत्वचिन्तया; *b* हिययगहिरत्तें हृदयगम्भीरत्वेन. 8 *a* °णियवक्खहं निजपक्षाणाम्. 10 *a* मुहुं इत्यादि मुखं सज्जनानां सुखमुखं शुभमुखं वा, शत्रूणां यममुखप्रायम्. 11 *a* कयकमलहिं कृतैः धृतैरवतंसितैः कमलैः. 12 *b* मइ मतिः. 14 सो सो इत्यादि उपमानं उपमेयं च सदृशमेव, तादृशमन्यस्य नास्ति.

22 2 णिज्जउ नीयताम्. 3 *a* अंबरेण वस्त्रेण; ढंकेप्पिणु झंपित्वा.

बिट्ठी जायसेज विट्ठउं घणु   विट्ठउ पंचयण्णु गुरुणीसणु ।   5
गोविंदें भयवंत सुणुम्मइ   विट्ठ चडंत पुरिस णाणाविह ।
पाडिय भुयंगमजंतें पीडिय   फेणताडिय अच्छोडिय मोडिय ।
ता हरिणा फणि तणु व वियप्पिउ   कुप्परकरकडियेलें चप्पिउ ।
लइउ संखु णं असलरुक्खफलु   उरसरि तासु अहिहि णं सयदलु ।
दीसइ धवलु दीहु णं मउलिउं   णावइ कालिंदीद्रहि विलुलिउं ।   10
अरिवरकित्तिवेल्लिकंदो इव   करराहुं धरियउ चंदो इव ।
मुहणीलुप्पलि हंसु व सारिउ   केसवेण कंबुउ आऊरिउ ।
पेच्छालुयमाणवउलु पुलइउं   पायंगुट्ठएण धणु वलइउं ।
घत्ता—एक्कु ण चाउ जगि अण्णु वि णयमग्गें आयउं ॥
गुणणवणें लहइ सुविसुद्धवंसि जो जायउ ॥ २२ ॥   15

23

दुवई— विसहरसंयणरावजीयारवजलरुहरवपऊरियं ॥
भुवणंससरि सदरिगिरिवलयमहो णिहिलं पि जूरियं ॥ छ ॥
विहडियफुडियपडियघरपंतिहिं   मुडियालाणखंभगयदंतिहिं ।
खरखुरहणणखणियमणुयंगहिं   चउदिसिवहि णासंततुरंगहिं ।
कण्णदिण्णकरणरहिं मरंतहिं   हा हा पउं काइं पलवंतहिं ।   5
पउरहिं महिमंडलि घोलंतहिं   धावंतहिं कंदंतकणंतहिं ।
हल्लोहलिउ णयरु ता पेक्कें   कंसहु वत्त कहिय पाइक्कें ।
पूरिउ संखु जलहिगंजणसरु   परमारणउ मयंदभयंकरु ।
अहि अक्कंतउ चाउ चडाविउं   पट्टणु तेण णिणाएं ताविउं ।

४ A मयवंति. ५ AP फडताडिय; K फणिताडिय. ६ P अच्छोड्डिय. ७ AP कोप्परकरकडियलसंचप्पिउ; S कोप्पर°. ८ AP कालिंदिदहि. ९ AP किर राहु व. १० PS धरिउ. ११ A कंटउ ओसारिउ. १२ B पिच्छालुव°. १३ A मागव अवलोइउ.

23 १ A °सयणचाव. २ AP °जलहररवपूरियं; B °जलरुहरावऊरियं. ३ BP चउदिसु. ४ P डरंतहिं. ५ AP एक्कहिं. ६ AP पाइक्कहिं. ७ ABPS °गज्जण°. ८ AP पईहु मयंकरु; BS मयंधु भयंकरु; Als. मयंधभयंकरु.

5 *b* पंचयण्णु शंखः; गुरुणीसणु महाशब्दः. 7 *a* भुयंगमजंतें सर्पयन्त्रेण; *b* अच्छोडिय आस्फालिताः. 9 *b* तासु तस्य हरेर्हृदयतडागे शंखः स्थितः; क इव ? अहेः वप्रस्य मध्ये कमलमिव. 10 *b* °द्रहि ह्रदे. 11 *b* करराहुं हस्तराहुणा. 12 *a* सारिउ स्थापितः. 13 *a* पेच्छालुय° प्रेक्षकाः.

23 1 °सयणराव° शय्याशब्दः; °पऊरियं प्रपूरितम्. 4 *a* °खणिय° खनितानि. 5 *a* कण्णदिण्णकर° रौद्रशब्दत्वात् कर्णौ कराभ्यां झम्पितौ. 6 *a* पउरहिं पौरैः. 8 *a* °गंजण° तिरस्कृतः; *b* मयंदभयंकरु सिंहवद्भयानकः. 9 *a* अक्कंतउ आक्रान्तः.

कालएण कालु व आहइवें अपरिसिड्ढेण सुभाणुहि भिंवें । 10

घत्ता—णिसुणिवि तं वयणु जीवंजसवइ तहु अक्खइ ॥
वइरिउ लद्ध मइं एवहिं मारमि को रक्खइ ॥ २३ ॥

24

दुवई—इय पभणंतु लेंतु करवालु ससेण्णु सरोसु णिग्गओ ॥
ता रोहिणिसुएण अवलोइउ भायरु जियदिग्गओ ॥ छ ॥

फणदलि देहणालि फणिपंकइ अच्छइ भायरु मुक्कउ संकइ ।
संखें णं चंदेण पयासिउ सावणमेहु व वलएं भूसिउ ।
सो संकरिसणेण संभासिउ तुहुं दुव्वासणाइ किं वासिउ । 5
किं आओ सि एउं किं रइयउं गोउलु तेरउं मिलहिं लइयउं ।
णियसुहडत्तेयपरियारियउ तं णिसुणिवि पुराउ णीसरियउ ।
वसहविंदढेक्काविसट्टहि लग्गउ गोवउ गोउलवट्टहि ।
अवरहिं गंपि पहेण तुरंतहिं कंपियदेहएहिं सयभंतिहिं ।
सुयवित्तंतु पिउहि समईरिउ चंपिउ चाउ संखु आऊरिउ । 10
विसहरवरसयणयलु णिसुंभिउं तं आयण्णिवि पुत्तवियंभिउं ।
णट्ठउ कहिं मि रायभयतासिउं गोउलु अण्णत्तहिं आवासिउं ।
घरु आयउ रोमंचियगत्तइ अवरुंडिउ हरिसंसुयणेत्तइ ।

घत्ता—मायइ भणिउ हरि णउ मुक्कउ पुत्तु दुवालिइ ॥
पत्थिवसयणयलि किह चडियउ डिंभयकेलिइ ॥ २४ ॥ 15

९ P कालुएण कालुय. १० A अविसिद्वेण.

24 १ B एम भणंतु.; S इय भणंतु. २ B ससेणु. ३ AP भमरु व. ४ AP °मेहु व चावें भूसिउ. ५ P आयो सि. ६ B सुहडत्तु. ७ ABS वसहवंद°. ८ B °विसट्टहि. ९ A भयवंतहिं; BK सयभंतिहिं and gloss in K उत्पन्नशतसंदेहैः; PS सयभंतहिं; Als. भयभंतहिं against Mss. १० AP चप्पिउ. ११ S आओरिउ. १२ A °गत्तउ. १३ A हरिअंसुव°; P हरि अंसुय°. १४ A °णेत्तउ. १५ P दुयालिए. १६ AP कह.

10 *a* कालएण कृष्णवर्णेन; आहइवें आघातकेन. 11 तहु भृत्यस्य.

24 2 जियदिग्गओ जितदिग्गजेन्द्रः. 3 *a* फणदलि फणा एव पत्रं, शरीरमेव नालं, सर्प एव कमलं तत्र. 4 *b* वलएं धनुर्वलयेन. 8 *b* °विसट्टहि °समूहायाम्; *b* °वट्टहि मार्गे. 9 *a* अवरहिं अन्यगोपैः; *b* सयभंतिहिं किं भविष्यतीति उत्पन्नशतसंदेहैः. 12 *a* णट्ठउ नष्टो नन्दगोपः; °तासिउ त्रासितः. 15 पत्थिव° पार्थिवो राजा.

25

दुवई—णंदें णंदणिज्जु णियणंदणु ससेणेहें णिहालिओ ॥
पाहुणयाइं जाहुं सुयबंधुहुं इय वज्जरिवि चालिओ ॥ छ ॥

तावग्गइ पारद्धु णिहेलणु तेहिं मि परिट्ठिउ माहिवइरक्खणु ।
मिलिय जुवाण अणेय महाबल पायपहरकंपावियमहियल ।
को वि ण संचालइ जे थामें ते महुमहणें जयसिरिकामें । 5
उच्चाइवि सुरकरिकरचंडहिं पत्थरखंभ णिहियभुयदंडहिं ।
अरिवरपराणियरें परियाणिउ णंदगोउ लहु जणणिइ णीणिउ ।
आउ जाहुं हो पुत्त पहुच्चइ गोउलु सुण्णउं सुइरु ण मुच्चइ ।
एव भणेप्पिणु कण्हपयावें परिमुक्काइं ताइं भयभावें ।
मलवज्जिइ महिदेसि समाणइ पुणरवि तेत्थु जि ठाणि चिराणइ । 10
आणिवि गोविंदु वि गोविंदु वि थियइं ताइं दइउ जि अहिणंदिवि ।
घत्ता—सुपसिद्धउ भरहि सो णंदगोट्ठु गुणराहहिं ॥
पुप्फयंतसमहिं वण्णिज्जइ वरणरणाहहिं ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णारायणबालकीलावण्णणं णाम पंचासीमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८५ ॥

---

25 १ AP वंदणिज. २ B ससिणेहें. ३ A महिवइ तहिं मि परिट्ठिउ रक्खणु. ४ A महाभड. ५ A °णहयल. ६ AP संचालइ णियथामें. ७ B °थंभ°. ८ A पइं मुक्काइं. ९ B महिदेस°. १० A देउ जि; BS दइउ जि. ११ B णंदगोट्ठु; P णंदगोउ; S णंदगोत्तु; Als. णंदगोउ. 13 P पुप्पदंत°. १४ A बालकीडा °. १५ S पंचासीतितमो.

---

25 1 णंदणिज्जु वर्धमानः. 2 पाहुणयाइं प्राघूर्णका वयं गच्छामः. 3 *a* णिहेलणु मार्गमध्ये आवासः. 5 *a* ते पाषाणस्तम्भाः. 7 *b* णीणिउ प्रेरितः. 10 *a* समाणइ उच्चनीचरहिते; *b* चिराणइ पूर्वस्मिन्निजस्थाने. 11 *a* गोविंदु हरिः; गोविंदु गोसमूहः; *b* दइउ दैवम्. 12 णंदगोट्ठु गोकुलम्; °राहहिं शोभायुक्तैः.

LXXXVI

वहरि जसोयहि पुत्तु इय कंसें मणि परिछिण्णउ ॥
कमलाहरणु रउद्दु तें णंदहु पेसणु दिण्णउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

सिहिचुरुलिभूउ गउ रायदूउ ।
तें भणिउ णंदु मा होहि मंदु ।
जहिं गरलमइहि णिवसइ महाहि । 5
जउणासरंतु तं तुहुं तुरंतु ।
जायेवि जवेण कयजणरवेण ।
आणहि वराइं इंदीवराइं ।
ता णंदु कणइ सिरकमलु धुणइ ।
जहिं दीणसरणु तहिं ढुक्क मरणु । 10
जहिं राउ हणइ अण्णाउ कुणइ ।
किं धरइ अण्णु तहिं विगयगण्णु ।
हउं काइं करमि लइ जामि मरमि ।
फणि ख़ुद्दु चंडु तं कमलसंडु ।
को करिण छिवइ को झंपें चिवइ । 15
धगधगधगंति हुयवहि जलंति ।
उप्पण्णसोय कंदइ जसोय ।
महु एक्कु पुत्तु अहिमुहि णिहित्तु ।
मा मरउ बालु मइं गिलउ कालु ।
इय जा तसंति दीहरें ससंति । 20
पियरइं रसंति ता विहियसंति ।
अलिकायकंति रणि धीरु मंति ।
पभणइ उविंदु णिहणवि फणिंदु ।
णलिणाइं हरमि जलकील करमि ।

घत्ता—इय भणिवि गउ कण्हु संप्राइउ जउणासरवरु ॥ 25
उब्भडफडवियडंगु जमपासु व धाइउ विसहरु ॥ १ ॥

1 १ P °चुरुलिय भूउ. २ P गय. ३ APS जाइवि. ४ A विगयमण्णु. ५ ABP झंप. ६ B गिलिउ. ७ S दीहरु. ८ A रणवीर मंति; S रणधीरु मंति. ९ APS णिहणेवि. १० B भणेवि. ११ P संपाइउ. १२ A °विहडंगु.

1 1 परिछिण्णउं ज्ञातम्. 3 *a* सिहिचुरुलिभूउ अग्निज्वालाभूतः. 6 *a* °सरंतु ह्रदमध्ये. 7 *b* कयजणरवेण तत्र ह्रदे लोककोलाहलेन सर्पस्य भयोत्पादनार्थम्. 9 *a* कणइ क्रन्दति. 12 *b* विगयगण्णु गणनारहितः. 15 *b* झंप झंपा. 19 *b* मइं माम्. 21 *b* विहियसंति कृतशान्तिः.

2

णं कंसकोवहुयवहहु धूमु	णं णाइतरुणीकडिसुत्तदामु ।
णं ताहि जि केरउ जलतरंगु	णं कालमेहु दीहीकयंगु ।
सियदाढाविज्जुलियहिं फुरंतु	थलजमलजीहु विसलव मुयंतु ।
हरिसउहुं फडंगुलिरयणणक्खु	पसरिउ जमेण करु वायवक्खु ।
णं दंडवाणु सरसिरिइ मुक्कु	गेइवेयउ कण्हहु पासि ढुक्कु । 5
फणि फुप्फुयंतु चलु जुज्झलोलु	णं तिमिरहु मिलियउ तिमिरलोलु ।
दीसइ हरि दहि भसलउलकालु	णं अंजणगिरिवरि णवतमालु ।
तणुकंतिपरज्जियघणतमासु	णक्खइं फुरंति पुरिसोत्तमासु ।
सिरि माणिक्कइं विसहरवरासु	दीसंतइं देंति व देहणासु ।
तंबेहिं कुसुममणियरहिं तंबु	णं सरिवेल्लिहि पल्लउ पलंबु । 10
अहि घुलिउ अंगि महुसूयणासु	णं कत्थूरीरेहाविलासु ।

घत्ता—विसहरघोलिरदेहु सरि भमंतु रेहइ हरि ॥
कच्छालंकिउ तुंगु णं मयमत्तउ दिसकरि ॥ २ ॥

3

फणि दाढाभासुरु फुक्करंतु	महुमहणु वि जुज्झइ हुंकरंतु ।
फणि उरुफणाइ ताडइ तड त्ति	पडिखलइ तलप्पइ हरि झड त्ति ।
फणि वेढइ उव्वेढइ अणंतु	फणि लुंचइ वंचइ लच्छिकंतु ।
फणि धरइ सरइ सो वासुएउ	णउ बीहइ सप्पहु गरुडकेउ ।
इय विसमजुज्झसंमद्दु सहिवि	दामोयरेण पत्थाउ लहिवि । 5
पीयलवासें हउ उत्तमंगि	मणिकिरणसिहासंताणसंगि ।

---

2 १ S °हुयवहो. २ B ° विजलियहिं. ३ S °जवल°. ४ B °लक्खु. ५ A दंडबाणु सरसरिपमुक. ६ BP गयवेयउ. ७ S कंसहो पासु. ८ A पुप्फवंतु; PS पुप्फुयंतु. ९ A देहि णं मसल°; P देहए; S देहे. १० S अंजगिरि°. ११ S °परिजय°. १२ B पुरुसो°. १३ B देहमासु in second hand; P दीहणासु. १४ S णंतेहिं. १५ P कुसुमणियरेहिं. १६ A सरवेल्लीपल्लवपलंबु; S सरिपेल्लिउ. १७ S पल्लवु. १८ B कत्थूरिय°.

3 १ AP वि. २ P °फडाए. ३ A तडप्पए. ४ S सरइ धरइ. ५ P जुज्झ समतु. ६ APS उत्तिमंगि. ७ A °किरणसहासें तेण संगि.

---

2 २ *b* दीहीकयंगु दीर्घीकृतशरीरः. 3 *a* सिय° श्वेता. 4 *a* हरिसउहुं हरिसंमुखम्; फडंगुलिरयणणक्खु फटायां अङ्गुलिसदृशनखः. 7 *a* दहि ह्रदे. 10 *a* तंबेहिं ताम्रैः; कुसुममणियरहिं पुष्परागमणिकरैः. 12 सरि जले. 13 कच्छा° वरत्रा.

3 2 *a* उरुफणाइ गरिष्ठफणया. 5 *b* पत्थाउ लहिवि प्रस्तावं प्राप्य. 6 *a* पीयलवासें पीतवस्त्रेण वासुदेवेन; *b* °सिहासंताणसंगि ज्वालासमूहसंगे उत्तमाङ्गे.

गउ णासिवि विवरंतरि पइट्ठु जयसिरिइ विहसिउ झ त्ति दिट्ठु।
जलि कीलइ अमरगिरिंदधीरु कल्लोलुप्पीलियविउलतीरु।
विहडियसिप्पिउडसमुग्गयाइं मुत्ताहलाइं दसदिसु गयाइं।
मीणउलइं मयरसमंथियाइं णं सकुडुंबइं दुत्थियाइं। 10

घत्ता—उड्डिवि गयणि गयाइं कीलंतहु हरिहि ससंसहु॥
दिट्ठइं हंसउलाइं अट्ठियइं णाइं तहु कंसहु॥ ३॥

4

भसलउलइं चउदिसु गुमुगुमंति णं कंसमरणि बंधव रुयंति।
कण्हहु तेयं आया विणीय रंगंति कंक णं पिसुण भीय।
कमलाइं अलीढइं तेण केंव खुडियइं अरिसिरकमलाइं जेंव।
हरियइं पीयइं लोहियसियाइं महुरापुरणाहहु पेसियाइं।
पयपब्भट्ठइं मलिणंगयाइं खलविहिणा सुकयाइं व हयाइं। 5
पाडिवक्खभिच्चकरपेल्लियाइं बद्धाइं धरंगणि घल्लियाइं।
णलिणाइं णिवेण णिहालियाइं णं णियसयणइं उम्मूलियाइं।
अण्णहिं दिणि भुयबलवूढगाव हक्कारिय सयल वि णंदगोव।
परजीवियहारणु मंतगुज्झु पारद्धउं रायं मल्लजुज्झु।

घत्ता—कंसहु णाउं सुणंतु तिव्वकोवपरिणामें॥ 10
चल्लिउ देउ मुरारि णं केसरि गयणामें॥ ४॥

5

संचलिय णंदगोवाल सयल दीहरकर णं मायंग पबल।
वियइल्लफुल्लबद्धुद्धकेस उब्भंत थंत जमदूयवेस।

८ A जुयसिरिए. ९ APS °उप्पेल्लिय°. १० AP °विउलणीरु. ११ PS विउडिय°. १२ A °सिप्पिउल°. १३ P दसदिसि. १४ B कुडंबइं; P कुटुंबइं.

4 १ AP महुराउरि°; P महुरापुरि°. २ A णिमूलियाइं; B णिम्मूलियाइं. ३ B °भुव°. ४ P °ऊढ°. ५ AP सुणंतु णिरु तिव्व°. ६ A चलिउ मुरारि समोउ णं; P चलिउ मुरारि सगोउ णं.

5 १ AP ता चलिय. २ AP चवल. ३ A पवर. ४ P वियउल्ल°. ५ P ठंत.

9 *a* विहडिय° स्फुटितानि. 11 ससंसहु प्रशंसायुक्तस्य. 12 अट्ठियइं अस्थीनि.

4 2 *b* कंक बकाः. ३ *a* अलीढइं अक्लेशेन. 5 *a* पयपब्भट्ठइं स्थानच्युतानि जलच्युतानि च; *b* सुकयाइं पुण्यानि. 10 णाउं नाम. 11 गयणामें गजनाम्ना.

5 2 *a* वियइल्ल° विकसितानि.

सिंदूरधूलिधूसरियदेहु गज्जिय णं संझारायमेहु ।
कालाणल कालकयंतधाम भसलउलगरलघणजालसाम ।
बलतोलियमहिमहिहर रउद्द मज्जायरहिय णं खयसमुद्द । 5
सणिदिट्ठिविट्ठिविसविसहराहु रणि दुण्णिवार अरिहरियबाहु ।
कयभुयरव दिसि उट्ठियणिहाय पडुपडहसंखकाहलणिणाय ।
खलमलणकउज्जम जमदुपेच्छ जयलच्छिणिवेसियवियडवच्छ ।
रत्तच्छिणियच्छिर मच्छारिल्ल महुरापुरि पत्त महल्ल मल्ल ।
घत्ता—तो तं रोलविसट्टु उव्वग्गणसंचालियधरु ॥ 10
गोवयविंदु णिएवि आरूसिवि धायउ कुंजरु ॥ ५ ॥

6

मउल्लियगंडु पसारियसुंडु ।
सरासणवंसु सयापियपंसु ।
घणंजणवण्णु समुण्णयकण्णु ।
दिसागयभिंगु धराधरतुंगु ।
महाकरि तेण जलोयसुएण । 5
पडिच्छिउ एंतु णियड्ढिवि दंतु ।
सिरग्गि तडत्ति गओ हउ झत्ति ।
भएण गयस्स विसाणु गयस्स ।
बलेण समत्थि सिरीहरहत्थि ।
विरेहइ चारु जसो इव सारु । 10
रिउस्स पयंडु जमेण व दंडु ।
पयासिउ दीहु मुरारि णृसीहु ।
घत्ता—अप्पडिमल्लहु मल्लु पडिभडमारणमग्गियमिसु ॥
अक्खाडइ अवइण्णु हयबाहुसद्दबहिरियदिसु ॥ ६ ॥

६ S सेंदूर°. ७ AP कयंतथाम. ८ B °काहलि°. ९ A वियडविच्छ. १० B °णियच्छिय. ११ S महुराउरि. १२ A तं तहि रोलविसट्टु. १३ P °वेंदु; S °वंदु. १४ AS धाइउ.

6 १ P मओल्लिय°. २ PS °सोंडु. ३ P °कंतु. ४ B णिवड्ढिवि; S णियड्ढिवि. ५ A हउ गओ झत्ति; P हओ गओ झत्ति. ६ ABP णिसीहु. ७ PS °मल्लहं. ८ BAls. हयबहुसद्द°; PS दढबाहु°.

3 *b* संझारायमेह संध्यारागेण वेष्टिता मेघा इव. 4 *a* कालकयंतधाम मारणयमसदृशतेजसः; *b* °घणजाल° मेघजालम्. 6 *a* सणिदिट्ठिविट्ठि° शनिदृष्टिसदृशाः विष्टिसदृशाः. 7 *a* °णिहाय निघातो वज्रनिर्घोषः. 8 *a* जमदुपेच्छ यमवत् दुःप्रेक्षाः. 10 उव्वग्गण° परस्परसंघट्टशब्दः.

6 1 *a* मउल्लियगंडु मदार्द्रकपोलः. 2 *b* सयापियपंसु सदाप्रियधूलिः. 6 *a* पडिच्छिउ आकारितः; *b* णियड्ढिवि आकृष्य. 8 *a* गयस्स मतस्य नष्टस्य; *b* विसाणु दन्तः. 9 *b* सिरीहरहत्थि श्रीधरहस्ते. 12 *b* णृसीहु नृसिंहो महामल्लः. 14 अक्खाडइ युद्धभूमौ.

7

भुयपक्खु धरिवि   परिछेउ करिवि ।
ओहामियक्कु   संणहिवि थक्कु ।
गयलीलगामि   वसुएवसामि ।
कण्हहु बलेण   सुहिवच्छलेण ।
पइसरिवि रंगि   लग्गेवि अंगि ।   5
वज्जरिउं कज्जु   गोविंद अज्जु ।
जुज्झेवि कंसु   दलवट्टियंसु ।
करि बप्प तेम   णउ जियइ जेम ।
तुह जम्मवेरि   उव्वूढखेरि ।
खलु खयहु जाउ   उग्गिण्णघाउ ।   10
भडभुयरवालि   कोवग्गिजालि ।
पडिवक्खजूरि   वज्जंततूरि ।
आहवरसिल्लि   णच्चंतमल्लि ।
विप्पंतफुल्लि   कुंकुमजलोल्लि ।
अप्पाणपाणि   विक्खित्तचुण्णि ।   15
आसण्णवज्झि   तहु बाहुजुज्झि ।
रिउणा विमुक्कु   चाणूरु ढुक्कु ।
पसरियकरासु   दामोयरासु ।
ता सो वि सो वि   आलग्ग दो वि ।
संचालणेहिं   अंदोलणेहिं ।   20
आवट्टणेहिं   अवि लुट्टणेहिं ।
परिभमिवि लद्धु   संरुद्धु बद्धु ।
बंधेण बंधु   रुंधेण रुंधु ।
बाहाइ बाहु   गाहेण गाहु ।
दिट्ठीइ दिट्ठि   मुट्ठीइ मुट्ठि ।   25
खित्तेण खित्तु   गत्तेण गत्तु ।

---

7 १ S ऊहामिय°. २ BP गोविंदु. ३ A उव्वूढवेरि. ४ AP भडभुयवमालि. ५ AP णिक्खित्तचुण्णे. ६ ABPS तहिं. ७ AP पमुक्कु. ८ A वे. ९ AP add after 20 *b*: उल्लालणेहिं; आवीलणेहिं. १० AP पविलुट्टणेहिं. ११ B संरुद्ध. १२ AP खंधेण खंधु. १३ AP बंधेण बंधु. १४ P बाहेण बाहु.

---

7 1 *b* परिछेउ करिवि स्वपक्षो विभागीकृतः 2 *b* संणहिवि संनद्ध. 4 *a* बलेण बलभद्रेण. 7 *b* दलवट्टियंसु चूर्णितभुजशिखरः. 9 *b* उव्वूढखेरि धृतवैरः. 11 *a* °भुयरवालि भुजमेलापके भुजास्फालननिनादे वा. 21 *b* अवि अपि.

परिकलिवि तुलिवि उल्ललिवि मिलिवि ।
तासियगहेण सो महुमहेण ।
पीडिवि करेण पेल्लिवि[15] उरेण ।
दंभिवि छलेण मोडिउ बलेण । 30
भंणि जणियसल्लु चाणूरमल्लु ।
कउ मासपुंजु णं गिरिणिउंजु ।
गेरुयविलित्तु थिप्पंतरत्तु ।
महियलणिहित्तु पंचत्तु पत्तु ।
घत्ता—विणिवाइवि चाणूरु पहु बहुदुव्वयणें दूसिवि ॥ 35
पुणु हक्कारिउ कंसु कण्हें कालेण व रूसिवि ॥ ७ ॥

8

णवर ताण दोण्हं भुयारणं जायवं जणाणंदकारणं ।
सरणधरणसंवरणकोच्छरं भिउडिभंगपायडियमच्छरं ।
करणकत्तरीबंधबंधुरं कमणिवायणावियवसुंधरं ।
मिलियवलियमहिलुलियदेहयं णहसमुल्ललणदलियमेहयं ।
पवरणयरणारिमिहुणतोसणं परिघुलंतणाणाविहूसणं । 5
परंपरक्कमुल्लुहियदूसणं जुज्झिऊण सुइरं सुभीसणं ।
चरणचप्पणोणावियकंधरो वरमयाहिवेणेव सिंधुरो ।
घत्ता—कड्ढिउ पर्यहिं धरिवि णिद्दलिउ गलियकहिरोल्लिउ ॥
कंसु कयंतहु तुंडि कण्हेण भमाडिवि घल्लिउ ॥ ८ ॥

१५ B पेल्लवि. १६ APS मण°. १७ P दुव्वयणेहिं. १८ P हक्कारिवि.

8 १ A बंधुबंधुरं. २ A °णामिय°. ३ P °मिथुण°. ४ A परपरक्कमं छुहियदूसणं; B परपरक्कमउल्लुहियदेहयं; S °मुल्हिहिय°. ५ A चप्पणोण्णमिय°. ६ A वरमहाइवेण व्व; B वरमया-हिवेणेव्व. ७ S सेंधुरो. ८ BK गलिउ. ९ APS तोंडि. १० BP केसवेण.

32 *b* गिरिणिउंजु गिरिनिकुञ्जः. 33 *b* थिप्पंतरत्तु श्चयोतद्रुधिरः. 35 विणिवाइवि मारयित्वा.

8 2 *a* °कोच्छरं कौतुकोत्पादकम्; *b* °पायडिय° प्रकटितः. 3 *a* करणेत्यादि आवर्तन-निवर्तनप्रवेशादि; *b* कमणिवायणाविय° चरणनिपातनामिता. 5 *a* °णयरणार° नागरिकाः. 6 *a* पर° उत्कृष्टः; °उल्लुहिय° दत्तं भर्त्सनबलात्. 8 पर्यहिं पादाभ्याम्. 9 कयंतहु तुंडि यमस्य मुखे.

9

इइ कंसि वियंभिय तिवसतुट्ठि आयासहु णिवडिय कुसुमविट्ठि ।
किंकर वर णरवइ उत्थरंत कण्हेण भणिय भंडणि भिडंत ।
मा मइं आरोडहु गलियगव्व मा पयहु पंथें जाहु सव्व ।
तहिं अवसरि हरि संकरिसणेण आलिंगिउ जयहरिसियमणेण ।
वसुएवें भणियं म करहि भंति हउं केसरि तुम्हइं मत्त दंति । 5
भो मुयहु मुयहु णियमणि असंति कण्हहु बलेवंत वि खयहु जंति ।
उप्पण्णउ देविहि[10] देवईहि गब्भम्मि पसण्णि महासईहि ।
कुलधवलु वसुंधरभारधारि सुउ मज्झु कंसविद्धंसकारि ।
पच्छण्णु पवड्ढिउ णंदगोट्ठि एवहिं करु ढोइउ कालवट्ठि ।
जो कुज्झइ जुज्झइ सो ज्जि मरइ गोविंदि[12] कुद्दइ किं कोइ धरइ । 10

घत्ता—आणिवि जायवणाहु णियगोत्तहु मंगलगारउ ॥
वंदिउ ण्हवणियरेहिं दामोयरु वइरिवियारउ ॥ ९ ॥

10

कण्हेण समाणउ को वि पुत्तु संजणउ जणणि विहवियसत्तु ।
दुद्धरभररणधुरदिण्णखंधु उद्धरिय जेण णिवडंत बंधु ।
भंजिवि णियलइं गयवरगईइ सहुं माणिणीइ पोमावईइ ।
अहिणंदियजिणवरपायरेणु महुरहि संणिहियउ उग्गसेणु ।
कइवयदियहहिं रइकीलिरीहिं बोल्लाविउ पहु गोवालिणीहिं । 5
पंगुत्तउं पइं माहव सुहिल्लु कालिंदितीरि मेरउं कडिल्लु ।
एवहिं महुराकामिणिहिं रत्तु महुं उप्परि दीसहि अथिरचित्तु ।

9 १ P ओत्थरंत. २ P आरोलहु. ३ S पंथे. ४ S जाह. ५ B भणिउ. ६ B करहि; P करहु. ७ A पहु. ८ B मुअहि मुअहि. ९ A बलवंतहो. १० B देवीदेवईहिं. ११ A कालविट्ठि; B कालवट्टि. १२ A गोविंदें कुद्धे. १३ AP को वि. १४ AP णिव°.

10 १ B संजणिउ. २ AAls. दुद्धररणभरधुरदिण्णकंधु; B दुद्धरभडरणदिण्णखंधु. ३ BAls. अहिवंदिय°. ४ AP °कीलणीहिं; B °कीलरीहिं.

9 1 इ इ कं सि हते कंसे; *b* आ या स हु गगनात्. 3 *a* आ रो ड हु अस्माकं मा रोषमुत्पादयन्तु. 6 *a* अ सं ति क्रोधः. 9 *b* का ल व ट्ठि कालपृष्ठनाम्नि धनुषि. 11 जा य व णा हु यादवनाथः.

10 5 *a* र इ की लि री हिं रतिक्रीडनशीलाभिः. 6 *a* पं गु त्त उं पूर्वं परिहितम्; *b* क डि ल्लु कटीवस्त्रम्. 8 *b* उ ब्भं ति या इ उद्भ्रान्तया.

क वि भणइ दहिउँ मंथंतियाइ तुहुं मइं धरियउ उब्भंतियाइ ।
लवणीयलित्तु करु तुज्झु लग्गु क वि भणइ पलोयइ मज्झु मग्गु ।
तुहुं णिसि णारायण सुयहि णाहिं आलिंगिउ अवरहिं गोवियाहिं । 10
सो सुयरहि किं ण पउण्णवंछु संकेयकुडंगुड्डीणरिंछु ।
घत्ता—का वि भणइ णासंतु उद्धरिवि खीरभिंगारउ ॥
किं वीसरियउ अज्जु जं मइं सित्तु भडारउ ॥ १० ॥

11

इय गोवीयणवयणइं सुणंतु कीलइ परमेसरु दरहसंतु ।
संभासिउ मेल्लिवि गव्वभाउ इहजम्महु महुं तुहुं ताय ताउ ।
परिपालिउ थणथण्णेण जाइ वीसरमि ण खणुं मि जसोय माइ ।
कइवयदियहइं तुहुं जाहि ताम पडिवक्खकुलक्खउ करमि जाम ।
इय भणिवि तेण चिंतविउ दिण्णु वरवसुहारइ दालिद्दु छिण्णु । 5
आलाविय भाविय णियमणेण गोवालय पूरिय कंचणेण ।
पडुविउ णंदु महुसूयणेण ओहामियदेवयपूयणेण ।
सहुं वसुएवें सहुं हलहरेण सहुं परियणेण हरिकरिजंणेण ।
घत्ता—सउरीणयरि पइट्ठु आहिसुरणरेहिं पोमाइउ ॥ 10
भरहधरित्तिसिरीइ हरि पुप्फयंतु अवलोइउ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे कंसचाणूरणिहणणो णाम
छासीतिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ८६ ॥

५ AP महिउ. ६ A णवणीय°. ७ A °वत्थु. ८ AP उद्धरमि. ९ AP मइं अहिसित्तु भडारउ.

11 १ B संभासिवि मेल्लिउ. २ B थणि थण्णेण. ३ B वीसरिमि. ४ B खणु वि. ५ S चिंतविउ. ६ PS वसुधारए. ७ AP वालें आकरिसियपूयणेण. ८ B वसुएवइ. ९ APS हरिकरिभरेण. १० A छयासीमो; P छायासीमो; S छासीतितमो.

9 a लवणीयलित्तु नवनीतलिप्तः. 11 a पउण्णवंछु प्रपूर्णवाञ्छः; b °कुडंग° ह्रस्ववृक्षः स्वल्पवृक्षः.

11 2 b तुहुं नन्दगोपः. 3 b माइ हे मातः. 5 a चिंतविउ वाञ्छितं वस्तु; b °वसुहारइ सुवर्णधारया. 7 b ओहामियदेवयपूयणेण तिरस्कृतदेवतापूतनेन. 8 b हरि° अश्वाः. 9 सउरीणयरि शौरिपुरे; पोमाइउ प्रशंसितः.

LXXXVII

मारिए महुराणाहे जीवंजस जरसिंघहु ॥
गय सोएण रुयंति पिउहि पासि जरसिंधहु ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—दुम्मण णीससंति पियविरहहुयासणजालजालिया ॥
वणदवदहणहुणियणववेल्लि व सव्वावयवकालिया ॥

गयकंकण दुब्भिक्खलीला इव पुप्फविरहिय भेलमहिला इव । 5
णट्ठपत्त फग्गुणवणराइ व सुट्ठु झीण णवचंदकला इव ।
मोक्कलकेस कउलदिक्खा इव ण्हाणविवज्जिय जिणसिक्खा इव ।
पउरविहार बउद्धपुरी विव वरविमुक्क कोणीणसिरी विव ।
कंचिविवज्जिय उत्तरमहि विव पंडुच्छाय छणदंयहु सहि विव ।
णिरलंकारी कुकइहि वाणि व दुक्खहं भायण णारयजोणि व । 10
गलियंसुयजलसित्तपओहर अवलोएवि धीय मउलियकर ।
भणइ जणणु गुरु आवइ पाविय किं कज्जेण केण संताविय ।
भणु सुह केण कयउं विहवत्तणु को ण गणइ महुं तणउ पहुत्तणु ।
जीविउं अज्जु जि कालु हरेसइ कालु कालु कीलालि तरेसइ ।
घत्ता—जीवंजसइ पवुत्तु गुणि किं मच्छरु किज्जइ ॥ 15
ताय सत्तु बलवंतु तुज्झु समाणु भणिज्जइ ॥ १ ॥

2

दुवई—वासारत्ति पत्ति बहुसलिलुप्पेल्लियणंदगोउले ॥
जेणेकेण धरिउ गोवद्धणु गिरि हत्थेण णहयले ॥ छ ॥

---

1 १ A पहुहे पासि. २ AP जरसेंधहो. ३ P दुभिक्ख°. ४ P काणीणे. ५ P महि उत्तर. ६ A पंडुच्छाय सहि छणइंदहो इव. ७ AP कयउ केण. ८ B अज्जु वि. ९ AP पउत्तु; S उपत्तु.
2 १ S गोवद्धणगिरि.

---

1 4 °दवदहणहुणिय° अग्नौ हुता. 5 *a* गयकंकण गतकङ्कणा, पक्षे दुर्भिक्षकाले गतं नष्टं कं जलं कणं धान्यम्; *b* भेलमहिला वृद्धा जरती तस्या ऋतुपुष्पं न. 6 *a* णट्ठपत्त नष्टवाहना, नष्टानि नागवल्लीदलानि वा; °वणराइ वनश्रेणी. 7 *a* कउलदिक्खा योगिजटा. 8 *a* पउरविहार प्रकर्षेण उरसि विगतो हारो यस्याः, पक्षे प्रचुरा विहारा यत्र बौद्धानां नगरे; *b* वरविमुक्क वरो भर्ता व्ययश्च. 9 *a* कंचि° कटिमेखला, पक्षे उत्तरदेशे काञ्चीपुरी न. 12 *a* गुरु आवइ पाविय गरिष्ठामापदं प्राप्ता. 14 *a* हरेसइ यमो हरिष्यति; *b* कालु यमः; कीलालि रुधिरे.

वइरिणि णियथामेण विणासिय	बालत्तणि जैं पूयण तासिय ।	
भायासयडु जेण संचूरिउ	जेण तुरंगु तुंगु मुसुमूरिउ ।	
जेण तालु धरणीयलु पाविउ	जेण अरिट्ठवसहु वंकाविउं ।	5
तरुजुवलउं मोडिउं भुयजुयलें	णायसेज्ज आयामिय पबलें ।	
चाउ पणाविउ संखापूरणु	कियउं जेण णियपिसुणविसूरणु ।	
कालियाहि तासिवि अरविंदइं	खुडियइं जेण पउरमयरंदइं ।	
दंतिहि जेण दंतु उप्पाडिउ	सो जि पुणु वि कुंभत्थलि ताडिउ ।	
जो वग्गिवि मंडरंगि पइट्ठउ	कालसलोणउ लोएं दिट्ठउ ।	10

घत्ता—जेण मल्लु चाणूरु जममुहकुहरि णिवेइउ ॥
तेण णंदगोवेणं मारिउ तुह जामाइउ ॥ २ ॥

3

दुवई—वसुएवेण पुणु सो घोसिउ भायरु सीरहेइणा ॥
ससयणमरणवयणु णिसुणेप्पिणु ता कुद्धेण राइणा ॥ छ ॥

पेलिया सणंदणा	ससंदणा ।	
धाविया सवाहणा	ससाहणा ।	
सुरपहुणं चियं	धयंचियं ।	5
कण्हपक्खपोसिरा	सुरोसिरा ।	
णिग्गया दसारुहा	जसारुहा ।	
आययं सकारणं	महारणं ।	
दिण्णघायदारुणं	पलारुणं ।	
रत्तवारिरेल्लियं	रसोल्लियं ।	10
दंतिदंतपेल्लियं	विहल्लियं ।	
छिण्णछत्तचामरं	णयामरं ।	

२ A तिय यामेण. ३ S बालत्ते. ४ B तुरंगतुंग. ५ BAls. अरिट्ठ. ६ APS °जुयलउं. ७ ABPS संखाऊरणु. ८ ABP कयउं. ९ B पवर. १० PS भट्ठु. ११ PS णिवाइउ. १२ B णंदगोविंदें. १३ P जामाइओ.

3 १ A धाइया. २ PS सुरोसिरा. ३ A दहारुहा. ४ S वसोल्लियं. ५ A वहिल्लियं. ६ A णियामरं; P णयोमरं.

2 3 *a* वइरिणि वैरिणी पूतनादेवी; °थामेण बलेन. 4 *a* °सयडु शकटम्. 5 *b* अरिट्ठ° वृषभः. 6 *b* णायसेज्ज नागशय्या; आयामिय चम्पिता. 8 *a* कालियाहि कालियसर्पः. 9 *a* दंतिहि गजस्य.

3 3 *b* ससंदणा सरथाः. 4 *b* ससाहणा ससैन्याः. 5 *a* चियं चितं वेष्टितम्; *b* धयंचियं ध्वजसहितम्. 7 *b* जसारुहा यशोयोग्याः. 10 *b* रसोल्लियं रुधिरार्द्रम्. 11 *b* विहल्लियं कम्पितम्.

पुप्फवासवासियं णिसंसियं ।
घत्ता—णवर दुरंतरयाइं दुप्पेक्खइं गयणायइं ॥
णट्ठा वइरिणरिंद णारायणणारायइं ॥ ३ ॥ 15

4

दुवई—जा संतेहिं तेहिं महि कंपइ णाणामणियरुज्जला ॥
महुमंथणरयाहि महिमहिलहि हल्लइ जलहिमेहला ॥ छ ॥
णियपयपंकयतलि आसीणा ते अवलोइवि संगरि दीणा ।
राएं अवरु पुत्तु अवरायउ पेसिउ जो केण वि ण पराइउ ।
तेण वि जोइवि अयसिरिलोहें रहकिंकरहयगयसंदोहें । 5
सउरीपुरु चउदिसहिं णिरुद्धउं णीसरियउं जायवबलु कुद्धउं ।
करिकरवेढणेहिं असरालिहिं रहसंकडि पडंतमहिवालहिं ।
चंडगयासणिदलियधुरिल्लहिं णिवडियकोंतसूलहललेल्लहिं ।
फुरियकिरणमालापइरिक्कहिं विहडियमउडकडयमाणिक्कहिं ।
भडकरगाहधरियसिरमालहिं असिसंघट्टणहुयवहजालहिं । 10
वणवियलियलोहियकल्लोलहिं दिसिविदिसामिलंतवेयालहिं ।
दाढाभासुरभइरवकायहिं किलिकिलिसद्दहिं भूयपिसायहिं ।
घत्ता—जुज्झइं णरघोरइं करि करवालु करेप्पिणु ॥
छायालीसइं तिण्णि सयइं एम जुज्झेप्पिणु ॥ ४ ॥

5

दुवई—गइ अवराइयम्मि वसुएवतणूरुहसरणिसुंभिए ॥
पविउलसयलभुवणभवणंगणजसवड्ढे वियंभिए ॥ छ ॥

4 १ B णिवपंकयतल°. २ B जायवि. ३ P णेरुद्धउं. ४ A °विमलेहिं; B °वेडणेहिं. ५ APS असरालहिं. ६ P °महिपालहिं. ७ B °गयासिणि°. ८ AP °हलभल्लहिं. ९ B °पयरिक्कहिं. १० APS °कडयमउड°. ११ B °करवाल. १२ AP °सिरवालहिं. १३ B °हुयवय°. १४ ABP वण°. १५ BKP मिलंति. १६ A णरघोरेहिं; B णरघोराइं. १७ A लएप्पिणु.

5 १ B अवरायम्मि. २ B °तणुरुह°. ३ S °सयलभुवणंगण°.

---

13 *b* णि सं सि यं नरैः प्रशस्तं नृशंसं वा. 14 दु रं त र या इं दुष्टावसानवेगानाम्; ग य णा य इं गगनागतानां गजनादानां वा. 15 °णा रा य इं बाणानाम्.

4 1 °म णि य रु ज्ज ला मणिकिरणैः उज्ज्वला. २ म हु मं थ ण र या हि वासुदेवे रतायाः भूमेः. 7 *a* अ स रा लि हिं बहुलैः. 8 *a* °धु रि ल्ल हिं °मुख्यैः सारथिभिर्वा. 9 *a* °प इ रि क्क हिं प्रचुरैः. 10 *a* सि र मा ल हिं सीसकैः (शिरस्त्राणैः) शिरोगताभिः पुष्पमालाभिर्वा. 13 जु ज्झ इं यु द्धा ना म्. 14 छा या ली स इं ति ण्णि स य इं षट्चत्वारिंशदधिकानि त्रीणि शतानि युद्धानां युद्ध्वा.

5 1 अ व रा इ य म्मि अपराजिते गते सति; °स र णि सुं भि ए बाणैः विध्वस्ते.

अण्णु वि सुउ जरसिंधहु केरउ विहलियसुयणइं सुहइं जणेरउ ।
कालु व वइरिवीरजीवियहरु उट्ठिउ कालजमणु वइसहरु ।
पभणइ ताय ताय आयण्णहि दीण वइरि किं हियवइ मण्णहि । 5
पित्तिएहिं सहुं समरि धरेप्पिणु आणमि णंदगोउ बंधेप्पिणु ।
पुलउ जणंतु णराहिवदेहहु सहुं सेण्णेण विणिग्गउ गेहहु ।
जलि थलि णहयलि कहिं मि ण माइउ सो सरोसु सहरिसु उद्धाइउ ।
गंपिणु पिसुणचरिउं जं दिट्ठउं तं तिह हरिहि चरेण उवइट्ठउं ।
तं णिसुणेप्पिणु जाणियणाएं सहुं मंतिहिं सुहुं सुहिसंघाएं । 10
बंधुवग्गु मंतणइ पइट्ठउ मंतिहिं मंतु महंतउ दिट्ठउ ।
जइ सबलेहिं अबलु आढप्पइ तो णासइ जइ सो पडिकुप्पइ ।
बेण्णि जि[12] होंति विणासहु अंतरु तप्पवेसु अहवा देसंतरु ।
तहिं पहिलारउ अज्जु ण जुज्जइ देसगमणु पुणु णिच्छउं किज्जइ ।
हरि असमत्थु दईउ को जाणइ को समरंगणि जयसिरि माणइ । 15
खलरामाहिरामसुविरामें तं णिसुणेप्पिणु अलिउलसामें ।

घत्ता—बोल्लिउं महुमहणेण हउं असमत्थु ण वुच्चमि ॥
मइं मेलह रणरंगि एक्कु जि रिउहुं पहुच्चमि ॥ ५ ॥

6

दुवई—णासिउ जेहिं वइरिविज्जागणु भेसिउ जेहिं विसहरो ॥
मारिउ जेहिं कंसु चाणूरु वि तोलिउ जेहिं महिहरो ॥ छ ॥

ते भुय होंति ण होंति व मेरा किं एवहिं जाया विवरेरा ।
इय गज्जंतु मुरारि णिवारिउ हलिणा मंतमग्गि संचालिउ ।
जं केसरिसरीरसंकोयणु तं जाणसु करिजीवविमोयणु । 5
अज्जु कण्ह ओसरणु तुहारउं पुरउ पहोसइ परखयगारउं ।

४ PS जरसेंधहो. ५ A विहडिय°. ६ AP दीणवयणु. ७ K पित्तिएण, but gloss पितृव्यैर्नवभिः सह. ८ S आणेवि. ९ B चरें उव°. १० AP णिसुणेवि वियाणियणाएं; S णिसुणेविणु जाणियणाएं. ११ P मंतिउ मंतु महंतहिं. १२ A वि. १३ P तप्पविसु. १४ P दइवु. १५ P रिउहें.

6 १ S हरिणा.

3 *b* विहलिय° दुःखितानाम्. 6 *a* पित्तिएहिं पितृव्यैर्नवभिः सह; *b* णंदगोउ कृष्णः. 9 *a* पिसुणचरिउं शत्रुचेष्टितम्. 12 *a* आढप्पइ मारयितुमारभ्यते; *b* णासइ म्रियतेऽबलः. 16 *a* खलेत्यादि खलरामाणामभिरामस्य रमणीयत्वस्य सुष्ठु विरामो यस्मात्.

6 1 °विज्जागणु देवतासमूहः; भेसिउ भयं प्रापितः कालाहिः. 2 महिहरो गोवर्धनगिरिः. 3 *a* मेरा मम. 4 *b* मंतमग्गि मन्त्रमार्गे; संचालिउ प्रवर्तितः. 6 *b* पुरउ अग्रे; पहोसइ प्रभविष्यति; पर° शत्रुः.

इय कहेवि मच्छरु ओसारिउ मंडुइ दाणवारि णीसारिउ ।
गयउरसउरीमहुरापुरवइ णिग्गय आयव सयल वि णरवइ ।
वहइ लेप्पु अणुविणु णउ थक्कइ महि कंपइ अहि भरहु ण सक्कइ ।
भूवइ भूमि कमंतकमंतहं अंतहं ताहं पहेण मेइंतहं । 10
कालु व कालायरणि ण भग्गउ कालअमणु अणुमग्गें लग्गउ ।
जलियजलणजालासंताणइं डज्झमाणपेयाइं मसाणइं ।
हरिकुलदेवविसेसहिं रइयइं सिवजंबुयवायसलयछइयइं ।
णायरणारिरुवेण रुयंतिउ दिट्ठउ देवयाउ सोयंतिउ ।

घत्ता—हा समुद्दविजयंक हा धारण हा पूरण ॥ 15
थिमियमहोयहिराय हा हा अचल अकंपण ॥ ६ ॥

7

दुवई—हा वसुएव वीर हा हलहर दुम्महवणुयमहणा ॥
हा हा उग्गसेण गुणगणणिहि हा हा सिसु जणद्दणा ॥ छ ॥

हा हा पंडु कंडु किं जायउं पत्थिववइरु विहुरु संप्रायउ ।
हा हा धम्मपुत्त हा मारुइ हा हा पत्थ विजयमहिमारुइ ।
हा सहएव णउल कहिं पेक्खमि वत्त कासु कहिं जाइवि अक्खमि । 5
हा हा कोंति मद्दि हा रोहिणि हा देवइ अणंगसुहवाहिणि ।
हा महिणाहु कुइउ जमदूयउ सव्वहं केम कुलक्खउ हूयउ ।
तं आयण्णिवि चोज्जु वहंतें पुच्छिउ णिवसुएण विहसंतें ।
कओ केण दुहेण विसण्णा किं सोयइ के मरणु पवण्णा ।
तं णिसुणेवि देवि तहु ईरइ भणु णरणाहि कुद्धि को धीरइ । 10
तेहु भीयाहिं सिविरु संचालिउ महियलि सरणु ण कहिं मि णिहालिउं ।

२ AP मंडुए; B मडुय. ३ B वहंतहं. ४ A कालजमण. ५ S हरिउलवंसविसेसहिं. ६ A °जंबू°; P °जंबुव°. ७ ABP णयरणारिरूवेण; S णायरणारीरूवि. ८ P रुयंतिउ. ९ P °महोवहि°.

7 १ P कें. २ A संजायउ; P संपाइउ. ३ P जायवि. ४ ABPS सव्वहुं. ५ B चुज्जु. ६ P दुहेहि. ७ A णिसण्णा. ८ S णरणाह. ९ A तुह. १० PS सिमिरु.

9 *b* अहि भरहु ण सक्कइ शेषनागः भारं न शक्नोति. 10 *a* भूवइ राजानः; भूमि कमंतकमंतहं भूमिं क्रमन्तो गच्छन्तः. 11 *a* कालायरणि कालस्य मरणस्य आचरणे आदरणे वा. 12 *b* °पेयाइं मृतकानि. 13 *b* सिव° शृगाली; °जंबुय° शृगालः. 16 थिमियमहोयहिराय स्तिमितसागर.

7 3 *b* पत्थिववइरु विहुरु संप्रायउ शत्रुभिः कृत्वा दुःखं प्रापितः. 4 *a* मारुइ भीम; *b* विजयमहिमारुइ विजयमहिम्ना रुचिर्दीप्तिर्यस्य. ५ *b* वत्त वार्ताम्. 6 *b* °वाहिणि नदी. 8 *a* चोज्जु वहंतें आश्चर्यं धरता.

हयँ पुण्णक्खइ णं जरपायव | अग्गिपवेसु करिवि मय आयव ।
तं णिसुणेप्पिणु रणभरजुत्तें | भासिउं खोणीयलवइपुत्तें ।

घत्ता—महुँ उ सुहडणिहाउ णिग्घिणजलणें तं[13] खउउ ॥
आहवि सँउहुं भिडेवि मइं जसु जिणिवि ण लइउं ॥ ७ ॥

8

दुवई—हा मइं कंसमरणपरिहवमलु रिउरुहिरें ण धोइओ ॥
इय चिंतंतु थंतु मलिणाणणु अणणसमीवि आइओ ॥ छ ॥

पायपणामपयासियविणयं | दिट्ठउ ताउ तेण पियतणयं ।
जोइउं सुयउं सव्वु विण्णवियउं | अरिउलु णिरवसेसु सिहिखवियउं ।
अत्थमिएण णियाहियवंदें | थिउ मेइणिपहु परमाणंदें । 5
एत्तहि एहि पवहंत महाइय | हरि बल जलहितीरु संप्राइय ।
दिट्ठउ भद्दिएंण रयणायरु | वेलालिंगियचंददिवायरु ।
वाडवग्गिजालाहिं पलित्तउ | जलकरिकरजलधारहिं सित्तउ ।
णवपवालसरलंकुररत्तउ | णं कुंकुमराएण विलित्तउ)
जलयरघोसें भणइ व मंगलु | हसइ णाइ मोत्तियदंतुज्जलु । 10
तलणिहित्तणाणामणिकोसें | णच्चइ संवड्ढियसंतोसें ।
परगंभीरु पयइगंभीरउ | ण सहइ मलु णं अरुहु भडारउ ।
महुमह आउ आउ साहारइ | णं तरंगहत्थें हक्कारइ ।

घत्ता—भूसणदित्तिविसालु णावइ तारायणु थक्कउं ॥
जायवणाहें तेत्थु सायरतडि सिविरु विमुक्कउं ॥ ८ ॥ 15

११ AP णियपुण्ण°. १२ AP भग्गउ. १३ ABPS om. तं. १४ B समुहु.

8 १ B पयासियपणएं. २ S णियतणएं. ३ K सव्वु and gloss सर्वं सत्यं वा; ABPS सव्वु. ४ P अरिकुल. ५ A णियाहियचंदें. ६ AP संपाइय. ७ A भद्दएण. ८ AP वेलाढंकिय°. ९ B °करजलधारासित्तउ; S °करधाराहिं सित्तउ. १० AP गज्जइ णं वड्ढिय°. ११ AP परहु दुलंघु. १२ ABPS हत्थहिं. १३ S सिमिरु.

---

12 *a* जरपायव जीर्णवृक्षाः. 14 °णिहाउ समूहः; °णिग्घिणजलणें निर्दयाग्निना. 15 सउहुं संमुखम्.

8 4 *a* जोइउं सुयउं दृष्टं श्रुतम्. 5 *a* णियाहियवंदें निजशत्रुसमूहेन. 6 *a* महाइय महर्द्धिकाः. 7 *a* भद्दिएण हरिणा. 8 *a* पलित्तउ प्रज्वलितः. 10 *a* जलयर° शंखः. 12 *a* परगंभीरु परैरक्षोभ्यः; पयइगंभीरउ प्रकृत्या गम्भीरो जिनः. 13 *a* महुमह हे कृष्ण; आउ आउ आगच्छागच्छ; साहारइ धीरयति. 15 जायवणाहें यादवनाथेन समुद्रविजयेन; सिविरु सैन्यम्.

9

दुवई—खंचिय रह तुरंग मायंगोयारियसारिभारया ॥
खंभि णिबद्ध के वि गय के वि कराहयभूरिभूरया ॥ छ ॥

णियसंतावयारिरविसयणइं — उम्मूलंति के वि करि णलिणइं ।
केण वि पंकु सरीरि णिहित्तउ — सीयलु मइलु विलेवणु थक्कउं ।
दाणबिंदुचंदियचित्तलजलु — दीसइ काणणु चूरियदुमदलु । 5
मुक्कइं खलिणइं मणिपरियाणइं — तुरयहं भडहं विविहतणुताणइं ।
थाणुणिबद्धइं तवसिउलाइं व — गुणपसरियइं सुधम्मफलाइं व ।
उब्भियाइं दूसइं बहुवण्णइं — चलियचिंधमंडवि वित्थिण्णइं ।
कइवय दियह तेत्थु णिवसंतहं — गय दुग्गमपएसें जोयंतहं ।
पुणु अण्णहिं दिणि मंतु समत्थिउ — गुरुवयणेण माइडं अब्भत्थिउ । 10
हरि तुहुं पुण्णवंतु जं इच्छहि — तं जि होइ णियसत्ति णियच्छहि ।
तिह करि जिह रयणायरपाणिउं — देइ मग्गु मयरोहरमाणिउं ।
णिरसणु अट्ठ दियह मलणासणि — ता रक्खसरिउ थिउ दब्भासणि ।
पाइगमु अमरु णिसिहि संपत्तउ — हरिवेसें हरि तेण पवुत्तउ ।
घत्ता—आउ जिणिदु णवेवि जणियतायजयतुट्ठिहि ॥ 15
माईव चिंतहि काइं चडु मडु तणियहि पुट्ठिहि ॥ ९ ॥

10

दुवई—ता हय गमणभेरि कउ कलयलु लंघियदसदिसामरे ॥
मणिपल्लाणपट्टचलचामरि चडिउ उविंदु हयवरे ॥ छ ॥

चवलतुरंगतरंगणिरंतरि — तुरउ पइट्ठु समुद्दब्भंतरि ।

---

9 १ B °गोत्तारिय°. २ S खंभ°. ३ A के बि कराहाहिय वसह वि भूरिभारया; BPS कराहिय°. ४ AP णिव°. ५ APS केहिं मि. ६ AP सीयलु णाइं विलेवणु घित्तउं. ७ B विलेयणु. ८ A °चंविय°. ९ AP लूरिय°. १० B °भंग. ११ A मंडव°. १२ APS पवेसु. १३ S माइडु. १४ A णियसंति. १५ AP °यरवाणिउं. १६ AP जणियजयत्तयतुट्ठिहे. १७ K माइउ. १८ B तणिहिं.

10 १ P °पट्टे. २ A चंचलु तुरउ तरंग°; P चलतरंगरंगतणिरंतरि.

---

9 1 °ओयारियसारि° अवतारितपर्याणाः. 2 कराहयभूरिभूरया शुण्डाहतप्रचुरभूमिरजसः. 5 *a* दाणेत्यादि दानबिन्दुभिर्मदलवैः जले जनितचन्द्रिकाभिश्चित्रितं जलम्. 6 *a* खलिणइं कविकाः; °परियाणइं पल्याणानि; *b* °तणुताणइं गात्रत्राणानि. 7 *a* थाणु° स्थाणुः कीलकः; *b* गुण° रज्जुः. 11 *b* णियच्छहि पश्य. 12 *b* °ओहर° जलचरविशेषः. 13 *b* रक्खसरिउ हरिः. 14 *b* हरिवेसें अश्वरूपेण. 15 जणियतायजयतुट्ठिहि उत्पादितभ्रातजगत्तुष्टी.

10 3 *a* °तुरंगतरंग° तुरङ्गवत्तुङ्गाः तरङ्गाः.; *b* तुरउ अश्वः.

हरिवरमहमआयइ धरियउं   पाणिउं बिहिं भाईहिं ओसरिउं ।
तहु अण्णुमग्गें साहणु चल्लिउं   हयढक्कारवहरिसरसोल्लिउं । 5
थियउं सेण्णु सुरणिम्मिइ गयमलि   वेसादप्पणसंणिहि महियलि ।
भवसंसरणदुक्खदुक्खियहरि   बावीसमु समुद्दविजयहु घरि ।
तित्थंकरु सिवदेविहि होसइ   छम्मासहिं सुरणाहु पघोसइ ।
पयहं दोहिं मि पंकयणेत्तहं   वणि णिवसंतहं वहुवरइत्तहं ।
जक्खराय तुहुं करि पुरु भल्लउं   चिंधजयंतिपंतिसोहिल्लउं । 10

घत्ता—इत्ति पसाउ भणेवि गउ पेसिउ सहसक्खें ॥
पुरि परिहाजलदुग्ग कय दारावइ जक्खें ॥ १० ॥

11

दुवई—कच्छारामसीमणंदणवणफुल्लियफलियतरुवरा ॥
सोहइ पंचवण्णचलचिंधहिं दूरोरुद्धरवियरा ॥ छ ॥
घरइं सत्तभउमइं मणिरंगइं   रयणसिहरपरिहट्टपयंगइं ।
पंगणाइं माणिक्कणिवद्धइं   तोरणाइं मरगयदलणिद्धइं ।
जलइं सकमलइं थलइं ससासइं   माणुसाइं पालियपरिहासइं । 5
कुंकुमपंकु धूलि कप्पूरें   पउ धुप्पइ ससिकंतहु णीरें ।
महुयर रुणुरुणंति महु थिप्पइ   परहुयं वासइ पूसउ कुप्पइ ।
कह कहंतु जायउ रसु खंचइ   कलमकणिसु एमेव विलुंचइ ।
कुसुमरेणु पिंगलु णहि दीसइ   कालायरुधूमउ दिस भूसइ ।
वेण्णि वि णं संझाघण णवघण   जहिं दुहु णउ मुणंति णायरजण । 10
जहिं जिणहरइं वरइं रमणीयइं   वीणावंसविलासिणिगेयइं ।

घत्ता—तेहिं सभवणि सुत्ताए रयणिहि दुक्कियहारिणि ॥
दिट्ठी सिविणयपंति सिवदेविइ सिवकारिणि ॥ ११ ॥

३ APS भायहिं. ४ P °ढक्कारए हरिस°. ५ A °दुक्किय°. ६ AP करि तुहुं.

11 १ B सोहिय. २ P °भोमइं. ३ AP पंगणाइं. ४ B °पंक°. ५ A ससियंतहो. ६ BS परहुव. ७ AP णहु. ८ P °गीयइं. ९ AB तहिं जि भवणि.

4 *b* बिहिं भाइहिं द्वाभ्यां भागाभ्याम्. 5 *a* तहु अश्वस्य. 6 *a* गयमलि निर्मले महीतले द्वीपे; *b* वेसा° वेश्या. 7 *a* °दुक्खियहरि दुःखितानां प्राणिनां धारके गृहे. 8 *b* पघोसइ कथयति धनदस्य. 9 *b* वणि वने जले; वहुवरइत्तहं वधूवरयोः. १० *b* °जयंति° ध्वजा.

11 1 कच्छ° गृहवाटिका. 2 दूरोरुद्ध° दूरादवरुद्धाः. 3 *a* मणिरंगइं मणिस्थानानि मण्डपस्थानानि; *b* परिहट्टपयंगइं घृष्टसूर्याणि. 5 *a* ससासइं धान्ययुक्तानि; *b* पालिय° कृतः. 6 *b* धुप्पइ प्रक्षाल्यते. 7 *a* महु मकरन्दः; थिप्पइ क्षरति; *b* वासइ शब्दं करोति; पूसउ शुकः. 8 *a* कह कहंतु कथां कथयन्. 10 *a* वेण्णि वि पुष्परजः अगुरुधूमश्च द्वौ. 12 रयणिहि रात्रौ.

12

दुवई—वियलियदाणसलिलचलधारासित्तकवोलमूलओ ॥
पसरियकण्णतालमंदाणिलधोलिरभसलमेलओ ॥ छ ॥

विट्ठउ मत्तउ णयणसुहावउ संमुहुं एंतउ करि अइरावउ ।
कामधेणुकीलारसलीणउ विसु ईसाणविसिंदसमाणउ ।
रायसीहु उल्लंघियदरिगिरि सिरि पुणु दिट्ठी णं तिहुयणसिरि । 5
झुल्लंतउं णहि भमरझुणिल्लउं सुरतरुकुसुमदामजुयलुल्लउं ।
सारयससहरु जोण्हइ जुट्ठउ हेमंतागमदिणयरु दिट्ठउ ।
मीण झसंकझसा इव रइघर गंगासिंधुकलस मंगलधर ।
सरु माणसु समुद्दु खीरालउ मयरमच्छकच्छवरावालउ ।
सेहीरासणुं जणमणमोहणु इंदविमाणु फणिंदणिहेलणु । 10
रयणपुंजु हुयवहु अवलोइउ मुद्धइ सिविणउ पियहु णिवेइउ ।

घत्ता—सिविणयफलु जउजेट्ठु कहइ सहहि णिवकेसरि ॥
होसइ तिहुयणणाहु तुज्झु गब्भि परमेसरि ॥ १२ ॥

13

दुवई—हिरिसिरिकंतिसंतिदिहिबुद्धिहिं देविहिं कित्तिलच्छिहिं ॥
सेविय रायमहिसि महिसामिणि अहिणवपंकयच्छिहिं ॥ छ ॥

सक्कणिओइयाहिं पणवंतिहिं अवराहिं मि उवयरणइं देंतिहिं ।
तहिं पहुप्रंगणि पउरंदरियइ आणइ णाउरपुण्णपरिचरियइ ।

---

12 १ PS °कवोल°. २ B ° सुहावइ. ३ B अइरावइ. ४ B पुण. ५ S सायरसस°. ६ AP जुत्तउ. ७ A °दिणयरि दित्तउ; P °दिणयरदित्तओ. ८ A रइयर; P रइथर. ९ B कच्छमच्छव°. १० B सेरीहासणु. ११ B °पुंज. १२ B पियहि. १३ A जणजेट्ठु; B जउजिट्ठु. १४ AP पियहे. १५ P तिहुवण°.

13 १ S दिट्ठि. २ A सासामिणि; P तियसामिणि. ३ A अमराहिवउवयरणइं देंतिहिं. ४ AP °पंगणि. ५ APS परियरियइ.

---

12 4 *b* ईसाणविसिंदसमाणउ रुद्रवृषभसदृशः. 5 *a* रायसीहु सिंहराज इत्यर्थः. 6 *a* झुल्लंतउं अवलम्बमानम्. 7 *a* सारय° शरत्काल°; जुट्ठउ प्रीत्या सेवितः. 8 *a* झसंकझसा कामध्वजमत्स्यौ; रइघर रतिगृहौ; *b* गंगासिंधुकलस गङ्गासिन्धुभ्यां यौ चक्रिणे मङ्गलार्थं धृतौ तादृशौ. 9 *b* °रावालउ शब्दयुक्तः. 12 जउजेट्ठु यादवज्येष्ठो राजा.

13 3 *a* सक्कणिओइयाहिं इन्द्रनियोजिताभिः सेविता राज्ञी; *b* अवराहिं अपराभिश्च; उवयरणइं उपकरणानि. 4 *a* पउरंदरियइ पुरंदरस्य इन्द्रस्य.

मणिमयमंडवपसाहियमत्थउ पुव्वमेव णिहिकलसविहत्थउ । 5
उडुमाणाइं तिण्णि पविउड्डउ[6] धणयमेहु धणधारहिं वुट्ठउ ।
कत्तियसुक्कपक्खि छट्ठइ[7] दिणि उत्तरआसाढइ मयलंछणि ।
देउ जयंतु[8] णाणसंपण्णउ गयरूवेण गब्भि अवइण्णउ ।
आय देव देवाहिव दाणव वंदिवि भावें सफणि समाणव ।
पुज्जिवि जिणपियराइं महुच्छवि णच्चिय पवियंभियभंभारवि । 10
णवमासावसाणकयमेरें[10] पुणु वसुपाउसु विहिउ कुबेरें ।
पंचलक्खवरिसेहिं[11] णरसंकरि संजायइ णमिणाहजिणंतरि ।
सावणमासि समुग्गइ ससहरि पुण्णजोइ[12] पुव्वुत्तइ वासरि ।
तक्कालंतजीवि णिम्मलमणु जणणिइ जणिउ देउ सामलतणु । 15

घत्ता—उप्पण्णे[13] जिणणाहे सग्गि सुरिंदहु आसणु ॥
कंपइ ससहावेण कहइ व देवहु[14] पेसणु ॥ १३ ॥

14

दुवई—घंटाझुणिविउद्ध कप्पामर हरिसवसेण[1] पेल्लिया ॥
जोइस हरिरवेहिं वेंतर पडुपडहरवेहिं[2] चल्लिया ॥ छ ॥

भावण संखणिणायहिं णिग्गय गयणि ण माइय कत्थइ हय गय ।
सिवियाजाणहिं विविहविमाणहिं उल्लोवेहिं दियंतपमाणहिं ।
मोरकीरकारंडहिं चासहिं फणिमंजार[3]मरालहिं मेसहिं । 5
करिवसणाहयणीलवराहिं आया सुरवर सहुं सुरणाहिं ।
दारावइ पइट्ठ[4] परियंचिवि मायाडिंभें मायरि वंचिवि ।
जय परमेट्ठि परम पभणंतिइ उच्चाइउ जिणु सुरवइपत्तिइ[5] ।
पाणिपोमि[6] भसलु व आसीणउ इंदहु दिण्णउ तिहुयणराणउ[7] ।
अणिमिसणयणहिं सुइरु णियच्छिउ कयपंजलिणा तेण पडिच्छिउ । 10

६ AP परिउड्डउ; S परितुड्डउ. ७ P छट्ठहि. ८ P जयंत. ९ B माणु. १० B मेरं. ११ P °वरिसइं. १२ B पुण्णु. १३ S उप्पण्णहि. १४ A दइवहो; S दइयहो.

14 १ P हरिवचसेण. २ APS पडहसरेहिं. ३ APS °मज्जार°. ४ B पयट्ठ. ५ S सुरवर°. ६ AP पाणिपोम°. ७ AP तिहुवण°.

6 *a* उडुमाणाइं तिण्णि ऋतुत्रयं षण्मासानित्यर्थः; पविउड्डउ प्रवृष्टः; धणयमेहु कुबेर एव मेघः. 10 *b* पवियंभिय° प्रविजृम्भितः. 11 *b* वसुपाउसु धनवृष्टिः. 13 *b* पुण्णजोइ त्वष्टृयोगे; पुव्वुत्तइ षष्ठयाम्. 14 *a* तक्कालंतजीवि तत्कालः पञ्चलक्षवर्षकालः तस्यान्त्यं यद्वर्षसहस्रं तत्कालान्त्यजीवी.

14 1 °विउद्ध सावधाना जाताः. 2 हरिरवेहिं सिंहनादैः. 4 *b* उल्लोवेहिं उल्लोचैः; दियंतपमाणहिं दिगन्तप्रमाणैः. 6 *a* णीलवराहिं मेघैः. 7 *a* परियंचिवि त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य; *b* मायरि मातरम्. 8 *b* सुरवइपत्तिइ इन्द्रपत्न्या शच्या.

अंकि णिहिउ कंचणवण्णुज्जलि हरिणीलु व सोहइ मंदरयलि ।
घत्ता—ईसाणिंदें छत्तु देवहु उप्परि धरियउं ॥
सोहइ अहिणवमेहि[१] ससिबिंबु व विप्फुरियउं ॥ १४ ॥

15

दुवई—मंगलतूरवीरणिग्घोसें महिहरभित्तिदारणो ॥
चरणंगुट्ठएहिं संचोइउ सुरवइणा सवारणो ॥ छ ॥
तारायणगहपंतिउ लंघिवि सुरगिरिसिहरु झ त्ति आलंघिवि ।
दसदिसिवहि धाइयजोण्हाजलि अद्धचंदसंकासि सिलायलि ।
णच्चियसुररामारसणासणि णिहिउ सुणासीरें सिंहासणि । 5
णाहणाहु परमक्खरमंतें सायारें हबिंदुरेहंतें ।
इंदजलणजमणेरियवरुणहं पवणकुबेररुद्दहिमकिरणहं ।
पडिवत्तीइ दिणेसफणीसहं जण्णभाउ ढोइवि णीसेसहं ।
पंडुरेहिं णिज्जियणीहारहिं कलसहिं वयणविणिग्गयखीरहिं ।
णं कित्तीथणेहिं पयलंतहिं णं संसारमलिणु णिहणंतहिं । 10
णावइ रइरसतिस णिरसंतहिं णं अट्ठारहदोस धुयंतहिं ।
सित्तउ देवदेउ देविंदहिं गज्जंतहिं सिहरि व णवकंदहिं ।
घत्ता—इंदें जिणणिहियाइं पुप्फइं तंतुयबद्धइं ॥
णं वम्महकंडाइं आयमसुत्तणिबद्धइं ॥ १५ ॥

16

दुवई—हरिणा कुंकुमेण पविलित्तउ छज्जइ णाहदेहओ ॥
संझारायएण पिहियंगउ णावइ कालमेहओ ॥ छ ॥

---

८ P ईसाणंदें. ९ B °मेहें.

15 १ A °दारुणो. २ PS °गुट्ठएण. ३ AS °वह°. ४ AP °पसारियजोण्हा°. ५ BP सीहासणि. ६ P °फणेसइं. ७ B कंतीयणेहिं; P कित्तीघणेहिं. ८ S देवदेवु. ९ P तंतुहिं बद्धइं. १० P °कुंडाइं.

---

11 हरिणीलु इन्द्रनीलमणिः. 13 अहिणवमेहि नवीनमेघे.

15 4 *a* °वहि मार्गे. 5 *a* °रसणासणि कटिमेखलाशब्दे. 6 *b* सायारें हबिंदुरेहंतें स्वाकारेण परमाक्षरेण, हकारेण बिन्दुना ओंकारेण राजता, बिन्दुरोंकारवाचकः, ॐ स्वाहा इत्येवंरूपेणेत्यर्थः. 8 *a* पडिवत्तीइ प्रतिपत्त्या आदरेण. 10 *a* कित्तीथणेहिं कीर्तिस्तनैरिव कलशैः; पयलंतहिं प्रगलद्भिः. 11 *a* °तिस णिरसंतहिं तृष्णास्फेटकैः. 12 *b* सिहरि व णवकंदहिं नवमेघैर्गिरिवत्. 14 आयमसुत्तणिबद्धइं आगमसूत्रेण बन्धनं प्रापितानि.

16 1 हरिणा इन्द्रेण.

णिवसणु काइं तासु वण्णिज्जइ जो णिग्गंथभाउं पडिवज्जइ ।
सहइ हारु वच्छयलि विलंबिरु णं अंजणगिरिवरे सरणिज्झरु ।
कुंडलाइं रयणावलितंबइं कण्णालग्गाइं णं रविबिंबइं । 5
भणु कंकणहिं कवण किर उण्णइ भुयबंधणाइं व मुणिवइ वण्णइ ।
पहु मेहलइ अम्हइं जोएं पयणेउरइं कणंति व सोएं ।
सयमहु जाणइ जिणहु ण रुच्चइ भूसणु सो परिहइ जो णच्चइ ।
लोयायारें सव्वु समारिउं तियसिंदें थुइवयणु उईरिउं ।
णाणासद्दमहामणिखाणिइ पुणु लज्जिउ वण्णंतु सवाणिइ । 10
तुच्छइ जिणगुणपारु ण पेक्खइ अण्णु जइण्णु मुक्खु किं अक्खइ ।

घत्ता—अमर मुणिंद थुणंतु बाल वि बुद्धिइ कोमलें ॥
तो सव्वहं फलु एक्कु जइ मणि भत्ति सुणिम्मल ॥ १६ ॥

17

दुवई—दहिअक्खयसुणीलदुव्वंकुरसेसासीहिं णंदिओ ॥
धम्ममहारहस्स गइगुणयरु णेमि सहिओ ॥ छ ॥

पुणु दारावइपुरु आवेप्पिणु सुरुभाउ भावें भावेप्पिणु ।
तियरणसुविसुद्धिइ पणवेप्पिणु जिणु जणणिउच्छंगि थवेप्पिणु ।
णच्चइ सुरवइ दससयलोयणु देहसयउपहासियपवराणणु । 5
दिसिविदिसिपसारियचलदससयकरु डोल्लइ णहयलु सरवि सससहरु ।
माहि हल्लइ विसु मेल्लइ विसहरु ।
दिण्णुदंडवाउ णहि णज्जइ पायंगुट्ठणक्खु ससि छज्जइ ।
चलइ जलहि धरणीयलु रेल्लइ लीलइ बाहुदंडु जहिं घल्लइ ।

---

16 १ A तासु काइं. २ S °भाउ. ३ S वच्छयल°. ४ A गिरिवर. ५ P तियसेंदें. ६ B समीरिउ. ७ P सवाणिउ. ८ PS पेच्छइ. ९ S जघण्णु. १० A कोसल.

17 १ S °दुव्वंकुर°. २ ABPS °पुरि. ३ BS आणेप्पिणु. ४ AP read 3 *b* as 4 *a*. ५ S °भाउ. ६ B पणवेप्पिणु. ७ AP read 4 *a* as 3 *b*. ८ AB तिरयण°; K तिरयण in second hand but gloss त्रिकरण. ९ AB सुविसुद्धिं; P सुद्धबुद्धि. १० ABP दस°. ११ A सहसअद्ध°. १२ B adds तंतीमद्दलआइमहुरसरु. १३ A दिण्णदंडपाउ वि णहि; P ओहुंड°.

---

4 *b* सरणिज्झरु जलनिर्झरः. 5 *a* रयणावलि° रत्नश्रेणिः. 6 *a* कंकणहिं कङ्कणेषु; उण्णइ गर्वः. 7 *a* जोएं दीक्षावसरेण. 10 *a* णाणेत्यादि नानाविधशब्दमहारत्नखाणिरिव; *b* सवाणिइ स्ववाण्या. 12 कोमल मुग्धाः.

17 1 °सेसासीहिं शेषापुष्पैः आशीर्वादैश्च. 2 गइगुणयरु गमनस्य गुणकर्ता; णेमि व चक्रधारावत्. 4 *a* तियरण° त्रिकरणस्य. 6 *b* सरवि सूर्यसहितः. 8 *a* °वाउ पादः; णज्जइ ज्ञायते.

तहिं कुलमहिहरणियँरु विसट्टइ   विप्फुरंति तारावलि तुट्टइ । 10
णच्चिवि पम सरसु आणंदें   वंदिवि जिणु सहुं सुरवरवेंदें ।
गउ सोहम्मराउ सोहम्महु   पुरवरि णाहहु पालियधम्महु ।
णिवसंतहु वउ णिरुँवमरूवउं   दहधणुदंडपमाणुं पहूयउं ।
णवजोव्वणु सिरिहरु णिसामसु   सामिउँ एक्कु सहसवरिसाउसु ।
घत्ता—थिउ भुंजंतु सुहाइं णेमि सबंधवसंजुउ ॥ 15
भरहसरोरुहसूरु पुप्फदंतगणसंथुउ ॥ १७ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णेमितित्थकॅरउप्पत्ती णाम
सत्तासीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८७ ॥

१४ AB °सिहरु. १५ B णच्चवि. १६ P जिणवरु सहुं सुरविंदें. १७ PS सुरविंदें. १८ B णिरुपम°. १९ S पवाणु. २० A सामिउ एक्कु वरिसु सहसाउसु; P सामिउ सहसु एक्कु वरिसाउसु. २१ A °तित्थंकर°; S °तित्थयर°. २२ P सत्तासीमो; S सत्तासीतितमो.

14 *a* णि सा म सु अदैन्यः.

LXXXVIII

धणुगुणमुंकविसक्कसरु ओरुंद्धदिवायरकरपसरु ॥
पं बणकरि करिहि समावडिउ जरसिंधहु रणि मुरारि भिडिउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—सउरीपुरि विमुक्कि जउणाहें मउलियसयणवत्तए ॥
णिवसुइ कालजमणि कुलदेवयमायावसणियत्तए ॥ छ ॥

गज्जिइ हरिपयाणभेरीरवि — खंचिइ अमरिसविसरइ णवि णवि। 5
पंथि पंडुरि कप्पूरें वासिइ — करिघंटाटंकाररवविलासिइ ।
दसदिसिवहमयणिवहि पणासिइ — सायरतीरि सेण्णि आवासिइ ।
पित्तिइं मंति महंति अणुट्ठिइ — णारायणि कुससयणि परिट्ठिइ ।
आवाहिइ मणहरसुरहयवरि — दोहाईहूयइ रयणायरि ।
लद्धइ मग्गि विणिग्गेइ हरिबलि — पुणरवि वलियमिलियजलणिहिजालि ।
जिणपुण्णाणिलकंपियसयमहि — रयणकिरणमंजरिपिंजरणहि ।
बारहजोयणाइं वित्थिण्णइ — रइयइ णयरि रिद्धिसंपण्णइ ।

घत्ता—संगामदिक्खसिक्खाकुसलि वसुएवचरणसरोरुहभसलि ॥
असुरिंदमहाभडमयमहणि सिरिरमणालिंपडि महुमहणि ॥ १ ॥

P has, at the beginning of this Saṃdhi, the following stanza:—

बम्भण्डाखण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।
खण्डस्स समं समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

This stanza occurs at the beginning of XXXII for which see Vol. I. page 511. ABKS do not give it at all.

1 १ PS °मुक्कपिसक्क°. २ ABP रुद्ध°; KS ओरुद्धु. ३ P °करिहो; S °करिहे. ४ PS जरसेंधहो. ५ A विक्कमु. ६ A मउलियइ; P मिलियए. ७ BK माय°. ८ B गज्जिय°. ९ B णवणवि. १० A पवर°; PS पउर°. ११ AP °टंकारए. १२ P °दिसिवहे. १३ B °णिवह°. १४ S पयासिए. १५ B पित्तए; P पित्तिय°; S पितृमयंते; Als. पित्तृयमंते against Mss. १६ B मंत. १७ BP आवाहिय°. १८ B सुरवरहरि. १९ B विणिग्गय. २० B चलिए मलिए P वलिय मिलिय; Als. वलिए मिलिए against Mss. २१ Als. °कंपिए. २२ B सरोरुह°.

---

1 1 °मुक्कविसक्कसरु मुक्तबाणशब्दः, बाणेन सह मुक्तहुंकार इत्यर्थः; ओरुद्ध° अवरुद्धः. 3 विमुक्कि विमुक्ते रिपुभयान्नष्टे सति; जउणाहें विष्णुना. 4 णिवसुइ जरासंधपुत्रे निवर्तिते सति किं जातम्. 5 *b* अमरिसविसरइ क्रोधविषरये वेगे. 7 *a* °मयणिवहि मृगसमूहे. 8 *a* पित्तिइ पितृव्ये समुद्रविजये. 9 *a* °सुरहयवरि नैगमदेवचराश्वे; *b* दोहाईहूयइ द्विभागीभूते. 14 *a* °मय° मदः.

2

दुवई—दीहरकंसविडविउम्मूलणगयवरगरुयसाहसे ॥
थिये सुहिसीरिविहियआणाविहिकयणयभयपरव्वसे ॥ छ ॥

उप्पण्णइ सामिइ णेमीसरि तवहुयवहमुहहुयवम्मीसरि ।
कालि गलंतइ पइहि णिरंतरि एत्तहि रायगिहंकइ पुरवरि ।
मगहाहिउ अत्थाणि वइट्ठउ केण वि वणिणा पणविवि दिट्ठउ । 5
ढोइयाइं रयणाइं विचित्तइं तासु तेण करि णिहिय पवित्तइं ।
सपसायएण वयणु जोएप्पिणु पुच्छिउ राएं सो विहसेप्पिणु ।
कहिं लद्धइं माणिक्कइं दिव्वइं मलपरिचत्तइं णावइ भव्वइं ।
भणइ सेट्ठि हउं गउ वाणिज्जहि पत्थिव दविणावज्जणकज्जहि ।
दुव्वायं जलजाणु ण भग्गउं आहावि कत्थइ पुरवरि लग्गउं । 10
मइं पुच्छिउ णरु एक्कु जुवाणउ पुरवरु कवणु एत्थु को राणउ ।
कहइ पुरिसु पडिभडदलवट्टणु किं ण मुणहि दारावइ पट्टणु ।
किं ण मुणहि बहुपुण्णहं गोयरु राणउ एत्थु देउ दामोयरु ।
ता हउं णयरि पइट्ठउ केही मणहारिणि सुरवरपुरि जेही ।
घत्ता—तेहिं णिवघरु लंघिवि मंदरहु अणुहरइ णरिंदु पुरंदरहु ॥ 15
णर सुर सुतिरच्छणियच्छिरउ णारिउ णावइ अमरच्छरउ ॥ २ ॥

3

दुवई—तं पेच्छंतु संतु हउं विंभिउ गेण्हिवि रयणसारयं ॥
आयउ तुज्झु पासि मगहाहिव पसरियकरवियारयं ॥ छ ॥

तं णिसुणिवि विहिवंचणढोइउं पहुणा कालजमणमुहुं जोइउं ।
मइं जियंति जीवंति ण जायव हुयवहु लग्गु धरंति ण पायव ।

---

2 १ P °उम्मूलणे. २ S °गरुव°. ३ Als. थिए against Mss. ४ A °णइयरपरवसे; BS °णयहय°. ५ P गलंति पईहे. ६ S मगहाहिउ. ७ S दविणायज्जण°. ८ S दुव्वाइं. ९ B पुरि वरि. १० P °पुरे जेही. ११ P ताहें. १२ S नृवघरु. १३ A अणुहवइ. १४ A णवसरभिसिणिणियच्छिरउ. १५ APS तिरिच्छि°; B °तिरच्छि°.

3 १ S विम्हिउ. २ S तुज्झ. ३ A °करदिवायरं.

---

2 1 °विडवि° वृक्षः; °गय° गजवत्. 2 सुहि° सुहृत्. 4 *a* पइहि पतेः प्रजाया वा. 13 *a* गोयरु स्थानम्. 15 *b* अणुहरइ उपमां धरति. 16 *a* णरसुर नराः सुरसमाः; सुतिरच्छणियच्छिरउ शोभनं तिर्यगवलोकनं यासाम्; *b* अमरच्छरउ अमराप्सरसः.

3 2 °करवियारयं किरणसंघातम्. 3 *b* कालजमणमुहुं ज्येष्ठपुत्रस्य मुखम्.

कहिं वसंति णियजीविउं लेप्पिणु　　　वणि सियाल सीहहु लिहकेप्पिणु । 5
हउं जाणउं ते सयल विवण्णा　　　सिहिपइट्ठ प्राणभयदण्णा ।
णवरज्ज वि जीवंति विवक्खिय　　　णंदगोवभुयबलपरिरक्खिय ।
मारमि तेण समउं णीसेस वि　　　फेडमि बलविलासु पसरच्छवि ।
ता संगामभेरि अप्फालिय　　　गुरुरवेण मेइणि संचालिय ।
उट्ठिय जोह कोहदुद्दंसण　　　कंकणकवयविसेसविहूसण । 10
चावचक्ककोंतासणिभीसण　　　गुलुगुलंति मयमयगलणीसण ।
खलकुलदूसण णियकुलभूसण　　　हिलिहिलंत हरिवर बहुासण ।
हक्कारिय दिसिविदिससवासण　　　रुहिरासोसण डाइणिपोसण ।
इच्छियजयसिरिकरसंफालण　　　भग्गियअमरविलासिणिदंसण ।
घत्ता—रह रहियेहिं चोइय हयपवर　　　धाइय सुहडुक्खयखग्गकर ॥ 15
णाहि कहिं मि ण माइय सुरखयर　　　गुरुडमरडिंडिमोमुक्कसर ॥ ३ ॥

4

दुवई—लहु संचालिउ राउ जरसंधु मयंधु महारिदारणो ॥
गउ कुरुखेत्तमरुणचरणंगुलिचोइयमत्तवारणो ॥ छ ॥
भुयबलचप्पियसयणफणिंदहु　　　णारयरिसिणा गंपि उविंदहु ।
कहिउ गहीर वीर गोवद्धण　　　णियपोरिसगुणरंजियतिहुयण ।
दुज्जउ पइं जरसिंधु समायउ　　　बहुविज्जाणियरेहिं समेयउ । 5
अच्छइ कुरुखेत्तइ समरंगणि　　　सुहडविण्णसुरवहुआलिंगणि ।
अज्ज वि किरं तुहुं काइं चिरावहि　　　णियभुयालि किं णउ मणि भावहि ।
किं संघारिउ तहु जामाइउ　　　किं चाणूरु रणंगणि घाइउ ।
तं णिसुणिवि हरि कयपहरणकरु　　　उट्ठिउ हणु भणंतु दट्ठाहरु ।

४ P जाणमि. ५ P सिहिहि पइट्ठ. ६ AP पाण°. ७ PS पडिरक्खिय. ८ AB °विलास. ९ BPS संणाहभेरि. १० ABPS गुलुगुलंत. ११ B रहियइं. १२ AB °डामर°.

4 १ ABPS जरसेंधु. २ B °खेत्त अरुण°; P °खेत्तिमरुण°. ३ B चरणुंगुलि°. ४ S °सयल°. ५ P °तिहुवण. ६ B इहु; PS एहु. ७ PS जरसेंधु. ८ P समाइउ. ९ AP °दिंत°. १० AP तुहुं किर. ११ P दावहि. १२ S संहारिउ. १३ P °पहरणु.

6 *a* विवण्णा विपन्ना मृताः; *b* °दण्णा विदीर्णा भग्नाः. 7 *a* विवक्खिय शत्रवः. 8 *b* पसरच्छवि प्रकृष्टशरसदृशः, अथवा, प्रसरन्ती छविः कान्तिर्यस्य. 11 *b* गुलगुलंति शब्दं कुर्वन्ति; मयमयगल° मदोन्मत्ताः. 13 *a* °सवासण राक्षसाः शवाशनाः. 15 *a* रहियहिं सारथिभिः; *b* उक्खयखग्गकर उत्खातखड्गकराः. 16 *b* °डमर° भयोत्पादकः; °ओमुक्क° अवमुक्तः.

4 1 मयंधु मदान्धः. 3 *a* °सयण° नागशय्या. 7 *a* चिरावहि कालक्षेपं किं करोषि; *b* णियभुयालि निजोत्सुकत्वं (?) स्वभालीगारपणु (?).

हलहर अज्ज वइरि णिद्दारमि दे आएसु अलेवु वि मारमि । 10
ता संणद्ध कुद्ध ते णरवर चोइय गयवर वाहिय हयवर ।
पहयइं रणतूराइं रउद्दइं रवपूरियगिरिकुहरसमुद्दइं ।
जायवबलु जलणिहिजलु लंघिवि थिउ कुरुखेत्तु झ त्ति आलंघिवि ।
घत्ता—संणद्धइं वड्डियमच्छरइं करवालसूलसरझसकरइं ॥
अब्भिट्टइं कयरणकलयलइं दामोयरजरसिंधइं बलइं ॥ ४ ॥ 15

5

दुवई—हयगंभीरसमरभेरीरवबहिरियणहदियंतयं ॥
उक्खयखग्गतिक्खखणखणरवखंडियदंतिदंतयं ॥ छ ॥
कोंतकोडिचुंबियकुंभयलइं रुहिरवारिपूरियधरणियलइं ।
चुयमुत्ताहलणियरुज्जलियइं विलुलियंतचुंभलपक्खलियइं ।
सेल्लविहिण्णवीरवच्छयलइं सरवरपसरपिहियगयणयलइं । 5
उच्छलंतघणुगुणटंकारइं जोहविमुक्कफारहुंकारइं ।
तोसियफणिविंणयरंसलसिसकइं वज्जमुट्ठिचूरियसीसक्कइं ।
हयमत्थइं मत्थिकरसोल्लइं दलियट्ठियवीसढवसागेल्लइं ।
मोडियधुरइं विहिण्णतुरंगइं लउडिघायजज्जरियरहंगइं ।
पग्गहणिल्लूरणविहिभीसइं करकड्डियसारहिसिरकेसइं । 10
भग्गरहाइं लुणियधयदंडइं मासखंडपीणियभेरुंडइं ।
लुद्धगिद्धखद्धंगपएसइं सुरकामिणिकरघल्लियसेसइं ।
वणविगलियधाराकीलालइं किलिकिलंति ओहाणिवेयालइं ।
घत्ता—ता रहवरहरिकरिवाहणहं जुज्झंतहं दोहं मि साहणहं ॥ 15
जो सुहडहं मच्छरग्गि जलिउ तहु धूमु व रउ णहि उच्छलिउ ॥ ५ ॥

१४ B णिद्दारिमि. १५ ABP कुद्ध णिव णरवर. १६ PS रहवर. १७ B °जरसिंधवलइं; PS °जरसेंधइं.

5 १ P °तूरभेरी°. २ BPSAls. °दियंतइं. ३ APAls. °तिक्खखग्ग°. ४ BPSAls. °दंतइं. ५ P विछुलियअंत°. ६ A °पिहिण्ण°; S °विहीण°. ७ P °धणगुण°. ८ APS हयमत्थय°. ९ B मंकिक°. १० A रसगिल्लइं. ११ P लगुडि°. १२ AP खग्गाह°. १३ A णिल्लूरियहय°. १४ AP °सीसइं. १५ B °करकेसइं. १६ S छुलिय°. १७ B मंस°. १८ A °पवेसइं. १९ B °विगलिय°. २० ABP किलिकिलंत°; S किलिगिलंत°. २१ B दोहि. २२ P तहे भूम. २३ B धूमरओ.

13 *a* जायवबलु यादवसैन्यम्.

5 3 *a* °चुंबिय° स्पृष्टानि. 5 *a* सर° बाणाः. 7 *b* °सीसक्कइं शिरस्त्राणानि. 8 *b* °वीसढ° बीभत्सा. 9 *b* लउडि° यष्टिः; °रहंगइं चक्राणि. 10 *a* पग्गह° रज्जुः. 12 *a* °खद्धंगपएसइं भक्षितशरीरप्रदेशानि; *b* °सेसइं पुष्पाणि. 13 *b* किलिकिलंति शब्दं कुर्वन्ति. 14 *a* °हरि° अश्वाः. 15 *b* रउ रजो धूलिः.

6

दुवई—णं मुहवडु णिहित्तु जयलच्छिहि लोयणपसरहारओ ॥
णं रणरक्खसस्स पवणुद्धुउ पिंगलकेसभारओ ॥ छ ॥

असिधारातोएण ण पसमिउ　　　　पंडुरछत्तहु उवरुप्परि थिउ ।
उड्डु गंपि कुंभत्थलि पडियउ　　　　णिब्भभासें गयवरि चडियउ ।
गंधि थंतु कण्णेण झडप्पिउ　　　　मइलणसीलउ कासु ण विप्पिउ । 5
वंसि थंतु चिंधेण णलत्थिउ　　　　दंडि थंतु चमरेण विहत्थिउ ।
करपुक्खरि पइसइ गणियारिहि　　　　लोलइ थोरथणत्थलि णारिहिं ।
चेलंचलपडिपेल्लिउ गच्छइ　　　　चउदिसि णिब्भंछिउ किं अच्छइ ।
दिट्ठिपसरु असिपसरु णिवारइ　　　　अंतरि पइसिवि णं रणु वारइ ।
मेणि विलग्गु वीसासु व मग्गइ　　　　पयणिवडिउ णं पायहु लग्गइ । 10
हरिखुरखउ रोसेण व उट्ठइ　　　　जं जं पावइ तहिं तहिं संठइ ।
ढंकइ मणिसंदणजंपाणइं　　　　जोयंतहं सुरवरहं विमाणइं ।

घत्ता—धूलीरउ रुहिररसोल्लियउं　　णं रणवहुराएं पेल्लियउं ॥
थिउ रत्तु पउ वि णउ चल्लियउं　　णं वम्महबाणें सल्लियउं ॥ ६ ॥

7

दुवई—पसमिइ धूलिपसरि पुणरवि रणरहसुद्धाइया भडा ॥
अंकुसवंस विसंत विसमुब्भड चोइय मत्तगयघडा ॥ छ ॥

कासु वि णारायहिं उरु दारिउं　　　　णायहिं णं वसुहयलु वियारिउं ।

---

6 १ A णहरक्खसस्स. २ S पवणुद्धउ. ३ A पसरिउ. ४ P °उपरि. ५ B गल. ६ P चमरेण विहत्थिउ. ७ A रउविसु; PS चउदिसु. ८ AB णिब्भच्छिउ; S णिब्भंछिउ. ९ AP add after this: अंधारउ करंतु दिस गच्छइ, A मंतु पपुच्छइ कहिं किर गच्छइ, P अह चंचलु किं णिच्चलु अच्छइ. १० AP °पसर. ११ A सवणि पइसि वीसासु. १२ APS व. १३ PS पयवडियउ. १४ APS पायहिं. १५ A तं तहिं. १६ B रत्तपओ वि; P रत्तउ पउ वि; Als. रत्तउं पउ वि against Mss. १७ S ण चल्लियउं. १८ A °बाणइं.

7 १ S °सुद्धाविया. २ A °विसविसंत.

---

6 1 मुहवडु मुखवस्त्रं अन्तरपटः. २ पवणुद्धुउ पवनकम्पितः. 4 *b* णिब्भभासें गजो जले स्नानं करोति तदनन्तरं शुण्डया निजपृष्ठे रजः क्षिपति; तस्य तु रजसो गजपृष्ठोपरिपतनाभ्यासः संजातः, तदभ्यासवशेन तस्य पृष्ठे रजः पतितम्. 7 *a* करपुक्खरि शुण्डाग्रे मुखे; गणियारिहि हस्तिन्याः. 8 *b* चउदिसि णिब्भंछिउ सर्वत्र भर्त्सितः. 10 *a* वीसासु अ मग्गइ विश्वासं याचते; *b* पयणिवडिउ पादलग्नम्. 13 *b* रणवहुराएं रणवधूरागेण. 14 *a* पउ वि पादमपि.

7 3 *a* णारायहिं नाराचैर्बाणैः; *b* णायहिं नागैर्वसुधातलं विदारितमिव.

को वि अद्धइंदें सिरि भिण्णउ सोहइ भड्ड रुहु व अवइण्णउ ।
गुणमुक्केहिं सगुणसंजुत्तउ बहुलोहेहिं लोहपरिचत्तउ । 5
को वि सुहडु धरणियलु ण पत्तउ मग्गणेहिं णाइ व उक्खित्तउ ।
केण वि जगु अवलिउ णिरु णिद्धें असिधेणुयविदत्तजसदुद्धें ।
धरहुं ण सक्किउ छिण्णकरग्गहिं केण वि धरिउ चक्कु दंतग्गहिं ।
कासु वि सिरु अच्चंततिसाइउं असिवरपाणियधारहिं धाइउं ।
कासु वि अंतइं पयजुयखुलियइं पहुरिणबंधणाइं णं दुलियइं । 10
कासु वि गलिउं रत्तु गत्तंतहु फेडइ तिस णिरु तिसियकयंतहु ।
कासु वि सिव कामिणि व णिरिक्खइ णहहिं वियारिवि हियवउं चक्खइ ।
को वि सुहडु पहरणु णउ मुज्झइ मुच्छिउ उम्मुच्छिउ पुणु जुज्झइ ।
को वि सुहडु जहिं जहिं परिसक्कइ तहिं तहिं संमुहुं को वि ण ढुक्कइ ।
घत्ता—चलचामरपट्टालंकरिय हरिवाहिय मच्छरफुरहुरिय ॥ 15
अब्भिडिय गरुयरणभारधर पवरासवारकरवालकर ॥ ७ ॥

8

दुवई—हयसंणाहदेहणिग्घट्टियलोहियतुरयसंकडे ॥
के वि समोवडंति पडिभडथडि विरसियतूरसंघडे ॥ छ ॥
जयसिरिरामालिंगणलुद्धइं एक्कमेक्क पहरंतइं कुद्धइं ।
असिसंघट्टणि उट्ठिउ हुयवहु कढकढंतु सोसिउ सोणियदहु ।
दसदिसिविसासइं तेण पलित्तइं पक्खरचमरइं चिंधइं छत्तइं । 5
ता पडिवक्खपहरभयतट्ठउं महुमहबलु दसदिसिवहणट्ठउं ।

३ APS अद्धयंदें. ४ AP सिरु. ५ AP धरणियले. ६ A णावइ उक्खित्तउ. ७ P °धेणुव°. ८ B °विढत्त°. ९ A णच्चंतु; P अच्चंतु. १० PS °धारहे. ११ PS धाइउं. १२ P °जुव°. १३ A घुलियउ. १४ A खलियउ; P चलियइं; S वलियइं. १५ P °कंतहो. १६ A पहरणि ण समुज्झइ; P पहरणे णउ. १७ A मुच्छिउ पुणु उ मुच्छिउ जुज्झइ; P मुच्छिउ मुच्छिउ पुणु पुणु जुज्झइ. १८ P समुहुं. १९ A °पटालंकरिय. २० A °हुरुहुरिय; S °फुरुहरिय. २१ AP अब्भिट्ट गरुव;°; S अब्भिट्टिय.

8 १ A °णिघट्टिय°. २ B °छुट्टिय°; P °लोहिय°. ३ A °तूरसंकडे. ४ P °दिसिवहे; S °विसवह°.

4 *a* अद्धइंदें अर्धचन्द्रेण. 5 *a* गुणमुक्केहिं मार्गणैर्याचकैश्च; सगुण° त्यागी दातृवत्. 6 *b* उक्खित्तउ उद्धः (ऊर्ध्वः) स्थापितः. 9 *a* अच्चंततिसाइउं अतीव तृषितं जातम्; *b* धायउं तृप्तम्. 11 *a* गत्तंतहु देहमध्यात्. 12 *a* सिव शृगाली. 13 *a* णउ मुज्झइ न विस्मरति. 14 *a* परिसक्कइ प्रसरति.

8 2 समोवडंति अवपतन्ति; °संघडे युग्मे उभयसैन्यतूर्यत्वात्. 4 *b* कढकढंतु क्वाथं कुर्वन्; सोणियदहु रक्तह्रदः. 5 *a* °आसइं मुखानि; पलित्तइं प्रज्वालितानि. 6 *a* °तट्ठउं भीतम्.

पोरिसगुणविम्हावियवासउं इय भणंतु सई आयउ केसउ।
णरहरि तुरय रहिणं संचूरइ सारइ दारइ मारइ जूरइ।
धीरइ हक्कारइ पच्चारइ हणइ वणइ विहुणइ विणिवारइ।
दमइ रमइ परिभमइ पयट्टइ संवट्टइ लोट्टइ आवट्टइ। 10
सरइ धरइ अवहरइ ण संचइ कंचइ कुंचइ लुंचइ वंचइ।
उल्लालइ वालइं अप्फालइ रूसइ तूसइ पीलइ हूलइ।
ईहइ संखोहइ आयाहइ रोहइ मोहइ जोहइ साहइ।
अंतं लल्लंतइं गांढइं ताडइ रुंडमुंडखंडोहइं पाडइ।
वेढइ उव्वेढइ संदाणइ रक्खे भुक्खारीणइं पीणइ। 15
वग्गइ रंगइ णिग्गइ पविसइ दलइ मलइ उल्ललइ ण दीसइ।

घत्ता—कुसपास विलुंचइ हयवरहं गलगिज्जउं तोडइ गयवरहं॥
वरवीर रणंगणि पक्खिलइ मंडलियहं रयणमउड दलइ॥ ८॥

9

दुवई—जुज्झइ वासुएउ परमेसरु परबलसलिलमंदरो॥
सुरकामिणिणिहित्तकुसुमावलिणवमयरंदपिंजरो॥ छ॥

गयमयपंकभमिइ चलमहुयरि हयलालाजलवाहिणि दुत्तरि।
संदणसंदाणियइ दुसंचरि रुंडमुंडविच्छंडभयंकरि।
लोहियथंभियमेहिं सुसंचुयइ कडयमउडकुंडलहारंचिइ। 5
सामिपसायदाणरिणणिग्गमि ढुक्क विहंगमि तहिं रणसंगमि।

५ S °विम्हाविय°. ६ S °वासवु. ७ AP संपायउ. ८ S केसवु. ९ AP सो णरहरि तुरयहिं (P तुरयइं) संचूरइ; BAls. णरकरि though Als. thinks that क is written in second hand; K records a *p:* णरकरि इति वा पाठः; T also records a *p:* णरकर (रि ?) इति वा पाठः. १० S रहेण. ११ ABS खुंचइ; P कोंचइ. १२ A चालइ. १३ B अप्फालइ. १४ P लूहइ. १५ S जोहइ मोहइ. १६ A अंतललंतं; S अण्णेणण्णं. १७ APS गाढं. १८ AS °रीणे; P रिण (इं) १९ S रग्गइ. २० B णिवसइ. २१ P पइसइ.

9 १ A °मंदिरो. २ ABS °कुसुमंजलि°. ३ PS °मयरिंद°. ४ P °भमिय°. ५ K °जलि वाहणि दुत्तरि but gloss नदी on जलिवाहणि. ६ BPS °विच्छडु°. ७ S °थंमेहिं. ८ APS सुसिंचिए; B सुसंचिए. ९ B रणि.

7 *a* °वासउ इन्द्रः. 8 *a* णरहरि नरैरारूढा अश्वाः; रहिण रथिकान्. 9 *a* धीरइ स्वपक्षान् धीरयति. 10 *a* पयट्टइ प्रवर्तते. 12 *a* हूलइ प्रोइ (?) शूलप्रोतं करोति (?) 15 *b* रक्खे राक्षसान्. 17 *a* कुसपास तर्जनकान्; °गिज्जउं ग्रीवाभरणम्.

9 1 °सलिलमंदरो° सलिलमन्थने मन्दरः. 3 *a* गयमयपंक° गजमदकर्दमे. 4 *b* °विच्छंड° समूहेन. 5 *a* °थिंमेहिं बिन्दुभिः.

सिरिसंकुलससामत्थमयंधें माहउ पचारिउ जैरसंधें ।
णंदगोव चियतुर्दें मत्तउ जं तुहुं महु करि मरणु ण पत्तउ ।
तं जाणहि करिमयररउद्दइ लिहिकिवि थक्कउ लवणसमुद्दइ ।
पइं विणु गाइहिं महिसिहिं रुण्णउं णंदहु केरउं गोउलु सुण्णउं । 10
जाहि जाहि गोवाल म ढुक्कहि अज्जु मज्झु कमि पडिउ ण चुक्कहि ।
णिवकुलकमलसरोवरहंसहु जेण परक्कमु भग्गउ कंसहु ।
तं भुयबलु तेरउं दक्खालहि पेक्खहुं कुलकलंकु पक्खालहि ।
एवहिं तुज्झु ण णासइं जुत्तउं ता णारायणेण पडिवुत्तउं ।
घत्ता—पइं मारिवि दारिवि अज्जु रणि तोसावमि सुरवर णर भुवणि ॥
उज्जालिवि णंदहु तणउ कउं गोमंडलु पालमि गोउं हउं ॥ ९ ॥

10

दुवई—अवरु वि पेक्खु पेक्खु हरिसुज्जलसिरिथणकुंकुमारुणा ॥
एए बाहुदंड महुं केरा वइरिकरिंददारणा ॥ छ ॥

एए बाण एउं बाणासणु एहु हुंदु करिवरखंधासणु ।
इहु सो तुहुं रिउ एउं रणंगणु एउं सक्खि सुरभरिउं णहंगणु ।
जइ णियकुलपरिहउं ण गवेसमि जइ पइं कंसपहेण ण पेसमि । 5
तो बलएवहु पय ण णमंसमि अरहंतहु सासणु ण पसंसमि ।
हउं णउ णासमि धाउ पयासमि अज्जु तुज्झु जीविउं णिण्णासमि ।
इय गज्जंतहिं भंगुरभावइं दोहिं मि अप्फालियइं सचावइं ।
उट्ठिउ गुणटंकारणिणायउ वेविउ वाउ वरुणु जडु जायउं ।
सहुभएण व तेण चमक्कइ सुरकरि दाणु देंतु णउ थक्कइ । 10
ससि तसियउ हुउ झीणकलालउ थिउ जमु णं भयभीयं कालउ ।
जलणिहिजलइं चलइं परिघुलियइं गहणक्खत्तइं महियलि लुलियइं ।
कंपियाइं सत्त वि पायालइं गिरिसिहरइं णिवडियइं करालइं ।

१० AP सिरिकुलबलसामत्थ°. ११ P जरसेंधें. १२ S नृवकुल° १३ A तोसाववि; P तोसावेमि. १४ सुर णरवर णर. १५ A उज्जालउं; S उज्जालमि. १६ P गो हउं.

10 १ S पेक्खु once. २ S वइरिंददारणा. ३ P एहुं. ४ S °परिहवु. ५ P जाइउ. ६ PS चवकइ. ७ ABPSAls झीणु कला°. ८ APS भयभीयए.

7 *a* °सकुल° स्वकुलम्. 10 *a* रुण्णउं रुदितम्. 13 *b* कुलकलंकु त्वं गोपपुत्रो जनैर्ज्ञायते इति कुलकलङ्कः. 16 *a* कउं क्रमः; *b* गोमंडलु भूमण्डलम्; गोउ गोपः.

10 3 *b* हुंदु बलभद्रः. 4 *b* सक्खि साक्षिभूतम्. 5 *a* गवेसमि स्फेटयामि. 9 *b* वेविउ कम्पितः; जडु जलजातः. 10 *a* चमक्कइ बिभेति.

घत्ता—अमरासुरविसहरजोइयइं तोणीरइं खंधारोइयइं ॥
उप्पुंखविसिखइं संगयइं णं गरुडइं पिंछइं णिग्गयइं ॥ १० ॥ 15

11

दुवई—वलइयरयणसारि बहुपहरण बहुलसमीरधुयधया ।
ता जरसिंधरायदामोयरपयजुयचोइया गया ॥ छ ॥

करडगलियमयमिलियमहुयरा जलहर व्व पविमुक्कसीयरा ।
सायर व्व गज्जणमहारवा वइवसु व्व तइलोक्कभइरवा ।
मुणिवर व्व कयपाणिभोयणा थीयण व्व लीलावलोयणा । 5
पत्थिव व्व सोहंतचामरा खलणर व्व परिचत्तभीयरा ।
सुपुरिस व्व दढबद्धकच्छया रक्खस व्व मारणविणिच्छया ।
सुररह व्व घंटालिमुहलिया वासर व्व पहरेहिं पयलिया ।
णेवणिहि व्व रयणेहिं उज्जला कज्जलालिपुंज व्व सामला ।
चरणचालचालियधरायला खलखलंतसोवण्णसंखला । 10
पुक्खरग्गसंगहियगंधया एक्कमेक्कमारणविलुद्धया ।
रोसजलणजालोलिछाइया बिहिं मि कुंजरा सउहु धाइया ।

घत्ता—कालउ सुरचावालंकरिउ कंडिछुरियइं विज्जुइ विप्फुरिउ ॥
सरधारहिं वुट्ठउ महुमहणु णं णवपाउसि ओत्थरिउ घणु ॥ ११ ॥

12

दुवई—सरणीरंधपसरि संजायइ खगु वि ण जाइ णहयले ॥
विद्धंतेण तेण भड सूडिय पाडिय मेइणीयले ॥ छ ॥

---

८ BP °रोहियइं. ९ S संगइं. १० BP पिच्छइं. ११ K णिग्गइं.

11 १ P वलविय°. २ A °रणसारि. ३ PS जरसेंध°. ४ ABS वइवस व्व. ५ B तिलुक्क°; P तेलोक°. ६ BAls. लीलाविलोयणा. ७ S खलयण व्व. ८ AB परच्चित्त°. ९ ABP सुरहर व्व. १० BS घंटाहिं मुह°. ११ P णिवणिहि. १२ P पुंखर व्व. १३ S ढाइया. १४ A सहुउहुं; BP समुहुं. १५ B करि. १६ P °छुरिए. १७ P विप्फुरियउ. १८ B उत्थरिउ.

12 १ AP °णीरंधयारे. २ S विंधंतेण.

---

14 *b* खंधारोइयइं स्कन्धारोपितानि. 15 *a* संगयइं गतानि.

11 1 °रयण° दन्ताः; °सारि° पल्याणम्; °धुयधया कम्पितध्वजाः. 4 *b* वइवसु व्व यमवत्. 7 *a* °कच्छया वरत्रा ब्रह्मचर्यं च. 8 *a* सुररह व्व देवरथवत्; *b* पहरेहिं यामैर्घातैश्च. 9 *a* रयणेहिं रत्नैर्दन्तैश्च. 11 *a* पुक्खरग्ग° शुण्डाग्रम्. 14 *a* सर° जलं बाणश्च.

12 1 सरणीरंधपसरि निश्छिद्रतया शरप्रसरे, निरन्तरे; खगु पक्षी. 2 तेण नारायणेन.

वरधम्मेण अइ वि परिचत्ता	लोहाणिबद्धा चित्तविचित्ता ।	
परणरजीवहारि दुद्दंसण	खंचलयर धावइ कामिणिपेण ।	
वम्मविहंसण पिसुणसमाणा	दूरोसारियअमरविमाणा ।	5
धणुहें दिण्णउं अइ वि णवेप्पिणु	कोडिउ ताउ दो वि मेल्लेप्पिणु ।	
लक्खहु धावइ णं तिट्टालुय	अह किं किर करंति जड गुणचुय ।	
मग्गणा वि णिय मोक्खहु कण्हे	वइरिवीरणिद्दारणतण्हें ।	
ता मगहाहिवेण रूसंतें	हरिधणुवेयणाण दूसंतें ।	
णियसरेहिं विणिवारिय रिउसर	विसहरेहिं छिण्णा इव विसहर ।	10
घत्ता—ता कण्हें विद्धउ पइसरिवि	धयछत्तइं चमरइं कप्परिवि ॥	
णरवइ णारायहिं वणिउ किह	चुत्तेहिं विलासिणिलोउ जिह ॥ १२ ॥	

13

दुवई—ता देवइसुयस्स बलसत्ति पलोइवि णिज्झियावणी ॥
मणि चिंतविय विज्ज जैरसिंधें विसरिसविविहरूविणी ॥ छ ॥

दंडउं—णवर पवररायाहिराएण संपेसिया दारणी मारणी मोहणी थंभणी सव्वविज्जावलच्छेइणी ॥ १ ॥

पलयघरवारणी संगया खग्गिणी पासिणी चक्किणी सूलिणी हूलणी मुंडमालाहरी कालकावालिणी ॥ २ ॥

पयडियमुहदंतपंतीहिं हीं हि त्ति हासेहिं पिंगुद्धकेसेहिं मायाविरूवेहिं भीमेहिं भूएहिं रुद्धा रहा ॥ ३ ॥ 5

हरिकरिवरे किंकरे छत्तदंडम्मि चावम्मि चिंधम्मि जाणे विमाणम्मि कण्हेण जुज्झे रिऊ दीसए ॥ ४ ॥

३ S कामिणिजण. ४ AP तो वि बेण्णि; BAls. ताउ दोण्णि. ५ PAls. धाइय. ६ AP कुणंति. ७ PS णाणु.

13 १ B बलसत्तिए लो°. २ S पलोयवि. ३ S णिज्झया°. ४ A चित्तविय; S चिंतवीय. ५ PS जरसेंधें. ६ P वेविहरूपिणी. ७ A omits दंडउ. ८ S omits मोहणी. ९ B °छेयणी. १० AP पलयघणधारिणी; B पलयघरवारिणी; Als. पलयघरवारणी against Mss. and against gloss in all Mss. ११ A omits हूलणी; S हूलिणी. १२ S हा हं ति. १३ AP मायाविरूवेहिं. १४ P भूवेहिं. १५ K omits चावम्मि चिंधम्मि. १६ P कण्हेण कुद्धेण जुज्झेवि रिऊ. १७ BK रिउ.

5 *a* वम्मविहंसण मर्मविध्वंसकाः. 7 *a* तिट्टालुय तृष्णालवः. 8 *a* मोक्खहु मोक्षं लक्ष्यं प्रति बाणाः प्रेषिताः. 9 *b* °धणुवेयणाण दूसंतें धनुर्वेदज्ञानदूषणं कुर्वता. 11 *a* विद्धउ राजा विद्धः. 12 *a* वणिउ व्रणितः.

13 4 पलयघरवारणी यमादप्यधिकबलयुक्ता इत्यर्थः; संगया एकत्रीभूता; कालकावालिणी कृष्णा कापालिनी.

विहुणेइ सयलं बलं जाव फुट्टंतसव्वट्ठिअंगेहिं सव्वंतराले चलंतुग्गपक्खिलदकेऊहरो संठिओ ॥ ५ ॥

फणिसुरणरसंथुओ सूरसंग्रामसंघट्टसोढो महामंतवाईसरो तप्पहावेण णिण्णासिया ॥ ६ ॥

जलहरसिहरे खलंती वलंती घुलंती तसंती रसंती सुसंती चलायासमग्गे सुदूरं गया देवया ॥ ७ ॥

घत्ता—हरिदंसणि णइयलि दिण्णपय जं बहुरूविणि णासेवि गय ॥ 10
तं परतरुणीगलहारहर पहुणा अवलोइय णियसकर ॥ १३ ॥

14

दुवई—पभणइ कोवजलणजालारुण विट्ठि विवंतु माहवे ॥
किं कीरइ खलेहिं भूएहिं थिएहिं गएहिं आहवे ॥ छ ॥

तेण दुंछिओ हरी णरपिंडमुंडखंडणे किं बहूहिं किंकरेहिं मारिएहिं भंडणे ।
होइ भू हए णिवे ण वुज्झसे किमेरिसं एहि कड्ढ चिट्ठ दुट्ठ पेच्छ मज्झ पोरिसं ।
केसरि व्व दुद्धरो करग्गणक्खराइओ सो वि तस्स संमुहो खमच्छरो पधाइओ ।
ता महीसरेण झ त्ति पाणिपल्लवे कयं लोयमारणक्कबिंबसंणिहं सचक्कयं । 5
उत्तमेण कुंकुमेण चंदणेण चच्चियं भामियं करेण वीरदेहरत्तसिंचियं ।
गुत्थपंचवण्णपुप्फदामएहिं पुज्जियं राहियामणोहरस्स संमुहं विसज्जियं ।
चंडसूरतेयरासिचिच्चियच्चिसच्छहं कालरूवभीमभूयभगुदूयदूसहं ।
वेरितासयारि भूरिभूइभाइ भासुरं भीयजीयभट्टचेट्ठतट्ठकिंणरासुरं । 10

१८ BKP विहुणेइ. १९ B पुट्टंत; P फुट्टंति. २० B सव्वट्ठिअंगम्हि. २१ A °केऊरहो; P °केऊरहे. २२ A फणिणरसुर°. २३ APS °संगाम°; P °संगामि संधाविओ सो महापुण्णणेमीसरो तप्पहा° in second hand. २४ A वलंती. २५ B तहु दंसणि in second hand; S जिणदंसणि.

14 १ A दोच्छिओ; B दुच्छिओ; S दोंछिओ. २ ABP णिपिंड°. ३ P होउ. ४ B डज्झसे; P जुज्झसे. ५ Als. °मारणक्क° against Mss. misunderstanding the gloss. ६ A °बिंबसण्णिहं पिसक्कयं. ७ A गुत्त; PS गुंथ°. ८ BP °पुप्प°. ९ A चंदसूरराशि°; B चंडसूरतेयरासि°. १० A °सच्छिहं. ११ A °भट्टकिट्ठणट्ठकिंणरा°.

---

6 जाणे वाहने; जुज्झे युद्धविषये. 7 चलंतुमापक्खिलदकेऊहरो संठिओ चलोग्रगरुडकेतुधरः संस्थितः. 9 चला चपला. 11 *a* °हर अपहर्ता.

14 3 *a* दुंछिओ तिरस्कृतः; णरपिंड° मनुष्यशरीरम्. 4 *a* होइ इत्यादि नृपे हते सति पृथ्वी भवति स्ववशा. 5 *a* करग्गणक्खराइओ कराग्रस्थितखड्ग एव नखराजितः. 6 *b* लोयमारणेऽक्कबिंबसंणिहं लोकमारणे प्रलयार्कबिम्बसदृशम्. 8 *b* राहिया° गोपाङ्गना. 9 *a* °चिच्चियच्चि° अभ्यर्चिः. 10 *a* °तासयारि त्रासकारि; भूरिभूइभाइ प्रचुरविभूतिदीप्त्या.

घत्ता—णाणामाणिक्कहिं वेयंडिउं तं रिउरहंगु हरिकरि चडिउं ॥
णियकंकणु तिहुयणसुंदरिए णं पाहुडु पेसिउं जयसिरिए ॥ १४ ॥

15

दुवई—तं हत्थेण लेवि दुव्वोल्लिउ पुणरवि रिउ णराहिओ ॥
अज्ज वि देहि पुहवि मा णासहि अणुणहि सीरि सामिओ ॥ छ ॥

तं णिसुणेवि दुर्सु मगहेसें आरुट्ठें कयंतभडभीसें ।
तुहुं गोवालु बालु णउं जाणहि संढु होवि कामिणियणु माणहि ।
जइ किं सिहि सिहाहिं संतावहि महु अग्गइ सुहडत्तणु दावहि । 5
चक्कें पण कुलालु व मत्तउ अज्जु मिर्त्तु काहिं जाहि जियंतउ ।
ओसरु सरु पईसरु मा जमपुरु जाम ण भिंदमि लत्तिइ तुह उरु ।
राउ समुद्दविजउ कम्मारउ वसुएउ वि पाइक्कु महारउ ।
तुहुं वंइं तासु पुत्तु किं गज्जहि थिद्धु धरणि मग्गंतु ण लज्जहि ।
हरिणु व सीहें सहुं रणु इच्छहि भिच्चु होवि रायत्तहु वंछहि । 10
अज्ज मज्जिहिसि पाव पावें तुहुं णासु णासु मा जोयहि महुं मुहुं ।
ता हरिणा रहचरणु विमुक्कउं रविबिंबु व अत्थइरिहि ढुक्कउं ।

घत्ता—णरणाहहु छिण्णउं सिरकमलु णावइ रंगु णवकुसुमदलु ॥
थिउ हरि हरिसें कंटइयभुउ पवरच्छरकोडीहिं थुउ ॥ १५ ॥

16

दुवई—हइ जरसिंधराइ महुमहसिरि रुंजियमहुयरालओ ॥
सुरवरकरविमुक्कु णिवडिउ णववियसियकुसुममेलओ ॥ छ ॥

---

१२ B वियडियउं.

15 १ PS णराहिवो. २ B पुहइ. ३ PS पत्थिवो. ४ P पउत्तु. ५ B ण हु. ६ AP चक्केण. ७ B मित्तु. ८ AP अचित्तउ. ९ P ऊसर. १० B पइसह. ११ A तहु पइं तासु; B वइ; P वरि. १२ BS होइ. १३ ASAls. रायत्तणु. १४ APS अत्थइरिहि. १५ A णाइं. १६ AP रहंगें.

16 १ B जरसिंधु; P जरसेंधे; S जरसेंध°. २ S रुंजियं. ३ P °विमुक्क.

---

11 *a* वेयडिउं जटितम्.

15 2 अणुणहि प्रार्थय. 5 *a* सिहि सिहाहिं संतावहि अग्निं ज्वालाभिर्ज्वालयसि. 6 *a* कुलालु व कुम्भकारवत्. 7 *b* उरु हृदयम्. 9 *a* वइं पादपूरणे. 10 *b* भिच्चु होवि इत्यादि भृत्यो भूत्वा राजत्वं वाञ्छसि. 12 *b* अत्थइरिहि अस्ताचले.

अरिणारिंद्णारीमणजूरइं कउ कलयलु पहयइं अवतूरइं ।
पायपोमपाडियगिव्वाणें वद्दणुतणुउच्छेहपमाणें ।
चिरभवचरियपुण्णसंपुण्णें णवघणकुवलयकज्जलवण्णें । 5
पक्कलहलवरिलाउणिबंधें रणभरधरणधोरयरिंकंधें ।
मागहु वरतणु समउं पहासें साहिय कयदिग्विजयविलासें ।
सुरसरिसिंधुवकंठणिकेयइं मेच्छरायमंडलइं अणेयइं ।
सिरिविरइयकडक्खविक्खेवें णिज्जियाइं णारायणदेवें ।
विप्फुरंत णहयलि पेसिय सर विज्जाहरदाहिणसेढीसर । 10
जिणिवि गरुडसोहंतंधयग्गें महि तिखंडमंडिय जिय खग्गें ।
णियपयमुद्दिय दप्पुल्ललियइं चूडामणि णाणामंडलियइं ।
घत्ता—कोत्थुयमाणिक्कु दंडु अवरु गय संखु चक्कु धणुहु वि पवरु ॥
सिद्धइं सहुं सत्तिइ सत्त तहु रयणइं मेइणिपरमेसरहु ॥ १६ ॥

17

दुवई—अट्ठसहास जासु वरदेवहं मणहररिद्धिरिद्धहं ॥
सोलह वलणिहित्तदिण्णायहं रायहं मउडबद्धहं ॥ छ ॥
कइयवकरणालिंगणणिलयहं घरि तेत्तियइं सहासइं विलयहं ।
रुप्पिणि सच्चहाम जंबावइ पुणु सुसीम लक्खण मंथरगइ ।
हावभावविब्भमपाणियणइ सहुं गंधारि गोरि पोमावइ । 5
एयउ साहिय पुहइणरिंदहु अट्ठमहाएवीउ गोविंदहु ।
बलएवहु माणवमणहारिहिं अट्ठसहासइं मंदिरि णारिहिं ।
रयणमाल गय मुसलु सलंगलु चउ रयणाइं तासु बहुभुयबलु ।
कसण धवल बेण्णि वि णं जलहर पुरि बारावइ गय हरि हलहर ।

४ PS °खंधे. ५ A °सिंधुकंठ°; PS °सेंधुवकंठ°. ६ BS °सोहंति. ७ P °मंडुलियइं. ८ P कोत्थुह°. ९ P माणिक. १० B मि पवरु; P वि अवरु.

17 १ B °देवहिं. २ BK कइवय° but gloss in K कैतव; P कइविय. ३ A °णलियइं. ४ A तेत्तियइं जेट्ठे वरविलयहं; P तेत्तिय सहसइं वरविलयइं. ५ B सहुं. ६ B एहउ. ७ A मंदिरणारिहिं. ८ AP धवल णं बेण्णि वि.

16 4 *a* °गिव्वाणें कृष्णेन मागधवरतन्वादयः साधिता इति संबन्धः. 5 *b* णवघण° श्रावणमेघः. 7 *b* कयदिग्विजयविलासें कृतदिग्विजयविलासेन. 8 *a* सुरसरीत्यादि गङ्गासिन्धूपकण्ठ समीपनिकेतनानि. 12 *a* °मुद्दिय मुद्रिता अलंकृताः चूडामणयः; दप्पुद्दलियइं दर्पणोल्ललितानाम् 13 *b* गय गदा.

17 2 °दिण्णायहं दिग्गजानाम्. 3 *a* कइयव° कैतवम्; *b* विलयहं वनितानाम्. 5 *a* °पाणियणइ जलनद्यः.

अहिसिंचिउ उवेंदु सामंतहिं गिरि व घणेहिं णवंबु सवंतहिं। 10
वज्जउ पडु विरेहइ केहउ तडिविलासु घरमेहहु जेहउ।
दिव्वकामसोक्खइं भुंजंतहु णेमिकुमारहु तहिं णिवसंतहु।
अण्णहिं दिवसि कंसमहुवइरिउ णियअंतेउरेण परिवारिउ।
घत्ता—पप्फुल्लवेल्लिपल्लवियवणि गयपाउसि सरयसमागमणि॥
गउ जलकेलिहि हरि सीरधरु णामेण मणोहरु कमलसरु॥ १७॥ 15

18

दुवई—सोहइ चिक्कमंति जहिं चारु सलील मरालपंतिया॥
णं रुंदारविंदकयणिलयहि लच्छिहि देहकंठिया॥ छ॥
पोमहि णिवबहिणियहि गवेसिय णं चंदेण जोण्ह संपेसिय।
उड्डिय भमरावलि तहि अंगें अयसकित्ति णं कित्तिहि संगें।
बहुगुणवंतु जइ वि कोसिल्लउं जइ वि सुपत्तु सुमित्तु रसिल्लउं।
तो वि णलिणु सालूरें चप्पिउं जडपसंगु किं ण करइ विप्पिउं।
जहिं सारसइं सुपीयलियंगइं णं सरसिरिथणवट्टइं तुंगइं।
तहिं जलकील करइ तरुणीयणु अहिसिंचंतु देउ णारायणु।
कांहि वि वियलिय हारावलिलय सयदलदलजलकणसंसय गय।
पयलिउं घणकुंकुमु पइ सित्तउ णावइ रइरसु राविय गत्तउ। 10
काहि वि सुण्हु वत्थु तणुघडियउं अंगावयवु सव्वु पायडियउं।
काहि वि सित्तहि णवविहि व वर णं णिग्गय रोमावलिअंकुरें।
काहि वि उल्हाणउ कवलियबलु कण्हजलंजलिहउ विरहाणलु।

९ S omits °वर°. १० B दियहि.

18 १ B कयणिलहिं; K कयणियलहि but gloss कृतनिलयायाः. २ ABS देहकंतिया. ३ B तहु; S तहें. ४ B सुमुत्तु. ५ B °णलिण. ६ BP °वट्टइं. ७ B काह. ८ A पयसित्तउं; B पइ-सित्तउं; K पइ सित्तउ and gloss भर्ता; K records *a p*: पय पाठे जलसिक्तः; S पयइसित्तउं; T पयसित्तउ जलसिक्तः. ९ A सण्हु. १० BK पायडिउ. ११ A तियवेल्लिहे वर; P णिव; Als. णवबेल्लिहे वर. १२ B वरु. १३ B °अंकुरु. १४ ABAls. उण्हाणउ; P ओज्झाणउ. १५ P °पञ्जु.

10 *b* णवंबु नवजलम्. 13 *a* °महु° जरासंधः. 14 *b* सरयसमागमणि शरत्कालागमने.

18 1 मरालपंतिया हंसश्रेणिः. 2 रुंदारविंदकयणिलयहि विस्तीर्णकमले कृतनिलयायाः. लक्ष्म्याः. 3 *a* पोमहि इत्यादि लक्ष्म्याः पद्मायाः चन्द्रेण भ्रात्रा ज्योत्स्ना प्रेषिता इव. 4 *a* तहि अंगें तस्याः हंसपंक्तेः अङ्गेन. 5 *a* कोसिल्लउ कर्णिकायुक्तः; *b* सुमित्तु सूर्यः; रसिल्लउ मकरन्दयुक्तः. 6 *a* सालूरें भेकेन. 7 *a* सुपीयलियंगइं पीतशरीराणि; *b* सर° जलम्; °वट्टइं पृष्ठानि. 9 *b* सयदल-दल° कमलपत्रे. 10 *a* पइ भर्ता. 11 *a* तणुघडियउं शरीरसंलग्नम्. 12 *a* वर वरा विशिष्टा. 13 *a* कवलियबलु कवलितबलः.

काहि वि दिण्णु कण्णि णीलुप्पलु　　गेण्हइ णाइ णयणवइहवहलु ।
का वि कण्हतणुकंतिहि णासइ　　बलदेवहु धवलत्तें दीसइ । 15
कंठि लग्ग क वि णेमिकुमारहु　　णाइं अहिंस धम्मावित्थारहु ।
　घत्ता—तहिं सच्चहामदेविइ सहइ　　णं विंझसिहरि रेवाणइइ ॥
　　अइसरसवयणरोमंचियउ　　णीरें णेमीसरु सिंचियउ ॥ १८ ॥

19

दुवई—जो देविंदचंदफणिवंदिउ तिहुयणणाहु बोल्लिओ ॥
　　सो वि णियंबिणीहिं कीलंतिहिं जलकीलाजलोल्लिओ ॥ छ ॥

देवें चारुचीरु परिहंतें　　तरलतारणयणेहिं णियंतें ।
पुणु वि तेण तहि कील करंतें　　उप्परि पोत्ति घित्त विहसंतें ।
णिप्पीलेहि कडिल्लु परिवोल्लियं　　थिय सुंदरि णं सल्लें सल्लिय । 5
णारिउ णउ मुणंति पुरिसंतरु　　जो देवाहिदेउ सइं जिणवरु ।
जासु पायधूलि वि वंदिज्जइ　　तहु ओल्लणियं किं ण पीलिज्जइ ।
ता देवेण भणिउ णउ मण्णिउं　　पेसणु दिण्णउं किं अवगण्णिउं ।
भणु भणु सच्चभामि सच्चउं तुहुं　　किं कालउं किउं जरकमलु व मुहुं ।
ता वीलावसमउलियणयणइ　　उत्तउं उत्तरु तहु ससिवयणइ । 10
बहुकल्लाणणाणविरियण्णइं　　जइ वि तुम्ह पुण्णइं संपुण्णइं ।
तो वि ण एहु महापहु जुज्जइ　　एएं महुं सरीरु णिरु झिज्जइ ।
किं पइं संखाऊरणु रइयउं　　किं सारंगु पणामिवि लइयउं ।
किं तुहुं फणिसयणयलि पसुत्तउ　　जं कडिल्लु मज्झुप्परि घित्तउं ।
होसि होसि भत्तारहु भायरु　　किं तुहुं देवदेउ दामोयरु । 15
घत्ता—इय जं खरदुव्वयणेण हउ　　तं लग्गउ तहु अहिमाणमउ ॥
　　णारायणपहरणसाल जहिं　　परमेसरु पत्तउ झत्ति तहिं ॥ १९ ॥

१६ P काए. १७ PS कण्णे दिण्णु. १८ B णामि. १९ ABPS बलएवहो. २० B णामि. २१ S सच्चभाम°.

19 १ P तिहुवण°. २ P °ताल°. ३ BAls. णिप्पीलेहि. ४ AS पव्वोल्लिय; BAls. पवोल्लिय; P पचेल्लिय. ५ S °देवु. ६ ABPS उल्लणिय. ७ BP सच्चहामे. ८ PS एउं. ९ B जिज्जइ. १० PS पणावेवि. ११ AP किं फणीससयणयले पसुत्तउं; S किं पइं फणि°. १२ S देवदेव. १३ A लग्गउ तहो मणे अहिमाणगउ.

14 *b* णयणवइहवहलु नेत्रवैभवफलं गृह्णातीव. 15 *a* णासइ प्रच्छाद्यते. 17 *b* रेवाणइइ नर्मदानद्या.

19 2 °जलोल्लिओ जलार्द्रीकृतः. 3 *b* णियंतें पश्यता. 5 *b* थियइत्यादि वस्त्रनिश्चोलनं हीनकर्म मम कथितमित्यभिप्रायेण. 7 *b* ओल्लणिय पोतिका (स्नानशाटी). 9 *b* जरकमलु व जीर्णकमलवत्. 10 *a* वीला° व्रीडा; *b* ससिवयणइ चन्द्रवदनया.

20

दुवई—कप्पिउं कुंप्परेहिं फणिसयणु पणाविउं वामपायेंणं ॥
घणु करि णिहिउं संखु आऊरिउ जगु बहिरिउं णिणायेंणं ॥ छ ॥

महि थरहरिय डरिय णिग्गय फणि गयणंगणि कंपिय ससि दिणमणि ।
बंधविसट्टइं सरिसरतीरइं पडियइं पुरगोउरपायारइं ।
मुडियखंभें भयवस गय गयवर गलियणिबंधण णट्ठा हयवर । 5
कण्णदिण्णकर महिणिवडिय णर पडिय ससिहर सधय णाणाघर ।
हरिणा रयणकिरणविप्फुरियहि उप्परि हत्थु दिण्णु कडिछुरियहि ।
हल्लोहलउ णयरि संजायउ जंपइ जणु भयकंपियकायउ ।
वट्टइ पलयकालु कहिं गम्मइ किं हयदइयहु पसरइ दुम्मइ ।
तहिं अवसरि किंकरु गउ तेत्तहि अच्छइ घरि महुसूयणु जेत्तहिं । 10
तेण तेत्थु पत्थाउ लहेप्पिणु दाणवारि विण्णविउ णवेप्पिणु ।

घत्ता—तुह किंकर बलिमहुई घरिवि घरि णेमिकुमारें पइसरिवि ॥
घणु णाविउं जलयरु पूरियउ सयणयलि महोरउ चूरियउ ॥ २० ॥

21

दुवई—पइं रइयाइं जाइं परिवाडिइ हयजणसवणधम्मइं ॥
एक्कहिं खणि कयाइं बलवंतें तिण्णि मि तेण कम्मइं ॥ छ ॥

सिंधसंखसरु जो तहिं णिग्गउ तेण असेसु वि जणवउ भग्गउ ।
सच्चभाम पवियंभिय पसिउं णिप्पीलिउं ण चीरु वरि घिसउं ।
महिलहं णत्थि मंतणेउण्णउं जणि पयडंति जं पि पच्छण्णउं । 5
चावपणामणु विसहरजूरणु वण्णिउं तेरउं संखाऊरणु ।
अवरु भणिउं णउ हरि संकरिसणु किह महुं उप्परि घल्लहि णिवसणु ।
तं णिसुणिवि हियउल्लउं कलुसिउं इय पहउं णेमीसें विलसिउं ।
ता कण्हेण कयउं कालउं मुहुं णउ दाइअयोत्ति कासु वि सुहुं ।

20 १ PS कोप्परेहिं. २ A घरहरिय. ३ P omits °खंभ. ४ P कर. ५ S omits ण in रयण°. ६ APS °दइवहो. ७ B महसूअणु. ८ A °मंडए. ९ AP णामिउं.

21 १ BS वि. २ B सिंध°. ३ B सच्चहाम; P सच्चिहाम; ४ A णिप्पीलिऊण. ५ S °पणावणु. ६ AP ववसिउ. ७ BPS दायज्ज°.

20 1 पणाविउं प्रणम्रीकृतम्. 4 *b* °पायारइं प्राकाराः. 5 *a* गय गता नष्टाः. 6 *a* कण्णदिण्णकर कराभ्यां कर्णौ पिधाय; *b* ससिहर शिखरैः सहितानि. 12 *b* घरि आयुधशालायाम्.

21 1 परिवाडिइ अनुक्रमेण; °सवणधम्मइं कर्णस्वभावानि, बधिरत्वं कृतमित्यर्थः. 3 *a* सिंध° प्रत्यञ्चा. 7 *a* णउ हरि त्वं हरिर्न; संकरिसणु बलभद्रोऽपि न. 9 *b* दाइअयोत्ति स्वगोत्रस्तुतौ.

बलएवेण भणिउं लइ जुज्जइ मच्छरु तेत्थु[8] भाय णउ किज्जइ। 10
जसु तेयं कंपइ रविमंडलु पायहिं जासु[9] पडइ आहंडलु।
सगिरि ससायर महि उत्थल्लइ जो सत्त वि सायर उत्थल्लइ[10]।
जासु णाउं[11] जगि पुज्जु पहिल्लउं कुसुमसयणु तहु फणिसयणुल्लउं।
खुब्भइ[12] संखु सरासणु पिंजणु किं सुहडत्तें णियमहि णियमणु।
घत्ता—हलहर दामोयर बे[13] वि जण ता मंतिमंतविहिदिण्णमण[14] ॥ 15
जिणबल[15]पविलोयणगलियमय ते चित्तकुसुममहिभवणु गय ॥ २१ ॥

22

दुवई—मंतिउ मंतिमंतु गोविंदें लहु काणणि णिहिप्पए ॥
कुलवइ सत्तिवंतु तेयाहिउ जइ दाइउ ण जिप्पए ॥ छ ॥
पइं मि मइं मि सो समरि जिणेप्पिणु भुंजेसइ[1] महिलच्छि लएप्पिणु।
तं णिसुणिवि संकरिसणु घोसइ णारायण णउ पइडुउं होसइ।
चरमदेहु भुयणत्तयसामिउ सिवएवीसुउ सिवगइगामिउ। 5
परमेसरु परु णउ संतावइ रज्जु अकज्जु तासु मणि भावइ।
रज्जु पंथु दावियभयजरयहं धूमप्पहतमतमपहणरयहं।
रज्जें जइ माणुसु वेहवियउं[2] अम्हारिसहुं रज्जु गउरवियउं।
जिणु पुणु तिणसमाणु[3] मणि मण्णइ रायलच्छि दासि व अवगण्णइ।
जइ पेच्छइ णिव्वेयहु कारणु तो पंचिंदिय[4]भडसंघारणु। 10
करइ णाहु तवचरणु णिरुत्तउं ता महुमहणें कवडु णिउत्तउं।
तणुलायण्णवण्णसंपण्णी जयवइ[5]देविउयरि उप्पण्णी।
मग्गिउ उग्गसेणु सुवियक्खण रायमइ[8] त्ति पुत्ति सुहलक्खण।
घत्ता—णिरु सालंकार सारसरस भुयणयलि पयडसोहग्गजस ॥
परमेसरि मुणिहिं मि हरइ मइ णं वरकइकव्वहु तणिय गइ[9] ॥ २२ ॥

८ AP एत्थु. ९ APS पडइ जासु. १० PS ओत्थल्लइ. ११ ABPS णामु. १२ ABPS खुब्भउ. १३ AP बेण्णि जण. १४ AP °मंतसंदिण्णमण. १५ A जिणवर°.

22 १ APS भासइ. २ B वेहावियउ. ३ P तेणु समाणु; S तणसमाणु. ४ PS पंचेंदिय°. ५ P जइवइ°; K जयवय°. ६ AP °गब्भि. ७ P संपण्णी. ८ P राइमइ. ९ P तणि गई.

10 *a* जुज्जइ मत्सरो न क्रियते इति युज्यते योग्यं भवति. 13 *a* णाउं नाम. 14 *b* णियमहि नियमितं सुभटत्वेन निश्चितं किं करोषि. 15 *b* मंतिमंतविहिदिण्णमण मन्त्रिमन्त्रविधिदत्तमनसौ. 16 *b* चित्तकुसुममहिभवणु चित्रकुसुममन्त्रशालागृहम्.

22 1 मंतिमंतु मन्त्रिणां मन्त्रः; णिहिप्पए स्थाप्यते. 2 कुलवइ कुलपतिः. 7 *a* रज्जु इत्यादि राज्यं नरकाणां मार्गः. 12 *b* जयवइ इत्यादि उग्रवंशोत्पन्नोग्रसेनजयवतीसुता, राजिमतिरित्यर्थः. 14 *a* सारसरस सारा चासौ सरसा च.

23

दुवई—पत्थिय माहवेण महुराहवइवरु गंपिणु सराहहो ॥
सुय तेरी मरालगयगामिणि ढोयहि णेमिणाहहो ॥ छ ॥

तं आयण्णिवि कंसहु ताएं । दिण्ण वाय गोविंदहु राएं ।
जं जं काइं मि णयणाणंदिरु । जं जं घरि अम्हारइ सुंदरु ।
तं तं सव्वु तुहारउं माहव । धीयइ किं जियवइरिमहाहव । 5
अवरु वि देवदेउ जामाइउ । कहिं लब्भइ बहुपुण्णविराइउ ।
ता मंडवि चामीयरघडियइ । पंचवण्णमाणिक्कहिं जडियइ ।
कंचणपंकयकेसरवण्णहि । अंगुत्थलउ छुद्धु करि कण्हहि ।
जयजयसद्दें मंगलघोसें । दविणदाणकयविहलियतोसें ।
णाहविवाहकालि णर ससि रवि । आय सुरासुर विसहर खयर वि । 10
पंडुरदेवंगइं वरणिवसणु । कडयमउडमणिहारविहूसणु ।
दुंदुहियपडुपडहणिणाएं । णच्चंतें सुरवरसंघाएं ।
कामपाससंकासलयाभुय । पहु परिणहुं चल्लिउ पत्थिवसुय ।
सुंदरेण सुहवसणरूढें । ताम तेण मणिसिबियारूढें ।
विरसोरसणसमुट्ठियकलयलु । वइवेढिउं अवलोइउं मिगउलु । 15

घत्ता—अहिसेयधोयसुरमहिहरिण ता सहयरु पुच्छिउ जिणवरिण ॥
भणु भणु कंदंतइं भयगयइं किं रुद्धइं णाणामिगसयइं ॥ २३ ॥

24

दुवई—ता भणियं णरेण पारद्धियदंडहयाइं काणणे ॥
पयइं तुह विवाहकज्जागयणिवपारद्धभोयणे ॥ छ ॥

डरियइं धरियइं वाहसहासें । देवदेव गोविंदापसें ।

---

23 १ AP पत्थिउ. २ ABPS मरालगइगामिणि. ३ AP तुम्हारउ. ४ B °वयरि°. ५ S देवदेवु. ६ B छुद्धु किर. ७ A देवंगंवर°. ८ B परियणहुं चलिउ. ९ ABP समुट्ठिउ. १० S मृगउलु. ११ S मृगसयइं.

24 १ A °नृव°.

---

23 1 सराइहो शोभायुक्तस्य. 3 *a* कंसहु ताएं आर्षपुराणे उग्रवंशोत्पन्नोग्रसेनराजा कथितः, तदभिप्रायेण तस्य राज्ञोऽपि कंसनामा पुत्रोऽस्ति, अन्यथा स्वगोत्रमध्ये विवाहो न घटते. 8 *b* छुद्धु मुद्रिका क्षिप्ता. 9 *b* °विहलिय° दरिद्राः. 13 *b* परिणहुं परिणेतुम्. 15 *a* °ओरसण° आरसनं शब्दः; *b* वइवेढिउं वृतिवेष्टितम्. 16 *a* °धोयमहिहरिण धौतमेरुणा; *b* सहयरु सहचरो भृत्यः.

24 2 विवाहेत्यादि विवाहकार्यागतराज्ञां भोजननिमित्तं धृतानि. 3 *a* वाह° व्याधा भिल्लाः.

आमियाइं सालणयणिमित्तें ता चिंतइ जिणु दिव्वें चित्तें ।
जे भक्खंति मासु सारंगहं ते णर कहिं मिलंति सारंगहं । 5
खद्धउं जेहिं[2] पिसिउं मोराणउं तेहिं ण कियउं वयणु मोराणउं ।
जंगलु जेहिं गैसिउं तित्तिरयहु ते पेक्खंति ण मुहुं तित्तिरयहु ।
जेहिं जूहु विद्धंसिउ रउरउ ते पाविहहिं णरउ णिरु रउरउ ।
कवलिउ जेण देहिदेहामिसु तहु खंडंति कालदूयामिसु ।
पासिउ कव्वु जेण तं हारिणु तहु दुक्किउ वहुईं णं हा रिणु । 10
होइ अणंतदुक्खचिंतावइ जो पसुअट्ठिउं हुयवहि तावइ ।
सो अट्ठियसंबंधु ण पावइ किं किज्जइ रायाणीपावइ ।
जहिं मृगमारणु भोज्जु णिउत्तउं तेण विवाहें महुं पज्जत्तउं ।
घत्ता—जइ इच्छह सासयपरमगइ तो खंचह परहणि जंतें मइ ।
महु मासु परंगण परिहरहु सिरिपुप्फयंतु जिणु संभरहु ॥ २४ ॥ 15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जरसिंधणिहणणं णाम
अट्ठासीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८८ ॥

२ AP पिसिउ जेहिं; B जेण पिसिउं. ३ AP असिउं. ४ AP भुंजंति. ५ AP कोलदेहामिसु. ६ A वट्टइ. ७ AB मिगमारणु. ८ B इच्छइ. ९ BP खंचहु. १० A परहण. ११ P जंते. १२ P ° पुप्फदंतु. १३ A जरसंधणिव्वाणं. १४ S अट्ठासीमो.

4 *a* सालणय° शाकम् 5 *b* सारंगहं उत्तमशरीराणाम्. 6 *a* मोराणउं मयूरसंबन्धि; *b* मोराणउं मम संबन्धि. 7 *b* तित्तिरयहु तृप्तियुक्तस्य सुरतस्य. 8 *a* रउरउ रुरूणाम्. 9 *b* कालदूयामिसु कालदूताः आमिषम्. 10 *a* हारिणु हरिणानामिदम् ; *b* हा रिणु ऋणमिव हा कष्टम्. 11 *a* °चिंतावइ चिन्तापतिः. 12 *a* अट्ठियसंबंधु ण पावइ गर्भे एव विलीयते; *b* रायाणीपावइ राज्ञीप्राप्त्या. 15 *b* परंगण परस्त्री.

LXXXIX

ओहवि हरिणइं तिहुयणसामिहि ॥
मणि करुणारसु जायउ णेमिहि ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—एक्कहु तित्तिं णिविसु अण्णेक्कु वि जहिं प्राणिहिं[3] विमुच्चए ॥
तं भवविहुरकारि पलभोयणु महुं सुंदरु ण रुच्चए ॥ छ ॥

संसारु घोरु चिंतंतु संतु | गउ णियणिवासु एवं भणंतु । 5
णाणें परियाणिउं कज्जु संचु | णारायणकउ मायापवंचु ।
रोहियससयसूयरसंवराइं | जिह धरियइं णाणावणयराइं ।
अवियाणियपरमेसरगुणेण | कुद्धेण रज्जलुद्धेण तेण ।
णिव्वेयहु कारणि दरिसियाइं | रोवंतइं वेवंतइं थियाइं ।
एएं जीएण असासएण | किं होसइ परवेहें हएण । 10
झायंतु एम मउलियकरेहिं | संबोहिउ सारस्सयसुरेहिं ।
जय जीव देव भुयणयलभाणु | पइं दिट्ठउ परु अप्पहं समाणु ।
तुहुं जीवदयालुउ लोयबंधु | लइं ढोयहि संजमभरहु खंधु ।
तुहुं रोसमुसाहिंसाबहित्थु | जगि पयडहि बावीसमउं तित्थु ।

घत्ता—अमरवरुत्तइं णिज्जियमारहु ॥ 15
वयणइं लग्गइं णेमिकुमारहु ॥ १ ॥

2

दुवई—तहिं अवसरि सुरिंदसंदोहें सिंचिउ विमलवारिहिं ॥
वीणातंतिसद्दसंताणें गाइउं विविहणारिहिं ॥ छ ॥

उत्तरकुरुसिबियारूढदेहु | णं गिरिसिहरासिउ कालमेहु ।
सोहइ मोत्तियहारें सिएण | णहभाउ व तारावलिसिएण ।

---

1 १ P तिहुवण°. २ AP णिमिसतित्ति; P णिविस तित्ति; Als. णिमिसतित्ति. ३ AP पाणहिं; B पाणिहिं; S प्राणहि. ४ B कज्ज°. ५ P कारण. ६ APS दरिसियाइं. ७ APS अप्पयसमाणु. ८ B °दयालुउ. ९ S °भरहं. १० S अमरु.

2 १ APS °संताणहिं. २ BK गायउ. ३ P °हारिए. ४ B °भावउ.

---

1 3 णि वि सु निमेषमात्रं तृप्तिः. 4 प ल भो य णु मांसभोजनम्. 6 *a* सं चु संबन्धः. 7 *a* रो हि य° रोहितमत्स्यः. 10 *a* जी ए ण जीवितेन. 14 *a* °ब हि त्थु बहिः स्थितम्.

रत्तुप्पलमालइ सोह देंतु णं जउणादेहु जणमलु हरंतु । 5
ससिसेयसियँयसोहासमेउ णं अंजणमहिहरु तुहिणतेउ ।
सिरि वलईयवरमउडेण दिसु णं सो ज्जिं रयणकूडेण सुसु ।
पियवयणाउच्छियमित्तबंधु णिच्छिहुं सिढिलीकयपणयबंधु ।
पहुपडहसंखकाहलसरेहिं उच्चाइउ णरखयरामरेहिं ।
तरुसाहासयढंकियपयंगु फलरसणिवडियणाणाविहंगु । 10
मंदारकुसुमरयपसरपिंगु गुमुगुमुगुमंतपरिभमियभिंगु ।
कंकेल्लिलुलियदलवेलयतंबु सहसंबयवणु फुल्लियकयंबु ।
गउ सइं परिलुंचिउ केसभारु पडिवण्णउ दुद्दु जिणवरविहारु ।
तरुणीयणु बोल्लइ रोवमाणु हा हा अत्थमियउ कुसुमबाणु ।
उप्पण्णाहु पयहु ववगयाइं हलि माइ तिण्णि वरिसहं सयाइं । 15
सिवणंदणु अज्जि वि सुद्धु बालु रिसिधम्महु एहु ण होइ कालु ।

घत्ता—एण विमुक्किया रायमई सई ॥
महुराहिवसुया किह जीवेसई ॥ २ ॥

3

दुवई—चामरधवलछत्तसीहासणधरणिधणाइं पेच्छहे ॥
णिरु जरतणसमाइं मणि मण्णिवि थिउ मुणिमग्गि सूसहे ॥ छ ॥

जिणु जम्मे सहुं उप्पण्णबोहि हलि वण्णइ को पयहु समाहि ।
सावणपवेसि ससिकिरणभासि अवरण्हइ छट्ठइ दिणि पयासि ।
चित्ताणक्खत्तइ चित्तु धरिवि छट्ठोववासु णिब्भंतु करिवि । 5
सहुं रायसहासें हासहारि जायउ जइ सुचरित्तधारि ।
माणवमणमइलणघंतभाणु संजमसंपण्णचउत्थणाणु ।
अच्चंतवीरतवतावतविउ बलएववासुएवेहिं णविउ ।

५ S °द्रहु. ६ P जणमणु; S जणमलु. ७ A °सिचय°; B °वत्थ for सियय°; S °सिअय°. ८ AB विरइय°. ९ S ज्ज for जि. १० B णिच्छिह. ११ B °काहलरवेहिं. १२ B °कुंदरय°. १३ B °वयल°. १४ S °कलंबु. १५ ABPS आलुंचिउ. १६ B अत्थिमियउ. १७ B अज्ज. १८ B सुद्धु. १९ B उग्गसेणसुअ in second hand.

3 १ B °सिंहासण°. २ B पिच्छहो. ३ B णिच्छउ जरतणाइं मणि मण्णिवि. ४ A °संपत्त°; B °संपुण्ण°. ५ A °धीर°; B °धीरु. ६ B °वासुएवहिं.

2 6 *a* °सियय° सिचयं वस्त्रम्; *b* तुहिणतेउ चन्द्रयुक्तो गिरिः. 8 *b* णिच्छिहु निःस्पृहः. 10 *a* °पयंगु सूर्यः.

3 4 *a* ससिकिरणभासि शुक्लपक्षे. 5 *a* चित्तु धरिवि मनोव्यापारं संकोच्य.

पिंडहु कारणि णिहाइ णिट्ठु　　अण्णहिं दिणि दारावइ पइट्ठु ।
वरयत्तणरिंदहु भवणि थक्कु　　णं अब्भंभंतरि भासुरक्कु । 10
परमेट्ठिहि णवविहपुण्णठाणु　　तहु दिण्णउं तेणाहारदाणु ।
माणिक्कविट्ठि णवकुसुमवासु　　गंधोअयवरिसणु देवघोसु ।
दुंदुहिणिणाउ जिणु जिमिउ जेत्थु　　जायाइं पंच चोज्जाइं तेत्थु ।
माहवपुरि मेल्लिवि जंतु जंतु　　पासुयपएसि पय देंतु देंतु ।
छप्पण्ण दियह हयमोहजालु　　वोलीणहु तहु छम्मत्थकालु । 15

घत्ता—कुसुमियमहिरुहं हिंडियसावयं ॥
पत्तो जइवइ रेवयपावयं ॥ ३ ॥

4

दुवई—पविउलवेणुमूलि आसीणउ जाणियजीवमग्गणो ॥
तवचरणुग्गखग्गधाराहयदुद्धरकुसुममग्गणो ॥ छ ॥

परियाणिवि चलु संसारु विरसु　　रसगिद्धिलुद्धु णिज्जिणिवि सरसु ।
परियाणिवि धुउं परमत्थरूउ　　आसत्तु रूवि णिज्जियउं रूउं ।
परियाणिवि सुहुं परियालियसद्दु　　जोईसरेण णियमियउ सद्दु । 5
परियाणिवि मोक्खु विमुक्कगंधु　　एक्कु वि ण समिच्छिउ तेण गंधु ।
परियाणिवि सिद्धहं णत्थि फासु　　णिज्जिउ णेमिं वसुविहु वि फासु ।
अवइण्णियाहि सिसुचंदसियहि　　आसोयमासि पडिवयदियहि ।
णक्खत्ति चारुचित्ताहिहाणि　　पुव्वण्हयालि पयलंतमाणि ।
गुणभूमितुंगि तिहुयणपहाणि　　चडियउ तेरहमइ साहु ठाणि । 10
उप्पण्णउ केवलु दलियदप्पि　　उट्ठियं घंटारवें कप्पि कप्पि ।

घत्ता—चलियं आसणं हरिसुप्पिल्लिओ ॥
जिणसंथुइमणो इंदो चल्लिओ ॥ ४ ॥

७ A णं अब्भंतरि भाभासुरक्कु. ८ B °डुहि. ९ B गंधोवय°; P गंधोयपवरिसणु. १० P °पुरे. ११ B °पदेसे. १२ B °दियहइं हउ. १३ AB जयवई. १४ B रेवइ°. १५ P °पव्वयं.

4 १ BAls. °चरणग्ग°. २ P परियाणेविणु संसारु. ३ AS णिज्जियउ; P णिज्जिउ. ४ S धुउ. ५ S °रूवु. ६ BP णेमें. ७ A वसुविहि. ८ A पडिवइय°. ९ B तिहुवण°. १० S उट्ठिउ. ११ BS घंटारवु. १२ AS चलियं. १३ A °संथुउ मणे.

12 *b* गंधोअय° गन्धोदकम्. 14 *a* माहवपुरि द्वारवतीम्. 16 *b* °सावयं श्वापदम्. 17 *b* रेवयपावयं ऊर्जयन्तगिरिम्.

4 4*a* धुउ परमत्थरूउ शाश्वतं परमार्थरूपमात्मा; *b* आसत्तु इत्यादि रूपे आत्मनि आसक्तः, तथा सति नेत्रेन्द्रियं जितम्. 6 *b* समिच्छिउ वाञ्छितः. 8 *a* अवइण्णियाहि अवतीर्णायां प्रतिपदि.

5

दुवई—बहुमुहि बहुयदंति बहुसयदलपत्तपणच्चियच्छरे ॥
आरूढउ करिंदि अइरावइ विलुलियकण्णचामरे ॥ छ ॥

दंडउ—विणयपणयसीसो सुरेसो गओ वंदिउं देवदेवो अतोओ असाओ महाणीलजीमूयवण्णो पसण्णो ॥ १ ॥

गणहरसुरवंदो अमंदो थणिंदो जिणिंदो मइंदासणत्थो महत्थो पसत्थो असत्थो समत्थो ससत्थो अवत्थो विसत्थो ॥ २ ॥

वियलियरयभारो गहीरो सुवीरो उयारो अमारो अछेओ अभेओ अमेओ अमाओ अरोओ असोओ अजम्मो ॥ ३ ॥ 5

विसहरघरसंरुद्धणाणादुवारंतरो पंडुडिंडीरपिंडुज्जलुद्दामभाभूरिणा चामरोहेण जक्खेहिं विज्जिज्जमाणो ॥ ४ ॥

अमरकरविमुच्चंतपुप्फंजलीगंधलुद्धालिसामंगणो देवसामंगणाणच्च-णारद्धगेयज्झुणीदिण्णतोसो ॥ ५ ॥

सयलजणपिओ धम्मवासो सुभासो हयासो अरोसो अदोसो सुलेसो सुवेसो सुणासीरईसो ससीरीसिरीसंथुओ ॥ ६ ॥

सुरवरतरुसाहासुराहासमिल्लो जयंको जणाणं पहाणो जरासंध-रायारिभीसावहो भिण्णमायाकयंको ॥ ७ ॥

पविउलपरभामंडलुब्भूयदित्ती विहिज्जंतघोरंधयारो विराओ विरेहं-तछत्तओ पत्तसंसारपारो ॥ ८ ॥ 10

अमरकरणिहम्मंतभेरीरवाहूयतेलोक्कलोयाहिरामो सुधामो सुणामो अधामो अपेम्मो सुसोम्मो ॥ ९ ॥

कलिमलपरिवज्जिओ पुज्जिओ भावणिंदेहिं चंदेहिं कप्पामरिंदाहमिं-देहिं णो णिज्जिओ भीमपंचिंदियत्थेहिं णिग्गंथपंथस्स णेयारओ ॥ १० ॥

---

5 १ P बहुभुयदंते. २ A आरूढ करिंदे. ३ P अइरावण. ४ P वंदिओ. ५ PS अतावो. ६ PS असावो. ५ P मईदासण°. ६ A समत्थो असत्थो; P समग्गो समत्थो. ७ ABS सुधीरो. ८ P अमायो. ९ AP °वर° for घर°. १० P दिव्व°. ११ S °जणपीओ. ११ P पविउलपभा-मंडल°. ११ AB सधम्मो सुधुव्वंतणामो अवामो. १२ AP सुसम्मो. १३ PS °पंचेंदिय°.

---

5 3 असावो अशापः. 4 °मइंदासण° सिंहासनम्; ससत्थो सशास्त्रः; अवत्थो नग्नः. 5 अमारो अकन्दर्पः. 6 पंडु° श्वेतः. 7 °सामंगणो कृष्णप्राङ्गणः. 8 ससीरीसिरीसंथुओ बलभद्र-सहितेन विष्णुना स्तुतः. 9 सुराहासमिल्लो सुशोभासहितः. 10 भिण्णमायाकयंको भिन्नमाय इति कृतः अङ्को बिरुदं यस्य.

कलसकुलिससंअंकुसंभोयसयलिंदवत्तीधरित्तीधरामहातीरिणी-
लक्खणालंकिओ वंकभावेण मुक्को रिसी अज्जवो उज्जुओ सिट्ठतच्चो
सुसच्चो ॥ ११ ॥

जणमणगयसंसयाणं कयंतो महंतो अणंतो कणंताण ताणेण हीणाण
दुक्खेण रीणाण बंधू जिणो कम्मवाहीण वेज्जो ॥ १२ ॥

घत्ता—सुरवरवंदिओ महसु महाहियं ॥ 15
सिवपवसिओ देवो मोहियं ॥ ५ ॥

6

दुवई—णिम्मलणाणवंत सम्मत्तवियक्खण चरियमणहरा ॥
वरवंसाइ तासु पयारह जाया पवर गणहरा ॥ छ ॥

साहुहुं सव्वहं संपयरयाइं जहिं पुव्ववियड्ढहं चउसयाइं ।
पासुयभिक्खासणभिक्खुयाहं पयारहसहसइं सिक्खुयाहं ।
परिगणियइं अट्ठसयाहियाइं अप्पत्थि परत्थि सया हियाइं । 5
पण्णारह सय अवहीहराहं केवलिहिं मि जाणियसंवराहं ।
संसोहियवम्महसरवणाहं पयारह सयं सविउव्वणाहं ।
मणपज्जयणाणिहिं जहिं पयासु एक्के सएण ऊणउं सहासु ।
परवयणविणासविराइयाहं वसुसमइं सयाइं विवाइयाहं ।
चालीससहासइं संजईहिं जहिं एक्कु लक्खु मंदिरजईहिं । 10
परिवड्ढियवयपालणरईहिं लक्खाइं तिण्णि वरसावईहिं ।
संखाय तिरिय सुरवर असंख वज्जंति पडह मद्दल असंख ।
जहिं पइसइ लोउ असेसु सरणु तहिं किं वण्णिज्जइ समवसरणु ॥

१४ Als. °सइलिंदवंती°; P °सइलिंददंती°. १५ BS धरत्ती. १६ P अज्जुवो. १७ BP देउ.
१८ AP समाहियं.

6 १ B °णाणवत्त. २ BAls. चरियधणहरा; S चरियधण मणहरा. ३ B वरयत्ताइ. ४ A सव्वहं संजयरयाइं; P सुव्वयसंजयरयाइं. ५ S °सहइं. ६ P omits this foot. ७ B अवहीसराइं. ८ ABKS सहस विउव्वणाहं; B has ह for य in second hand. ९ S वज्जंत. १० P ससंख.

13 सयलिंदवत्ती मेरुयुक्ता भूः; °धरा° पताका; अज्जवो उज्जुओ वाक्कायाभ्यामवक्रः. 14 °संसयाणं कयंतो संशयस्फेटकः. 15 *b* महसु त्वं पूजय. 16 *b* माहियं मायै लक्ष्म्यै हितं यथा भवति, लक्ष्मीवृध्यर्थमित्यर्थः.

6 1 चरिय° चारित्रेण. 3 *a* संपयरयाइं मोक्षसंपद्रतानि. 4 *a* °भिक्खुयाइं भोजकानाम्. 5 *b* अप्पत्थि इत्यादि आत्मार्थे परार्थे च सदा हितानि. 7 *a* °वणाइं व्रणानाम्.

घत्ता—जियकूरारिणा वसुमइहारिणा ॥
णेमी[११] सीरिणा णविवि मुरारिणा ॥ ६ ॥　　15

7

दुवई—धम्माधम्मकम्मगइपुग्गलकालायासणामहं ॥
पुच्छिउ किं पमाणु परमागमि चेउदह भूयगामहं ॥ छ ॥

किं खणविणासि किं णिच्चु एक्कु　　किं देहत्थु वि कम्मेण मुक्कु ।
किं णिच्चेयणु चेयणसरूउ　　किं चउभूयहं संजोयभूउ ।
किं णिग्गुणु णिक्कलु णिव्वियारि　　किं कम्महं कारउ किं अकारि ।　　5
ईसरवसेण किं रयवसेण　　संसरइ देव संसारि केण ।
परमाणुमेत्तु किं सव्वगामि　　अप्पउ केहउ भणु भुवणसामि ।
तं णिसुणिवि णेमीसरिण वुत्तु　　जइ खणविणासि अप्पउ णिरुत्तु ।
तो किं जाणइ णिहियउं णिहाणु　　वरिसहं सए वि णिहिदव्वठाणु ।
णिच्चहु किं कहिं उप्पत्ति मच्चु　　जंपइ जणु रइलंपडु असच्चु ।　　10
जइ एक्कु जि तइ को संगि सोक्खु　　अणुहुंजइ णरइ महंतु दुक्खु ।
जइ भूयवियारु भणंति भाउ　　तो किं किं लब्भइ मइविहाउ ।
णिक्किरियहु कहिं करणइं हवंति　　कहिं पयइबंधु जुत्ति वि थवंति ।
जइ सिववसु हिंडइ भूयसत्थु　　तो कम्मकंडु सयलु वि णिरत्थु ।
घत्ता—जइ अणुमेत्तउ जीवो एहउ ॥　　15
तो सज्जीवउ किह करिदेहउ ॥ ७ ॥

8

दुवई—जीवु अणाइणिहणु गुणवंतउ सुहुमु सकम्मकारओ ॥
भोत्तउ गत्तमेत्तु रयचत्तउ उड्ढगई भडारओ ॥ छ ॥

११ S omits घत्ता lines. १२ BK णेमि.

7 १ A कि पि माणु. २ APS चोद्दह°. ३ PS संजोए हूउ. ४ APS णेमीसेण. ५ A खणि विणासि. ६ APS णियदव्व°. ७ APS कहिं किर. ८ S सग्गसोक्खु. ९ P सक्खु. १० APS किर कहिं. ११ P वहंति. १२ A °बंधजुत्ति. १३ A कम्मकंदु.

8 १ APS जीउ.

15 *b* मुरारिणा पृष्ट इत्युत्तरेण संबन्धः.

7 6 *a* रय° रजः. 9 *b* णिहिदव्व° निधिद्रव्यम्. 12 *a* भाउ भावो जीवपदार्थः; *b* मइविहाउ मतिज्ञानविभागः स्वरूपम्. 14 *b* कम्मकंडु क्रियाकाण्डम्. 16 *b* करिदेहउ चेदणुमात्रः तर्हि गजशरीरं महत्, तत्सर्वं सचेतनं कथम्.

8 2 भोत्तउ भोक्ता.

इय वयणइं सवणसुहासियाइं   आयण्णिवि जिणवरभासियाइं ।
बलएवें गुणहरिसियमणेण   सम्मत्तु[2] लइउ णारायणेण ।
अरहंतहु केरी परम सिक्ख   अवरेहिं लइय[3] णिग्गंथदिक्ख ।   5
अवरेहिं बारहसावयवयाइं   णिव्वूढइं परिपालियदयाइं ।
एत्थंतरि सुरगयवरगईइ   वरदत्तु पपुच्छिउ[4] देवईइ ।
संजमसीलेण सुहाइयाइं   चरियामग्गें घरे[5] आइयाइं ।
अइजुयलइं तिण्णि पलोइयाइं   महुं णयणइं णेहें छाइयाइं ।
किं किर कारणु पणयाणुराइ   ता भणइ भडारउ णिसुणि माइ । 10
पिहुजंबुदीवि इह भरहखेत्ति   महुराउरि जिणवरघरपवित्ति ।
सपयावपरज्जियवइरिसेणु   णरवइ तहिं णिवसइ सूरसेणु ।
तेत्थु जि पुरि वणिवइ भाणुदत्तु[6]   जउणायत्तासइरइहि[7] रत्तु ।
तहे[8] पढमपुत्तु णामें सुभाणु   पुणु भाणुकित्ति पुणु अवरु भाणु ।
पुणु भाणुसेणु पुणु सूरदेउ   पुणु सूरदत्तु पुणु सूरकेउ ।   15

घत्ता—तेत्थु महारिसी समजलसायरो ॥
जियपंचेंदिओ णाणदिवायरो ॥ ८ ॥

9

दुवई—पणविवि अभयणंदि णरणाहें णिसुणिवि धम्मसासणं ॥
मुइवि सियायवत्त[1]चलचामरमेइणिहरिवरासणं ॥ छ ॥

णरवरसाहियसग्गापवग्गि   लइयउं मुणित्तु[2] जइणिंदमग्गि ।
वणिणाहु वि तवसिरिभूसियंगु   थिउ तेण समउ णिम्मुक्कसंगु ।
जउणादत्तइ वणि फुल्लणीवि   वउं[3] लइयउं जिणदत्तासमीवि ।   5
ते पुत्त सत्त वसणाहिहूय   सत्त वि दुद्धर णं कालदूय ।
णिद्धाडिय राएं पुरवराउ   मयपरवस णं करिवर सराउ ।
तें[4] गय अवंति णामेण देसु   उज्जेणिणयरु मणहरपवेसु[5] ।
तहिं संपत्ता रयणिहि मसाणु   जुज्झंतकुक्कुसिवसाणठाणु ।

---

२ B समत्तु लयउ. ३ B लयइय. ४ AP वि पुच्छिउ. ५ S तहिं आइयाइं. ६ PS माणुयत्तु.
७ AP °दत्तासइरत्तचित्तु. ८ S तहे.

9 १ B सयायवत्त° २ P मुणिवउ. ३ AP वउ. ४ APS गय ते. ५ S °पवेसु.

---

9 *a* अइजुयलइं यतियुग्मानि. 16 *a* महारिसी अभयनन्दी.

9 5 *a* फुल्लणी वि फुल्लनीपे फुल्लकदम्बे. 7 *b* सराउ तडागात्. 9 *b* °सा ण° शुनकः.

संणिहिउ तेत्थु सो सूरकेउ अवर वि पइट्ठु पुरु धवलकेउ। 10
तहिं चोर किं पि चोरंति जाम अण्णेक्कु कहंतरु होइ ताम।
पुरपहु वसहद्धउ तासियारि सहसभडु भिच्चु तहु वढपहारि।
वप्पासिरि घरिणि सिसुहरिणदिट्ठि तहि तणुरुहु णामें वज्जमुट्ठि।

घत्ता—विमलतणूरुहा रइरसवाहिणी ॥
णामें मंगिया तहु पियगेहिणी ॥ ९ ॥

10

दुवई—तें[1] सहुं पत्थिवेण महुसमयदिणागमणि वणं गया ॥
जा कीलंति किं पि सव्वाइं वि ता पिसुणा सुणिइया ॥ छ ॥

आरुट्ठ दुट्ठ वरइत्तमाय मुहि णिग्गय णउ कहुंयवर[2] वाय।
सुकुसुममालइ सहुं अइमहंतु घडि घित्तु सप्पु फुक्कार[3] देंतु।
ससिमुहि छउओयरि[4] मज्झखाम संपत्त सुण्ह णवपुप्फकाम। 5
आलिंगिय कोमलयरभुयाइ मणुं जाणिवि बोल्लिउं[5] सासुयाइ।
तुह जोग्गी चलमहुयररवाल मइं णिहिय कलसि वरपुप्फमाल।
अमुणंतिइ गइ असुहारिणीहि पच्छण्णविरुद्धहि वइरिणीहि।
बालाइ कुंभि[6] करयलु णिहित्तु उद्धाइउ फणि चलु[7] रत्तणेत्तु।
हा हा करंति[8] सा खद्ध तेण णिवडिय महियलि मुच्छिय विसेण।
तणवेंढइ वेढिवि[9] पिहियणयण गयकायतेय मउलंतवयण। 10
पेसुण्णसलिलसंगहसरीइ घल्लिय पिउवणि पइमायरीइ।

घत्ता—तावाओ[10] पिओ भणइ सुसंगिया ॥
कहिं सामंगिया अव्वो मंगिया ॥ १० ॥

६ B धवलकेउ. ७ दुक्कु ताम.

10 १ ABP ते सह. २ B कडुइयवर; P कडुअवर. ३ A फुंकारु. ४ B खामोअरि; P तुच्छोयरि. ५ A °जाणेविणु बोल्लिउं. ६ ABPS बालए कुंभे. ७ A चलरत्त°. ८ S भणंति. ९ A तणुवेढिपवेढिए; BAls. तणविंडए वेढिवि; P तणवेढिए. १० A तावायउ; B तावाइउ.

12 *a* वसहद्धउ वृषभध्वजः. 14 *a* विमलतणूरुहा विमलस्य पुत्री.

10 2 पिसुणा वप्रश्रीः. 3 *a* वरइत्तमाय वज्रमुष्टिमाता. 5 *a* ससिमुहि चन्द्रवदना; छउओयरि क्षामोदरी. 7 *b* कलसि घटे. 8 *a* गइ स्वभावः कपटम्; *b* पच्छण्णविरुद्धहि अभ्यन्तरकपटायाः. 11 तणवेंढइ तृणवेष्टनेन. 13 *a* पिओ भर्ता वज्रमुष्टिः; *b* सुसंगिया शोभनसङ्गा. 14 *a* सामंगिया श्यामाङ्गी.

11

दुवई—कहियं अंबियाइ विसहरदाढागरलेण घाइया ॥
पुत्तय तुज्झे[१] घरिणि[२] खयकालमुहे विहिणा णिवाइया[३] ॥ छ ॥

अम्हेहिं मोहरसपरवसेहिं वहूी ण जीवियासावसेहिं ।
घल्लिय कत्थइ दुग्गंतरालि पेयग्गिजालमालाकरालि ।
ता चल्लिउ सो संगरसमत्थु उक्खायतिक्खकरवालहत्थु[४] । 5
हा हे सुंदरि परिसोयमाणु[५] परिभमइ पेयमहि[६] जोवमाणु[७] ।
ता तेण दिट्ठु तर्हि धम्मणामु रिसि दूसहतवसंतावखामु ।
ओवाइउं भासिउं तासु पम वइ पेच्छमि पियथम कह वि[८] देव ।
चलचंचरीयधुयकेसरेहिं तो पइं पुज्जमि इंदीवरेहिं ।
इय भणिवि भमंतें[९] तहिं मसाणि अणवरयदिण्णणरमासदाणि[१०] । 10
दिट्ठी पणइणि णासियगरेण मुणिवरतणुपवणोसहभरेण ।
जीवाविय जाय सचेयणंगि परिमिट्ठु[११] रइंगें णं रइंगि ।
रमणीदंसणपुलइयसरीरु गउ कमलेहिं[१२] कारणि कहिं मि धीरु[१३] ।
गइ पिययमि मंगीहिययथेणु कवडेण पदुक्कउ सूरसेणु ।

घत्ता—तेण मणोहरं तहिं तिह बोल्लियं ॥ 15
जिह हियउल्लयं तीइ विरोल्लियं ॥ ११ ॥

12

दुवई—परपुरिसंगसंगरइरसियउ मयणवसेण णीयओ ॥
महिलउ कस्स होंति साहीणउ बहुमायाविणीयओ ॥ छ ॥

परिहरिवि विराणउ चारु रमणु[१] पडिवण्णउं तें सहुं तीइ रमणु ।
तहिं अवसरि आयउ वज्जमुट्ठि कंतहि करि अप्पिय खग्गलट्ठि ।

---

11 १ APS तुज्झ. २ P घरणि. ३ A णिवेइया. ४ A उक्खय°; P omits this foot. ५ ABPS हा हा हे सुंदरि सोयमाणु. ६ AS चिया°; P चिहा°. ७ APS जोयमाणु. ८ B वि. ९ B मइंते; but notes a *p*: भमंते वा पाठः. १० A adds after this: अवलोइवि परबलरिउमहेण. ११ AS परिमट्ठ; B पइमट्ठ. १२ B कमलहो. १३ AP वीरु.

12 १ B गमणु.

---

11 4 *a* दुग्गंतरालि वनमध्ये श्मशाने; *b* पेयग्गि° प्रेताग्निः. 11 *b* मुणिवरेत्यादि मुनिशरीरपवनौषधेन जीविता. 12 *b* परिमिट्ठ परिमृष्टा. 14 *a* मंगीहिययथेणु मङ्गीहृदयचौरः. 15 *b* तहिं तिह बोल्लियं तत्र तथा जल्पितम्.

12 1 णीयओ नीचाः, नीता गृहीता वा. 2 °मायाविणीयओ मायायुक्ताः. 3 *b* रमणु क्रीडनम्.

इच्छिवि[2] परणरदइरसयवाहु　　　　सा ताइ जाम किर हणइ णाहु । 5
ता वणिसुएण उड्डिउ सबाहु　　　　णिसिसु पडिउ णं कालगाहु ।
अंगुलि खंडिय णं पावबुद्धि　　　　कम्मुवसमेण वड्डिय विसुद्धि ।
चिंतवइ होउ माणिणिरएण　　　　हरिसाविययणजीवियखएण[3] ।
दुग्गंधु[4] पुरंधिहिं तणउ देहु　　　　मणु पुणु बहुकवडसहासगेहु ।
रंजिज्जइ किं किर कामिणीहिं　　　　वइसियमंदिरि[5] चूडामणीहिं । 10
किं वयणें लालाणिग्गमेण　　　　अहरें किं वल्लूरोवमेण ।
किं गरुयगंडसरिसेण तेण　　　　माणिज्जंतें घणथणजुएण ।
परिगलियमुत्तसोणियजलेण　　　　किं किज्जइ किर सोणीयलेण ।
पररत्तिइ गुणविद्दावणीइ　　　　एत्थंतरि दृढमायाविणीइ ।
मइं खग्गु मुक्कु भीयाइ माइ　　　　वरइत्तहु उत्तरु दिण्णु ताइ । 5

घत्ता—घेत्तुं[6] परहणं सुट्ठु अकायरॉं[7] ॥
ताम पराइया तें[8] तहिं भायरा ॥ १२ ॥

13

दुवई—दिण्णं तेहिं तस्स दविणं तहिं तेण वि तं ण इच्छियं ॥
हिंसाअलियवयणचोरत्तणपरथीरं दुगुंछियं ॥ छ ॥
तणमिव मण्णिउं तं चोरदव्वु　　　　मंगीविलसिउं वज्जरिउं सव्वु ।
खलमहिलउ किं किर णउ कुणंति　　　　भत्तारु जारकारणि हणंति ।
तियचरिउं[1] कहंतें भायरेण　　　　छिण्णंगुलि दाविय ताइं[2] तेण । 5
तं णिसुणिवि मेल्लिवि मोहजालु　　　　सरकरिहरि[3] दयदाढाकरालु[4] ।
वसिकिय पंचेंदिय णियमणेहिं　　　　णिव्वेइएहिं वणिणंदणेहिं ।
आसंघिउ धम्ममहामुणिंदु　　　　तउ लइउं तेहिं पणविवि जिणिंदु ।
जिणदत्तहि खंतिहि पायमूलि　　　　उवसामियभवयरसल्लसूलि ।
वउं[5] लइयउं लहुं तणुअंगियाइ[6]　　　　णियचरियविसण्णइ मंगियाइ । 10

२ A इच्छिय°. ३ B खयेण. ४ B दुगंध. ५ APS °मंदिर°. ६ AP घित्त. ७ S अकारया. ८ B तहिं ते.

13 १ B तिण. २ B परयाइं. ३ Als. तृय; S प्रियचरिउं. ४ A सरहरिकरिहयदाढा°. ५ ABP वउ. ६ S तणुयंगि°.

5 *b* ताइ तया खड्गयष्ट्या. 6 *a* सबाहु स्वबाहुः. 10 *b* वइसिय° माया. 11 *b* वल्लूरोवमेण शुष्कमांसोपमेन. 12 *a* °गंड° स्फोटकः; *b* माणिज्जंतें भुक्तेन. 15 *a* मइं इत्यादि मातः इत्यादरे, कपटेन वा; परनरं दृष्ट्वा भीताया मम करात्पतितं खड्गम् (?). 16 *a* घेत्तुं गृहीत्वा.

13 6 *a* सरकरीत्यादि स्मरकरिहरिर्दयादंष्ट्राकराल इति धर्ममहामुनेर्विशेषणम्; दया एव दंष्ट्रा. 9 *b* भवयरसल्लसूलि संसारकरशल्यस्फेटके. 10 *a* तणुअंगियाइ क्षामशरीरया.

हिंतालतालतालीमहंति उज्जेणिबाहिरि काणणंति ।
अच्छंति जाम संपुण्णतुट्ठि परमेट्ठि पणासियमोहपुट्ठि ।
अंचिवि णवकमलहिं सव्वविट्ठि संपत्तु ताम सो वज्जमुट्ठि ।
पुच्छियउं तेण णिवसह वणम्मि पव्वज्जइ किं णवजोव्वणम्मि ।
भंगीवियारु तवचरणहेउ वज्जरिउं तेहिं तं मयरकेउ । 15
विद्धंसिवि लइयउं रिसिचरित्तु तहु गुरुहि पासि गुणगणपवित्तु ।
सोहम्मसग्गि सोहासमेय चारित्तवंत चंदकतेय ।
संणासु करेप्पिणु लद्धसंस सुर जाया सत्त वि तीयतिंस ।
घत्ता—तीहिंतो चुया धावइसंडए ॥
भरहे खेत्तए वरतरुसंडए ॥ १३ ॥ 20

14

दुवई—णिच्चालोयणयरि अरिकरिकुंभुद्दलणकेसरी ॥
पत्थिउ चित्तचूलु तहु पियपणइणि णामें मणोहरी ॥ छ ॥
चित्तंगउ जायउ पढमपुत्तु धयवाहणु पंकयपत्तणेत्तु ।
अण्णेक्कु गरुलवाहणु पसत्थु मणिचूलु पुप्फचूलु वि महत्थु ।
पुणु णंदणचूलु वि गयणचूलु तेत्थु जि दाहिणसेढिहि विसालु । 5
मेहउरि घणंजउ पहु हयारि सव्वसिरि णाम तहु इट्ठणारि ।
कालेण ताइ णं मयणजुत्ति घणसिरि णामें संजणिय पुत्ति ।
तेत्थु जि णिण्णासियरिउपयाउ आणंदणयरि हरिसेणु राउ ।
सिरिकंत कंत हरिवाहणक्खु सुउ संजायउ कमलाहचक्खु ।
साकेयणयरि णं हरि सिरीइ सोहंतु महंतु सुहंकरीइ । 10
तहिं चक्कवट्टि पुरि पुप्फदंतु तहु सुदु दुट्ठु तणुरुहु सुदत्तु ।
पावेण तेण णववेणुवण्ण हरिवाहणु मारिवि लइय कण्ण ।

७ A संपण्णबुद्धि; BPS संपण्णतुट्ठि. ८ AP मोहबुद्धि. ९ APS पावज्जए. १० Als. तें against Mss. ११ A तवचरित्तु. १२ B तायतीस. १३ P ताहंतो. १४ B भारहे खित्तए.

14 १ PS णिच्चालोए. २ ABP °कुंभत्थलदलण°; S °कुंभयलदलुण°. ३ S पत्थिवु. ४ AP तहो पणइणि सइ णामें. ५ S गरल°. ६ P णंदणु चूलु. ७ Als. मेहउरे; S मेहउरु. ८ A तं लद्ध सयंवरि सामवण्ण.

11 *a* हिं ता ल° पिण्डखर्जूरः. 12 *b* °पु ट्ठि पुष्टिः. 14 *a* णि व स इ यूयं निवसथ. 19 *a* ता हिं तो तस्मात् सौधर्मस्वर्गात्. 20 *b* °सं ड ए वने.

14 1 णि च्चा लो य ण य रि नित्यालोकनगरे. 7 *b* घ ण सि रि सा धनश्रीः हरिवाहनं हत्वा चक्रिपुत्रेण सुदत्तेन गृहीता. 10 *a* ह रि सि री इ श्रिया इन्द्र इव. 11 *a* पु रि अयोध्यापुरे. 12 *a* ण व-वे णु व ण्ण नीलवंशवद्वर्णा; *b* क ण्ण धनश्रीः.

सुविरत्तचित्त संसारवासि　　भूयाणंदहु जिणवरहु पासि ।
तं पेच्छिवि ते चित्तंगयाइ　　मुणिवर संजाया जइणवाइ ।
अरिमित्तवग्गि होइवि समाण　　अणसणतवेण पुणु मुइवि प्राण । 15

घत्ता—सग्गि चउत्थए सामण्णा सुरा ॥
ते संजायया सत्त वि भायरा ॥ १४ ॥

15

दुवई—सत्तसमुद्दमाणु परमाउसु भुंजिवि पुणु वि णिवडिया ॥
कालें इंद चंद धरणिंद वि के के णेय विहडिया ॥ छ ॥

इह भरहखेत्ति सुपसिद्धणामि　　कुरुजंगलि देसि विचित्तधामि ।
गयउरि घणपीणियणिद्धणीसु　　वणिणाहु सेयवाहणु णिहीसु ।
बंधुमइ घरिणि तहि धम्मकंखु　　हुउ सुउ सुभाणु णामेण संखु । 5
तहिं पुरवरि राणउ गंगदेउ　　णंदयसघरिणिमणमीणकेउ ।
उप्पण्णउ णंदणु ताहं गंगु　　गंगसुरु अवरु णावइ अणंगु ।
पुणु गंगमित्तु पुणु णंदवाउ　　पुणरवि सुणंदु संपुण्णकाउ ।
पुणु णंदिसेणु णिद्धंगराय　　अवरोप्परु णेहणिबद्धछाय ।
अण्णम्मि गब्भि संभूइ राउ　　उव्वेइउ वर णंदणु म होउ । 10
मा एहउ महुं संतावयारि　　हुई पावयम्मु संतोसहारि ।
उप्पण्णउ रेवइधाइयाइ　　रायापसें संचोइयाइ ।
बंधुमइहि बालु विइण्णु गंपि　　रक्खइ माणुसु भवियव्वुं किं पि ।
णिण्णामउ कोक्किउ ताइ सो वि　　अण्णहिं दिणि उववणि सह भमेवि ।
छ वि ते भायर भुंजंति जाम　　णिण्णामु पराइउ तहिं जि ताम । 15

घत्ता—संखें बोल्लिउं महु मणु रंजहि ॥
आवहि बंधव तुहुं सहुं भुंजहि ॥ १५ ॥

---

९ A °तावेण. १० AP पाण. ११ B संजाया.

15 १ A ण य. २ P घरणि. ३ P णंदजस°. ४ APS णंदिसेणु. ५ S °ठाय. ६ S संभूये. ७ A adds after this: जइ हुवइ एहु वरु खयहो जाउ; K writes it but scores it off. ८ B दहु; P इहु. ९ S भवियत्थु (?). १० P omits छ वि. ११ B परायउ. १२ B सुहुं; S सह.

---

14 *b* जइणवाइ जैनवादिनः. 16 *b* सामण्णा सामानिकाः.

15 4 *a* °पीणियणिद्धणीसु दरिद्रा नित्यं प्रीणिता येन सः. 5 *b* सुभाणु पूर्वोक्तसप्तभ्रातृषु मध्ये सुभानुचरः; संखु बलभद्रजीवः. 6 *b* °मीणकेउ कामः. 7 *a* ताहं गङ्गदेवनन्दयशसोः. 8 *a* णंदवाउ नन्दपादः. 9 *a* णिद्धंगराय स्निग्धाङ्गरागाः. 10 *a* अण्णम्मि अन्यस्मिन् सप्तमे पुत्रे गर्भे आगते सति. 13 *a* बंधुमइहि शंखस्य मातुः.

16

दुवई—ता भुंजंतु पुत्तु अवलोइवि सरसं गोट्ठिभोयणं ॥
वयणं रोसएण णंदजसहि जायं तंबलोयणं ॥ छ ॥
दुव्वयणसयाइं चवंतियाइ चरणयलें हउ असहंतियाइ ।
सोयाउरमणु संखेण दिट्ठु एमेवँ को वि जणु कहु वि इट्ठु ।
तं दुक्खु सदुक्खु वँ मणि वहंतु दुत्थियवच्छलु महिमामहंतु । 5
अण्णहिं दिणि बहुंकिंकरसएहिं सहुं णरणाहें हयगयरहेहिं ।
गउ सो णिण्णामु वि विस्सरामु दुमसेणमहारिसिणमणकामु ।
गुणवंतसंगसब्भावबुद्धु वंदिउ जोईसरु जोयसुद्धु ।
संखें पुच्छिउ णंदयस देव णिण्णामहु विणु कज्जेण केम ।
रूसइ परमेसरि कहइ तेम हउं जाणमि पयइपयत्थु जेम । 10
तं णिसुणिवि अवहिविलोयणेण बोल्लिउं तवसंजमभायणेण ।
सोरट्ठदेसि गिरिणयरवासि चित्तरहु राउ आसत्तु मासि ।
तहु केरउ विरइयपावपंकु सूयारउ अमयरसायणंकु ।
पहुणा जिब्भिंदियलंपडेण पलपयणवियक्खणु मुणिवि तेण ।
घत्ता—तूसिवि राइणा पायवियाणउ ॥ 15
बारहगामहं किउ सो राणउ ॥ १६ ॥

17

दुवई—णवर सुधम्मणाममुणिणाहें संबोहिउ महीसरो ॥
थिउ जइणिंददिक्ख पडिवज्जिवि उज्झियमोहमच्छरो ॥ छ ॥
पुत्तेण तासु सावयवयाइं गहियाइं छिण्णबहुभवभयाइं ।
मेहरहें णिंदिय मासतित्ति हित्ती सूयारहु तणिय वित्ति ।
आरुट्ठु सुट्ठु सो मुणिवरासु हा केम महारउ हित्तु गासु । 5

---

16 १ BAls. सो; PS तो. २ S पत्तु. ३ A णंदजसहो; BS णंदयसहे. ४ BS एमेय. ५ Als. तहुक्खु against Mss.; P सदुक्खु. ६ B वि for व. ७ APS रहहयगएहिं. ८ P णंदजस. ९ B परमेसरु. १० AS कहइहिं; B कहइ. ११ B पइड°. १२ APS जीहिंदिय°. १३ PS बारहं.

17 १ A °भवसयाइं; P °भयभयाइं.

---

16 2 वयणं मुखम्. 4 *b* एमेव वृथा. 5 *a* सदुक्खुव स्वदुःखमिव. 7 *a* विस्सरामु विश्वमनोहरः. 10 *b* परमेसरि नन्दयशा राज्ञी. 12 *b* मासि मांसे. 14 *b* °पयण° पचनं पाकः. 15 *b* पायवियाणउ पाकज्ञाता.

17 3 *a* पुत्तेण मेघरथनाम्ना. 4 *b* हित्ती अपहृता.

वेहाविय वेण्णि वि बप्पपुत्त सवणेण जिणागमवहि णिउत्त ।
मारउं मारिज्जइ णत्थि दोसु भणि एम जाम सो वहइ रोसु ।
गोयारि पइट्ठउ ता सुधम्मु सद्धालुउ छंडियछम्मकम्मु ।
सूयारें पत्थिउ दिट्ठि देहि परमेट्ठि साहु रिलि ठाहि ठाहि ।
ता थक्कु सूरि संवियमलेण पच्छण्णेण जि कुद्धें खलेण । 10
करुसाइं विसाइं सवक्कलाइं करि दिण्णइं घोसायइंफलाइं ।
सिद्धइं संभारविमीसियाइं अइपुंगमेण संभासियाइं ।
मेल्लिवि अभक्ख तवतावलोइ परदिण्णु वि विसु भुंजंति जोइ ।
गउ उज्जंतहु संणासु करिवि मुणि समंभावें जिणु सरिवि मरिवि ।
अहमिंदु हुउ उवरिल्लठाणि संभूयउ अवराइयविमाणि । 15
रसपंडिउ तइयइ णरइ पडिउ कम्मेण ण को भीमेण णडिउ ।
कालेण दुक्खेणिक्खविउं खामु णरयाउ विणिग्गउं अमयणामु ।
इह मलयविसइ विच्छिण्णणीडि विक्खायइ गामि पलासकूडि ।
तहिं णिवसइ गहवइ जक्खदत्तु पिय जक्खदत्त सो ताहं पुत्तु ।
जायउ कोक्किउ जक्खाहिहाणु अण्णेक्कु वि जक्खिलु सउलभाणु ।20

घत्ता—गरुवउ णिद्दओ दुक्कियमाणिओ ॥
लहुउ दयालुओ तहिं जणि जाणिओ ॥ १७ ॥

18

दुवई—अण्णहिं दिणि दयालुपडिसेहे कए वि सधवलु ढोइओ ॥
सयडो णिद्दएण पहि जंतहु उरयहु उवरि चोइओ ॥ छ ॥

फणि मुउ हुउ सेयवियापुरीहि वासवपत्थिवहु वसुंधरीहि ।
रायाणियाहि णंदयस धूयं कइवण्णियतणुलायण्णरूयं ।

२ B मारुउ. ३ B छंडिय°. ४ S सव्वकलाइं. ५ A घोसाईफलाइं; Als. घोसायइफलाइं against his Mss. ६ AP विसभार°. ७ AP संपासियाइं. ८ P विसु वि. ९ P उज्जेंतहो. १० A सब्भावें. ११ S दुक्खु. १२ B णिक्खविय. १३ B विणग्गउ. १४ B मलइ. १५ APS गरुओ. १६ AS जणे; B जण°.

18 १ A °पडिसेवहे. २ P सेयवियार°. ३ P धूव. ४ P °रूव.

6 *a* वेहाविय वञ्चितौ; *b* सवणेण मुनिना; °वहि मार्गे. 7 *a* मारउ मारिज्जइ हनन् (घ्नन्) हन्यते. 8 *a* गोयारि भिक्षायाम्; *b* °छम्मकम्मु पाषण्डकर्म. 11 *a* विसाइं विषमिश्रितानि; सवक्कलाइं त्वचायुक्तानि; *b* घोसायइं फलाइं कोषातकीफलानि. 12 *a* सिद्धइं पक्वानि. 16 *a* रसपंडिउ सूपकारः. 18 *a* °णीडि गृहे. 19 *b* सो सूपकारः. 20 *b* सउल° स्वकुलम्. 21 *a* गरुवउ ज्येष्ठः.

18 1 °पडिसेहे कए वि प्रतिषेधे कृतेऽपि; सधवलु बलीवर्दसहितः. 2 उरयहु उवरि सर्पस्योपरि.

भायरवयणें उवसंतभाउ णिक्किउं णंदयसहि पुत्तु जाउ। 5
णिण्णामउ ओहच्छइं ण भंति तें वासवतणयहि मणि असंति।
इय णिसुणिवि चल परिचत्त फारु संसारु असारु सरीरं भारु।
छ वि णिवेणंदण पावज्ज लेवि थिय मिच्छासंजमु परिहरेवि।
सो संखु वि सहुं णिण्णामएण ण्हायउ मुणिवरदिक्खामएण।
सुव्वय पणवेप्पिणु संजईउ जायउ णंदयसारेवईउ। 10
ए सत्त वि दढपडिबद्धपणेय अण्णहिं मि जम्मि महुं होंतु तणय।
इय णंदयसइ बद्धउं णियाणु को णासइ विहिलिहियउं विहाणु।
कालें जंतें सयलइं मुयाइं दहमेइं दिवि अमरत्तणु गयाइं।
सोलहसमुद्दभुत्ताउयाइं पुणु तहिं होंतइं सव्वइं चुयाइं।
सो संखणामु बलएउ जाउ रोहिणिहि गब्भि जायवहं राउ। 15

घत्ता—छुहधवलियघरि धणपरिपुण्णए ॥
मयवइदेसइ णयरि दसण्णए ॥ १८ ॥

19

दुवई—जाया देवसेणरायए सुया धणएविगब्भए ॥
सा णंदयसे पुत्ति देवइ णामेण पसिद्धिया जए ॥ छ ॥

वरमलयदेसि पुरि भद्दिलंकि पासायतुंगि वियलियकलंकि।
धणरिद्धिवंतु तहिं वसइ सेट्ठि वइसवणसरिसु णामें सुदिट्ठि।
रेवइ तहु सेट्ठिणि अलयणामें हूई पीणत्थणि मज्झखाम। 5
छह तणुरुह देवइगब्भि जाय लक्खणलक्खिय ते चरमकाय।
दरिसियसज्जणसुहसंगमेण इंदाएसें णिय णइगमेण।
वणिघरिणिहि अप्पिय मइणयरि कलहोयसिहरकीलंतखयरि।

५ S णिक्किउ. ६ P °जस पुत्तु. ७ B उहइच्छइ in first hand and तुह इच्छइ in second hand; S ओच्छहइ; Als. एहु अच्छइ against Mss. ८ S वासतणयहि, omits व. ९ A परियत्तपारु. १० S सरीरु. ११ S नूवणंदण. १२ A °परिबद्ध°. १३ A दसइं; P दसमए. १४ P दसण्णवे.

19 १ P णंदजस. २ A °महिलदेसे. ३ B णाउं. ४ B °खामु. ५ B भद्दिणयरि. ६ B °सिहरि.

5 *a* भायरवयणें लघुभ्रातृवचनेन; *b* णिक्किउ निर्दयचरः. 6 *a* ओहच्छइ एष तिष्ठति; *b* तें इत्यादि तेन कारणेन वासवपुत्र्या मनसि अक्षमा. 7 *a* फारु स्फारः प्रचुरः संसारः त्यक्तस्तैः. 9 *b* °दिक्खामएण दीक्षामृतेन. 17 *b* दसण्णए दशार्णे.

19 3 *a* भद्दिलंकि भद्रिलनाम्नि. 4 *b* वइसवणसरिसु धनदसमः. 7 *b* णिय नीताः; णइगमेण नैगमदेवेन. 8 *a* वणिघरिणिहि रेवतीचर्याः अलकायाः; *b* कलहोय° सुवर्णम्.

सिसु देवदत्तु पुणु देवपालु पुणु अग्गिदत्तु भुयबलिविसालु ।
अण्णेक्कु वि पुत्तु अग्गियपालु सत्तुहणु जिणसत्तु वि असालु । 10
जरमरणजम्मविच्छिवारणेण हुया रिसि केण वि कारणेण ।
पिंडत्थिं णयरि घरि घरि पइट्ठ चिरभवतणुरुह पइं माइ दिट्ठ ।
वियलियथणथण्णें सिसु वेहु तें कज्जें तुह उप्पण्णु णेहु ।
पुव्विल्लि जम्मि चलगरुडकेउ पेच्छेवि सयंभु पहु वासुदेउ ।
तवचरणजलणहुयकामएण बद्धउं णियाणु णिण्णामएण । 15
पही दाविथवसुहइसिद्धि आगामि जम्मि महुं होउ रिद्धि ।

घत्ता—कप्पि सुरो हुउ चुउ किसलयभुए ॥
रिसि णिण्णामउ आयण्णहि सुए ॥ १९ ॥

20

दुवई—कंसकढोरकंठमुसुमूरणभुयबलदलियरिउरहो ॥
णिवजरसिंधगरुयजरतरुवरसरजालोलिहुयवहो ॥ छ ॥

भीसणपूयणथणरत्तलिहु घरु आय कायवहणेक्कचिंतु ।
उत्तुंगतुरंगमसिरकयंतु जमलज्जुणभंजणमहिमवंतु ।
उप्पाडियमायावसहसिंगु णित्तेइकयखयदिणपयंगु । 5
उड्डावियजउणासरविहंगु करातिक्खणक्खणत्थियभुयंगु ।
धोरेउ धराधरधरणबाहु कमलावल्लहु सिरिकमलणाहु ।
तुह आयउ तणुरुहु रिउविरामु णारायणु णवघणमसलसामु ।
तं णिसुणिवि सीसें देवईइ गुरु वंदिउ सुविसुद्धइ मईइ ।

---

७ P भुयबलि. ८ B सत्तुहण. ९ B पिंडत्थए पुरि घरि. १० P °थणयण्णें. ११ ABS सिसु. १२ ABS पुव्विल्ल°. १३ A णिच्छेवि; S पच्छेवि. १४ A सयंपहु; B सइंभु; S सइंभू. १५ P वासुएउ. १६ BAls. कप्पसुरो.

20 १ PS °कठोर°. २ PS °जरसेंध°. ३ B °गरुव°. ४ A °पहणेक°; S °महणेक°. ५ AS उत्तुंगु तुरंगासुरकयंतु; P उत्तुंगतुरंगासुरकयंतु. ६ S °वसहिसंगु. ७ B णित्तेइयकय°; S णित्ते-कय°. ८ A °वल्लहो. ९ B घणघण°.

---

12 *a* पिंडत्थि आहारार्थम्. 14 *b* सयंभु स्वयंभूः तृतीयनारायणः. 17 *b* किसलयभुए हे कोमलभुजे.

20 1 °कंठमुसुमूरण° गलचूर्णकः; °रहो रथः. 2 °सरजालोलिहुयवहो बाणजालश्रेणिवैश्वानरः. 5 *b* °खयदिणपयंगु प्रलयकालदिनसूर्यः. 6 *b* °णत्थियभुयंगु नाथितकालनागः. 7 *a* °धराधर° गिरिः; *b* °कमलणाहु पद्मनाभो नारायणः, कृष्ण इत्यर्थः. 8 *a* रिउविरामु शत्रुविच्छेदकः. 9 *a* सीसें मस्तकेन.

केहिं मि लइयाइं महव्वयाइं तहिं केहिं मि पंचाणुव्वयाइं। 10
भो साहु साहु विच्छिण्णकम्मु जिणु णेमि भणिउ पच्छण्णधम्मु।
घत्ता—इय लोउं कहं भरहसुरमणिया ॥
णिसहाँ पहसिया सुंकुसुमवसणिया ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे देवइबलएवसमौयरदामोयर-
भवावलिवण्णणं णाम एकूणणवदिमो
परिच्छेउ समत्तो ॥ ८९ ॥

१० S पच्छण्णु धम्मु. ११ B भारह°. १२ A णिसह. १३ P कुसुम° (omits सु). १४ A °समायरवण्णणं. १५ S °भवावली°.

11 *b* पच्छण्णधम्मु धर्मो नेमिरूपेण स्थित इत्यर्थः. 12 *b* भरहसुरमणिया भारतकुलोत्पन्नकौरववंशजाता देवकी. १३ *a* णिसहा पहसिया नृणां सभा च कथां श्रुत्वा हृष्टा.

णिसुणिवि देवइदेविहि भवइं पाय णवेप्पिणु णेमिहि ॥
हरिकरिसरहंसगरुडद्धयहु धम्मचक्कवरणेमिहि ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—तो सोहग्गरूवसोहावहि गुणमणिमहि महासई ॥
पभणइ सच्चभोम मुणिपुंगम भणु मह जम्मसंतई ॥ छ ॥

भासइ गणहरु वियसियतरुवरि मालइगंधि मलयदेसंतरि । 5
भद्दिलपुरि मेहरहु णरेसरु सुहउ णं पंचमु मणसियसरु ।
णंदादेवि चंदबिंबाणण णहपहरंजियदिक्काणण ।
अवरु वि भूइसम्मु तहिं बंभणु कमलाबंभणिथणलोलिरमणु ।
णंदणु णाम मुंडसालायणु अइकामुय कामियबालायणु ।
जणि जायइ चुयचारुविवेयइ सीयलणाहतित्थि वोच्छेयइ । 10
तेण जिणिंदवयणु विद्धंसिवि गाइभूमिदाणाइं पसंसिवि ।
कव्वु करिवि रायहु वक्खाणिउं मूढें राएं अण्णु ण याणिउं ।
किं किज्जइ घोरें तवचरणें किं णरिंद संणासणमरणें ।
विप्पहं वाहणु णयणाणंदिरु दिज्जइ कण्ण सुवण्ण सुमंदिरु ।
घत्ता—मंचउ सहुं महिलइ मणहरइ रयणविहूसणु णिवसणु ॥ 15
जो ढोवइ धम्में बंभणहं मेइणि मेल्लिवि सासणु ॥ १ ॥

2

दुवई—धीर वि णर तसंति घरवासि व णिवसइ गोमिणी घरे ॥
तस्स णरिंदचंद किं बहुपं होइ सुहं भवंतरे ॥ छ ॥

केसालुंचणु णिच्चेलत्तणु णग्गत्तणु तणुमलमइलत्तणु ।

---

1 १ ABPS पय पणवेप्पिणु. २ S °करुह°. ३ A धम्मचक्क. ४ B ता. ५ ABP सचहाम. ६ B °पुंगव in second hand. ७ P विहसिय°. ८ S भद्दलपुरे. ९ APS °कामुउ. १० B कमीवालोयणु. ११ S जाए. १२ सुवण्णु. १३ P समंदिरु. १४ PS रयणु. १५ S ढोयइ.

---

1 2 हरीत्यादि मालामृगेन्द्रादिध्वजायुक्तस्य. 6 *b* पंचमु मणसियसरु पञ्चमो मारणः कामबाणः. 7 *b* °दिक्काणण दिक्समूहमुखम्. 9 *b* अइकामुय अतिकामुकः; कामियबालायणु वाञ्छितस्त्रीजनः. 10 *a* चुयचारुविवेयइ च्युतचारुविवेके जने जाते सति; *b* वोच्छेयइ उच्छिन्ने सति. 12 *a* कव्वु शास्त्रम्. 14 *a* विप्पहं वाहणु विप्राणां वाहनं दीयते; *b* कण्ण कन्या; सुवण्ण शोभनवर्णा.

2 2 सुहं शुभम्. 3 *b* णग्गत्तणु पर्णाद्यावरणत्यक्तम्.

माणुसु समणधम्मविग्गुत्तउं　　मरइ परत्तपिसाएं मुत्तउं ।
अम्हारइ महयालि महु पिज्जइ　　सिद्धउं मिट्ठउं मासु गसिज्जइ । 5
अम्हारइ पिवि वियलियमइरइ　　होइ सग्गु सउयामणिमइरइ ।
अम्हारइ गोसउ विरइज्जइ　　जणणि वि बहिणि वि तहिं जि रमिज्जइ।
धम्मु परिट्ठिउ वेयपमाणें　　किं किर खवणएण अण्णाणें ।
कंताणेहणिबंधणबद्धउ　　जीहोवत्थासत्तिइ खद्धउ ।
अइ धुत्तागमकरणें णडियउ　　सत्तमणरइ डोड्डु सो पडियउ । 10
दीहरकालचक्कि णिद्धाडिइ　　इयर वि छ वि हिंडिउ परिवाडिइ ।
पुणु तिरिक्खि पुणु णरइ णिहम्मइ　　को दुक्खाइं ण पावइ दुम्मइ ।
विमलगंधमायणगिरिणिग्गय　　जलकल्लोलगलत्थियदिग्गय ।
णीरपूरपूरियमहिहरदरि　　गंधावइ णामेण महासरि ।
ताहि तीरि णं कुंकियवेल्लिहि　　पसुअसुहरभल्लंकियपल्लिहि । 15
सो सालायणु भवविब्भुल्लउ　　कालु णाम आयउ सवरुल्लउ ।

घत्ता—वर धम्मरिसिहि णिसुणेवि गिर मासाहारु मुएप्पिणु ॥
वेयड्ढि पवरअलयाउरिहि खेयरु हुयउ मरेप्पिणु ॥ २ ॥

3

दुवई—पुरुबलपत्थिवस्स जुइमालाबालालालियतणुरुहो ॥
सो वि अणंतवीरकहियामलतवणिरओ महाबुहो ॥ छ ॥

मरिवि दुव्वसंजउ रिसि अइबलु　　सुरु सोहम्मि लहिवि जिणवयहलु ।
खगमहिहरि रहणेउरपुरवरि　　पहुहि सुकेउहि णहयरकुलहरि ।
पुत्ति सयंपहाहि संभूई　　सच्चभाम णं कामविहूई । 5

---

2 १ B समणु. २ P °धम्मु. ३ S °विगुत्तउं. ४ AP महालि; S महयाले; Als. महयलि. ५ APS मासु वि खज्जइ. ६ S नूव. ७ B सउयामिणि°. ८ S गोसवु विरज्जइ. ९ P मि for जि. १० AB डोड्डु. ११ A °मायणि. १२ S °महिहरि. १३ S °भल्लंकी°. १४ S सा साला°. १५ B मुए-विणु. १६ A पउर. १७ P मुएप्पिणु.

3 १ A पुरबल°. २ B पुहुहि. ३ ABP सच्चहाम.

---

4 *b* परत्तपिसाएं परलोकपिशाचेन. 5 *a* महयालि यज्ञकाले; *b* सिद्धउं निष्पन्नम्. 6 *a* वियलियमइरइ विगलितमतिपापया मदिरया; *b* सउयामणिमइरइ सौत्रामणियज्ञमदिरया. 9 *b* जीहोवत्थासत्तिइ जिह्वोपस्थाशक्त्या भक्षितः. 10 *b* डोड्डु स्थूलः. 11 *b* इयर वि छ वि अन्येषु अपि षट्सु नरकेषु; परिवाडिइ क्रमेण. 13 *a* °गंधमायण° मलयाचलः.

3 1 पुरुबलपत्थिवस्स महाबलराजः. 2 सो वि अतिबलनामा.

णेमित्तियणरेहिं तुहुं दिट्ठी पट्टी घत्त करिवि सिट्ठी ।
पुत्ति तुहारी सिय माणेसइ अद्धचक्कवट्टिहि पिय होसइ ।
परिणिय राएं जायवचंदें णायसेज्ज चप्पिवि गोविंदें ।
कवहिं सुद्धी बहुसवकम्में मइप्पविसणु लइउं धम्में ।
मइं केहाइं देवं कयकम्मइं पभणइ रुप्पिणि भणु भणु जम्मइं । 10
कहइ मुणीसरु इह दीवंतरि भरहवरिसि मागहदेसंतरि ।
सोमरिगामि विप्पु सोमिल्लउ लच्छीमइहि कंतु रिद्धिल्लउ ।
तहु सा बंभणि दप्पणु जोवइ घुसिणपंकु मुहि मंडणु ढोवइ ।
ताम समाहिगुत्तपडिबिंबउं अद्दइ दिट्ठउं मुक्कविडंबउं ।
घत्ता—पुव्वकयकम्मविहिण्णमइ भणइ लच्छि उब्भेवि करु ॥ 15
णिल्लज्जु अमंगलु विहलउ किह आयउ मेरउं घरु ॥ ३ ॥

4

दुवई—खरसूयरसमाणु दुग्गंधु दुरासउ दुक्खभायणो ॥
किह मइं दिट्ठु पट्टु मलमइलिउ भिक्खाहारभोयणो ॥ छ ॥

दप्पिट्ठहि दुट्ठहि णिक्किट्ठहि एम चवंतिहि तेहि गुणभट्ठहि ।
मच्छियमिट्ठइ खुद्दु अणिट्ठहि अंगु विणट्ठउं उंबरकुट्ठइ ।
तक्खणि सडियइं रोमइं णक्खइं भग्गइं णासावंसकडक्खइं । 5
परिगलियउ वीस वि अंगुलियउ तणुलायण्णवण्णु खणि ढलियउ ।
रुहिरपूयकिमिपुंजकरंडउ देहु परिट्ठिउ मासहु पिंडउं ।
पावयम्म पुरिलोएं तज्जिय बंधवंयणभत्तारविवज्जिय ।
जणि भिक्ख वि मग्गंति ण पावइ पाविट्ठहं को वण्णइ आवइ ।
भोयणु घणु हियवइ संभरेप्पिणु मुय सा सुण्णालइ पइसेप्पिणु । 10

४ S णेमिय°. ५ P तुम्हारी. ६ S सुय. ७ A देवि कयकम्मइं. ७ S पहणइ. ८ B रूपिणि. ९ B मुणीरु. १० P सोमरि°. ११ AS जोयइ. १२ AS ढोयइ. १३ P °गुत्तु. १४ P °विडंबिउ. १५ P बाल. १६ B करि. १७ S णिलज्जु. १८ B मेरए घरि.

4 १ AP दुट्ठु दिट्ठु मल°. २ B एहउ. ३ B चवंतिहिं तिहिं. ४ A मच्छियसिट्ठहे. ५ P °लावण्ण°; S °लायण्णु. ६ B °वणु ७ S उंबउ. ८ APS पुरलोएं. ९ P बंधवजण°. १० APS सुयरेप्पिणु. ११ S पएसेप्पिणु.

6 *a* णेमित्तिय° नैमित्तिकैः. 7 *a* सिय लक्ष्मीम्. 11 *b* अद्दइ दर्पणे; मुक्कविडंबउ मुक्तकन्दर्पः. 15 °विहिण्ण° विघटिता; उब्भिवि ऊर्ध्वीकृत्य.

4 4 *a* मच्छियमिट्ठइ मक्षिकामृष्टया. 10 *a* भोयणु इत्यादि भर्तृगृहस्य भोजनं धनं च स्मृत्वा; *b* सुण्णालइ शून्यगृहे.

णियवरइत्तहु मंदिरि सुंदरि हूई दीहदेहँ छुच्छुंदरि ।
धाइय रमणहु उवरि खणेहँ तेण वि सभयचमक्कियदेहेँ ।
घल्लिय अच्छोडिवि घरप्रंगणि अंगरुहिरु उच्छलिउं णहंगणि ।
मुयँ तहिं पुंणु गद्दहजम्मंतरु भुत्तउं भीसणु दुक्खु णिरंतरु ।
पुव्वब्भासें णयणपियारउं घरु आवंतु सणाहहु केरउं । 15
चंडदंडसिलघाएं तासिउ गद्दहु बहुवएहिं विद्धंसिउ ।
अवडि पडिउ मुउ सूयरु जायउ पेक्खिवि घोरमाससंघायउ ।

घत्ता—सो खंडिवि पउलिवि घइ तलिवि[20] संभारंभें सिंचिवि ॥
खद्धउ जीहिंदियलुद्धइहिं[21] लोइहिं[22] लुंचिवि[23] लुंचिवि ॥ ४ ॥

5

दुवई—मंदिरणामगामि मंडुक्किहि मेच्छंधिणिहि हूइया ॥
सूयरु मरिवि पुत्ति दुग्गंधतणू णामेण पूइया ॥ छ ॥

मायइ मइयइ मायामहियइ पालियकरुणाभावें सहियइ ।
बप्पु ताहि कहिं जीवइ पावहि बहुदालिद्दुक्खसंतावहि ।
विदिगिच्छासरितीरि अहिट्ठिहि मुणिहि समाहिगुत्तपरमेट्ठिहि । 5
चिरु दप्पणि दिट्ठहु तहु संतहु पडिमाजोयठियहु भयवंतहु ।
दंस मसय णिवडंत णिवारइ चेलंचलपवणेणोसारइ ।
दुरियतिमिरहर णासियबहुभव मलइ चलेंण कोमलकरपल्लव ।
संजमभारु वहंतहं संतहं जेण चाडु विरइउं गुणवंतहं ।
तासु किलेसु असेसु वि णासइ रविउग्गमणि घम्मु रिसि भासइ । 10

घत्ता—तुहुं पुत्तिइ जीवहं करहि दय मज्जु मासु महु वज्जहि ॥
दुज्जयबल पंचिंदिय जिणिवि जिणु मणसुद्धिइ पुज्जहि ॥ ५ ॥

---

१२ P देहवेह. १३ PS °चवक्किय°. १४ BP °पंगणे. १५ APS मय. १६ AP गय for पुणु. १७ AP बहुयएहिं. १८ P वडिउ. १९ APS सूयरु. २० AP तलियउ. २१ APS °लुद्धएण; B °लुद्धयहिं. २२ APS लोएण; लोएहिं. २३ P लुंचिवि once.

5 १ S °णामग्गामे. २ S omits मच्छंधिणिहि. ३ B सूअर. ४ A मायासहियए. ५ P °भावए. ६ B जीवहि. ७ A विदिगिंछा°; B विजिगिंछा°; PS विजिगिच्छा°. ८ P °सरे. ९ A दप्पणु. १० APS °चरण. ११ AS संजमसारु महंतु वहंतहं; B संजमसारु वहंतु वहंतहं; PAls. संजमभारु महंतु वहंतहं. १२ BS पुत्तिय. १३ P omits °बल°. १४ S omits जिणु.

---

11 *a* वरइत्तहु भर्तुः; सुंदरि सुन्दरे. 16 *b* बहुवएहिं छात्रैः. 17 *a* अवडि कूपे; *b* पेक्खिवि पापिभिर्लोकैर्दृष्ट्वा; माससंघायउ मांससमूहः. 18 पउलिवि पक्त्वा; घइ घृते; संभारंभें संभारोदकेन.

5 3 *a* मायामहियहि मातृमात्रा (मातामह्या). 4 *a* पावहि पापिन्याः. 5 *a* अहिट्ठिहि मुनेः. 9 *b* चाडु चाटुवचनं विनयश्च. 11 पुत्तिइ हे पुत्रिके. 12 मणसुद्धिइ भावपूजया.

6

दुवई—इय धम्मक्खराइं आयण्णिवि मण्णिवि ताइ कण्णए ॥
अणुवयगुणव्वयाइं पडिवण्णइं उवसमरसपसण्णए ॥ छ ॥

मुणिपायारविंदु सेवंतिहि णियजम्मंतराइं णिसुणंतिहि ।
मोयदेहसंसारविहेयउ हियउल्लइ वड्डिउ णिव्वेयउ ।
गामा गामंतरु हिंडंतिहि अज्जियाहि सहुं जिण वंदंतिहि । 5
गयइ कालि जरकंथाधारणि पासुयपाणाहारविहारिणि ।
सिट्ठसिट्ठणिट्ठाइ मुणिट्ठिय अई वरंति गिरिविवरि परिट्ठिय ।
पक्खि पक्खि उववासु करंती दुक्कियाइं घोराइं हरंती ।
अण्णइ बालइ बालवयंसिय पुण्णवंत तुहुं भणिवि पसंसिय ।
अणसणु करिवि तेत्थु मुणिमंतिणि हूई अच्चुइंदसीमंतिणि । 10
पणपण्णासपल्लथिरदेही रूवें जोव्वणेण सा जेही ।
तिहुयणि अण्णं ण दीसइ तेही तं वण्णंती कइमइ केही ।
चविवि वियब्भदेसि कुंडलपुरि वासवरायहु सइसिरिमइउरि ।
आसि कालि जा होंती बंभणि सा तुहुं पवहुं हूई रुप्पिणि ।
घत्ता—कोसलपुरि भेसहु पुहइवइ महि तासु पियं गेहिणि ॥ 15
सोहग्गभवणचूडामणि व णं सिसिरयरहु रोहिणि ॥ ६ ॥

7

दुवई—आयउ ताहं विहिं मि सिसुपालु कयाहियकंदमोयणो ॥
पसरियखरपयाव मत्तंडु व चंडवहु तिलोयणो ॥ छ ॥
अण्णहिं दिणि णेमित्तिउ भासइ जं दिट्ठें तइयच्छि पणासइ ।

6 १ S omits मण्णिवि. २ S omits पडिवण्णइं. ३ B °रसंपुण्णइए. ४ P °विंद. ५ B °विदेहउ. ६ ABP वउ. ७ AP तेत्थु करेवि. ८ S सा हेजी. ९ P दीसइ अण्ण ण. १० BS होंति. ११ S प्रिय.

7 १ B सिसुवालु. २ P °पयाउ; S °पयाणु. ३ B चंडयवहु; P चंडु पहु. ४ S दिणिहि णिमित्तिउ. ५ AP विणासइ.

6 4 *a* °विहेयउ विभेदः त्रिप्रकारः. 7 *a* सिट्ठसिट्ठणिट्ठाइ महर्षिभिः कथितचारित्रेण. 9 *a* अण्णइ बालइ अन्यया स्त्रिया. 10 *a* मुणिमंतिणि पञ्चनमस्कारयुक्ता. 15 भेसहु भेषजराजा. 16 सिसिरयरहु चन्द्रस्य.

7 1 कयाहियकंदमोयणो कृतशत्रुकन्दमोजनः, तस्य भयाद्रिपवो वनं गता इत्यर्थः. 2 मत्तंडु व सूर्यवत्, चंडवहु प्रचण्डानां वधकर्ता रुद्रवत्, त्रिनेत्रो वा चण्डी शतचण्डी पार्वती वधूर्यस्या 3 *b* तइयच्छि तृतीयनेत्रम्.

तहु हत्थेण मरणु पावेसइ महीसुउ जमपुरु आएसइ ।
तं सुइविरसु वयणु णिसुणेप्पिणु मायापियरइं तणउ लएप्पिणु । 5
सहसा संगयाइं दारावइ दिट्ठउ हरि सिरिकयमारावइ ।
तइंसणि भालयलुवरिट्ठउं बालहु तइयउं णयणु पणट्ठउं ।
जाणिउं तक्खणि मायातापं पुणु मरेसइ महुमहपापं ।
महिउ वारवार ओलग्गिवि पत्थिउ महिइ पायहिं लग्गिवि ।
महुं तणुरुहहु रइयसुहिडाहहं पइं खमियव्वउं सउं अवराहहं । 10
तं पडिवण्णउं कण्हें मणहरु ताइं गयाइं पुणु वि णियपुरवरु ।
वइरिहिं सउं अवराहइं पुण्णउं विसंहिउं हरिणा महिहि दिण्णउं ।
सो णिहणिवि तुहुं परिणिय कण्हें आणिय दारावइ अलतण्हें ।
तं णिसुणिवि मुणिवरकुलें वंदिउं अप्पउं देविइ पुणु पुणु णिंदिउ ।
घत्ता—ता जंबवइ णमंसियउ पुच्छिउ भावें मुणिवरु ॥ 15
आहासइ जलहरगहिरसरु णिसुणहि सुइ समवंतरु ॥ ७ ॥

8

दुवई—जंबूणामदीवि पुव्विल्लविदेहइ पुक्खलावई ॥
देसु असेसदेसलच्छीहरु पसमियमाणवावई ॥ छ ॥

वीयसोयपुरि दमयहु वणियहु देवमइ त्ति घरिणि धणधणियहु ।
देविल सुय सउमित्तहु दिण्णी पइमरणेण भोयणिव्विण्णी ।
मुणि जिणदेउ णाम आसंघिउ धम्महु ताइ तवेणवलंघिउ । 5
गुरुचरणारविंदु सुमरेप्पिणु कालि पउण्णइ तेत्थु मरेप्पिणु ।
देवय णवपल्लवपायवघणि उप्पण्णी मंदरणंदणवणि ।

६ AS जमपुरे; B जमउरु. ७ S सुणेप्पिणु. ८ B °वरिट्ठिउं. ९ P महए. १० B पण्णउं. ११ P विसहिवि. १२ AP कय महएवि पेम्मजलतण्हें. १३ P °कुलु. १४ A अप्पउं; PS अप्पणु. १५ PAls. जंबवइए. १६ P मुणिवरु भावें. १७ B सइ.

8 १ S पुव्विल्लविल्लवि°. २ B °विदेहे. ३ B असेसु. ४ B °सोयउरि. ५ B देमइ. ६ B घरिणी. ६ PAls. धणधणियहो. ७ A सोयणि°. ८ ABP तवेण विलंघिउ. ९ P सुयरेप्पिणु.

5 *a* सुइविरसु कर्णविरसम्. 6 *b* सिरिकयमारावइ श्रियः कृता मारापदा कामापदा येन सः. 7 *a* भालयलुवरिट्ठउ भालोपरि स्थितम्. 9 *a* महिउ हरिः. 10 *a* रइयसुहिडाहहं कृतः सुहृदां दाहो यैः. 12 *b* विसहिउं क्षमितः. 16 सुइ हे पुत्रि.

8 1 °आवई आपत्. 3 *a* दमयहु दमकस्य; *b* धणधणियहु धनं चतुष्पदं सुवर्णादि च तद्विद्यते यस्य. 4 *a* सउमित्तहु सौमित्रस्य. 5 *b* तवेणवलंघिउ तपसा उल्लंघितः. 7 *a* देवय देवता उत्पन्ना; *b* मंदरणंदणवणि मेरुसंबन्धिनि नन्दनवने.

तहि भुंजंतिहिं[10] सोक्खु सहरिसहं चउरासीसहास मय वरिसहं ।
पुणु महुसेणबंधुवइणामहं तुहुं हूई सि पुत्ति सुहकामहं ।
बंधुजसंक विहियजिणसेवहु अवर धूय सुंदरि जिणदेवहु । 10
सा जिणयत्त णाम विक्खाई तुज्झु वयंसुल्लिय पियँ हूई ।
जिणकमकमलजुयलगयमइयउ बेण्णि वि संणासेण जि मुइयउ ।
पढमसग्गि तुहुं देवि कुबेरहु चिरसंचियसँकम्मसुंदेरहु ।
पुणु वि पुंडरिंकिणिपुरि तरुणिहि वज्जें वणियं सुप्पइघरिणि ।
तुहुं सुय सुमइ णाम संभूई तीं पं धम्में पेसिर्य हूई । 15
सुव्वय भिक्खामग्गि पइट्ठी भवणंगणि चंडंति पइं दिट्ठी ।
सहुं पणिवाएं पय धोएप्पिणु दिण्णउं दाणु समाणु करेप्पिणु ।
अवरें वि तणुसंतवियपयासें रयणावलिणामेणुववासें ।
मुय संणासें णिरु णिम्मच्छर हूई बंभलोइ तुहुं अच्छर ।
घत्ता—इह जंबूदीवइ वरमरहि इह खेयरंकिइँ महिहरि ॥ 20
उसेरसेढिहि ससियरभवणि जणसंकुलि जंबूपुरि ॥ ८ ॥

9

दुवई—अरिकरिरत्तलित्तमुत्ताहलमंडियखग्गभासुरो ॥
खगवइ जंबवंतु तहिं णिवसइ बलणिज्जियसुरासुरो ॥ छ ॥
जंबुसेणदेविहि गयवरगइ पुणु हूई सि पुत्ति जंबावइ ।
पवणवेयखयरहु कोमलियहि तुह मेहुणउ पुत्तु सामलियहि ।
णमि णामें कामाउरु कंपइ एकहिं दिणि सो एम पजंपइ । 5
बालकयलिकंदलसोमाली माम माम जइ देसि ण साली ।

१० A भुंजंतें सोक्खु; B भुंजंतिहिं सोक्ख; P भुंजंति सोक्ख सहयरिसहं. ११ B बिअंसुल्लय. १२ S प्रिय. १३ ABS मइयउ. १४ B °सकम्मसंदेरहो; P सुकम्मसोंदेरहो. १५ AP पुंडरीकिणिउरि; Als. पुंडरीगिणि° against Mss.; S पुंडरिंगिणिपुरि. १६ B णामें. १७ B omits ता. १८ B संपेसिय. १९ P °मग्ग पइट्ठी. २० P चडंत. २१ S धोवेप्पिणु. २२ BS सुमाणु. २३ B अवर. २४ B °णामें उववासें. २५ S खरयरंकिए. २६ B °कियमहिहरे. २७ P °सेढिहे.

9 १ A °लित्तरत्त°. २ AP हूई सुपुत्ति; S हूसि. ३ AP बाली.

10 *a* बंधुजसंक बन्धुयशाः नाम. 11 *b* वयंसुल्लिय सखी. 13 *b* चिरेत्यादि चिरसंचितस्वकर्मसौन्दर्यस्य, 'अत्रकन्दुकसौन्दर्यादावेत्' इति अनेन सूत्रेण आदेरस्य एत्वं, अत्रस्थाने एत्थ, कंदुक, गेंदुव, सौंदर्य, सुंदेर. 17 *b* समाणु सन्मानपूर्वकम्. 21 ससियरभवणि चन्द्रकिरणयुक्ते गृहे.

9 4 *b* मेहुणउ विवाहवाञ्छकः; पुत्तु नमिनामा. 6 *a* बालकयलि° नवीनकदली; *b* साली कन्या.

तो अवहरमि णेमि[^५] बलदप्पें तं पिसुणेवि तेण तुह बप्पें ।
मच्छियविज्जइ सो खावाविउ भाइणेउ ससुरें संताविउ ।
किंणरपुरणाहेण ससेल्लें आवेप्पिणु ससयणवच्छल्लें ।
मच्छियाउ विद्धंसिवि चित्तउ जंबुकुमारें तांव तहिं पत्तउ । 10
णिरु गज्जंतु णाइ खयसायरु जंववंतसुउ तेरउ भायरु ।
तेण असेसउ विज्जउ छिण्णउ पडिभडणियरु दिसावलि दिण्णउ ।
णेमिणा सहु दिणयरकरपविमलि अक्खमालि गउ णासिवि णहयलि ।
तहिं अवसरि संगामपियारउ जाइवि कण्हहु अक्खइ णारउ ।

घत्ता—जंबूपुरि जंववंतखगहु जंबुसेण पणइणि सइ ॥ 15
रूवें सोहग्गें णिरुवमिय तेहि धीय जंबावइ ॥ ९ ॥

10

दुवई—ता सरसुच्छुदंडकोवंडविसज्जियसरवियारिओ ॥
रणि मयरद्धएण गरुडद्धउ कह वि हु ण मारिओ ॥ छ ॥

हरि असहंतु मयणबाणावलि गउ जिणपयणिहितकुसुमंजलि ।
खयरगिरिंदणियंबु पराइउ जाणिउ जंववंतु अवराइउ ।
उववासिउ दब्भासणि सुत्तउ तावायउ सिणेहसंजुत्तउ । 5
अक्खिलु चिरभवभाइ सहोयरु भासिवि तासु महासुक्कामरु ।
साहणविहि फणिखेयरपुज्जहं खोहणिमोहणिमारणविज्जहं ।
गउ तियसाहिउ तियसविमाणहु लग्गु जणद्दणु भणियविहाणहु ।
मंतें खीरसमुद्दु रएप्पिणु तहिं अहिसयणहु उवरि चडेप्पिणु ।
विज्जउ साहियाउ गोविंदें पुणु रणि जुज्झिवि समउं खगिंदें । 10
तुट्टं परिणिय कण्हें बलगावें महएविसु दिण्णु सब्भावें ।

४ S अवहरेवि. ५ P णिमि. ५ A समल्लें. ६ AP मक्खियाउ. ७ B °कुमार. ८ S संपत्तउ. ९ B णामि. १० BP °वंतु. ११ S मणिणा. १२ P महियले. १३ S जायवि. १४ AP जाहि.

10 १ S सरसुच्छदंड°. २ P °कोदंड°. ३ °णिहित्तु. ४ जंबुवंतु. ५ AP गरुडसीहि (B मीहि) वाहिणियहं विज्जहं. ६ S तियसाहिउ. ७ AP विवाणहो (P विहाणओ also). ८ S बल्गामें.

7 *a* णे मि नयामि. 8 *a* म च्छि य वि ज्ज इ मक्षिकाविद्यया. 9 *a* किं ण र पु र णा हे ण यक्षमालिना राज्ञा. 14 *b* णा र उ नारदः.

10 4 *a* °णि यं बु तटम्. *b* अ व रा इ उ अपराजितः जेतुमशक्यः. 6 *a* अ क्खि लु सद्यचरः. 7 *a* सा ह ण वि हि विद्यानां साधनविधिः. 8 *b* भ णि य वि हा ण हु देवकथितविधेः. 9 *b* अ हि स य ण हु उ व रि नागशय्योपरि.

तो जंबवइइ समेंतु सुणंतिइ मुणिकमकमलजुयलु पणवंतिइ ।
घत्ता—भणिइ पणिवाउ करंतियइ संचियसुहदुहकम्माइं ॥
ता भणिउं सुसीमइ वज्जरहि महुं वि देव गयजम्माइं ॥ १० ॥

11

दुवई—पभणइ मुणिवरिंदु सुणि सुंदरि धायइसंडदीवए ॥
पुव्विल्लम्मि भाइ पुव्विल्लविदेहि पडुल्लणीवए ॥ छ ॥
मंगलवइजणवइ मंगलहरि रयणंचियइ रयणसंचयपुरि ।
वीसदेउ पहु देवि अणुंधरि मुउ पिययमु रणि अरिकरिवरहरि ।
करि करवालु करालु करेप्पिणु उज्झाणाइं सहुं जुज्झेप्पिणु । 5
पणइणि समउं पइट्ठी हुयवहि पयडियथावरजंगमजियवहि ।
विंतरसुरि खयरायलि हूई दससहसइं भुत्तविहूई ।
भवविब्भमि भमेवि इह दीवइ भरहखेत्ति पुणु सामरिगामइ ।
यक्खहु हलियहु रइरसवाहिणि देवसेण णामें तहु गेहिणि ।
तहिं उप्पण्णी वरमुहसररुह जक्खदेवि णामें तहु तणुरुह । 10
धम्मसेणु मुणि महियाणंगउ कयमासोववासु खीणंगउ ।
पय पक्खालेप्पिणु विणु गावें ढोइउ तासु गासु पइं भावें ।
घत्ता—अण्णहिं दिणि वणि कीलंति तुहुं महिहरविवरि पइट्ठी ॥
तहिं भीमें अजयरेण गिलिय मुय सयणेहिं ण दिट्ठी ॥ ११ ॥

12

दुवई—हरिवेरिसंतरालि उप्पण्णी मज्झिमभोयभूमिहे ॥
किह आहारदाणु णउ दिज्जइ जिणवरमग्गगामिहे ॥ छ ॥
तहिं मरेवि बहुसोक्खरणिरंतरि णायकुमारदेवि भवणंतरि ।
पुणु इह पुव्वविदेहि मणोहरि देसि पुक्खलावइहि सुहंकरि ।

---

९ P जा. १० P सभउ; S सभवु. ११ ABP मुणि वंदियउ सीसु विहुणंतिए. १२ S करंतिए.

11 १ S रयणंचिए. २ B °संचिय°; P °संचिए. ३ A वीसंदउ. ४ S वेंतरसुर. ५ S °गावए. ६ APS जक्खहो. ७ Als तुहुं; PS तुहु. ८ P धम्मसेण. ९ AP पक्खालेप्पिणु पय विणु. १० AS अजगरेण.

12 १ B °वरसंतरालि.

---

11 2 °णीवए नीपे, कलंबे. 4 *a* वीसदेउ विश्वदेवः. 5 *a* करि हस्ते. 6 *a* पणइणि अनुंधरी; *b* °जियवहि °जीववधे अग्नौ. 7 *a* खयरायलि विजयार्धे. 11 महियाणंगउ मथितकामः.

कुरिहि पुंडरीकिणिहि असोयहु सोमसिरिहि भुंजियणिव्वभोयहु । 5
सुय सिरिकंत णाम होएप्पिणु जिणवसहि समीवि वउ लेप्पिणु ।
कणयावलिउववासु करेप्पिणु सल्लेहणजुत्तीइ मरेप्पिणु ।
जुइपब्भारपरज्जियचंदइ हुई देवि कप्पि माहिंदइ ।
अणणिहि जेट्ठहि णयणरविंदहु पुणु सुरट्ठवड्डणहु णरिंदहु ।
तेहुं सुसीम सुय हरिघरिणि त्तणु पत्ती मंइ परमगुणकित्तणु । 10
पुणु लक्खणइ वियक्खणसारउ णियभवें पुच्छिउ देउ भडारउ ।
अक्खइ गणहरु वरिसियमेहइ जंबूदीवइ पुव्वविदेहइ ।
पवरपुक्खलावइविसयंतरि सारि अरिट्ठणयरि कुवलयसरि ।
वासवराएं वसुमइदेविहि सिसु सुसेणु आयउ सियसेविहि ।
ताएं संजमेण अइलइयउ सायरसेणपासि तउ लइयउ । 15

घत्ता—अइअट्टज्झाणवसेण मुय पुत्तसिणेहें वसुमइ ॥
हुई पुलिंदि गिरिवरकुहरि मिच्छत्तें मइलियमइ ॥ १२ ॥

13

दुवई—दिट्ठउ ताइ कहिं मि तहिं काणणि सायरणंदिवंदणो ॥
चारणमुणिवरिंदु पणवेप्पिणु सिढिलियकम्मबंधणो ॥ छ ॥

सावयवयइं तेण तहि दिण्णइं उज्झियधम्मइं कम्मइं छिण्णइं ।
भत्तपाणपरिचायपयासें सवरि मरेवि तेत्थु संणासें ।
हुई हावभावविब्भमखाणि अट्ठमसग्गसुरिंदहु राणि । 5
पुणु इह भरहखेत्ति खयरायलि दाहिणसेढिहि चंदयरुज्जलि ।
पुरि चंदउरि महिंदु महापहु तासु अणुंधरि णामें पियवहु ।
तुहुं तहि कणयमाल देहुब्भव हुई हंसवंसवीणारव ।
लइयउ पइं रइरमणरसालइ वरु हरिवाहु सयंवरमालइ ।

---

२ S पुंडरिंगिणिहि. ३ A असोयहे. ४ A णिवभोयहे; S नृव°. ५ S समीहे. ६ ABP वउ. ७ चरेप्पिणु; B धरेप्पिणु. ८ A सुरट्ठपट्टणहो. ९ B तुहं. १० B माय. ११ A लक्खणपवियक्खण°. १२ ABS °भडु; P °भउ. १३ ABP सायरसेणपासि; S सायरेण पासित्तउ. १४ A °सिणेहें. १५ P पुलिंदिए.

13 १ S तित्थ. २ A महिंद. ३ ABPAls. °रमणविसालए.

---

12 8 *a* जुइ° द्युतिः; *b* कप्पि स्वर्गे. 9 *a* णयणरविंदहु कमललोचनस्य; *b* सुरट्ठवड्डणहु सुराष्ट्रवर्धनस्य. 10 *a* हरिघरिणित्तणु कृष्णभार्या संजातेत्यर्थः. 11 *a* लक्खणइ लक्ष्मणया. 13 *b* सारि उत्तमे. 15 *a* ताएं वासवराज्ञा. 16 वसुमइ राज्ञी.

13 4 *b* सवरि भिल्ली. 8 *a* देहुब्भव पुत्री. 9 *b* वरु भर्ता.

अण्णहिं दिणि तिहुयणचूडामणि वंदिवि सिद्धकूडि अमहरमुणि। 10
वोलीणाइं भवाइं सुणेप्पिणु मुत्तावलिउववासु करेप्पिणु।
तइयसग्गि देविंदहु वल्लह हूई पुण्णविहूणहु दुल्लह।
णवपल्लोवमाइं जीवेप्पिणु पुणु सुरबोंदि अणिंद मुएप्पिणु।
संवरराय हिरिमइकंतहि तुहुं संजणिय विविहगुणवंतहि।
पउमसेणभुयसेणहु अणुई लक्खण णाम पुत्ति तणुतणुई। 15

घत्ता—पई मेव पसंसिवि गुणसयइं णहसायरचलमयरें॥
तुहुं आणिवि अप्पिय महुमहहु पवणवेयखयरायरें॥ १३॥

14

दुवई—तेण वि तुज्झु दिण्णु देवित्तणु पट्टणिबंधभूसियं॥
ता तीए वि णमिउं णेमीसरु दुच्चरियं विणासियं॥ छ॥

पुच्छइ माहउ मयणवियारा मइं अक्खहि वरधम्मभडारा।
गंधारि वि गोरि वि पोमावइ किह पत्ताउ भवेसु भवावइ।
भणइ भडारउ महुमह मण्णहि गंधारिहिं भवाइं आयण्णहि। 5
जंबुदीवि कोसलदेसंतरि पहु सिद्धत्थु अत्थि उज्झाउरि।
विणयसिरि त्ति पत्ति पत्तलतणु बुद्धत्थहु करि दिण्णउं सुअसणु।
मुणिहि तेण पुण्णेणुत्तरकुरु तहिं मुउ णाहु कहिं मि जायउ सुरु।
घरिणि मरेप्पिणु जोण्हारुंदहु चंदवइ पिय हूई चंदहु।
एत्थु दीवि पुणु खयरमहीहरि उत्तरसेढिहि णहवल्लहपुरि। 10
विज्जुवेयकंतहि सहिसिहि पुत्ति पहूई उत्तिमसत्तिहि।
णिच्चालोयणयरि रइरुंदहु णाम सुरूविणि दिण्ण महिंदहु।
मुणि विणीयचारणु वंदेप्पिणु अण्णहिं दिवसि धम्मु णिसुणेप्पिणु।

घत्ता—तउ लइउ महिंदें पत्थिविण पंच वि करणइं दंडियइं॥
अट्ठ वि मय घाडियं णिज्झिणिवि तिण्णि वि सल्लइं खंडियइं॥१४॥ 15

४ P तिहुवण°.; S तिहूयण°. ५ S देवेंदहो. ६ A सुरवंदि; BP सुरवोंदि; S सुरवोदि. ७ AP पणवेवि पसंसिवि. ८ S माहवहो.

14 १ B °णिबद्ध°. २ S णविउ. ३ P माहउ. ४ B मउमह. ५ S उज्झायरे. ७ S °णुत्तर कुरु. ८ B चंदमई. ९ P विज्जवेय°. १० A उत्तम°. ११ A सरूविणि. १२ S दिवसें. १३ A घाडिवि; B घाडिउ.

12 *b* °विहूणहु विहीनस्य. 13 *b* सुरबोंदि देवशरीरम्. 15 *a* अणुई लघुभगिनी; *b* तणुतणुई मध्यक्षामा. 16 णहसायरचलमयरें नभःसमुद्रमत्स्येन खगेन.

14 4 *b* भवावइ संसारापत्. 7 *a* पत्ति पत्नी भार्या; *b* बुद्धत्थहु करि बुद्धार्थस्य मुनेः करे; सुअसणु सुष्ठु अशनम्. 11 *a* सहिसिहि सहीसिनाम राज्ञः.

15

दुवई—ताइ सुहद्दियाहि पयमूलइ मूलगुणेहिं जुत्तउं ॥
तउं अणंतघोरु मारावहु तणुतावयरु तत्तउं ॥ छ ॥

मुयै संणासें पुणु णिरु णिरुवमु पढिलइ सग्गि पक्कु पल्लोवमु ।
भुत्तउं ताइ चारु देविसणु ढुकउं तहिं वि कालि परियत्तणु ।
इह गंधारिविसइ कोमलवणि विउलपुक्खलावइवरपट्टणि । 5
सुपसिद्धहु रायहु इंदइरिहि असिधाराढारियणियवइरिहि ।
मेरुमईहि गब्भि उप्पण्णी धूय एह गंधारि रवण्णी ।
किर मेहुणयहु दिज्जइ लग्गी अक्खिउं णारएण तुह जोग्गी ।
पइं जाइवि तं पडिबलु जित्तउं कण्णारयणु एउं रणि हित्तउं ।
णिसुणि साम पियराम पयासमि गोरीभवसंभवणु समासमि । 10
णायणयरि हेमाहु णरेसरु जससइभज्जथणंतरकयँकरु ।
चारणु जसहरु पियइ णियच्छिउ वंदिवि णियजम्मंतरु पुच्छिउ ।
तं संभरिवि पइहि वक्खाणिउं जं णियगुरुसमीवि सुवियाणिउं ।
वड्ढमाणपुरिसित्थीपंडइ भणइ महासइ धावइसंडइ ।
पुव्वामरगिरिअवरविदेहइ पवरासोयणयरि वरगेहइ । 15
आणंदहु जायैँ णियवस णंदयसा सयसा कयरइरस ।
ताइ दयालुयाइ गुणवंतइ णवविहु पुण्णवंतु वणिकंतइ ।
दिण्णउं अण्णदाणु भयतंदहु अमियाइहि सायरहु मुणिंदहु ।
णहि देवइं पञ्चक्खइं आयइं पंचच्छरियइं घरि संजायइं ।
घत्ता—मुय कालें जंतें मृगणयण उत्तरकुरुहि हवेप्पिणु ॥ 20
पुणु भावणिंदमहएवि हुय हउं उप्पण्ण चवेप्पिणु ॥ १५ ॥

15 १ B °गुणाहिं. २ PS तत्तु. ३ B मुइ. ४ S देवत्तणु. ५ APS परिवत्तणु. ६ B वरपुक्खलावइ°; S विउले पोक्खलावइ°. ७ S °करकरु. ८ A omits this line. ९ AS °समीवि खलु जाणिउं; B °समीवि सुयाणिउं; P समीसुवियाणिउं. १० BS वट्टमाण°; P वद्धमाण°. ११ B पोरिसिथियसंडए. १२ AP महारिसि. १३ ABPS जाया जाया वस. १४ S णवविहपुण्णवंतु; P पुण्णु पत्तु; Als. णवविहपुण्णवंतवणि°. १५ AP हयणिंदहो; BAls. भयवंदहो. १६ P अमियायहि. १७ AP मिग°; P मिगणयणे. १८ B भावणेंद°. १९ A तहे तं देहु मुएप्पिणु; P हउं तं देहु मुएप्पिणु.

15 2 मारावहु कामापघातकम्. 4 *b* परियत्तणु मरणम्. 6 *a* इंदइरिहि इन्द्रगिरेः. 10 *a* साम हे वासुदेव; पियराम हे प्रियभार्य, प्रिया रामा यस्य; *b* °भवसंभवणु भवभ्रमणम्. 11 *b* जससइ° यशस्वती. 14 *a* वड्ढमाणेत्यादि वर्धमानपुरुषस्त्रीनपुंसके; *b* महासइ महासती स्वभर्तुरग्रे कथयति. 16 *a* आणंदहु वणिजः; णियवस भार्या वशा जाता; *b* सयसा स्वयशाः, यशोयुक्ता. 18 *a* भयतंदहु भये तन्द्रा आलस्यं यस्य, निर्भयस्येत्यर्थः; *b* अमियाइहि सायरहु अमितसागरस्य. 21 हउं इत्यादि अहं तस्माच्च्युत्वा नन्दयशश्चरी यशस्वती जाता.

16

दुवई—पुणु केयारणयरि णरवइसुय संजमदमदयावरं ॥
इय त्ति समासिऊण सब्भावें सायरदत्तमुणिवरं ॥ छ ॥

किउं तवचरणु परमरिसिआणइ मयँ गय थिय सोहम्मविमाणइ ।
सुमइहु समइहि धणजलवाहहु कोसंबिहि णयरिहि वणिणाहहु ।
पुणरवि अमरालावणिसइहि हुई सुय सेट्ठिणिहि सुहइहि । 5
अणवएण कोक्किय सुहकम्मिणि धम्मसील ता णामें धम्मिणि ।
अइखंतियाहि समीवि पसत्थी जिणवरगुणसंपत्ति वउत्थी ।
वीयसोयपुरि पुणु कयणिरइहि मेरुचंदरायहु चंदमइहि ।
गोरी एह धीय उप्पण्णी विजयपुरेसें विजएं दिण्णी ।
आणिवि तुज्झु कण्ह कयणेहें पइं वि अणंगबाणहयदेहें । 10
परिणिय पीणियरइमयरद्धउ महएविसणपट्टु णिबद्धउ ।
पुणु आहासइ देउ दियंबरु णिसुणहि पोमावइजम्मंतरु ।
एत्थु जि उज्जेणिहि विजयंकउ पहु सोमसगुणेण ससंकउ ।
तासु देवि अवराइय णामें गुणमंडिय धणुलट्ठि वँ कामें ।

घत्ता—तहि पुत्ति सलक्खण विणयसिरि हत्थसीसपुरि रायहु ॥
दिण्णी हरिसेणहु हरिसिएण ताएं लच्छिसहायहु ॥ १६ ॥ 15

17

दुवई—गयपंचेंदियत्थपरमत्थसिरीरयरमणधुत्तहो ॥
दिण्णउं ताइ भोज्जु घरु आयहु रिसिहि समाहिगुत्तहो ॥ छ ॥

तेण फलेण सोक्खसंपत्तिहि हुय हेमवयइ भोयधरित्तिहि ।
पुणु वि वरामरचित्तणिरोहिणि हुई देवहु चंदहु रोहिणि ।

16 १ B पुण. २ P समसंजमदया°. ३ P °दयावरं. ४ A सायरपरममुणिवरं; BP सायरदत्त°. ५ P मुय. ६ P सुमइहे. ७ A अमलालाविणि°; PS °लाविणि°. ८ BS अइक्खंति°. ९ BPS add after this: सा मइ (P महि) सुकसग्गे देवी हुय, तेत्थु सोक्खु भुंजेवि पुणरवि चुय. १० AP °त्तणे; BS °त्तणु. ११ S णिसुणइ. १२ S सकंसउ. १३ S अवराय. १४ S य for व. १५ P हत्थिसीसे.
17 १ B °रइरमण°. २ B आयहि. ३ APS देवय.

16 1 °दयावरं मुनिम्. 2 समासिऊण समीपमाश्रित्य. 4 *a* सुमइहु सुमतेः श्रेष्ठिनः; समइहि मतिसहितस्य. 5 *a* °आलावणि° वीणा. 7 *a* अइखंतियहि जिनमत्याः. 8 *a* कयणिरइहि पुण्यनिरतायाः. 9 *b* विजएं तव सुहृदा. 13 *b* ससंकउ चन्द्रः. 14 *b* कामें कामेन गुणमण्डिता धनुर्यष्टिः कृतेव. 16 हरिसिएण हर्षेण.

17 1 °परमत्थ° मोक्षश्रीः; °रय° रतम्. 4 *a* °चित्तणिरोहिणि मनोरोधिका.

पक्खु पलु तहिं सुहुं माणेप्पिणु जोइसजम्मसरीरु मुएप्पिणु । 5
धणकणपउरि मगहदेसंतरि सामंलगामि वेणुविरइयघरि ।
विजयदेवहलियहु पिय देविल सुमुहि सुभासिणि सुहयलयाइल ।
पउमदेवि तहु दुहिय घणत्थणि सा चंदाणी गुणचिंतामणि ।
रिसिणाहहु कर मउलि करेप्पिणु वरधम्महु पयाइं पणवेप्पिणु ।
गहिउं ताइ रसणिंदियणिग्गहु अवियाणियतरुहलहु अवग्गहु । 10
मुहमरुविलसियभिंगयसद्दहिं णिहिउ गाउं णाहलहिं रउद्दहिं ।
भवणदवि दवि णणासें विद्दाणउ भइयइ लोउ असेसु पलाणउ ।

घत्ता—गउ काणणु जणु णिरु दुक्खियउ विसवेल्लिहि फलु भक्खइ ॥
अमुणंतणामु सा हलियसुय पर तं किं पि ण चक्खइ ॥ १७ ॥

18

दुवई—मुउ णेरणियरु सयलु वयभंगभएण ण खाइ विसहलं ॥
जीविय पउमदेवि विहुरे वि मणं गरुयाण णिच्चलं ॥ छ ॥

कालें मय गय सा हिमवयहु देसहु कप्पतरुक्खभोयमयहु ।
पलिओवमु जि तेत्थु जीवेप्पिणु भोयभूमिमणुयत्तु मुएप्पिणु ।
दीवि सयंपहि देवि सयंपह सुरहु सयंपहणामहु मणमह । 5
हूई पुणु इह दीवि सुहावहि चंदसूरभावंकइ भारहि ।
चारुजयंतणयरि विक्खायहु सिरिमंतहु सिरिसिरिहररायहु ।
सिरिमइदेविहि विमलसिरी सुय णवमालइमालाकोमलभुय ।
दिण्णी जणणें पालियणायहु भद्दिलपुरवरि मेहणिणायहु ।
तिविहेण वि णिव्वेएं लइयउ रज्जु मुएवि सो वि पव्वइयउ । 10

४ S °सरीर. ५ A सामरिगामे; BPS सामलिगामे. ६ B समुहि. ७ APS तहि. ८ B °सिंगय°. ९ AP गहिउ. १० A भवणि दविणु. ११ BP भुक्खियउ.; B records a *p*: 'जण णिरु दुक्खियउ' वा पाठः. १२ ABPS अमुणंति.

18 १ S जणणियरु. २ BAls. खाएवि विसहलं and Als. thinks that वि in his other Ms is lost. ३ A विहुणेवि. ४ A गरुयाण; B गरुवाण. ५ APS हेमवयहो. ६ S मुयेप्पिणु. ७ P पुण. ८ B देवि. ९ S °णाइहो. १० AP वरधम्महो समीवि पावइयउ.

6 *b* वेणुविरइय° वंशविरचितम्. 7 सुहयलयाइल सुभगलताभूः. 8 *b* चंदाणी रोहिणीचरी. 10 *b* अवियाणियेत्यादि अज्ञातफलस्य व्रतं गृहीतम्. 11 *a* मुहमरु° मुखवातः; °भिंगय° मधुकरीमहिषशृङ्गवाद्यशब्दैः; *b* णाहलहि भिल्लैः.

18 2 गरुयाण गरिष्ठानाम्. 3 *a* हिमवयहु हैमवतक्षेत्रे. 6 *a* °भावंकइ भा प्रभा चक्रा यत्र धनुराकारा क्षेत्रम्; अथवा भावंकए स्वरूपचिह्निते. 7 *b* सिरिसिरिहररायहु श्रीश्रीधरराज्ञः. 9 *a* °णायहु न्यायस्य.

घत्ता—मुउ अहवइ हुउ सहसारवइ मेहरोउ मेहाणिहि ॥
गोवइखंतिहि पासि कय विमलसिरीइ सुतवविहि ॥ १८ ॥

19

दुवई—अच्छच्छंबिलेण भुंजंती अणवरयं सुरीणिया ॥
जाया तस्स चेय णियदइयहु पवरच्छरपहाणिया ॥ छ ॥

पुणु अरिट्ठपुरि सुरपुरसिरिहरि रयणसिहराणियरंचियमंदिरि ।
मरुणच्चवियमंदणंदणवणि हिंडिरकोइलकुलकलणीसणि ।
राउ हिरण्णवम्मु णिम्मलमइ तासु घरिणि वल्लह सिरिमइ सइ । 5
ताहि गब्भि सहसारिंदाणी सिरिघणरवहु चिराणी राणी ।
पोमावइ हूई णियपिउपुरि एयइ तुहुं वरिओ सि सयंवरि ।
कुसुममाल उरि घित्त गुरुक्की णं कामें बाणावलि मुक्की ।
पइं मि कण्ह सुललिय गब्भेसरि कय महएवि देवि परमेसरि ।
जहिं संसारहु आइ ण दीसइ केत्तिउं तहिं जम्मावलि सीसइ । 10
जीवें अण्णण्णहिं भावहिं वज्झइ जीउं रंगगउ णडु जिह णच्चइ ।
णच्चाविज्जइ चिंतायरियएं विविहकसायरायरसभरियएं ।
इय आयण्णिवि कुवलयणयणहिं जय जय जय भणेवि भव्वयणहिं ।
घत्ता—देवइयइ हरिणा हलहरिण महएविहिं अहिणंदिउ ॥
सिरिणेमिभडारउ भरहगुरु पुप्फयंतजिणु वंदिउ ॥ १९ ॥ 15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे गोविंदमहाएवीभवावलि-
वण्णणं णाम णवदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ९० ॥

---

११ S मेहणाउ. १२ A पोमावइ°; S गोवय°. १३ B विमलसरीए; S विमलसिरिए.

19 १ A अच्छच्छेंबिलेण. २ A तस्स देवि णिय°. ३ B हिंडिय°. ४ S °णीसरे. ५ P °वामु. ६ S सहसारिंदाणी. ७ AP णियपिय°. ८ P देवि गब्भेसरि. ९ ABP णिव. १० BPS जिउ रंगगउ. ११ PS चित्ताइरिएं. १२ P °रय°. १३ PS °भरिएं. १४ P पुप्फदंतु. १५ S महाएवी°. १६ AS भवावण्णणं. १७ S णउदिमो.

---

11 मेहराउ मेघनिनादः; राउ शब्दः; मेहाणिहि बुद्धिनिधिः.

19 1 अच्छच्छंबिलेण काञ्जिकाहारेण; सुरीणिया श्रान्ता. 2 णियदइयहु मेघनिनाद-चरदेवस्य; °पहाणिया मुख्या. 3 *a* सुरपुरसिरिहरि इन्द्रनगरशोभापहारके. 7 *b* एयइ एतया पद्मावत्या. 9 *a* गब्भेसरि गर्भे धनवती.

पज्जुण्णभवाइं पुच्छिउ सीरहरेण मुणि ॥
तं णिसुणिवि तासु वयणविणिग्गउ दिव्वझुणि ॥ ध्रुवकं ॥

1

इह दीवि भरहि वरमगहदेसि पुरपट्टणणयरायरविसेसि ।
दुब्भिरगोहणमाहिसपगामि बहुसालिछेत्ति तहिं सालिगामि ।
सोत्तिउ सुंदरु णिवसइ सोमदेउ कयसिहिविहि अग्गिलबहुसमेउ । 5
तहि पहिलारउ सिसु अग्गिभूइ लहुयारउ जायउ वाउभूइ ।
बिण्णि वि चउवेयसडंगधारि बिण्णि वि पंडियजणचित्तहारि ।
ते अण्णहिं वासरि विहियजण्ण पुरु कहिं मि णंदिवद्धणु पवण्ण ।
जक्खंतमोरकेकारवंति तहिं णंदिघोसणंदणवणंति ।
कुसुमसरासिसिरकरकुइयराहु रिसि अवलोइउ रिसिसंघणाहु । 10
बिण्णि वि जण वेयायारणिट्ठ ते दुट्ठ कट्ठ दप्पिट्ठ धिट्ठ ।
आवंत णिहालिय जईवरेण जइ बोल्लिय मउ महुरें सरेण ।

घत्ता—किज्जइ उप्पेक्ख पाविं ण लग्गइ धम्ममइ ॥
लोयणपरिहीणु किं जाणइ णउणट्टगइ ॥ १ ॥

2

गुरुवयणु सुणिवि खयकामकंद थिय मोणु लएप्पिणु मुणिवरिंदं ।
जे खलु जोइवि णियतणु चयंति उवसमि वि थंति जिणु संभरंति ।
जे जीविउं मरणु वि समु गणंति परु पहणंतु वि णउ पडिहणंति ।
जे मिग जिह णिज्जणि वणि वसंति मुणिणाहहं ताहं मि वइरि होंति ।

---

1 १ P पहुण्ण°. २ S °भावइं. ३ P °विणिग्गय. ४ A दुद्धिर°. ५ A सुउ; P सुहे. ६ PS वाइभूइ. ७ AP °किंकार°; B °किक्कार°. ८ PS णंदघोस°. ९ S आवेंत. १० A जयवरेण. ११ A बोल्लिउ.

2 १ A °कंदु. २ A °वरिंदु. ३ S मृग.

---

1 2 वयण° मुखम्. 4 *a* दुब्भिर° दोहनशीलम्; °पगामि प्रकामे. 5 *b* °सिहिविहि अग्निहोत्रम्. 9 *b* णंदिघोस° वृषभशब्दयुक्तम्. 10 *a* कुसुमसरेत्यादि कामचन्द्रस्य राहुः. 11 *a* वेयायारणिट्ठ वेदाचारतत्परौ. 12 *b* बोल्लिय उक्ताः. 13 उप्पेक्ख निरादरः.

2 1 *a* खयकामकंद खनितकन्दर्पकन्दाः. 2 *a* जे खलु इत्यादि तेषामपि कारणं विनापि शत्रवो भवन्ति.

आया ते पभणिवि अभणियाइं समवम्मैविहिविंतहिं थिहुणियाइं । 5
णिग्गय गय पिसुण पलंबबाहु गामंतरि दिट्ठउ अवरु साहु ।
सो भणिउ तेहिं रे मूढ णग्ग मलमालिण मोक्खवाएण भग्ग ।
पसु मारिवि खज्जु ण जण्णि मासु तुम्हारिसाहं कहिं तियसवासु ।
ता सव्वयमुणिवरु भणइ एंव जइ हिंसायर णर होंति देव ।
तो सूणागारहु पढमुं सग्गु जायसइ को पुणु णरयमग्गु । 10
जंपिउं जणेण जइ भणइ चारु आयउ विप्पहं माणावहारु ।
अण्णहिं दिणि ओइयभुयबलेहिं णिवसंतहु संतहु वणि खलेहिं ।
आवाहिउ भीसणु असिपहारु कंचणजक्खें किउं दिव्ववारु ।
ते बिण्णि वि थंभिय खग्गहत्थ णं मंट्टियमय थिय किय णिरत्थ ।
वरदेवपहावणिपीलियाइं अट्ठंगोवंगइं कीलियाइं । 15
अलियउं ण होइ जिणणाहसुत्तु पावेण पाउ खज्जइ णिरुत्तु ।

घत्ता—तणुरुहतणुरोहु अवलोइवि उव्वेईयंइं ॥
मायापियराइं जक्खहु सरणु पराईयइं ॥ २ ॥

3

कंपंति णाइं खगहय भुयंग जंपंति विप्प माहिणिवडियंग ।
सोवण्णजक्ख जय लामिसाल रक्खहि अम्हारा बे वि बाल ।
ता भणइ देउ पसुजीवहारि जइ ण करेंह कम्मुं कुजम्मकारि ।
हिंसाइ विवज्जिउ सव्वगर्म्मु जइ पडिवज्जइ जइणिंदधम्मु ।
तो करमि सुयंगइं मोकलाइं पेक्खहु अज्जु जि सुकियफलाइं । 5
गहियाइं तेहिं पालियवयाइं मायाभावें सावयवयाइं ।
णिवडिय ते कुगइमहंधयरि णीसारसारि तंबारवारि ।

४ P °विहिवंतहिं. ५ A सुव्वय°. ६ P ता. ७ BAls. पढमसग्गु. ८ B णयरमग्गु. ९ A दियखलेहिं; P वियखलेहिं. १० APS कउ. ११ BS मट्टियकिय थिय णर णिरत्थ. १२ B उव्वेइयउ. १३ B पराइयउ.

3 १ S जप्पंति. २ AP करहु; S करइ. ३ AP जण्णु. ४ P °कम्मु. ५ ABPS तो.

5 *a* अभणियाइं अवक्तव्यानि. 8 *a* जण्णि यज्ञे. 9 *a* सव्वय° सात्यकिः; *b* हिंसायर हिंसाकराः. 13 *b* °चारु चेष्टितम्. 17 तणुरुहतणुरोहु पुत्रशरीररोधः.

3 1 *a* खग° गरुडः. 3 *a* पसुजीवहारि यज्ञकर्म. 5 *a* सुयंगइं पुत्रशरीरम्; *b* सुकिय° पुण्यस्य. 7 *a* ते पितरौ; *b* णीसारसारि महानिःसारे; तंबारवारि प्रथमनरकद्वारे. 8 *a* °सयरुएहिं शतव्याधिभिः.

अणुहवियभीमभवसयवपहिं　　पुणु पालिउं वेंउं वियवरसुयहिं ।
गय सोहम्महु कयसुररमाइं　　भुत्ताइं पंच पलिओवमाइं ।　　10
पुणु सिहरालियकीलंतखयरि　　इह दीवि भरहि साकेयणयरि ।
णरणाहु अरिंजउ वइरितासु　　वणि वणिउलपुंगमु अरुहदासु ।
वप्पसिरि घरिणि सुउ पुण्णभद्दु　　अण्णेक्कु वि जायउ माणिभद्दु ।

घत्ता—सिद्धत्थवणंतु सहुं राएं जाइवि वरइं ॥
गुरु णविवि महिंदु आयण्णिवि धम्मक्खरइं ॥ ३ ॥

4

णियलच्छि विइण्ण अरिंदमासु　　पावइयउ जायउ अरुहदासु ।
सिरसिहरचडावियणियभुयहिं　　पुणु मुणि पुच्छिउ वणिवरसुयहिं ।
चिरभवमायापियराइं जाइं　　जायाइं भडारा केत्थु ताइं ।
रिसि भणइ बद्धमिच्छत्तराउ　　जिणधम्मविरोहउ तुज्झु ताउ ।
रयणप्पहसप्पावत्तविवरि　　हुउ णरइ णारयाढत्तसमरि ।　　5
अणुहुंजिवि तहिं बहुदुक्खसंघु　　मायंगु पहूयउ कायजंघु ।
कुलगव्वें णडियउ पावयम्मु　　सो सोमदेउ संपुण्णछम्मु ।
तहु मंदिरि तुम्हहुं विहिं मि माय　　सा सारमेय हुई वराय ।
अग्गिलखंभणि तं सुणिवि तेहिं　　तहिं जाइवि मउवयणामएहिं ।
संबोहियाइं बिण्णि वि जणाइं　　उवसंतइं जिणपयगयमणाइं ।　　10
मुउ कायजंघु कयवयविहीसु　　संजायउ णंदीसरि णिहीसु ।
परिपालियणियकुलहरकमेण　　संजणिय णिवेणारिंदमेण ।
अग्गिलसुणी वि सिरिमइहि धीय　　सुइ सुप्पबद्ध णामें विणीय ।

घत्ता—आसीणणिवासु उग्घोसियमंगलरवहु ॥
णवजोव्वणि जंति बाल सयंवरमंडवहु ॥ ४ ॥　　15

५ ABP वउं. ६ A °सुहरमाइं; P सुररसाइं. ७ A वयरि°. ८ A वणिवरपुंगमु. ९ P °वणंते. १० जाइ विरइ.

4 १ B °विदिण्ण°. २ S तेहिं. ३ A संपत्तछम्मु. ४ AP सारमेइ. ५ B जायवि. ६ A णंदीसर°. ७ B °कुलहरणिय°. ८ A आसीणवरासु. ९ B °मंडहो.

9 °रमा° लक्ष्मीः. 11 *a* वइरितासु शत्रूणां त्रासकः.

4 1 *a* विइण्ण वितीर्णा. 5 *a* सप्पावत्तविवरि सर्पावर्तबिले. 6 *a* मायंगु चाण्डालः. 7 *b* °छम्मु पाषण्डः. 8 *b* सारमेय शुनी. 9 *b* मउवयणामएहिं मृदुवचनामृतैः. 11 *b* णिहीसु यक्षः. 13 *b* सुइ पविश्रा. 14 आसीणणिवासु आसीना नृपा यस्य.

5

पइणा पडिवज्जिवि णारिवेहु मायंगजम्मु बहुपावगेहु ।
सुणहत्तणु तं वज्जरिउ ताहि हलि अग्गिलि किं रइ तुह विवाहि ।
तं णिसुणिवि सा संजयमणाहि पावइय पासि पियदरिसणाहि ।
तउ करिवि मरिवि सोहम्मि जाय मणिचूल णाम सुरवइहि जाय ।
ते भायर सावयवय धरेवि ते पुण्णमाणिभद्दंक बे वि । 5
तत्थेव य वियलियमलविलेव जाया मणहर सावण्णदेव ।
वोलीणइ देहि समुद्दकालि हुयं कुरुजंगलदेसंतरालि ।
गयउरि णिउ णामें अरुहदासु कासव पियथम वल्लहिय तासु ।
महु कीडय णामें ताहि तणय ते जाया गुणगणजाणियपणय ।
घत्ता—आयण्णिवि धम्मु भवसंसरणहु संकियउ ॥ 10
विमलप्पहपासि अरुहदासु दिक्खंकियउ ॥ ५ ॥

6

महु कीडय बद्धसणेहभाव गयउरि संजाया बे वि राय ।
ता अवरकंपपुरवइ पसण्णु कणयरहु णाम कणयारवण्णु ।
आयउ किर किंकरु महुहि पासु ता तेण वि इच्छिय घरिणि तासु ।
पीणत्थणि णामें कणयमाल पहुमणि उग्गय मयणग्गिजाल ।
असहंतें पहुणा सरपिसक्कु उद्दालिय बहु वियलियवियक्कु । 5
जडु दुजडतवसिपयमूलि थक्कु तियसोप्पं कउ तउं भेसियक्कु ।
कणयरहें सोसिउ णिययकाउ विसहिउ दूसहु पंचग्गिताउ ।

5 १ P संयम°. २ AP सावयवउ चरेवि. ३ B जे. ४ P सामण्ण°. ५ A वोलीणदेहि दुसमुद्द°. ६ P चुय. ७ AB °जंगलि. ८ A गयउरि णामें णिउ अरुहदासु. ९ A तहि. १० AP °संसारहो.

6 १ PS भाय. २ AS जाया ते बे वि; P ते जाया बे वि. ३ AB अमरकप्प°; P अवरकंक°. ४ P णासु. ५ A कण्णयार°; S कणियार°. ६ AP तेण पलोइय. ७ महो मणि. P महुमणि. ८ B °वितक्कु. ९ B दुजडु. १० S तृय°. ११ S तउ. १२ B णियइ°.

5 1 *a* पइणा यः पूर्वे पतिः पश्चाच्चाण्डालस्ततो यक्षस्तेन. 2 *b* किं रइ तुह विवाहि विवाहे का रतिः तव. 3 *a* संजय° संयतं बद्धम्. 4 *b* जाय भार्या. 6 *a* तत्थेव सौधर्मस्वर्गे; *b* सावण्णदेव सामानिकाः. 7 *a* वोलीणइ देहि च्युते शरीरे. 8 *a* णिउ नृपः; *b* कासव काश्यपी. 9 *a* महुकीडय मधुक्रीडकौ.

6 2 *b* कणयार° पीतवर्णपुष्पम्. 3 *a* किंकरु मधुराज्ञः कनकरथः सेवकः; *b* तेण मधुराज्ञा. 5 *a* सरपिसक्कु स्मरबाणः; *b* वियलियवियक्कु विगलितवितर्कः. 6 *a* दुजडतवसि° द्विजटतपस्वी; *b* भेसियक्कु त्रासितार्कं तपः.

वंदेवि भडारउ विमलबाहु   दुद्धरवयसंजमवारिवाहु ।
परियाणिवि तक्खु तवेण तेहिं   इंदत्तु पत्तु महुकीडवेहिं[13] ।
चिरु दहमइ सग्गि महापसत्थु   मणु रंजिवि भुंजिवि इंदियत्थु । 10
हरिमहएविहि रुप्पिणिहि गब्भि   चंदु व संचरियउ[14] पविमलब्भि ।
महु संभूयउ पज्जुण्णु णामु   पसरियपयाउ रामाहिरामु ।
घत्ता—कणयरहु मरिवि जायउ भीसणवइरवसु[15] ॥
णहि अंतु विमाणु खलिउं कुइउ[16] जोइसतियसु ॥ ६ ॥

7

थक्कइ विमाणि सो भिण्णकेउ[1]   आरूढउ[2] गज्जइ धूमकेउ ।
चिरु जम्मंतरि सिसुहरिणणेत्तु   अवहरिउं जेण मेरउं कलत्तु ।
सो जायउ अज्जु जि एत्थु वेरि   मरु मारमि[3] खलु णिव्वूढखेरि ।
घल्लमि काणणि अविवेयभाउ[4]   दुहुं अणुहुंजिवि जिह मरइ पाउ[5] ।
गयणयललग्गतालीतमालि   इय मंतिवि खयरवणंतरालि । 5
परियणु मोहेप्पिणु सयलणयरि   सिसु घल्लिउ[6] तक्खयसिलहि उवरि[7] ।
पुरि वड्ढिउ[8] सोउ महायणाहं   हलहररुप्पिणि[9]णारायणाहं ।
ता विउलि[10] सेलि वेयड्ढणामि   अमयवइदेसि विच्छिण्णगामि ।
दाहिणसेढिहि घणकूडणयरि   णहसायरि[11] विलसियचिंधमयरि ।
तहिं कालि कालसंवरु[12] खगिंदु   गणियारिविहूसिउ णं गइंदु । 10
घत्ता—सविमाणारूढु कंचणमालइ समउं तहिं ॥
संपत्तउ राउ अच्छइ महुमहडिंभु जहिं ॥ ७ ॥

8

अवलोइउ बालउ कर घिवंतु   छुडु छुडु उग्गउ णं रवि तवंतु ।
बोल्लिउ पहुणा लायण्णजुत्तु   लइ लइ सुंदरि तुह होउ पुत्तु ।

१३ P °कीडएहिं. १४ AP °चरियउ विमलअब्भि. १५ ABPS भीसणु. १६ A कुयउ.

7 १ A सोहिल्लकेउ. २ AP आरुहउ. ३ S मारेमि. ४ S °भाउ. ५ S मरण पाउ. ६ S घल्लिय. ७ B उअरि; P उपरि. ८ B वड्डिउ. ९ B °रूपिणि°. १० B विउल°. ११ APS णहसायर°. १२ B कालसंभवु.

7 1 *a* भिण्णकेउ भिन्नग्रहः, विद्धध्वजो वा. 3 *b* °खेरि वैरम्. 6 *b* तक्खयसिलहि उवरि तक्षकशिलोपरि. 7 *a* महायणाहं महाजनानाम्. 9 *a* घणकूड° मेघकूटम्. 10 *b* गणियारि° हस्तिनी. 12 महुमहडिंभु कृष्णस्य पुत्रः.

8 1 *a* कर घिवंतु स्वहस्तौ प्रेरयन्.

बालउ लक्खणलक्खंकियंगु रूवें णिच्छउ होसइ अणंगु ।
ता ताइ लइउ सुउ ललियबाहु णं णियदेहहु मयणग्गिदाहु ।
वरतणयलंभहरिसियमणाइ पुणु पत्थिउ णियपिययमु अणाइ । 5
परमेसर जइ मइं करहि कज्जु तो तुह परोक्खि पयडु जि रज्जु ।
जिह होइ देव तिह [1]देहि वाय रक्खिज्जउ महु सोहग्गछाय ।
तं णिसुणिवि पहुणा विप्फुरंतु उव्वेल्लिवि कंतहि कणयवत्तु ।
बद्धउ पुत्तहु जुवरायपट्टु पुलएं जणणिहि कंचुउ विसट्टु ।
घत्ता—णियणयरु गयाइं पुण्णपहावपहारियइं ॥ 10
णंदणलाहेण बिण्णि वि हरिसाऊरियइं ॥ ८ ॥

9

मंदिरि मिलियइं सज्जणसयाइं णाणामंगलतूरइं हयाइं ।
काणीणहुं दीणहुं [1]दिण्णु दाणु पूरियदिहि[2] अइइच्छापमाणु ।
बंदियइं अणेयइं पुज्जियाइं कारागाराउ विसज्जियाइं ।
विरइउ तणयहु उच्छवपयत्तु[3] तहु णामु[4] पइट्ठिउ देवयत्तु ।
आणंदु पणच्चिउ सज्जणेहिं उच्छाहु विमुक्कउ दुज्जणेहिं । 5
णं कित्तिवेल्लिवित्थरिउ कंदु परिवुड्डु[4] बालु णं बालयंदु ।
संजाउ णिहिलविण्णाणकुसलु जिणणाहपायराईवभसलु ।
मंडलियणियरकलियारएण एत्तहि हिंडंतें णारएण ।
रुप्पिणिहि[5] महंतंगयविओउ कण्हहु जाइवि अवहरिउ सोउ ।
णिर्व[6]मउडरयणकंतिल्लपाय गोविंद णिसुणि[7] रायाहिराय । 10
घत्ता—मेइणि विहरंतु पुव्वविदेहि पसण्णसिरि[8] ॥
हउं गउ णरणाह चारु पुंडरीकिंणि[9]णयरि[10] ॥ ९ ॥

---

8 १ S देवि वाय.

9 १ PS दिण्ण. २ AP पूरियदिहियइं. ३ B उच्छउ. ४ B णाउ; S णाइं. ४ A परिछुड्ड. ५ B रूपिणिहि. ६ S नृव°. ७ S णिसुणेवि. ८ B °सिरि. ९ AS पुंडरिंगिणि°; P पुंडरिंकिणि°; १० S °णयरहिं.

---

3 *a* लक्खणलक्खंकियंगु लक्षणलक्षसहितः. 5 *b* अणाइ अनया राइया. 8 *b* कणयवत्तु कनकपत्रम्. 10 पुण्णपहावपहारियइं पुण्यप्रभावेण प्रभारितौ परिपूर्णौ. 11 °लाहेण लाभेन.

9 6 *a* परिवुड्डु परिवर्धितः. 8 *a* °कलियारएण कलहकारिणा. 9 *a* महंतंगयविओउ महान् अङ्गजवियोगः. 10 *a* °कंतिल्ल° कान्तियुक्तौ.

10

तहिं मेहुं विद्धंसियमयगहेण   अक्खिउं अरहेण सयंपहेण ।
जिह णिउ देवें वइरायरेण   जिह घित्तु रण्णि परमारएण ।
जिह पालिउ अवरें खेयरेण   सुउ पडिवज्जिवि पणयंकरेण ।
जिह जायउ सुंदरु णवजुवाणु   सोलहसंवच्छरपरिपमाणु ।
तं णिसुणिवि रूपिणिहरिहि हरिसु   संजायउ हरिसंसुयपवरिसु ।   5
एत्तहि वि कुमारें हयमलेण   रणि अग्गिराउ बंधिवि बलेण ।
अप्पिउ णियतायहु णीससंतु   अवलोइवि णंदणु गुणमहंतु ।
कंचणमालहि कामग्गिजाल   उट्ठिय हियउल्लइ णिरु कराल ।

घत्ता—आहिलसिउ सपुत्तु मायइ विरहविसंठुलइ ॥
कामहु बलवंतु को वि णत्थि मेइणियलइ ॥ १० ॥

11

पंगणि रंगंतु विसालणेत्तु   जं उच्चाइउ धूलीविलित्तु ।
जं थणच्चूयइ लाइउ रुवंतु   जं कलरवुं परियंदिउ सुयंतु ।
जं जोइउ णयणहिं वियसिएहिं   जं बोल्लाविउ पियजंपिएहिं ।
तं एवहि पेमुग्गयरसेण   वीसरिय सव्वु वम्महवसेण ।
पुत्तु जि पइभावें लइउ ताइ   संताविय मणरुहसिहिसिहाइ ।   5
हक्कारिवि दरिसिउ पेम्मभाउ   तुहुं होहि देव खयराहिराउ ।
मइं इच्छहि लइ पण्णत्त विज्ज   णिव्वूढमाण माणवमणोज्ज ।
तं णिसुणिवि भासिउं तेण सामु   करपल्लवि ढोइउं पाणिपोमु ।
गलिउत्तरिज्जपयडियथणाइ   संगहिय विज्ज दिण्णी अणाइ ।

10 १ A मुह. २ A अरहेण. ३ AP घित्तउ वणि. ४ P पणयंधरेण. ५ B संवत्सरपरियमाणु. ६ ABPS रुप्पिणि°. ७ A °सुवपवरिसु; Als. °सुयपवरिसु against Mss.. ८ S सुपुत्तु. ९ APS मयणविसंठुलए; B records a *p*: मयण इति वा पाठः.

11 १ AP अंगणे. २ A थणजुयहे; B थणजुवलइ; PS थणच्चूयहे. ३ APS रुयंतु. ४ P कलरउ. ५ B अयंतु. ६ P जोयउ. ७ B जं पियवएहिं. ८ AP वीसरिउ; S विसरिय. ९ S हक्कारवि दरसिउ.

10 1 *a* °मय° मदः. 2 *a* वइरायरेण वैराकरेण. 3 *b* पणयंकरेण स्नेहकारिणा. 5 *b* °अंसुय° अश्रु. 9 सपुत्तु निजपुत्रः.

11 2 *a* थणचूयइ स्तनचूचुकाग्रे; *b* परियंदिउ आन्दोलितः. 5 *a* पइभावें पतिपरिणामेन; *b* मणरुहसिहिसिहाइ कामाग्निशिखया. 7 *b* लइ गृहाण. 9 *a* गलिउत्तरिज्ज इत्यादि हृदयोपरितनवस्त्रप्रान्तप्रकटितस्तनया.

गयणंगणलग्गविविचित्तचूडु गउ सुंदरु जिणहरु सिद्धकूडु। 10
अवलोइवि चारण बिण्णि तेत्थु मुणिवर जयकारिवि जगपयत्थु।
आयण्णिवि बहुरसभावभरिउं सिरिसंजयंतरिसिणाहचरिउं।
तप्पायमूलि संसारसारु विरइउ विज्जालाइणपयारु।

घत्ता—पुणु आयउ गेहु सुउ जोयंति विरुद्धएण॥
उरि विद्धी झ त्ति कणयमाल मयरद्धएण॥ ११॥

12

णिरत्था सरेणं उरग्गं करेणं।
हणंती कणंती ससंती धुणंती।
कओले विचित्तं विलाएण पत्तं।
विइण्णं पुसंती अलं णीससंती।
रसेणं विसट्टं ण पेच्छेइ णट्टं। 5
णिसामेइ गेयं ण कव्वंगभेयं।
पढंतं ण कीरं पढावेइ सारं।
घणं दंसिऊणं कलं जंपिऊणं।
वरं चित्तचोरं ण णाडेइ मोरं।
पहाए फुरंतं सलीलं चरंतं। 10
ण मण्णेइ हंसं ण वीणं ण वंसं।
ण ण्हाणं ण खाणं ण पाणं ण त्ताणं।
ण भूसाविहाणं ण पयरत्थठाणं।
ण कीलाविणोयं ण भुंजेइ भोयं।
सरीरे घुलंती जलद्दा जलंती। 15
णवंभोयमाला सिहिस्सेव जाला।
ण तीए सुहिल्ली मणे कामभल्ली।

१० ABP °कूडु. ११ PS जिणघरु. १२ S अवलोइएवि. १३ PS आइउ.

12 १ णेट्टं. २ AP ण कव्वंगभेयं, णिसामेइ गेयं. ३ B पुरंतं. ४ B चलंतं. ५ S माणेइ. ६ A सिहिस्सेवजाला, णवंभोयमाला.

10 *a* °चूडु शिखरम्. 11 *b* जगपयत्थु जगत्पदार्थः जीवादिः. 13 तप्पायमूलि संजयन्तपादमूले. 14 विरुद्धएण कामेन.

12 1 *a* सरेणं स्मरेण; *b* उरग्गं हृदयम्. 3 *a* कओले कपोले; *b* पत्तं पत्रावलिं स्फेटयन्ती. 6 *a* णिसामेइ शृणोति; *b* कव्वंगभेयं काव्याङ्गभेदम्. 8 *a* घणं इत्यादि मेघं दर्शयित्वा मयूरं न नाटयति. 16 *a* °अंभोय° कमलं मेघश्च.

णिरुत्तण्णमण्णा	जरालुत्तसण्णा ।	
विमोत्तूण संकं	सगोत्तस्स पंकं ।	
पकाउं पउत्ता	सरुंचत्तगत्ता ।	20
सपेम्मं थवंती	पएसुं णमंती ।	
पहासेइ एवं	सुयं कामएवं ।	
अहो सच्छभावा	मई इंच्छ देवा ।	
तओ तेण उत्तं	अहो हो अजुत्तं ।	
विइण्णंगछाया	तुमं मज्झु माया ।	25
थणंगाउ थण्णं	गलंतं पसण्णं ।	
मए तुज्झ पीयं	म जंपेहि बीयं ।	
अबुद्धं अबुद्धं	बुहाणं विरुद्धं ।	

घत्ता—ता ससिवयणेण्इ जंपिउं जंपहि णेहचुउ ॥
तुहुं काणाणि लद्धु णंदणु णउ महु देहहुउ ॥ १२ ॥ 30

13

तक्खयसिल णामें तुज्झु माय	महुं कामासत्तहि देहि थाय ।	
तं वयणु सुणिवि मउलंतणयणु	अवहेरें करेप्पिणु गयउ मयणु ।	
ता चिट्ठ दुट्ठ दुब्भावगेहु	णियणहहिं वियारिवि णिययदेहु ।	
आरुट्ठ सुट्ठु णिट्ठुर हयास	अक्खइ णियदइयहु जायरोस ।	
तुहुं देव डिंभकरुणाइ भुत्तु	परजाणिउ होइ किं कहिं मि पुत्तु ।	5
कामंधु पाणिपल्लवि विलग्गु	जोयहि णहदारिउं महुं थणग्गु ।	
तं णिसुणिवि राएं कुद्धएण	जलणेण व जालारिद्धएणं ।	
भीसणपिसुणहं मारणमणाहं	आएसु दिण्णु णियणंदणाहं ।	
णिल्लज्ज अज्जु दायज्ज महइुं	पच्छण्णउं एसुं वहाइ वहहुं ।	
तणयहं जयगहणुक्कंठियाहं	ता पंच सयाइं समुट्ठियाइं ।	10

७ P मरुत्तत्त°. ८ AP सुपेम्मं. ९ BS णवंती. १० B इच्छि. ११ A थणगाण थण्णं; Als. थणग्गाउ थण्णं against Mss. १२ PS ससिवयणाए. १३ S देहे हुओ.

13 १ AP कामाउराहे पदेहि; B कामाऊरहि. २ ABS अवहेरि. ३ B सुट्ठ. ४ B °पल्लव. ५ AP ° रुद्धएण. ६ PS दाइज. ७ AP महइ. ८ A पसुवहाइ. ९ AP वहह.

---

18 *a* णिरुत्तण्णमण्णा निश्चयेन अन्यमनाः उद्गतचित्ता; *b* जरालुत्तसण्णा विरहज्वरेण लुप्तसंज्ञा. 20 *b* सरुंचत्तगत्ता स्मरोत्तप्तगात्रा. 20 *b* बीयं द्वितीयम्, अन्यत्. 28 *a* अबुद्धं अज्ञानम्. 29 णेहचुउ स्नेहच्युतम्.

13 2 *b* अवहेर अवज्ञा. 3 *b* णियणहहि निजनखैः. 9 *a* महइु मथय; *b* वहाइ वधेन, प्राकृतत्वात् लिङ्गभेदः. अत्र स्त्रीलिङ्गं दर्शितम्.

घत्ता—प्रियवयणु भणेवि सिरिरमणंगउ साहसिउ ॥
णिउ रण्णहु तेहिं सो कुमारु कीलारसिउ ॥ १३ ॥

14

णं पलयकालजमदूयतुंडु तहिं हुयवहजालाजलियकुंडु ।
णियजणणसुपेसणपेरिएहिं दक्खालिवि बोल्लिउं वइरिएहिं ।
भो देवयत्त दुक्करु विसंति पयहु दंसणि कायर मरंति ।
तं णिसुणिवि विहसिवि तेत्थु तेण महुमहणरायरुप्पिणिसुएण ।
अप्पउ घल्लिउं सहस त्ति केम सीयलचंदणचिक्खिल्लि जेम । 5
पुज्जिउ देवीइ महाणुभाउ अण्णहिं जाइवि पुणु सोमकाउ ।
सोमेसमहीहरमज्झि णिहिउ कूरेहिं तेहिं चउदिसिहिं पिहिउ ।
वीरेण तेण संमुह भिडंत थहरूव धरिय गिरिवर पडंत ।
पुणु जक्खिणीइ जगसारएहिं पुज्जिउ वत्थालंकारएहिं ।
साहसियहु तिहुयणु होइ सज्झु दुग्गु वि अदुग्गु दुग्गेज्झु गेज्झु । 10
घत्ता—सयलेहिं मिलेवि वइरिहिं करिकरदीहरभुउ ॥
सूयरगिरिरंधि पुणु पइसारिउ कण्हसुउ ॥ १४ ॥

15

तहिं महिहरु धाइउ होवि कोलु घुरुघुरणरावकयघोररोलु ।
दाढाकरालु देहणिविलित्तु णीलालिकसणु रत्तंतणेत्तु ।
अरिदंतिदंतणिहसणसहेहिं भुयदंडहिं चूरियरिउरहेहिं ।
मोडिउ रहसुब्भडु खरु अमंदु वइकंठहु पुत्तें कंठकंदु ।

१० BP णिय°. ११ B कुमार.

14 १ PS °तोंडु. २ PS °जलिउ. २ P °कुंड; S °कोंडु. ३ APS वेरिएहिं. ४ P दरिसणे. ५ A घित्तउ. ६ B °चिक्खिल्लु; S °चिक्खेल्लु. ७ APS सोम्मकाउ. ८ S °महीहरे. ९ P °दिसिहिं. १० A बहुरूव. ११ P सुदुगेज्झु. १२ APS °दीहभुउ.

15 १ A धाविउ. २ P होइ. ३ B °घोरु. ४ A देहिणि°; B देहिण°. ५ B रत्त°. ६ A °सएहिं. ७ B °दंडिहिं. ८ ABPS रोसुब्भडु. ९ ABPS वइकुंठहो.

11 सिरिरमणंगउ कृष्णपुत्रः.

14 3 दुक्करु विसंति ये प्रविशन्ति तद्दुःकरम्. 8 *b* थहरूव छागरूपम्.

15 1 *a* होवि कोलु शूकरो भूत्वा; *b* °रोलु कोलाहलः. 2 *a* देहणि° कर्दमः, दिह उपचये; *b* °कसणु कृष्णवर्णः. 3 *a* °णिहसणसहेहिं निघर्षणसमर्थाभ्यां भुजाभ्याम्; *b* चूरियरिउरहेहिं चूर्णितरिपुरथाभ्याम्. 4 *a* खरु तीव्रम्; अमंदु अमनोज्ञः; *b* वइकंठहु पुत्तें हरिपुत्रेण; कंठकंदु सूकरग्रीवा.

सुचिरत्तें णिक्खियमंदरासु[10] तं विलसिउं पेच्छिवि[11] सुंदरासु। 5
देवयँइ[12] विइण्णउ[13] विजयघोसु जलयरु परवाहिणिहियँयसोसु[14]।
अण्णेक्कु पिसुणपाढीणजालु ढोइयउ महाजालु वि विसालु।
सज्जणहु वि दुज्जणु कुडिलचित्तु पुणु कालणामगुहँमुहि[15] णिहित्तु।
रयणीयरेण सूहउ पसत्थु पणवेवि महाकालेण तेत्थु।
विसँसंदणु[16] भडकडँमद्दणासु[17] तहु दिण्णउ[18] केसवणंदणासु। 10
पुणु वम्महेण दिट्ठउ खयालि पब्भट्ठवेड्ढु रुक्खंतरालि।
विज्जाहरु विज्जाबलहरेण कीलिउ केण वि विज्जाहरेण।
तहु वसुणंदइ खेयलोइयाइ णियकरयलसयदलढोइयाइ।
णरदेहसोक्खँसंजोयणीइ[19] गुलियँाइ[20] णिबंधणमोयणीइ।
मेल्लाविउ भाविउँ[21] भाउ ताउ उप्पण्णउ तासु सणेहँभाउ[22]। 15
हरितणयहु दरपहँसियमुहेण[23] दिण्णाउ तिण्णि विज्जाउ तेण।
उवयारहु पडिउवयारु रइउ भणु को ण सुयणसंगेण लइउ।

घत्ता—दुज्जणवयणेण परिवड्ढियअहिमाणमउ॥
सहसाणणसप्पविवरि पइट्ठउ जयविजउ॥ १५॥

16

तहिं संखाऊरणणिग्गएण णाएण सणाइणिसंगएण।
पब्वालंकिउ जयलच्छिवण्णु धणु दिण्णउं कामहु चित्तवण्णु।
बहुरूवजोणि णरवरविमद्द अण्णेक्क कामरूविणिय मुद्द[1]।
जोएवि दुवालिइ[2] लोयणेट्ठु[3] थामें कंपाविउ तरुकविट्ठु।
तहिं गयणंगणगमणउ चुयाउ लइयाउ कुमारें पाउयाउ। 5
सुविसिट्ठइट्ठपावियासिवेण[4] पुणु तूसिवि पंचफणाहिवेण।

१० BP °मंदिरासु. ११ S पेच्छिउ. १२ S देवए. १३ B विदिण्णउ. १४ B °हियइ. १५ B गुहमुह°. १६ S विसदंसणु. १७ AP °कडवंदणासु. १८ दिण्णिउ. १९ APS °सोक्खु. २० B अंगुलिए. २१ A लाविउ भाउभाउ. २२ A सिणेह°. २३ A दरिसियसियमुहेण; P दरवियसियमुहेण.

16 १ P मुद्दे. २ P दुआलिए; S दुयालिए. ३ APS लोयणिट्ठु. ४ APS °इच्छियसिवेण.

6 *a* विजयघोसु नाम शंखः; *b* °वाहिणि° सेना. 7 *a* पिसुणपाढीण° शत्रुमत्स्याः. 8 *a* सज्जणहु वि दुज्जणु सज्जनस्यापि दुर्जना भवन्ति. 9 *a* रयणीयरेण राक्षसेन. 10 *a* विससंदणु वृषस्यन्दननामा रथः; °कड° समूहः; 11 *a* खयालि विजयार्धे खगाचले. 15 *a* भाविउ रुचितः भ्राता पितावत्. 19 सहसाणण° सहस्रमुखः सर्पः; जयविजउ जगति विजयो यस्य.

16 1 *b* णाएण सर्पेण; सणाइणिसंगएण स्वस्त्रीकेन. 2 *a* °वण्णु संपन्नं परिपूर्णम्. 3 *a* बहुरूवजोणि बहुरूपोत्पत्तिकारणम्. °विमद्द मर्दनकरी. 4 *b* कविट्ठु कपित्थः. 5 *b* पाउयाउ पादुके द्वे. 6 *a* इट्ठपावियसिवेण इष्टस्य प्रापितसुखेन; *b* पंचफणाहिवेण पञ्चफणसर्पेण.

होइय हरिपुत्तहु पंच बाण णंदयधणुजोग्गां उहयमाण ।
तप्पणु पुणु तावणु मोहणक्खु विलवणु मग्गणु हयवइरिपक्खु ।
पंचमु सरु मारणु चित्तविउडु ओसहिमालइ सहुं दिण्णु मउडु ।
चलचमरजुयलु सेयायवत्तु णं सिरिणवभिसिणिहि सहसवत्तु । 10
गुणरंजिएण जसलंपडेण खीरवणणिवासें मंकडेण ।
कद्दमुहिवाविहि णायवासु दिण्णउ पयडु रिउदिण्णतासु ।
तहु संपय पेच्छिवि भायरेहिं तिलु तिलु झिज्जंतकलेवरेहिं ।
पच्छण्णजलियकोवाणलेहिं पुणरवि पडिचोइउ हयखलेहिं ।
जइ पइसहि तुहुं पायालवावि तो तुह सिरि होइ अउव्व का वि । 15
घत्ता—पिसुणिंगिउं एम जाणिवि कुंवरु ओसरइ ॥
वाविहि पण्णत्ति तहु रूवें सइं पइसरइ ॥ १६ ॥

17

पच्छण्णु ण दिट्ठउ तेहिं बालु अप्पाणहु कोक्किउ पलयकालु ।
सिलवीढें छाइय वावि जाम रुप्पिणितणुरुहुं मणि कुइउ ताम ।
ते तेण णायपासेण बद्ध सुहिअवयारें के के ण खद्ध ।
णिक्खित्त अहोमुह सलिलरंधि सिलें उवरि णिहियें जायइ तमंधि ।
णियसयणविहुरविणिवारएण खगवइतणयं लहुयारएण । 5
जोइप्पहेण सा धरिय केम उप्परि णिवडंती मारि जेम ।
तहिं अवसरि परबलदुम्महेण णहि एंतु पलोइउ चम्महेण ।
आसण्णु पत्तु तें भणिउ कामु भो दिट्ठु जम्मणेहहु विरामु ।
तुज्झुप्परि आयउ तुज्झु ताउ भो मयरद्धय लइ सरेंरु चाउ ।
ता रूसिवि पडिभडमद्दणेण देवें दामोयरणंदणेण । 10
हय गय हय गय चूरिय रहोह विच्छिण्णछत्त महिघित्त जोह ।

५ ABP जोग्गाउहपहाण. ६ B मोहसक्खु. ७ B °जुवलु. ८ BPS मंकडेण. ९ A कद्दममुहि°. १० ABPS °जलिय°. ११ A णलेण. १२ A खलेण. १३ A पिसुणगिउ; K पिसुणिंगउ. १४ S जाणवि.

17 १ B °तणरुहु; S तरुहु. २ P कुविउ. ३ S °वासेण. ४ P omits this foot. ५ A विहिय. ६ P °तणुएं. ७ B लहुवारएण. ८ PS णहें. ९ B इंतु. १० B समरु. ११ A हय हय गय गय.

7 णंदयधणु° नन्द्यावर्तधनुः; उहयमाण फलमानशरमानोपेताः. 9 *a* चित्तविउडु चित्रामेण (?) विकटः प्रकटो विपुलो वा. 10 *b* सहसवत्तु कमलम्. 12 *b* कद्दवमुहि° कर्दममुखी वापी. 13 *b* झिज्जंत° क्षीणम्. 15 *b* अउव्व अपूर्वा. 16 *a* पिसुणिंगिउ पिशुनस्येङ्गितं चेष्टितम्.

17 3 *b* सुहिअवयारें सुहृदामपकारेण. 4 *a* सलिलरंधि वाप्याम्. 7 *b* एंतु आगच्छन्. 8 *a* तें तेन ज्योतिःप्रभेण. 10 *b* देवें प्रद्युम्नेन. 11 *a* हय इत्यादि अश्वा गजाश्च हताः सन्तः नष्टाः.

घत्ता—पेच्छिवि दुव्वार कामएवसरणियरगइ ॥
णं कुसुणिकुबुद्धि भग्गउ समरि खगाहिवइ ॥ १७ ॥

18

पवणुद्धुयविंधयसाहणेण णासेवि जणणु सहुं साहणेण ।
पायालवावि संपत्तु जाम बोल्लिउं लहुयं तणुएण ताम ।
जोइप्पहेण सिलरोहणेण तुहुं मोहिउ दइवें मोहणेण ।
जहिं जहिं अम्हहिं कवडें णिहित्तु पप्फुल्लकमलदलविमलणेत्तु ।
तहिं तहिं णीसरइ महाणुभाउ देविहिं पुज्जिज्जइ दिव्वकाउ । 5
किं कहिं मि पुत्तु अहिलसइ माय को पावइ कामहु तणिय छाय ।
को अण्णु सुलक्खणउ ण्णवंतु गंभीरु वीरु गुणगणमहंतु ।
को आणइ किं अंबाइ वुत्तु मारावहुं पारद्धउ सुपुत्तु ।
महिलाउ होंति मायाविणीउ ण मुणहिं पुरिसंतरु दुव्विणीउ ।
किं ताय णियंबिणिछंदु करहि लहुं गंपि कुमारहु विणउ करहि । 10
पडिवण्णउं पालहि चवहि सामु अणुणहि णियणंदणु देउ कामु ।
इय णिसुणिवि चारुपबोल्लियाइं पहुणयणइं अंसुजलोल्लियाइं ।
गउ तहिं जहिं थिउ सिरिरमणतणउ बोल्लाविउ तें किउं तासु पणउ ।
णीसल्लु पघोसिउं णियइं ढुक्कु आलिंगिउं दोहिं मि एक्कमेक्कु ।
उच्चाइवि सिल केसवसुएण अण्णत्थ घित्त कक्कसभुएण । 15

घत्ता—कय वियलियपासं ते खेयरराएंगरुह ॥
णिग्गय सलिलाउ दुज्जसमसिमलमलिणमुह ॥ १८ ॥

19

मयणहु सुमणोरहसारएण तहिं अवसरि अक्खिउं णारएण ।
भो णिसुणि णिसुणि रिउदुव्विजेयं दारावइपुरवरि पवरतेय ।

18 १ ABPS तणएण. २ APS देवहिं. ३ AP को महियलि अण्णु सुलक्खवंतु. ४ ABPS धीरु. ५ AP को (P किं) जाणइ किं मायए (P माएं) पवुत्तु (P पउत्तु). ६ ABPS सपुत्तु. ७ APS कउ. ८ B णिद्धु ढुक्कु. ९ B एक्कुमेक्कु. १० P °पासे. ११ A खेयराहिवअंगरुह; P खयराहिवअंगरुह. १२ APS °मइलमुह.

19 १ A °रहगारएण. २ AP °दुव्विजेउ. ३ B °पुरि. ४ AP दिव्वतेउ; S पउरतेय.

18 8 *a* अंबाइ माता. 10 *a* णियंबिणिछंदु मार्याभिप्रायेण. 11 *b* अणुणहि संमानय. 16 वियलियपास नागपाशरहिताः.

19 1 *a* °सारएण पूरकेण.

जरसिंधकंसकयपाणहारि तुह जणणु जणद्दणु चक्कधारि ।
तहु पणइणि रुप्पिणि तुज्झु माय पत्तियहि महारी सच्च वाय ।
भो आउ जाहुं किं वयणएहिं णियगोत्तु णियहि णियणयणएहिं । 5
पणमियसिरेण मउलियकरेण ता भणिउ कालसंभवु सरेण ।
तुहुं ताउ महारउ गयविलेव वड्ढारिउ हउं पइं रुक्खु जेव ।
पयलंतखीरधारापणोल वीसरमि ण जणणि वि कणयमाल ।
जं तुंभणिओ सि दुणियच्छिओ सि तं खमहि जामि आउच्छिओ सि ।
ता तेण विसज्जिउ गुणविसालु अणडुहसंदणि आरूढु बालु । 10
कलहयरें सहुं चल्लिउ तुरंतु गयपुरु संपत्तउ संचरंतु ।

घत्ता—संगरकंखेण कामहु केरउ णउ रहिउ ॥
सिहिभूइपहुइ भवसंबंधु सव्वु कहिउ ॥ १९ ॥

20

ता भणइ मयणु मइं माणियाइं चिरजम्मइं किह पइं जाणियाइं ।
ता भासइ णारउ मयमहेण अक्खिउं अरुहें विमलप्पहेण ।
ता बिण्णि वि जण उवसमपसण्ण एवं चवंत गयउरु पवण्ण ।
तहिं कुंदकुसुमसमदंतियाउ जाणिवि भाणुहि दिज्जंतियाउ ।
कंकेल्लिपत्तकोमलभुयाउ दुज्जोहणपहुजलणिहिसुयाउ । 5
वेहवियउ दमियउ तावियाउ मायारूवेण हसावियाउ ।
जणु सयलु वि विब्भमरसविसट्टु गउ मयणु महुरमग्गें पयट्टु ।
कारावियमणिमयमंडवेहिं महुराउरि पंचहिं पंडवेहिं ।
पारद्धी भाणुहि देहुं पुत्ति णं कामकइयवायारजुत्ति ।
तहिं धरिवि सरेण पुलिंदवेसु अलिकज्जलसामलकविलकेसु । 10

५ BP जरसिंधु°; जरसेंध°. ६ A °खयपाणहाणि; BP °कयपाणहाणि. ७ APS चक्कपाणि. ८ P पणविय°. ९ AP कालसंवरु. १० B वड्ढाविउ. ११ S पइं हउं. १२ AP °धाराथणाल. १३ BK दुब्भणिओसि दुण्णि°.

20 १ A किर जम्मइं. २ P °पवण्ण. ३ A °पहुजाणिहि. ४ AP विंभयरस°; BS विम्हयरस°.

6 *b* सरेण स्मरेण कामेन. 9 *a* दुणियच्छिओ दुर्निरीक्षितः; *b* आउच्छिओ आपृष्टः. 10 *b* अणडुहसंदणि वृषभस्यन्दननाम्नि रथे. 11 *a* कलहयरें नारदेन. 13 सिहिभूइपहूइ अग्निभूतिजन्मादि.

20 1 *a* माणियाइं भुक्तानि. 4 *a* °दंतियाउ दुर्योधनपुत्र्यः. 5 *b* °जलणिहि° राज्ञीनामेदम्. 6 *a* वेहवियउ वञ्चिताः. 7 *b* महुरमग्गें मथुरामार्गेण. 9 *a* देहुं दातुं प्रारब्धाः; *b* °कइयवायारजुत्ति कैतवाचारयुक्तिः काममूर्तित्वप्रवृत्तिः. 10 *a* सरेण कामेन.

णीसेसकलाविण्णाणधुत्त खेल्लिवि[5] खरियालिवि[6] पंडुपुत्त ।
तारावइणयरि पराइएण कुसुमसरें कंतिविराइएण ।
घत्ता—विज्जइ छाइवि[7] णारउ[8] गयणि ससंदणउ ॥
वाणरवेसेण आहिंडइ महुमहतणउ ॥ २० ॥

21

दक्खालियसुरकामिणिविलासु सिरिसच्चहामकीलाणिवासु[1] ।
दिसिविदिसाघित्तणाणाहलेण[2] उज्जाणु भग्गु मारुयचलेण ।
सोसेवि वाविं[3] झसमाणिएण सकमंडलु पूरिउ पाणिएण ।
थिरथोरकंधघोलंतकेस रहवरि जोत्तिय गद्दह समेस ।
अणु पहसाविउ मणहरपएसि[5] कामेण णयरगोउरपवेसि[6] । 5
पुरणारिहिं हियउ हरंतु रमइ पुणु वेज्जवेसु घोसंतु भमइ ।
हउं छिण्णकण्णसंधाणु करमि वाहियउ तिव्ववेयाउ हरमि ।
भाणुहि णिमित्तु उयणियउ जाउ विहसाविउ णिवकुवरीउ[7] ताउ ।
पुणु भाणुमायदेवीणिकेउ[8] गउ बंभणवेसें[9] मयरकेउ ।
घरि वइसारिउ सहुं बंभणेहिं घियऊरिहिं[10] लड्डुयलावणेहिं[11] । 10
भुंजइ भोयणु केमें[12] वि ण धाइ आवग्गी जाम रसोइ खाइ ।
ता सच्चहामि[13] पभणइ सुदुट्ठु बंभणु होइवि[14] रक्खसु पइट्ठु ।
घत्ता—ता भासइ भट्टु देंणें[15] ण सक्कइ भोयणहु ॥
किंहें[16] दइवें जाय एह भज्ज णारायणहु ॥ २१ ॥

५ S खेलेवि. ६ A खलियालिवि. ७ A विच्छाइवि. ८ P णयरु.

21. १ AP °सच्चभाम°. २ APS दिसिविदिसि°. ३ APS वाविउ. ४ B णयरे. ५ P पएसे. ६ AS वाहिउ; P वाहीउ. ७ ABP णिव°. ८ AP सच्चहाम°; S सच्चभाम°. ९ S बम्हण°. १० APS घियऊरहि. ११ B लड्डुय°; P लड्डुअ°; S लड्डुव°. १२ A केण. १३ P सच्च-भाम. १४ P ण होइ for होइवि. १५ AP दीण. १६ S किल.

11 *b* खरियालिवि कदर्थयित्वा खेदयित्वा वा. 13 छाइवि प्रच्छाद्य.

21. 1 *b* °णिवासु उद्यानम्. 2 *b* मारुयचलेण वायुवत्. 4 *b* समेस मेषसहिताः. 6 *b* वेज्जवेसु वैद्यवेषः. 10 *b* घियऊरिहिं घृतपूरैः; लड्डुय° लड्डुकैः; °लावणेहिं लावण इति पृथक् पक्वान्नं वर्तते पूर्वदेशे दहिवडीवत्. 11 *b* आवग्गी स्वांग एकलः (?). 13 देण दातुम्.

22

पुणु गयउ झसद्धउ बडुएहु खुल्लयवेसें णियजणणिगेहु।
हउं भुक्खिउ रुप्पिणि गुणमहंति दे देहि भोज्जु सम्मत्तवंति।
ता सरसभक्खु उक्खित्तगासु णाणातिम्मणकयसुरहिवासु।
जेमाविउ तो वि ण तित्ति जाइ हियउल्लइ देविहि गुणु जि थाइ।
कइ कइ व ताइ पीणिउ विहासि विरएवि पुरउ लड्डुयहं रासि। 5
विणु कालें कोइलरोवमुहलु अवयारिउ महुरसमत्तभसलु।
तक्खणि वसंतु अंकुरियकुरुहु कयपणयकलहु अणजणियविरहु।
णारउ पुच्छिउ पीणत्थणीइ कोऊहलभरियइ रुप्पिणीइ।
महु घरु को आयउ खयरदेउ ता तेण कहिउं सिसु मयरकेउ।
अवयरिउ माइ दे देहि खेउं ता कामें णिसुणिवि वयणु एउं। 10
दंसिउं सरूउ णियमाउयाहि पण्हुयपयपयलियथणजुयाहि।

घत्ता—जणणीथण्णेण ण्हुउ मिलंतु अहिसित्तु किह ॥
गंगातोएण पुप्फयंतु पहु भरहु जिह ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे रुप्पिणिकामएवसंजोउ णाम एक्काणवदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ९१ ॥

22. १ APS °रोल°; B °रव°. २ BP खयरदेउ. ३ S सरूवु. ४ A ता एत्तहिं for मिलंतु in second hand. ५ S पुप्फदंत°. ६ B रूपिणि°. ७ AS एकाणवदिमो; B एकणवदिमो; एकाणउदिमो.

22 1 *a* झसद्धउ कामः; *b* खुल्लयवेसें ब्रह्मचारिवेषेण. 3 *a* उक्खित्तगासु उत्क्षालितकवलः; *b* °तिम्मण° व्यञ्जनम्. 5 *a* विहासि शोभमानः; *b* लड्डुयहं मोदकानाम्. 6 *b* महु° मकरन्दः. 7 *b* °पणयकलहु मिथुनस्य स्नेहयुद्धम्. 10 *a* खेउं आलिङ्गनम्. 11 *b* पण्हुयपयं प्रस्तुतं पयः. 13 भरहु जिह भरतचक्रीवत्.

XCII

पसरंतणेहरोमंचिएण देवें रइभत्तारें ॥
कमकमलइं जणणिहि णवियाइं सिरिपज्जुण्णकुमारें ॥ ध्रुवकं ॥

1

जहिं अच्छिउ तं पुरु घरु देसु वि पुणु वित्तंतु कहिउ णीसेसु वि ।
मुहकुहरुग्गयसुमहुरवायहि बालकील दक्खालिय मायहि ।
पुत्तसणेहु जणिउ णिरु णिब्भरु तहिं कालइ परियाणिवि अवसरु । 5
दुज्जणु हरिसें कहिं मि ण माइउ छुरविहत्थु चंडिलउ पराइउ ।
तेण समीहंतें दूसह कलि मग्गिय मयणजणणिअलयावलि ।
भाणुकुमारहु ण्हाणणिमित्तें तं णिसुणिवि णिरु विंभियचित्तें ।
पुच्छिय णियमायरि कंदप्पें किं पवुत्तु एएण सदप्पें ।
णील णिद्ध भंगुर सुहकारा किं मग्गिय धम्मिल्ल तुहारा । 10
तं णिसुणिवि देवीइ पवुत्तउं पुव्वकम्मु परिणवइ णिरुत्तउं ।
दिव्वपुरिसलक्खणसंपण्णउ जइयहुं तुहुं महुं सुउ उप्पण्णउ ।
तइयहुं सच्चभामणामंकइ भाणु जणिउ मुहजित्तससंकइ ।
बिहिं मि सहीउ गयाउ उविंदहु पालि पायपाडियरिउविंदहु ।

घत्ता—ता तहिं हरिणा सुसुट्ठिएण पियपायंति बइट्ठी ॥
अम्हारी सिसुमिगलोयणिय सहयरि सहसा दिट्ठी ॥ १ ॥

2

देवदेव रुप्पिणिहि सुछायउ लक्खणवंजणचच्चियकायउ ।
ताइ पवुत्तु पुत्तु संजायउ तं णिसुणिवि हरिसिउ महिरायउ ।
पढमपुत्तु तुहु चेय पघोसिउ पडिवक्खहु मुहभंगु पदेसिउ ।
वइरिएण वड्ढियअवलेवें णवर णिओ सि कहिं मि तुहुं देवें ।

1 १ AP °देहरोमंचिएण. २ दुज्जण. ३ S omits this foot. ४ S विम्हिय°. ५ B पवुत्तु पइं एण सदप्पें. ६ B णिद्ध. ७ APS सुहगारा. ८ A °पुरिसु. ९ A °संपुण्णउ. १० A सच्चहाम°. ११ B बिहं. १२ S पायपडिय°. १३ S °मृग°.

2 १ A रुप्पिणिसुच्छायउ. २ P °विंजण°. ३ A पदरसिउ.

1 1 रइभत्तारें कामेन. 6 *a* दुज्जणु सत्यभामाप्रमुखः; *b* चंडिलउ नापितः. 9 *b* एएण एतेन. 10 *a* भंगुर वक्राः. 14 *a* बिहिं द्वयोः संबन्धिन्यः. 15 °पायंति पादान्ते. 16 अम्हारी सखी.

2 3 *b* पडिवक्खहु सत्यभामाप्रमुखस्य. 4 *a* वइरिएण पूर्वजन्मरिपुणा; °अवलेवें गर्वेण.

विमलसरलसयदलदलणेत्तहु जेट्ठउ कमु जायउ सावत्तहु । 5
कलहंतिहिं वड्ढियपिसुणत्तणि चिरु बोल्लिउं दोहिं मि तरुणत्तणि ।
विहिं मि पुत्तु जा पढमु जणेसइ सा अवरहि धम्मिल्लु लुणेसइ ।
मंगलधवलथोर्त्तहयसोत्तइ पुत्तविवाहकालि संपत्तइ ।
हरिसें अज्जु सवत्ति विसट्टइ सुयकल्लाणण्हाणु घरि वट्टइ ।
एहु ताहि आएसें वग्गइ ण्हाविउ मज्झ सिरोरुह मग्गइ । 10
तं णिसुणिवि विज्जासामत्थें देवें उच्छुसरासणहत्थें ।
वम्महेण जणकोंतलहारिहि अवरु सहाउ विहिउ छुरधारिहि ।
एंत अणंत वि णं जमदूएं तज्जिय भिच्च जणद्दणरूएं ।
घत्ता—पसरंतें गयणालग्गएण रूसिवि एंतु दुरंतउ ॥
अइदीहें पाएं ताडियउ जरु णामेण महंतउ ॥ २ ॥ 15

3

मेसें होइवि हउ सपियामहु हालिहि भिडिउ होएप्पिणु महुमहु ।
रुप्पिणिरूउ अण्णु किउ तक्खणि णिहिय विमोणि णीय गयणंगणि ।
दामोयरु ससेण्णु कुढि लग्गउ णिवजालेण सो वि णिहु भग्गउ ।
जयसिरिलीलालोयपसण्णहं को पडिमल्लु एत्थु कयपुण्णहं ।
दर हसंतु सुरणरकलियारउ तहिं अवसरि आहासइ णारउ । 5
कामएउ णरणयणपियारउ एहु वियंभिउ पुत्तु तुहारउ ।
जं कल्लोलेहु उत्तंगत्तणु तं महुमह सायरहु पहुत्तणु ।
जं तणयहु पयाउ खलदूसणु तं माहव कुलहरहु विहूसणु ।
हरि हरिवंससरोरुहणेसरु तं णिसुणिवि हरिसिउ परमेसरु ।

४ A जेट्ठकम्मु पालिउ सावत्तहो; BSAls. जेट्ठाकम्मु जाउ सावत्तहो; P जेट्ठक्कमु पालिउ सावत्तहो; Als. suggests to read जेट्ठक्कमु जायउ सावत्तहो. ५ S वड्ढिए. ६ S पढम. ७ B धम्मिल्लु; P धम्मेल्लु; S धम्मेल्ल. ८ BS °गित्त°. ९ AP णियतणुरुहविवाहे आढत्तए. १० B सविति. ११ S ण्हाविउ. १२ P उच्छ°. १३ P °सूवें; S रूवें.

3 १ S होयवि. २ S होएवि तहि. ३ B मुहुमुहु; P संमुहु. ४ AP विमाणमज्झे. ५ AP णिवबालेण; S नृवजालेण. ६ APS रणि. ६ B एव; S एउं. ७ A कल्लोलु होउ तुंगत्तणु. BPS उत्तुंग°. ८ A हसिउ.

5 *b* सावत्तहु सपत्नीपुत्रस्य. 8 *a* °हयसोत्तइ हतकर्णे. 9 *a* विसट्टइ विकसति; *b* °कल्लाण° विवाहः. 10 *a* एहु नापितः. 12 *a* वम्महेण कामेन; *b* छुरधारिहि नापितस्य. 13 *a* एंत आगच्छन्तः; *b* जणद्दणरूएं विष्णुरूपेण. 15 जरु अरनाम्ना.

3 1 *a* मेसें होइवि मेषरूपेण; सपियामहु वसुदेवः. 3 *a* कुढि पृष्ठे; *b* णिहु नृपः. 9 *a* °णेसरु सूर्यः.

सिसुदुव्विलसियाइं कयरायहु हरिसु जणंति अवस णियतायहु । 10
एत्थंतरि अणंगु पयडंगउ होइवि गुरुयणि विणयवसं गउ ।
पडिउ चरणजुयलइ महुमहणहु कंसकेसिपायबद्दवदहणहु ।
तेण वि सो भुयदंडहिं मंडिउ आसीवाउ देवि अवखंडिउ ।

घत्ता—कंदप्पु कणयणिहु केसवहु अंगालीणउ मणहरु ॥
णं अंजणमहिहरमेहलहि दीसइ संझाजलहरु ॥ ३ ॥ 15

4

हरिणा मयणु चडाविउ मयगलि णं दियहेण भाणु उययाचलि ।
उवसमेण परमत्थवियाणइ णं अरहंतु देउ गुणठाणइ ।
वंदिविंदउग्घोसियभद्दें पुरि पइसारिउ जयजयसद्दें ।
किउ अहिसेउ सरहु सुरमहियहु भाणुवइट्ठकुमारिहिं सहियहु ।
सो ज्जि कुलक्कमि जेट्ठु पयासिउ पडिवक्खहु उव्वेउ पविलसिउ । 5
सुय रुप्पिणीइ णंपि णीलुज्जल सच्चहामदेविहि सिरि कोंतल ।
भवियव्वउं पच्छण्णु पंदरिसिउं अण्णहिं वासरि केण वि भासिउं ।
गोविंदहु करिकरदीहरकरु होही को वि पुत्तु कप्पामरु ।
तं आयण्णिवि भाणुहि मायरि गय तहिं जहिं अत्थाणइ थिउ हरि ।
पत्थिउ पिययमु ताइ णवेप्पिणु अवण म सेवहि मइं मेल्लेप्पिणु । 10
ताव जाव तणुरुहु उप्पज्जइ तं मग्गिउ तहि देइयं दिज्जइ ।
तं णिसुणिवि रुप्पिणिइ सणंदणु भणिउ सयणमणणयणाणंदणु ।
पुत्त पुत्त पिसुणहि पाविट्ठहि मज्झु सवत्तिहि दुट्ठहि धिट्ठहि ।

घत्ता—खेयरिइ महुसूयणवल्लहइ जइ वि णाहु ओलग्गिउ ॥
तो वि तिह करि णँ होइ सुउ पत्तिउं तुहुं मइं मग्गिउं ॥ ४ ॥ 15

९ P अवसु. १० P गुरुयण°. ११ S भुवदंडहि.

4 १ B उवयाचलि. २ S अरहंतदेउ. ३ B °वंद°. ४ S omits this foot. ५ AB पयसारिउ. ६ S भाणु वि इट्ठ°; P भाणुवइट्ठु कुमारिहिं. ७ P कुलक्कम. ८ AP णीलुप्पल. ९ APS सच्चभाम°. १० BS वि दरिसिउं. ११ B तणरुहु. १२ P तहि दइवें; S तं दइए. १३ BP सवित्तिहे. १४ BP खेयरिए. १५ P महसूयण°. १६ S करे. १७ BPS णउ होइ.

10 *a* कयरायहु कृतरागस्य प्रीतेः; *b* अवस अवश्यम्. 11 *a* पयडंगउ प्रकटशरीरः. 13 *a* तेण हरिणा. 14 कणयणिहु सुवर्णसदृशवर्णः. 15 °मेहलहि मेखलायां तटे.

4 2 *a* परमत्थवियाणइ त्रयोदशे गुणस्थाने. 3 *a* °भद्दें मङ्गलेन. 4 *a* सरहु स्मरस्य; *b* भाणुवइट्ठ° पूर्वं भानोर्याः कन्या उपदिष्टाः ताभिः सहितस्य. 7 *a* भवियव्वउं केनचिन्नैमित्तिकेन भवितव्यं कथितं स्वर्गाद्देवश्च्युत्वा कृष्णपुत्रो भविष्यति. 9 *a* भाणुहि मायरि सत्यभामा. 11 *b* दिज्जइ दीयते, दत्तमित्यर्थः. 13 *a* पिसुणहि दुर्जनायाः सत्यभामायाः. 14 खयरिइ सत्यभामया.

5

ताहि म होउ होउ वर पयहि　　जंबावइहि पुण्णससितेयहि ।
वच्छल पियसहि णंदउ रिज्झउ　　इयर विसमसंतावें डज्झउ ।
तं णिसुणिवि विहसिवि कंदप्पें　　णियविज्जासामत्थवियप्पें ।
पइरइकामहि वाहियछायहि　　रयसलिदियहि चउत्थइ ण्हायहि ।
जंबावइहि रूउ किउ केहउं　　सच्चहामदेविहि जं जेहउं ।　　5
कामरूयमुद्दिय पहिरेप्पिणु　　गय हरिणा वि पवर मण्णेप्पिणु ।
रमिय गब्भु तक्खणि संजायउ　　कीडवसुरु सग्गग्गहु आयउ ।
णवमासहिं लायण्णरवण्णउ　　संभवु णाम पुत्तु उप्पण्णउ ।
जंबावइहि पउण्ण मणोरह　　सुय वड्ढंति महंत महारह ।
जणणिजणियपिसुणत्तें दारुणु　　अवरहिं दिवसि जाय कोवारुणु ।　　10
संभवेण अवमाणिवि घित्तउ　　भाणु भणियसरजाइहि जित्तउ ।
पुण्णविसेसु सुणिवि गरुयारउ　　मुक्कउ झ त्ति रोसपब्भारउ ।
सच्चहामदेविइ गुणकित्तणु　　पडिवण्णउं रुप्पिणिसयणत्तणु ।

घत्ता—इय णिसुणिवि मुणिगणहरकहिउं सीरपाणि पुणु भासइ ॥
अज्ज वि कइ वरिसइं महुमहणु देव रज्जु भुंजेसइ ॥ ५ ॥　　15

6

दसदिसिवहपविदिण्णदुयासें　　णासेसइ दीवायणरोसें ।
मज्झणिमित्तें दारावइ पुरि　　जरणामें वणि णिहणेवउ हरि ।
एउं भविस्सु देउ उग्घोसइ　　बारहमइ संवच्छरि होसइ ।
पढमणरइ सिरिहरु णिवडेसइ　　एक्कु समुद्दोवमु जीवेसइ ।
पच्छइ पुणु तित्थयरु हवेसइ　　एत्थ खेत्ति कम्माइं डहेसइ ।　　5

---

5 १ P हसेवि. २ B °कामहो. ३ APS रयसल°. ४ S रूवु. ५ APS सच्चभाम°. ६ S °रूव°. ७ S परिहेप्पिणु. ८ B Als. वियवर (वि + अवर). ९ A मेल्लेप्पिणु. १० AP कीडयसुरु सो सग्गहो आइउ. ११ P लावण्ण°. १२ B संभवणामु; P जंबावइहे पुत्तु उप्पण्णउ. १३ AP ते बेण्णि वि पउण्णमणोरह. १४ BK °जायहिं. १५ AP मुणेवि. १६ APS सच्चभाम°. १७ P अज्जु.

6 १ P णिहणेव्वउ. २ ABPS णिवसेसइ. ३ AP एत्थु छेत्ति.

---

5 4 *a* पइरइकामहि भर्तृरतिवाञ्छकायाः; *b* रयसलिदियहि रजस्वलादिने. 6 *b* पवर मण्णेप्पिणु प्रवरां मत्वा. 7 *b* कीडवसुरु क्रीडवच्चरः 9 महारह रणेऽनिवर्तकाः. 1 *a* जणणिजणिय° मातृसंधुक्षितेन. 11 *b* भणियसरजाइहि भणितबाणजात्या.

6 2 *b* जरणामें सत्यभामामन्त्रिणा.

तुहुं छम्मास जाम सोआयहँ हिंडेसहि सोयंतउ भायरु ।
विमलिं देविं उम्मोहेवँउ वणि सिद्धत्थें संबोहेवउ ।
दइगंबरिय दिक्ख पालेप्पिणु कुच्छिउ णरसरीरु मेल्लेप्पिणु ।
माहिंदइ अमरत्तु लहेसहि पुणरवि एउं खेत्तु आवेसहि ।
होसहि सिरिअरहंतु भडारउ दुम्महवम्महवम्मवियारउ । 10
इय णिसुणिवि दीवायणु मुणिवरु हुउ गउ अवरु पवरु देसंतरु ।
महुमहमरणायण्णणसंकिउ थिउ जाइवि णियदइवें ढंकिउ ।
जरकुमारु विलासियपंचाणणि कोसंबीपुरिणियडइ काणणि ।
भूसिउ गुंजाहरणविसेसें संठिउ सुंदरु णाहलवेसें ।
घत्ता—मिच्छत्तें मलिणीहूयएण दढणरयाउसु बद्धउं ॥ 15
महुमहणें पुणु संसारहरु जिणवरदंसणुं लद्धउं ॥ ६ ॥

7

पसरियसमयभत्तिगुणरुंदें वेज्जावच्चु कयउं गोविंदें ।
सत्तुय काराविय णियपुरवरि ओसहु तें दिण्णउं मुणिवरकरि ।
तित्थयरत्तु णामु तेणज्जिउं जं अमरिंदणरिंदहिं पुज्जिउं ।
इय णिसुणिवि माहउ आउच्छिवि णासणसीलु सव्वु जगु पेच्छिवि ।
पज्जुण्णाइ पुत्त वउ लेप्पिणु थिय णिग्गंथ कलुसु मेल्लेप्पिणु । 5
रुप्पिणि आइ करिवि महएविउ अट्ठ वि दिक्खियाउ सुयसेविउ ।
वम्महु संभउ रिसि अणुरुद्धउ तवजलणें डहिवि मयरद्धउ ।
तिण्णि वि उज्जयंतगिरिवरसिरि महुरमहुरणिग्गयमहुयरगिरि ।
केवलणाणु विमलु उप्पाइवि किरियाछिण्णुं झाणु णिज्झाइवि ।
घत्ता—गय मोक्खहु णेमि सुरिंदथुउ णिम्मलणाणविराइउ ॥ 10
विहरेप्पिणु बहुदेसंतरइं पल्लवविसयहु आइउ ॥ ७ ॥

४ AS सोयाउरु; P सोयायरु. ५ B सोएंतउ ६ APS विमलें देवें. ७ A उम्मोएवउ; P उम्मोहेव्वउ. ८ P दीयायणु. ९ S जायवि. १० B °कुमार. ११ B मिलिणीहुयएण. १२ B °दंसण.

7 १ B णियपुरि. २ S दिण्णा. ३ S माइउ. ४ AP सिय°. ५ AB संबूरिसि. ६ APS अणिरुद्धउ. ७ ABPS डहेवि. ८ S ° छिण्ण.

6 *b* सोयंतउ शोचमानः. 7 *a* उम्मोहेवउ मोहरहितः करणीयः; *b* सिद्धत्थें सिद्धार्थनाम्ना देवेन. 9 *b* आवेसहि भरतक्षेत्रमागमिष्यति. 12 *a* °आयण्णणसंकिउ आकर्णनेन भीतः.

7 1 *a* °समय° जिनमतम्. 2 *a* सत्तुय सक्तवः. 4 *a* आउच्छिवि पृष्ट्वा; *b* णासणसीलु अस्थिरम्. 6 *b* सुयसेविउ श्रीसेविताः. 7 *a* वम्महु प्रद्युम्नः; अणुरुद्धउ प्रद्युम्नपुत्रः. 8 *b* महुरमहुर° मधुरादपि मधुराः; °महुयरगिरि भ्रमरशब्दे.

8

बलएवें पुच्छिउ सुरसारउ पंडवकह पजरइ भडारउ ।
कंपिल्लिहि णयरिहि णरपुंगमु दुमउं णाम महिवइ सुहसंगमु ।
दढरह घरिणि पुत्ति तहु दोवइ जा सोहग्गें कामु वि गोवइ ।
सा दिज्जइ कहु मंतु पमंतिउ चंडु णाम पोयणपुरि खत्तिउ ।
देविल घरिणि पुत्तु जाणिज्जइ इंदवम्मु तहु सुंदरि दिज्जइ । 5
अवरें भणिउं भीमु भडकेसरि जो आहवि घल्लइ णहयलि करि ।
दिज्जइ तासु धूय परमत्थें अवरु भणइ जइ परिणिय पत्थें ।
तो पयहि तूंयपट्टु णिबज्झइ अण्णु भणइ महुं हियवइ सुज्झइ ।
सुयहि सयंवरविहि मंडिज्जइ केत्तिउं हियउल्लउं खंडिज्जइ ।
जो रुच्चइ सो माणउ इच्छइ दुज्जण किं करंति किर पच्छइ । 10
घत्ता—तहिं अवसरि खलदुज्जोहणेण कवडें जूइं जिणेप्पिणु ॥
णिद्धाडिय पंडव पुरवरहु सइं थिउ पुहइ लएप्पिणु ॥ ८ ॥

9

पुव्वपुण्णपब्भारपसंगें जउहरि वालिय णट्ठ सुरंगें ।
गय तहिं जहिं आढत्तु सयंवरु विविहकुसुमरयरंजियमहुयरु ।
मिलिय अणेय राय मउडुज्जल चमरधारिचालियचामरचल ।
पहपंसुल पंथिय छुड्डु आइय ते पंच वि कण्णाइ पलोइय ।
दइवें लोयवालं णं ढोइय णं वम्महसरगुण संजोइय । 5
सिद्धत्थाइ राय अवगण्णिवि कामु व दिव्वधणुद्धरु मण्णिवि ।
पत्थु सलोणु विसेसें जोइउ तहि दइवें भत्तारु णिओइउ ।
घित्त सदिट्ठि माल तहु उरयलि लच्छीकीलापंगणि पविउलि ।
ता हरिसिय णीसेस णरेसर पहिय पणच्चिय उब्भिवि णियकर ।
जयजयसद्दें णयरि पइट्ठहिं जिणअहिसेयपणामपहिट्ठहिं । 10

8 १ AP दुवउ णामु; S द्रुमउ. २ BS अवरि. ३ AB भीमभडु. ४ AP तियपट्टु. ५ B खलु. ६ BP जूएं.

9 १ A जऊहरे; BPS जउंहरे. २ P सुतुंगें. ३ BS °कुसुमरसरंजिय°. ४ BP °जलु. ५ B °चलु. ६ P लोइयवाल. ७ P दिव्वु. ८ P °पंगणि; S °प्रंगण°. ९ A °पणामअहिट्ठहिं.

8 2 *b* दुमउ द्रुपदः. 3 *a* दोवइ द्रौपदी; *b* गोवइ कोपयति क्षोभं कारयति. 6 *b* करि गजान्. 7 *b* पत्थें अर्जुनेन.

9 1 *a* जउहरि लाक्षामण्डपे आवासे धृताः, तस्मात् सुरङ्गविवरेण नष्टाः. 3 *b* चमरधारि° चमरधारिणीभिः. 4 *a* पहपंसुल मार्गधूलिग्राहिणः 6 *b* दिव्वधणुद्धरु अर्जुनः. 7 *a* पत्थु अर्जुनः; सलोणु लावण्ययुक्तः.

कालु अंतु बहुरायविणोयहिं थीउ जाणइ भुंजेवि य भोयहिं ।

घत्ता—कालें अंतें थिरथोरकरु रणि पल्हत्थियगयघडु ॥
पत्थेण सुहद्दहि संजणिउ सिसु अहिअण्णु महाभडु ॥ ९ ॥

10

अवरु वि मुहमरुथियमत्तालिहि सुय पंचाल जाय पंचालिहि ।
पुणु वि भुयंगसेणपुरि पविसेणु कियउं तेहिं कीअयणिण्णासणु ।
मायावियरूयाइं धरेप्पिणु पुणु विराडमंदिरि णिवसेप्पिणु ।
अरिणरवइ जिणिवि सर घत्तिवि कुढि लग्गिवि गोउलइं णियत्तिवि ।
पुणु कुरुखेत्ति पवाड्डियगोरव पंडुसुएहिं परज्जिय कोरव । 5
अक्खलियपरिपालियहरियाणउ जाउ जुहिट्ठिलु देसहु राणउ ।
थिउ रायणुवट्टि गुणवंतउ भायरेहिं सहुं सिरि भुंजंतउ ।
बारहवरिसइं णवर पउण्णइं गलियइं पंकयणाहहु पुण्णइं ।
वणघुल्लियमहराइ पमत्तहिं मयपरवसहिं पज्जुम्मिरणेत्तहिं ।
सिसुकीलारएहिं संताविउ रायकुमारहिं रिसि रोसाविउ । 10
सो दीवायणु छुडु छुडु आयउ मुउ भावणसुरु तक्खणि जायउ ।

घत्ता—आरूसिवि पिसुणें मुक्क सिहि पावेप्पिणु सुरदुग्गइ ॥
धवलहरधवलधयमणहरिय खणि डड्ढी वारावइ ॥ १० ॥

---

१० BAls. णउ जाणिज्जइ भुंजियभोयहिं. ११ A थिरथोरकरु. १२ APS अहिवण्णु.

10 १ S अवर. २ BS पंचालु. ३ B भुयंगसेल°; S भुयंगसल°. ४ P पइसणु. ५ S कयउं. ६ P °रूवाइं. ७ S omits this foot. ८ BAls. °गारव; PS °गउरव. ९ PS कउरव. १० AP णायाणुवट्टि; B रायाणुवट्टि. ११ P सउं. १२ ABPS वणे. १३ B पत्तहिं. १४ B भावणि; S भावणु. १५ P संजायउ. १६ P °अइमणोहरिय. १७ B डिड्ढी.

---

13 सुहद्दहि प्रथमराज्ञ्यां सुभद्रायाम्; अहिअण्णु अभिमन्युः.

10 1 *a* मुहमरु° मुखवाते; *b* पंचाल द्रौपदीपुत्राः पञ्च; पंचालिहि द्रौपद्याः. 2 *a* भुयंगसेण° नगरस्य नामेदम्; *b* कीअय° कीचकस्य. 3 *a* मायावियरूयाइं युधिष्ठिरेण राजरूपम्, भीमेन रसवतीपाकरूपम्. अर्जुनेन बृहंदलरूपम्, नकुलसहदेवाभ्यां विप्ररूपम्. 4 *a* सर घत्तिवि बाणान् मुक्त्वा; *b* णियत्तिवि पश्चाद्विवर्त्य गृहीत्वा. 8 *b* पंकयणाहहु पद्मनाभस्य. 10 *b* रिसि द्वीपायनः.

11

खयणमरणंदहसोएं भरियउ लहुं बलएवें लहुं णीसरियउ ।
होउ होउ दिव्वाउहसिक्खइ पोरिसु काइं करइ भग्गक्खइ ।
णे धय ण छत्त ण रह णउ गयवर णउ किंकर चलंति णउ चामर ।
देहमेत्त सावयभीसावणु बेण्णि वि भायं पइट्ठ महावणुं ।
थक्कि विडवितलि सुत्तु तिसायउ सीरि सलिलु पविलोयहुं धाइउ । 5
तहिं अवसरि हयदेइवें रुद्धउ जरकुमारभल्लें हरि विद्धउ ।
जइ वि जीउं दुग्गइं आसंघइ तो वि ण णियइ को वि जगि लंघइ ।
मुउ गउ पढमणरयबिवरंतरु सोक्खु ण कासु वि भुवणि णिरंतरु ।
जलु लएवि तक्खणि पडियाएं पसरियमोहतिमिरसंघाएं ।
घत्ता—खयकालफणिंदें कवलियउ महि णिवडिउ णिच्चेयणु ॥ 10
बोल्लाविउ भायरु हलहरिण मउलियलोयणु ॥ ११ ॥

12

उट्ठि उट्ठि अप्पाणु णिहालहि लइ जलु महुमह मुहुं पक्खालहि ।
दामोयर धूलीइ विलित्तउ उट्ठि उट्ठि किं भूमिहि सुत्तउ ।
उट्ठि उट्ठि केसव मइं आणिउं णिरु तिसिओ सि पियहि तुहुं पाणिउं ।
उट्ठि उट्ठि सिरिहर साहारहि मइं णिज्झाणि वाणि किं अवहेरहि ।
उट्ठि उट्ठि हरि मइं बोल्लावहि चिंताऊरिउ केत्तिउं सोवहि । 5
पूयणमंथण सयडविमद्दण विमणु म थक्कहि देव जणद्दण ।
इंदु वि बुड्डइ तुह आसिवरजालि अज्ज वि तुहुं जि राउ धरणीयलि ।
डज्झउ पुरि विहडउ तं परियणु अंतेउरु णासउ वियलउ धणु ।
भाइ धरत्तिविसित्तिउप्पायणं छुहु तुहुं एक्कु होहि णारायणं ।

11 १ AP °मरणभयसोएं. २ P धण यण छत्त ण रह णउ गयवर; S ण धय ण छत्त णउ गयवर. ३ B किंकिर. ४ AP चलंति चामरधर. ५ B °मित्तु; S °मेत्तु. ६ B भाइ. ७ B वणे. ८ APS तिसाइउ. ९ P सीरि वि सलिलु पलोयहुं धाइओ. १० B हउ. ११ AP °भल्लें. १२ S जीवु. १३ P °णरए. १४ P भुवणे. १५ APS पडिआएं. १६ S माहवु.

12 १ S मुह. २ P °मयण°. ३ Als. अज्जेवि; BS अज्ज वि. ४ APS °धरिसि°; ५ A °थित्ति° P °वित्ति°. ६ P °उप्पायणु. ७ P णारायणु.

11 1 *a* °दह° उत्सवेन. 2 *b* भग्गक्खइ भाग्यं पुण्यं तस्य क्षये. 5 *a* विडवितलि वृक्षतले; *b* पविलोयहुं अवलोकयितुम्. 7 *a* दुग्गइं विषमस्थानानि; *b* णियइ भवितव्यम्. 9 *a* पडियाएं प्रत्यागतेन. 11 मउलियलोयणु मुकुलितनेत्रः.

12 5 *b* चिंताऊरिउ नगरदाहत्वात्. 6 *b* विमणु विमनाः. 8 *b* वियलउ विगलतु नश्यतु.

जहिं तुहुं तहिं सिरि अवसें णिवसइ जहिं ससि तहिं किं जोण्ह ण विलसइ।
उट्ठि उट्ठि भड्डिय जाइज्जइ किं किर गिरिकंदरि णिवसिज्जइ।
किं ण मज्झु करयलि करु ढोयहि किं रुट्ठो सि बप्प णउ जोवहि।
घत्ता—उट्ठाविवि सुइरु सबंधवेण हरिहि अंगु परिमट्ठउं॥
वणविवरहु होंतउ रुहिरजलु ताम गलंतउं दिट्ठउं॥ १२॥

13

तं अवलोइवि सीरिहि रुण्णउं तुज्झु वि तणु किं सत्थें भिण्णउं।
गरुडणाहु किं डंसियउ सप्पें अहवा किं किर एण वियप्पें।
मं छुडु जरकुमारु पत्थाइउ तेण महारउ बंधवु घाइउ।
घाइउ ण मरइ कण्हु भडारउ दुद्दमदाणविंदसंघारउ।
एउं भणंतुं पेउ सो ण्हाणइ सोयाउरु णउ काइं मि जाणइ। 5
देवंगइं वत्थइं परिहावइ भूसणेहिं भूसइ भुंजावइ।
मुयउ तो वि जीवंतु व मण्णइ जणभासिउं ण किं पि आयण्णइ।
कुंकुमचंदणपंकें मंडइ खंधि चडाविवि महि आहिंडइ।
देवें सिद्धत्थें संबोहिउ थिउ बलएउ समाहिपसाहिउ।
छम्मासहिं महियलि ओयारिउ दिट्ठु सइट्ठु तेण सक्कारिउ। 10
सुहिविओयणिव्वेयं लइयउ णेमिणाहु पणविवि पावइयउ।
अच्छरकरचालियचलचामरु सो संजायउ माहिंदामरु।
घत्ता—आयण्णिवि महुसूयणमरणु जसधवलियजयमंडव॥
गय पंच वि सिरिणेमीसरहु सरणु पइट्ठा पंडव॥ १३॥

14

दिट्ठउ जिणु णीसल्लु णिरंतरु पणवेप्पिणु पुच्छिउ सभवंतरु।
अक्खइ णेमिणाहु इह भारहि चंपाणयरिहि महियलि सारहि।

---

८ APS जोयहि.

13 १ AS सीरिं; P सीरें. २ B गुरुड°. ३ B डंसिउ. ४ APS बंधु वि घाइउ. ५ APS घायउ. ६ P एम. ७ A भणंतु कण्हु सो. ८ B महुसयण°; S महसूयण°. ९ P पयट्ठा.

14 १ B णिरंबरु. २ APS महियल°.

---

11 *a* भड्डिय हे नारायण. 13 उट्ठाविवि उत्थाप्य. 14 वण° व्रणः.

13 1 *b* सत्थें शस्त्रेण. 5 *a* पेउ मृतकं स्नापयति. 9 *b* °पसाहिउ शृङ्गारितः. 10 *a* ओयारिउ भूमौ स्कन्धादवतारितः; *b* सक्कारिउ दग्धः. 13 °जय° जगत्.

मेहवाहु कुरुवंसपहाणउ हौंतउ इंदसमाणउ राणउ ।
सोमदेउ बंभणु सोमाणणु सोमिलावंभणिथणमाणणु ।
सोमयत्तु सोमिलउ भणिउ णंदणु सोमभूइ अणि आणिउ । 5
ताहं अणेयवण्णधणरिद्धिउ अग्गिभूइ माउलउ पसिद्धउ ।
अग्गिलगब्भवासंसभूयउ पयउ तिण्णि तासु पियधूयउ ।
धणसिरि मित्तसिरी वि मणोहर णायसिरी वि सुतुंगपओहर ।
दिण्णउ तांहं ताउ धवलच्छिउ कुलभवणारविंदणवलच्छिउ ।
जिणपयपंकयाइं पणवेप्पिणु सोमदेउ गउ दिक्ख लएप्पिणु । 10
अण्णहिं दिणि धम्मरुइ भडारउ कुसुमसरवसंतसरीरउ ।
णवकंदोट्टदलुज्जलणेत्तें सोमदत्तणामें दियपुत्तें ।
परमइ अणुकंपाइ णियच्छिउ घरपंगणु पावंतु पडिच्छिवि ।
धणसिरि भणिय तेण वयगेहउ भोयणु देहि रिसिहि णिण्णेहहु ।

घत्ता—ता रूसिवि ताइ अलक्खणइ साहुहि विसु करि दिण्णउं ॥ 15
तं भक्खिवि तेण समंजसेण संणासणु पडिवण्णउं ॥ १४ ॥

15

देउ भडारउ हुयउ अणुत्तरि दुक्खविवज्जिइ सोक्खणिरंतरि ।
तं तेहउं दुक्किउं अवलोइवि मइ अरहंतधम्मि संजोइवि ।
वरुणायरियहु पासि अमाया तिण्णि वि भायर मुणिवर जाया ।
गुणवइखंतिहि पयइं णवेप्पिणु कामु कोहु मोहु वि मेल्लेप्पिणु ।
तरुणिहिं संजमगुणविच्छिण्णउं मित्तणायसिरिहिं मि वउं चिण्णउं । 5
सल्लेहणविहिलिहियइं गत्तइं अच्चुयकप्पि सुरत्तणु पत्तइं ।
पंच वि ताइं पहाइ महंतइं थियइं दिव्वसोक्खइं भुंजंतइं ।
ताम जाम बावीससमुद्दइं धम्मे कालु ण जायइं भद्दइं ।
रिसि मारिवि दुक्कियसंछण्णी पंचमियहि पुढइहि उप्पण्णी ।
पुणु वि सयंपहदीवि दुदरिसणु फणि हुइ दिट्ठीविसु भीसणु । 10

३ A मेहवाउ. ४ APS °धणरिद्धउ. ५ Als. °वासे; B °वासि. ६ P °पयोहर. ७ A ताउ ताहं. ८ P सोमभूइ°. ९ A धणिसिरि; P फणिसिरि. १० S वयगेहहो. ११ S दिण्णु.

15 AS तें तेहउ; BP ते तेहउ. २ PS वरुणाइरियहो. ३ P °गुणु. ४ P °णायधण-सिरिहिं. ५ ABP वउ. ६ A सोक्ख दिव्वइं. ७ S omits this foot.. ८ APS पुढविहे. ९ PS सयंपहे दीवे.

14 4 *a* बंभणु पुरोधाः. 6 *a* ताहं तेषां त्रयाणां मातुलः. 7 *b* तासु अग्निभूतेः पुत्र्यः, 9 *b* कुलभवणारविंद° कुलगृहमेव कमलम्. 12 *a* °कंदोट्ट° कमलम्.

15 6 *a* °लिहियइं कृशीकृतानि, कृषितानि.

पुणु वि भेरइ तसथावरजोणिहिं हिंडिवि दुक्खसमुब्भवजोणिहिं ।
पुणु मायंगि जाय चंपापुरि गोउरतोरणमालावंधुरि ।
ताहु समाहिगुत्तु भेंप्पेविणु धम्मु जिणिंदवासिहु आणेप्पिणु ।

घत्ता—तेत्थु जि पुरि पुणरवि सा मरिवि दुग्गंधेण विरूई ॥
मायंगि सुयंधहु वणिवरहु सुय घर्णदेविहि हूई ॥ १५ ॥ 15

16

तेत्थु जि धणदेवहु वणिउत्तहु घरिणि जसोयदत्त धणवंतहु ।
सुउ जिणदेउ अवरु जिणयत्तउ जिणवरपयपंकयजुयभत्तउ ।
पूइगंध किर दिज्जइ इट्ठें एउं वयणु आयण्णिवि जेट्ठें ।
बालहि कुणिमसरीरु दुगुंछिवि सुव्वयमुणि गुरु हियइ समिच्छिवि ।
तउ लेप्पिणु थिउ सो परमट्ठहु पायहिं णिवडियँ परु पाणिट्ठहु । 5
उवरोहें कुमारि परिणाविउ दुग्गंधेण सुट्ठु संताविउ ।
ण हसइ ण रमइ णउ बोल्लावइ दुहवत्तणु किं कासु वि भावइ ।
णिंदंती णियकुणिमकलेवरु णिंदइ णियसुहुं घर्णु परियणु घरु ।
सुव्वयखंतिय इय त्ति णियंत्तिइ पुच्छिय चरणकमलु पणवंतिइ ।
बिण्णि वि देविउ गुणगणरइयउ एयउ किं कारणु पावइयउ । 10
भणइ भडारी वरमुहयंदहु वल्लहाउ चिरसोहम्मिंदहु ।
बेण्णि वि जिणपुज्जारयमइयउ णंदीसरदीवंतरु गइयउ ।
तहिं संविग्गमणें संजाएं अवरोप्परु बोल्लिउं अणुराएं ।
जइ माणुसभउ पुणु पावेसहुं तो बेण्णि वि तवचरणु चरेसहुं ।
इय णिबंधु बद्धउ विहसंतिहिं दोहिं मि करु करपंकइ दिंतिहिं । 15
उज्जेहिहि सिरिसेणहु णरणाहहु सिरिकंतहि जयलच्छिसणाहहु ।

१० S णरय. ११ P °खोणिहे. १२ AP माणेप्पिणु. १३ ABAls. सुबंधुहे. १४ A धणदेविहे.

16 १ AP असोयदत्त; BS यसोयदत्त. २ S धणवत्तहो. ३ AP °वंकयकयभत्तउ. ४ B दुगंछिवि. ५ APS लएवि. ६ Als. परमेट्ठहो against Mss. ७ AP णिवडिउ बंधु कणिट्ठहो; Als. णिवडिउ परु. ८ A परियणु धणु. ९ PAls. °खंतिय. १० AP णियंतिए. ११ B पुच्छिय दुग्गंधा पणवंतिए in second hand. १२ B बिण्णि वि खुल्लियाउ गुणगणरइयउ. १३ APS चिरु. १४ S ° मणु. १५ A णिबद्धु. १६ P ओज्झहे.

15 सुयंधहु सुगन्धस्य.

16 3 *a* पूइगंध दुर्गन्धा. 4 *a* कुणिम° दुर्गन्धं कुथितम्. 5 *a* परमट्ठहु परमार्थेन. 8 *b* णियसुहुं आत्मनः शुभं पुण्यम्. 9 *a* णियत्तिइ निवृत्तया स्वगृहान्निर्गतया तया सा आर्या पृष्टा. 11 *b* चिरसोहम्मिंदहु पूर्वजन्मनि सौधर्मस्य. 15 *b* करपंकइ हस्तेन वाचा च.

जायउ पुत्तिएँ कुवलयणयणउ मुहससंककरधवलियगयणउ ।

घत्ता—हरिसेण णाम तहिं पढम सुय हरिसपसाहियदेही ॥
सिरिसेण अवर वम्महसिरि व रूवें सुरवहु जेही ॥ १६ ॥

17

वरणरणारीविरइयतंडवि सरिवि सजम्मु सयंवरमंडवि ।
वइसंथ जाणिवि ससितेयउ हलि बिण्णि वि पावइयउ पयउ ।
खंतिवयणु आयण्णिवि तुट्ठी सुकुमारि वि तवयम्मि णिविट्ठी ।
एक्कु दिवसु झायंतिउ जिणु मणि जोईयाउ सव्वउ णंदणवणि ।
झत्ति वसंतसेणणामालइ वेसइ कुसुमसरावलिमालइ । 5
चिंतिउं जिह एयइं सिवगामिउ तिह मज्झु वि होज्जउ जिणसामिउ ।
जिह एयहुं णिव्वूढपरीसहु तिह मज्झु वि होज्जउ तवु दूसहु ।
एव सलाहणिज्जु सलहंतिइ गणियइ पावें सहुं कलहंतिइ ।

१७ S पुत्ति कुव°. १८ AP °णयणिउ. १९ ABPS मुहससहरकर°. २० A गयणिउ; P गयणओ.

17 १ AS omit स in सजम्मु; B सुजम्मु. २ P सुकुमारे. ३ From this line to 18. 2, P has the following version:—

एक्कु दिवसु झायंतिउ जिणु मणे संठियाउ सव्वउ णंदणवणे ।
तेत्थु वसंतसेणणामालिय वेसय कुसुमसरावलिमालिय ।
बहुविदेहि परिमंडी जंती लीलए वयणहो वयणु भणंती ।
णियकरु करयलेसु लायंती णयणसरावलीए पहणंती ।
णियवि णियाणु कयउ सुकुमारिए बहुदोहग्गभारणिरुभारिए ।
जिह एयहे एए सुकरायर तिह मज्झु वि जम्मंतरे णरवर ।
जिह एयहे सोहग्गमहाभरु तिह मज्झु वि होज्जउ सुणिरंतरु ।
एम णियाणु करेवि अण्णाणिणि हुय अप्पाणहो जि सा वइरिणि ।
कालें कहिं मि मरेवि संणासें दंसणणाणचरित्तपयासें ।
अंतसग्गे जाइय सियसेविय चिरभवसोमभूइ सुरदेविय ।
घत्ता—तहिं होंतउ कालें ओयरेवि हुउ सोमयत्तु जुहिट्ठिल्लु ॥
सोमेल्लु भीमु भीमारिभड्डु भुयबलमलणु महाभड्डु ॥ १७ ॥

18

बारसविहतवझीणसरीरउ सोमभूइ सो आसि भडारउ ।
सो किरीडि होएवि उप्पण्णउ धणसिरि णउलु धम्मवित्थिण्णउ ।

४ A संठियाउ. ५ A तेत्थु for झत्ति. ६ A वेसाए.

19 सुरवहु सुरवधूः अप्सराः.

17 1 *a* °तंडवि नर्तके; *b* सरिवि स्मृत्वा. 2 *a* °संथ नियमः; हलि हे पूतिगन्धे. 3 *b* सुकुमारि पूतिगन्धा; णिविट्ठी प्रविष्टा. 5 *b* वेसइ वेश्यया. 8 *a* सलाहणिज्जु श्लाघ्यं तपः.

पुण्णु णिबद्धउं किं वण्णिज्जइ जिणु सुमँरंतहं दुक्किउ छिज्जइ ।
मरिवि तेत्थु तिण्णि वि सण्णासें दंसणणाणचारित्तपयासें । 10
अंग्गासग्गि जायउ संयसेविउ विरमयसोमभूइ सुँरु सेविउ ।
घत्ता—तहिं हौंती कालें ओयरिवि हुँयें हरिसेण जुहिट्ठिलु ॥
सिरिसेणें भीमु भीमारिभडु भुयबलमलणु महाबलु ॥ १७ ॥

18

बालमराललीलगइगामिणि अवर वसंतसेण जा कामिणि ।
सा किरीडि हौंहवि उप्पण्णी फणसिरि णउलु धम्मविरित्थिण्णी ।
मित्तसिरि वि सहएउ ण चुक्कइ कम्मु णिबद्धउं अवसें ढुक्कइ ।
दुवयहु सुय पेम्मंभमहाणइ जा दुग्गंध कण्ण सा दोमइ ।
भणइ जुहिट्ठिलु हयवम्मीसर भणु भणु णियभवाइं णेमीसर । 5
कहइ भडारउ भव्वियतरुहलु हौंतउ पढमजम्मि हउं णाहलु ।
रिसि विद्धंतु सघरिणिइ वारिउ पाणि सबाणु धरिउं ओसारिउ ।
णविय भडारा वियलियगावें महुमासहं णिवित्ति कय भावें ।
फणि डंकिउं मुउ भिल्लु वरायउ इब्भकेउ वणिवरकुलि जायउ ।
पुणु हुउं कालें जिणपणवियसिरु वयहलेण हूयउ कप्पामरु । 10
पुणु सुरु चँविवि देहभाभासुरु हुउ चिंतागइ खयरणरेसरु ।
पुणु तउं चरिवि समाहि लहेप्पिणु उप्पण्णउ माहिंदि मरेप्पिणु ।
पुणु अवराइउ णरवइ हूयउ मुणि होइवि अच्चुइ संभूयउ ।
पुणु संजायउ दिव्वंणिहीसरु सुपइट्ठु णामें पुहईसरु ।
घत्ता—हउं हुंउ रिसि सोलहकारणइं णियहियउल्लइ भावियइं ॥ 15
जिणजम्मकम्मु मइं संचियउं बहुदुरियइं उड्डावियइं ॥ १८ ॥

७ A सुअरंतहे; S सुयरंतहं. ८ A तिण्णि वि. ९ AS अंतसग्गि. १० A सियसेविय. ११ A सुरदेविय; S सुरदेविउ. १२ A हौंतउ. १३ A हुउ सोमयत्तु जुहिट्ठिलु. १४ A सोमिल्लु भीमु. (It appears that P contains an altogether new version from बहुविदेहि down to बहरिणि, while A seems to agree with P in lines which are common to all versions.

18 १ A agrees with P in the text of the first two lines for which see under 17. २ S धम्मु. ३ A दोवइ. ४ AP धरेवि. ५ APS डक्किउ. ६ S °पणमिय°. ७ ABPK मरेवि. ८ A देहभालासुरु. ९ S तवु. १० B लएप्पिणु. ११ B अच्चुउ. १२ A देउ णिहीसरु; BPS दिव्वणिहीसरु. १३ P सुपइट्ठु. १४ BKS omit हुउ.

11 *a* अग्गासग्गि षोडशे स्वर्गे; सुयसेविउ श्रोसेविते सोमभूतिचरस्य देव्यौ संजाते द्वे अर्जिके.

18 2 *a* किरीडि अर्जुनः; *b* फणसिरि नागश्रीचरी. 4 *b* दोमइ द्रौपदी. 6 *b* णाहलु भिल्लः. 7 *b* सबाणु बाणसहितः. 8 *a* णविय भडारा नमितो भट्टारकः.

19

पुणरवि मुउ रयणावलियंतइ अट्ठमिवक्खणु पत्तु जयंतइ ।
तहिं होंतउ आयउ मलचत्तउ अरहंतत्तणु इह संपत्तउ ।
ता पंचमगइसामि णवेप्पिणु पंचासवदाराइं पिहेप्पिणु ।
पंचिंदियइं दिहीइं णियंतिवि पंच वि संणाणइं सोचिंतिवि ।
पंचमहव्वयपरियरु रइयउ पंचहिं पंडवेहिं तउं लइयउ । 5
कोंति सुहद्द दुवइ सुयसत्तउं रायमईहि पासि णिक्खंतउ ।
तिव्वतवेण पुण्णसंपुण्णउ अच्चुयकप्पि ताउ उप्पण्णउ ।
तिण्णि वि पुणु मणुयत्तु लहेप्पिणु सिज्झिहिंति कम्माइं महेप्पिणु ।
घत्ता—पंच वि तवतावसुतत्ततणु चिरु जिणेण सहुं हिंडिवि ॥
गय ते सत्तुंजयगिरिवरहु पंडव जणवउ छंडिवि ॥ १९ ॥ 10

20

सिट्ठवरिट्ठसणिट्ठाणिट्ठिय तहिं आयावणजोयपरिट्ठिय ।
भाइणेउ कुरुणाहहु केरउ पावयम्मु दुज्जणु विवरेरउ ।
तेण दिट्ठ ते तहिं अवमाणिय चउदिसु साहणेण संदाणिय ।
कडयमउडकुंडलइं सुरत्तइं कडिसुत्ताइं हुयासणतत्तइं ।
तणुपलरसवसलोहियहरणइं रिसि परिहाविय लोहाहरणइं । 5
समभावेण विवज्जियदुक्खहु तव सुय भीमज्जुण गय मोक्खहु ।
णियसरीरु अरतणु व गणेप्पिणु अरिविरइउ उवसग्गु सहेप्पिणु ।
णउलु महामुणि सहएउ वि मुउ पंचाणुत्तरि अहमीसरु हुउ ।
घत्ता—मिच्छत्तु अडत्तणु णिद्दलवि देंतु बोहि दिहिगारा ॥
पंडवमुणि जणमणतिमिरहर महुं पसियंतु भडारा ॥ २० ॥ 10

---

19 १ P °वलिअंतए. २ S °दारावइं. ३ AP पिहेप्पिणु; Als. बहेप्पिणु. ४ B दिहिए. ५ AP णियंतिवि. ६ A बउ. ७ PAls. दुवय°. ८ A सुह°; P सुव°. ९ APAls. संतउ. १० A णिक्खित्तउ; B णिक्खंत्तउ. ११ A पुव्वतवेण. १२ P °संपण्णउ. १३ BS सुतत्तणु.

20 १ PAls. °सुणिट्ठा°. २ A आवणजोएण; S आयावणजोएं. ३ P माइणेउ. ४ B सुतत्तइं. ५ B भीमज्जण. ६ S सहएवु. ७ S omits मण.

---

19 1 *a* रयणावलियंतइ हे रत्नमालाकान्ते. 3 *b* बहेप्पिणु हत्वा. 4 *a* दिहीइ संतोषेण 5 *a* °परियरु परिकरः. 6 *a* सुयसत्तउ श्रुतासक्ताः. 7 *a* पुण्णसंपुण्णउ पुण्यसंपूर्णाः सत्यः.

20 1 *a* °सणिट्ठ° स्वनिष्ठया चारित्रेण; *b* आयावणजोयपरिट्ठिय आतापनयोगे स्थिताः. 2 *a* कुरुणाहहु दुर्योधनस्य. 6 *b* तव सुय तव पुत्रा युधिष्ठिरादयः.

21

छहसयाइं णवणवइ य वरिसइं णवमासाइं अवरु चउदिवसइं ।
महि विहरेप्पिणु मयणवियारउ गउ उज्जंतहु णेमि भडारउ ।
पंडियपंडियमरणपयासें मासमेत्तु थिउ जोयब्भासें ।
तवतावोहामियमयरद्धउ पंचसएहिं रिसिहिं सहुं सिद्धउ ।
आसाढहु मासहु सियपक्खइ सत्तमिवासरि चित्तारिक्खइ । 5
पुव्वरत्ति भत्तामरपुज्जिउ णेमि सुहाइं देउ मलवज्जिउ ।
एयहु धम्मातित्थि पवहंतइ णिसुणहि सेणिय कालि गलंतइ ।
बंभमहामहिणाहहु णंदणु चूलादेविहि णयणाणंदणु ।
बंभयत्तु णामें चक्केसरु संजायउ जगजलरुहणेसरु ।
वण्णें तत्तकणयवण्णुज्जलु सत्तचावपरिमाणु महाबलु । 10
सत्तसयाइं समाहं जिएप्पिणु छक्खंड वि मेइणि भुंजेप्पिणु ।
गउ मुउ कालहु को वि ण चुक्कइ सक्कु वि खयकालहु णउ सक्कइ ।
इय जाणिवि चारित्तपवित्तहु संतहु सत्तुमित्तसमचित्तहु ।

घत्ता—सुविहिहि अरुहहु तित्थंकरहु धम्मचक्कणेमिहि वरइं ॥
संभरहु पुप्फदंतहु पयइं विविहजम्मंतमसमहरइं ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णेमिणाहणिव्वाणगमणं
णाम दुणउदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ९२ ॥

णेमिजिणं णवमबलएवबलहद्द वासुएवकण्ह पडिवासुएवजरसंध
बारहमचक्कवट्टिबम्हयत्त पतचरियं समत्तं ॥

21 १ AP °सयाइं वरिसइं णवणउयइं; S णवउयइं वरि°; Als. णवणउयइं वरिसइं. २ APS उज्जेंतहो. ३ P सहुं. ४ S पुव्वरत्त. ५ A reads *b* as *a* and *a* as *b*. ७ AP जीवेप्पिणु. ८ A चुक्कइ. ९ P सत्त°. १० BP °मित्तु. ११ P संभरहु. १२ A °जम्मभवसमहरइं; BSAls. °जम्मभमसमहरइं; P °जम्मसमहरइं. १३ A adds: बंभदत्तचक्कवट्टिकहंतरं. १४ AS दुणवदिमो. १५ A omits this पुष्पिका. १६ B जरासंधु; S जरसेंधु.

21 4 *a* °तावोहामियमयरद्धउ तापेन तिरस्कृतकामः. 6 *a* पुव्वरत्ति पूर्वरात्रे 11 *a* जिएप्पिणु जीवित्वा. 14 सुविहिहि सुष्ठु चारित्रस्य यथाख्यातलक्षणस्य.

NOTES

LXXXI

1. 2 भंडणु मुरारिजरसंधहं—The narrative of Nemi, the twenty-second तीर्थंकर of the Jainas, contains an important episode, viz., the fight of कृष्ण and जरासंध. According to the भागवतपुराण the fight of कंस and कृष्ण is regarded as the most important feature of the life of कृष्ण, while जरासंध is killed by भीम. कृष्ण is mentioned as having run away from the battlefield and founded द्वारका in order to escape the attacks by जरासंध. In MP the word जरासंध appears in three different forms, जरसंध, जरसिंध and जरसेंध. Of these the first two are promiscuously used in my text and the third almost ignored as there is no consistency in Mss.

2. The poet states, as in MP I, that he does not possess necessary qualifications to undertake the composition of हरिवंश. 1 *b* देसिलेसु, fragmentary or elementary knowledge of देशी words or lexicons. 6 *a* सुवंतु तिवंतु (सुबन्त, तिङन्त) noun inflexion and verbal inflexion. 11–12 The poet feels confident that his fame as poet will place her feet on the necks of the wicked and wander beyond the three worlds.

3. सीहउरि णराहिउ अरुहदासु—It will be better if the reader remembers that the poet is giving here the narrative of the previous births of नेमि, not in their chronological order but in the order of strikingness. These previous births chronologically are:—भिल्ल, इभ्यकेतु, सौधर्मदेव, चिन्तागति, चतुर्थस्वर्गदेव, अपराजित, अच्युतेन्द्र, सुप्रतिष्ठ and जयन्तदेव. The poet starts with the life of अपराजित here. He then takes up the story of चिन्तागति and his two brothers. Then he proceeds to हरिवंश proper to give the parentage of नेमि.

4. 11 केसरिपुरि, i. e., सिंहपुर. 13 तुह जणणु means अर्हद्दास.

5. 7 यसणंगहं, च+अशनाङ्गानाम्; अशनाङ्ग means articles of food. 10 अपुण्णइ कालि, before his destined time of death, premature death.

6. 5 णहयलि मुणिंद—The चारणमुनिs are those who are able to travel through space as a result of their spiritual powers. They are his brothers of the previous birth.

8. 2 *a–b* पीसेस वि णियपयमूलि थित्त विज्जाहर—She, i. e., प्रीतिमती, trampled under her foot or humbled down the pride of all विद्याधरs as they came to woe her, but were unable to complete the three प्रदक्षिणाs of मेरु.

9. 1 *b* हुइ here stands for हुइं. **10** णविवइ दुक्खसिहि, etc. The fire of sufferings of the poor etc. is extinguished if they cling to the lotus-like feet of the revered Jinas.

10. 3 *a* सिरीवियप्पि goes with माहिंदकप्पि and means heaven as T says. 13 दूरिल्लइं, stationed at a distance; this word is to be construed with णयणइं.

12. 5 *b* अण्णु, food.

14. 12 इयरु, the merchant सुमुइ.

18. 14 पिय, i. e., father.

19. 4 वहुवरु, the couple सिंहकेतु or मार्कंड and विद्युन्माला. 12 Note how the narrative runs over to the next Saṃdhi.

LXXXII

1. 4 *b* सुउ ताइ, the children of सुभद्रा and अन्धकवृष्णि are enumerated here. They had ten sons and two daughters. 9 *b*-13*b* These lines enumerate the lives of the first nine sons of अन्धकवृष्णि. वसुदेव is the youngest and his narrative is continued later.

2. 8 *a* मच्छउलरायसुय सच्चवइ—According to the Jain version, सत्यवती, the wife of पाराशर, is a princess of the मत्स्य country and not a fisherman's daughter. Note the difference in the accounts of births of the पाण्डवs and कौरवs as given here and in the महाभारत.

3. 8 *a* पुण्डरिय, white or bright like a blooming lotus.

5. 1 *a* कुंडलजुयकडं etc. Note how the first born son of कुन्ती was disposed off. He had a pair of ear-rings, a gold armour and a letter containing information about his parentage. He became the adopted son of king आदित्य and queen राधा of चम्पा and seems to have succeeded his father to the throne of अङ्गदेश.

6. 5 *b* सुयजमलहु, to अन्धकवृष्णि and नरपतिवृष्णि.

9. 8 *a* रुद्ददत्त, the name of a Brahmin priest of the family.

16. 1 *a* वसुदेवायरणु, the previous births of वसुदेव. 4 *a* णियमाउलउ, his maternal uncle. 8 *a* गुरुसिहरारूढउ, ascending the lofty peak of the mountain from which he wanted to throw himself down. 9 *b* संखणाम णिण्णाम मुणि—These are destined to be कृष्ण and बलराम in the subsequent birth. 11 *a* कायछाय परहु, the shadow of a human being.

17. 11 *b* दुरिउं दिसावलि दिबइ—If you practise penance according to Jain principles, you can scattter your miseries in different directions. दिसावलि, offering to or scattering in दिशाs, i. e., quarters or cardinal points.

LXXXIII

1. 5 *a* अखारु सलवणु रयणायरु, ocean, not saltish, yet beautiful. Note the double meaning of सलवणु.

3. 1-2 Note how a lady, looking at वसुदेव, put under her arms a cat instead of her own child, and thus supplied to the people a comic situation.

4. 6 *b* अजुत्तउं, his improper conduct.

6. 1 *b* बालें, by young वसुदेव.

7. 10 *b* पइं आपेक्खिवि मयणु वि दूहउ—Compared with you, even god of love looked ugly (दूहउ, दुर्भगः). 14 *b* मीणावलिमाणिउं, water respected or used by a mass of fish, i. e., fresh running water of a stream.

8. 13 पहियपुण्णसामत्थें etc.—Fresh and young leaves came out or appeared on old and withered trees as if on account of the prowess of the merit of the visitor (पथिक), viz., वसुदेव.

11. 6 *b* बहिबहिसद्दें, by shouting " get out. "

12. 4 *b* दुहियावरु, the busband of your daughter. 13 समरसएहिं अभग्गो, सामरि who never knew defeat in hundred battles.

13. 8 वासुपुज्जजिणजम्मणरिद्धी—The town of चम्पा became famous as the birthplace of वासुपूज्य, the 12th तीर्थंकर.

16. 14 सवणहं सीसम्मि जणउच्छिट्ठउं घित्तउं—He threw on the heads of monks the leavings of food of people who were fed at the sacrifice. The story of बलि and his conquest by the monk विष्णु by asking him to give him earth measured by three steps will remind the reader of the corresponding story as found in Hindu mythology.

21. 14 *b* देसिउ, a traveller or foreigner.

22. 3 *b* अवियारिय (अविदारिताः), without being killed.

LXXXIV.

1. 8 *b* महिणीडय, resting or living in soil. 17 हउं जि करेसमि भोयणु, I myself shall feed this monk by giving him alms. Although the king said so, he did not give him alms and the monk had to go without food.

2. 1 *b* डुयासु लग्गु, fire broke out in tha city in the first month, a maddened elephant teased the people in the second month, and a threatening letter from king जरासंध was received by king उग्रसेन in the third month. 6 *a* परु वारइ सइं णाहारु देइ—He prevents others giving alms to the monk but he himself does not give food to the monk.

3. 8 *b* कल्लालयबालियाइ, by a young lady of a wine-shop keeper. (कल्लाल). 12 *a* वसुएवसीसु—कंस became a pupil of वसुदेव who is frequently referred to as प्रहरणसूरि, उज्झाय, चावसूरि etc. 19 मेरी सुय सो माणइ, he will win (the hand of) my daughter.

5. 1 *a* सउइहेयं, by वसुदेव who was the son of सुभद्रा.

6. 5 *b* रणि णियगुरुअंतरि पइसरेवि—When वसुदेव and सिंहरथ were fighting, कंस stood between them and captured सिंहरथ.

12. 7 *a* पिउबंधणि चिरु पावइउ वीरु—अतिमुक्तक, brother of कंस, renounced the world when their father उग्रसेन was imprisoned by कंस.

14. 1 *b* वरु दिण्णउ—वसुदेव was pleased with the exploit of his pupil कंस when the latter caught सिंहरथ and gave him a boon which कंस kept in reserve. अवसरु तासु अज्जु, to-day is the time to get the boon fulfilled.

17. 11 *a* णिण्णामणामु जो आसि कालि, the god from महाशुक्र heaven, who, in his previous birth, was a monk named निर्णाम.

18. 10 *a* भद्दिउ, one of the frequently used names of कृष्ण or विष्णु.

LXXXV

1. 5 *a* कण्हु मासि सत्तमि संजायउ—कृष्ण was born in the seventh month after conception, he had a premature birth, and hence कंस was not watchful to put him to death as soon as born.

2. Note the poetic beauty of this कडवक, nay, of the whole संधि, which is one of the finest compositions of the Poet.

3. 3 *a* महु कंतइ etc.—नन्द says that his wife यशोदा begged a son of a deity, but she gave her a girl. He wanted to return the girl to the deity; if the deity would give him a son, the desire of his wife would be fulfilled.

4. 5 चप्पिवि णासिय दिङ्किदिलियहि, having crushed the nose of the girl and thus deformed her, कंस put her into a cellar.

8. 10 *b* ता तहिं देवयाउ संपत्तउ—The deities which now came to कंस were the same, as, when in his previous brith as a monk, had appeared

before him. For reference see LXXXIV. 2. 9–14. It is these deities which assumed different forms such as पूतना and made attempts to kill कृष्ण at कंस's bidding.

12. 15–16 ओहामियधवल etc.—कृष्ण who had just vanquished the bull (i. e., demon अरिष्ट), was glorified in the cowherds' colony in songs styled धवल. Who will not praise the most glorified member of the house, the bright among the brightests ? धवल is a kind of folk-songs composed in a metre which is named धवल. The theme of these songs is usually the glorification of कृष्ण and they are sung by गोपीs. हेमचन्द्र in his छन्दोनुशासन V. 46, mentions some four types of धवल and names them as यशोधवल, कीर्तिधवल, गुणधवल etc. Some of these are अर्धसम, with first and third line and 2nd & fourth agreeing, while there is one more type in which first and second are similar and third and fourth are again similar. Among the महानुभाव poets these धवलs, or ढवळे as they are called, seem to be well-known, and those of महदंबा, are now edited and published by Y. K. Deshpande under the title " आद्य मराठी कवयित्री ". The type of her ढवळे agrees with the last named scheme, viz.,

1st and 3rd line : 6+4+4+4=18, + 2 or 3

3rd and 4th. : 4+4+4+4+4=20, + 2 or 3

13.10—**15.** 9 These lines describe a secret visit of वसुदेव and देवकी to कृष्ण.

16. A fine description of the rainfall.

17.11–12 णायामिजइ etc. Astrologer वरुण says to कंस that he who is not frightened by sleeping on the bed of a snake, blows a conch with his own breath and strings the bow, will show to कंस the city of the god of death; and that he will release उग्रसेन and kill जरासंध.

20. 8–9 हउं मि जामि etc. कृष्ण says he would also go to मथुरा and do all the three things; whether he will marry कंस's daughter, he could not say; for a cowherd-boy (हालिक) may not care for the princess.

22. 3 *a* अग्गि व अंबरेण ढंकेप्पिणु, having covered fire in clothes. भानु and सुभानु, the sons of जरासंध, brothers-in-law and allies of कंस, took कृष्ण with them to मथुरा.

23. 10 *b* अपसिद्धेण सुभाणुहि भिच्चें, by कृष्ण, who was taken to be some unknown servant of सुभानु.

LXXXVI

1. 23 *a* उविंदु, i. e., कृष्ण. The name of कृष्ण is expressed here by all synonyms of विष्णु. Compare पुरिसोत्तम and महुसूयण below.

3. 4 *b* णउ बीहइ सप्पहु गरुडकेउ—कृष्ण, with his emblem of गरुड, is not frightened by सर्प. The enmity between गरुड and सर्प is well-known.

5. 10 अन्नयाणसंचालियधर, the crowd of cowherd boys caused the earth to tremble on account of mutual clashing.

7. 19 *a* सो वि सो वि, both कृष्ण aud चाणूर.

10. 3 *a* भंजिवि णियलइं, having broken or removed the fetters which कंस had put on उग्रसेन and पद्मावती.

11. 2 *b* इहजम्महु महुं तुहुं ताय ताउ—Addressing नन्द, कृष्ण says to him that नन्द is his father in this birth because he fostered him.

LXXXVII

1. 9 *a* कंचिविवज्जिय उत्तरमहि विव—Like Northern India, where there is no town bearing the name of काञ्ची (Canjeevaram of South India), जीवंजसा, having lost her husband कंस, did not put on काञ्ची, girdle, which is used only by those ladies whose husband is alive.

2. 1-12 जीवंजसा describes to her father जरासंध the various exploits of कृष्ण.

4. 14 छायालीसइं तिण्णि सयइं—अपराजित, a son of जरासंध, made three hundred and fortysix attacks or attempts on कृष्ण, but was defeated.

5. 14 *b* देसगमणु, leaving the country or going to another country. कालयवन being very powerful, the advisers of कृष्ण proposed to him not to give a straight fight to कालयवन, but to withdraw from मथुरा and go towards the western ocean.

6. 13 *a* हरिकुलदेवविसेसहिं रइयइं—Certain guardian deities of हरिवंश played a trick on कालयवन. They set fire to a region where dead bodies were seen burning, and the deities cried bewailing the loss of यादवs. कालयवन then thought that कृष्ण and other यादवs were dead and returned to his father.

7. 15 आहवि सउहुं भिडेवि मइं जसु जिणिवि ण लद्धउं—कालयवन regrets that यादवs died of fire and that he lost the opportunity of obtaining fame by vanquishing them in a face-to-face fight.

10. 6 थियउं सेण्णु etc—This was the site on which द्वारावती was built by कुबेर as it was to be the birth-place of नेमि, the twenty-second तीर्थंकर.

13. 4 पउरंदरियइ आणइ, at the command of पुरंदर, i. e., इन्द्र.

17. 2 णेमि सद्दिओ—The would-be तीर्थंकर was named नेमि, because he was the नेमि, the rim, that protects the great chariot of Law.

LXXXVIII

1. This कडवक summarizes events since कृष्ण left मथुरा down to his founding द्वारवती.

2. 10 *a* दुव्वाएं जलजाणु ण भग्गउं, fortunately my ship did not wreck although it met a stormy wind (दुर्वात).

3. *a* णवरज = णवर + अज्ज.

4. 10 *b* दे आएसु—कृष्ण asks the permission of his elder brother बलराम before he starts.

5. 16 *a–b* जो सुहडइं etc.—The poet says that the dust raised in the sky was the smoke of the fire of rivalry of warriors. Note a fine set of fancies on the dust raised on the battle-field in the next कडवक as well.

9. 11 *a* गोवाल – जरासंध addresses कृष्ण as गोपाल. See the spirited answer of कृष्ण below in lines 15 and 16, पइं मारिवि etc. गोमंडलु पालमि, गोउ हउं, I protect the earth (गोमण्डल), and so I am a गोप.

16. 13–14. These lines give the list of seven gems which a वासुदेव possesses.

17. 3 *b* तेत्तियइं सहासइं विलयइं—कृष्ण had sixteen thousand wives. 8 This line mentions the four gems which a बलदेव possesses. 13 *a* कंसमहुवइरिउ—कृष्ण is called here the enemy of कंस and महु, i. e., जरासंध.

19. 15 होसि होसि etc.—सत्यभामा says to नेमि " I know you are my husband's brother, but are you दामोदर ? "

22. 10 *a* णिव्वेयहु कारणु—If नेमि sees some cause which would create in him disgust for संसार, he would practise penance, and become a तीर्थंकर. 12–13 रायमइ or राजीमती is said to be the daughter of उग्रसेन and जयवती. Elsewhere she is said to be the daughter of भोगराज or भोजराज. Compare अहं च भोगरायस्स in the उत्तराध्ययन, 24. 43. कंस is mentioned as her brother, but this कंस and his father उग्रसेन seem to be different from कंस, the enemy कृष्ण, as T suggests.

LXXXIX

1. 3-4 एक्कहु तित्ति णिविहु etc.—I do not like to eat flesh because, one (the eater) gets only a momentary satisfaction by eating flesh, while the other (animal killed) loses its life. भवविहुरकारि, eating flesh causes the loss of spiritual life in one, while the other actually loses its present life. 9 *a* णिव्वेयहु कारणि दरिसियाइं, these creatures were placed on the way of नेमि in order to cause in him disgust for life.

6. 15 णेमी सीरिणा is to be construed with पुच्छिउ in the second line of the next कडवक.

8. 7 *a* एत्थंतरि etc.—The portion beginning with this line and ending with this saṃdhi deals with the previous lives of देवकी, बलदेव and कृष्ण. 7 *b* वरदत्तु, the first गणधर of नेमि.

9. 15 मंगिया—The narrative of मंगिया, the wife of वज्रमुष्टि, is interesting. She was very badly treated by her mother-in-law. Her husband loved her dearly, but she ultimately proved to be faithless.

18. 9 *a* सो संखु वि सहुं णिण्णामएण—These two monks were born later as बलदेव and कृष्ण.

XC

1.5 to **3**.9 This portion narrates the previous lives of सत्यभामा, the most proud and inpetuous wife of कृष्ण. The narrative contains a small episode of मुण्डसालायण, a Brahmin, who abused the Jain doctrine and recommended to people the Brahmanic practices such as gifts of earth, cows etc.

2. 10 *b* डोड्डु is definitely a Kannada word which the Poet has used. Those who want to argue that the poet lived in South, say, at काञ्ची, should note that this word does not occur in Tamil or in any other South Indian languages except Kannada. It is natural that the poet who lived under a mixed influence of माहाराष्ट्र and कर्णाटक, should use occasionally a word or two from either language, and words from a weaker language would be those that are most commonly known words. I stick to my view that the poet came from Northern India, probably from Berar, as suggested by Pandit Nathuram Premi.

3.10 to **7**.14. Past lives of रुक्मिणी.

4. 4 *b* उंबरकुट्ठइ, with leprosy. उंबरकुट्ठ is one of the 18 types of कुट्ठ in which the body gets the colour of the ripe fruit of उदुम्बर, fig. 18 कंमार्टमें, with spiced waters.

7.15 to **10.**12. Previous births of जाम्बवती.

10.13 to **12.**10. Past lives of सुसीमा.

12.11 to **14.**2. Past lives of लक्ष्मणा.

14.3 to **15.**9. The same of गान्धारी.

15.10 to **16.**11. The same of गौरी.

16.11 to **19.** 9. The same of पद्मावती. 10 *b* अवियाणियतरुहलहु अवग्गहु, a vow not to eat a fruit the name of which is not known. See how the lady died as she could not get fruits of known names in a famine.

19. 10 *a* जहिं संसारहु आइ ण दीसइ etc.—How can I narrate to you the series of births when the संसार is beginningless. The soul dances like an actor on the stage, taking different roles.

XCI

2. 10 *a* तो सूणागारहु पढमु सग्गु—If persons who kill animals would go to heaven, then, the butcher should be the first man to go to heaven.

6. 6 *b* तियसोएं, on account of grief at the loss of his wife. 12 *a* महु संभूयउ पज्जुण्णु णामु—मधु, in his previous births, was अग्निभूति, पुण्यभद्र or पूर्णभद्र, and became प्रद्युम्न, the son of रुक्मिणी. He was taken away by कनकरथ whose wife had been abducted by मधु. प्रद्युम्न was handed over to his queen काञ्चनमाला by कनकरथ. This काञ्चनमाला later fell in love with प्रद्युम्न, who rejected her love. The queen thereupon raised a false alarm that she was insulted by her so-called son.

16. 7 *a* हरिपुत्तहु. to प्रद्युम्न the son of कृष्ण. 8 *a–b* These are the names of the five arrows of god of love whose incarnation प्रद्युम्न was.

21. 9 *a* भाणुमायदेवीणिकेउ, to the house of सत्यभामा, the mother of prince भानु. 12 *b* बंभणु होइवि रक्खसु पइडु—The Brahmin who has visited our house is in reality, a demon; that is why he eats so much and is not still satiated.

XCII

1. 12–13 जइयहुं etc—Both रुक्मिणी and सत्यभामा gave birth to sons at one and the same time. The maids of both went to कृष्ण to announce the

birth, but as कृष्ण was sleeping, one maid sat on the side of his head and the other on the side of his feet. कृष्ण got up and saw the maid who was sitting at his feet; that maid (of रुक्मिणी) then announced the birth of a son to रुक्मिणी, and कृष्ण said that that son would be the heir-apparent.

6. 1 नेमि informs बलदेव how द्वारावती would be burnt and how कृष्ण would meet his death.

8-10. The story of the पाण्डवs in outline, and of the द्रौपदीस्वयंवर.

14-15. Previous births of the पाण्डवs.

18. 6 Previous births of नेमि, beginning with that of a भिल्ल.

21. 7 *a* The story of ब्रह्मदत्त, the twelfth and last चक्रवर्तिन्.

Addenda et Corrigenda

Page	Kadavaka	Line	Incorrect	Correct
8	9	1	तुह	तुहुं
26	13	13	धम्मरुइ जुत्तेहिं	धम्मरुइजुत्तेहिं
34	Foot-Notes	last	°णिणिउ	°माणिउं
40	16	2	करइ	करइ
40	Foot-Notes	4	मारणावाञ्छकेन	मारणवाञ्छकेन
42	19	4	°माइसहोयरु	°भाइ सहोयरु
48	2	10	भणति	भणंति
48	Foot-Notes	last	अस्ताच	अस्ताचे
51	7	2	°जसजस°	°जस जस°
55	12	10	जरसंधकंसजस°	जरसंध कंस जस°
63	5	2	अलियळहिं	अलियह्लहि
65	6	13	जसोएं	जसोए
76	19	1	विसकंघर	विसकंधर
82	1	1	°छिण्णाउ	°छिण्णउं
112	12	8	कण्हे	कण्हें
120	23	1	°वइधरु	°वइधरु
129	10	8	बइरिणीइ	बइरिणीइ
133	15	17	बंधव	बंधव